ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH | UPSC WALLAH

UPSC सम्पूर्ण

प्राचीन भारत



सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए एक समग्र समाधान

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH | UPSC WALLAH

UPSC सम्पूर्ण

सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए एक समग्र समाधान

प्राचीन भारत

संस्करण : **प्रथम**
ISBN : 978-81-19130-56-6

द्वारा प्रकाशित : Physics Wallah

मोबाइल ऐप: Physics Wallah (प्ले स्टोर पर उपलब्ध)

वेबसाइट: www.pw.live
यूट्यूब चैनल: Physics Wallah - Alakh Pandey
UPSC Wallah
UPSC Wallah - Hindi Medium
PSC Wallah - UP Bihar
MPSC Wallah
ईमेल: support@pw.live

अधिकार
सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित रहेंगे। लेखक या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी हिस्से का किसी भी तरह से उपयोग या इसकी अन्य प्रतिलिपि तैयार नहीं की जा सकती है।

छात्र समुदाय के हित में:
किसी भी सोशल मीडिया चैनल, ईमेल आदि या किसी अन्य चैनल के माध्यम से मोबाइल, लैपटॉप या डेस्कटॉप के माध्यम से पीडीएफ या अन्य समकक्ष प्रारूपों में पुस्तकों की सॉफ्ट कॉपी का प्रसार एक प्रकार का अपराध है। किसी भी व्यक्ति द्वारा अपनी डिवाइस (उपकरणों) पर पुस्तक की सॉफ्ट कॉपी को प्रसारित, डाउनलोड, संग्रहीत करना कॉपीराइट अधिनियम का उल्लंघन है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक या इसकी किसी भी सामग्री की फोटोकॉपी करना भी अवैध है। ऐसी किसी भी सॉफ्ट कॉपी संबंधी सामग्री के प्राप्त होने की अवस्था में इसे डाउनलोड या फॉरवर्ड न करें।

अस्वीकरण:
विषय की गहरी समझ रखने वाले PW ONLY IAS विशेषज्ञों एवं अध्यापकों की टीम ने पुस्तकों के लिए कड़ी मेहनत की है। जबकि इन पुस्तकों को तैयार करने में कंटेंट बनाने वालों (कंटेंट क्रिएटर्स), सम्पादकों एवं प्रकाशकों द्वारा पूर्ण प्रयत्न किया गया है। यह पुस्तक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए अभिप्रेत है तथा लेखक पुस्तक में निहित किसी भी त्रुटि के लिए जिम्मेदार नहीं होगा। विषय वस्तु की सटीकता के लिए जाँच की गई है। प्रकाशक द्वारा विषय-वस्तु को सटीक एवं आधिकारिक जानकारी प्रदान करने के लिए डिजाइन किया है।

यह पुस्तक एवं इसमें निहित व्यक्तिगत योगदान प्रकाशक द्वारा कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत सुरक्षित हैं।

प्रतिक्रिया के लिए ईमेल करें: support@pw.live

(यह पुस्तक केवल शैक्षिक उद्देश्य के लिए उपयोग की जाएगी।)

प्रस्तावना

PW ONLY IAS की एक अत्यधिक कुशल विशेषज्ञ टीम यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत करती है कि छात्रों को यूपीएससी परीक्षा के लिए सर्वोत्तम सामग्री प्राप्त हो।

शुरुआत से ही कंटेंट बनाने वालों (कंटेंट क्रिएटर्स), समीक्षकों, डीटीपी ऑपरेटरों, प्रूफरीडरों एवं अन्य लोगों की पूरी कंटेंट टीम छात्रों के लिए प्रभावशाली सामग्री तैयार करने हेतु अपने सर्वोत्तम ज्ञान तथा अनुभव के अनुसार सामग्री को आकार देने में संलग्न है।

अध्यापकों ने विषय-वस्तु को आसानी से समझने वाली भाषा में प्रस्तुत करने की नई शैली अपनाई है एवं इस अध्ययन सामग्री के निर्माण के दौरान टीम को अपना मार्गदर्शन तथा पर्यवेक्षण प्रदान किया है।

PW ONLY IAS वैचारिक एवं मनोरंजक शिक्षा में दृढ़ विश्वास रखता है। PW ONLY IAS छात्रों को गुणवत्ता तथा स्पष्टता लाने के लिए उच्च परीक्षा-उन्मुख अध्ययन-सामग्री प्रदान करता है।

यूपीएससी अध्ययन सामग्री बहुतायत के साथ बाजार में उपलब्ध है, परंतु PW ONLY IAS विशेषज्ञ हमारे यूपीएससी छात्रों के लिए सर्वोच्च अध्ययन सामग्री प्रदान करने हेतु निरंतर कार्यरत हैं।

यह अध्ययन सामग्री परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रचुर विविधता के साथ अवधारणाओं को समझने एवं महारत हासिल करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाती है तथा छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा के लिए ज्ञान से सुसज्जित करती है।

इस अध्ययन सामग्री का मुख्य उद्देश्य हमारे छात्रों को संक्षिप्त, स्पष्ट, लघु एवं गुणवत्तापूर्ण विषय-वस्तु प्रदान करना है।

पुस्तक की विशेषताएं

- विषयों की समग्र चर्चा, यूपीएससी प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के पाठयक्रम के पुर्णत: अनुरूप
- विषयवार कवरेज के लिए वन-स्टॉप सॉल्यूशन
- त्वरित समझ और पुनरीक्षण के लिए आरेख, फ्लोचार्ट और टाइमलाइन्स
- इस परीक्षा के प्रारंभिक और मुख्य चरणों की एकीकृत तैयारी

विषय-सूची

1. **प्रारंभिक पाषाण युग 1-10**
   - परिचय.....1
   - प्रागैतिहासिक काल: 30,00,000BC–600BC.....1
   - ऐतिहासिक स्रोत.....2
   - पुरापाषाण या पुराना पाषाण युग: 30,00,000 BC–10,000BC.....3
   - मेसोलिथिक संस्कृति या मध्य पाषाण युग.....8
   - विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा).....10
2. **नवपाषाण और ताम्रपाषाण संस्कृति.....11-18**
   - नियोलिथिक या नव पाषाण काल: 7000 ई.पू.–1000 ई.पू:.....11
   - ताम्रपाषाण युग/ताम्र-पाषाण युग: 3500ई.पू.–1000ई.पू:.....16
   - लौह युग (1000 ई.पू.–500 ई.पू.).....18
3. **हड़प्पा सभ्यता.....19-33**
   - परिचय.....19
   - किसी स्थल को हड़प्पा सभ्यता स्थल के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए जाँच सूची...19
   - सिंधु घाटी सभ्यता: भूगोल, प्रसिद्ध स्थल और पुरातात्विक खोज.....19
   - प्रारंभिक, विकसित और उत्तर हड़प्पा चरण के बीच संबंध.....21
   - विकसित हड़प्पा बस्तियों की सामान्य विशेषताएं.....22
   - हड़प्पा शिल्प और तकनीक.....23
   - हड़प्पा सभ्यता की मुहरों और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध.....24
   - हड़प्पा नगरों द्वारा आयात.....25
   - लेखन की प्रकृति और उपयोग.....25
   - हड़प्पा सभ्यता के दौरान तोलन और मापन...26
   - धर्म और आस्था तंत्र.....26
   - सामाजिक व्यवस्था.....26
   - कृषि.....27
   - हड़प्पा सभ्यता का पतन.....27
   - उत्तर हड़प्पा सभ्यता चरण.....28
   - समकालीन सभ्यताओं से भिन्नता.....28
   - हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल.....29
4. **आर्य संस्कृति और पूर्व-वैदिक काल.....34-39**
   - वैदिक ग्रंथों के रचयिताओं पर वाद-विवाद....34
   - भारतीय-आर्य.....34
   - वैदिक साहित्य.....35
   - ऋग्वैदिक संस्कृति या पूर्व-वैदिक संस्कृति....35
   - ऋग्वेद में वर्ण व्यवस्था: दास और दास्यु.....36
   - ऋग्वैदिक चरण के दौरान राजनीतिक संगठन.....37
   - राजनीतिक विवाद.....37
   - अर्थव्यवस्था.....38
   - धर्म और कर्मकांड.....38
5. **उत्तर-वैदिक चरण.....40-43**
   - आर्यों का विस्तार.....40
   - लौह धातु का प्रयोग.....41
   - बस्तियाँ और क्षेत्र.....41
   - वर्ण पदानुक्रम.....41
   - राजनीतिक व्यवस्था.....42
   - अर्थव्यवस्था.....42
   - धार्मिक आस्था और विश्वास तंत्र.....43

- उत्तर वैदिक चरण के दार्शनिक पहलू.....43

6. महाजनपदों का युग.....44-48

- भारत-गंगा के मैदानों में द्वितीय शहरीकरण के विकास के कारण.....44
- जनपद से महाजनपद तक.....44
- 16 महाजनपद.....45
- महाजनपदों की मूलभूत विशेषताएं.....48
- गण या संघ 48

7. बौद्ध और जैन धर्म.....49-65

- जागरण के कारण.....49
- हेटेरोडॉक्स संप्रदाय.....49
- आजीवक.....50
- अन्य नास्तिक मत 50
- जैन धर्म.....51
- बौद्ध धर्म.....55
- महात्मा बुद्ध का प्रारंभिक जीवन.....55
- बुद्ध की शिक्षाएँ.....56
- जैन धर्म और बौद्ध धर्म की तुलना.....65
- बौद्ध धर्म और जैन धर्म के बीच प्रमुख अंतर....65

8. पूर्व मौर्य काल का भारत.....66-68

- मगध महाजनपद के विकास के कारण.....66
- हर्यक वंश 66
- शिशुनाग वंश.....67
- नंद वंश (362 ईसा पूर्व) 67

9. मौर्य साम्राज्य.....69-81

- फारसी आक्रमण 69
- भारत पर फारसी आक्रमण का प्रभाव.....69
- सिकंदर का भारत पर आक्रमण (327-325 ई.पू.) 69
- मौर्य काल.....71
- मौर्यों का राजनीतिक इतिहास.....72
- उत्तर मौर्य 75
- मौर्य प्रशासन.....75
- राजस्व और कृषि 76
- शिल्प और सामान 77
- व्यापार.....77
- सिक्के और मुद्रा 78
- सेना.....78
- जनगणना 78
- प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन 78
- भौतिक संस्कृति 79
- मौर्यकाल में कला और वास्तुकला.....79
- मौर्य साम्राज्य का पतन 81

10. आक्रमण युग: मध्य एशिया से संपर्क.....82-87

- विदेशी आक्रमणकारी 82
- इंडो-यूनानी आक्रमणकारी.....82
- इंडो-यूनानी शासन का प्रभाव 82
- शक या सिथो -पार्थियन.....83
- कुषाण.....83
- पश्चिमी भारत के शक क्षत्रप 86
- क्षहरात राजवंश.....86

11. मौर्यों के बाद का भारत.....88-91

- शुंग 88
- दक्कन में सातवाहन साम्राज्य.....89
- सातवाहनों का राजनीतिक इतिहास.....89
- प्रशासन.....90
- आय 90
- वास्तुकला 90
- आर्थिक स्थिति 91

12. दक्षिण भारत का प्रारंभिक इतिहास.....92-97

- राजनीतिक इतिहास.....92
- चेर.....92
- चोल 93
- पांड्य 93
- छोटे सरदार 94
- संगम साहित्य.....94

- संगम काल का प्रशासन..... 95
- समाज 95
- अर्थव्यवस्था..... 96
- विचारधारा और धर्म 96
- महिलाओं की स्थिति 97
- कला..... 97

13. गुप्त साम्राज्य 98-114

- गुप्त काल के स्रोत 98
- गुप्तवंश की उत्पत्ति एवं प्रमुख शासक..... 99
- गुप्त साम्राज्य का प्रशासन तंत्र..... 102
- अर्थव्यवस्था..... 103
- समाज 107
- धार्मिक विकास के प्रतिरूप 107
- कला और स्थापत्य 108
- साहित्य..... 109
- विज्ञान और गणित 110
- गुप्तों का पतन..... 112
- वाकाटक 112
- राजनीतिक इतिहास..... 112

14. हर्ष का उदय..... 115-118

- गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत..... 115
- मैत्रक..... 115
- मौखरी 115
- पुष्यभूति..... 116
- राजवर्धन (605–606 ई.)..... 116
- हर्षवर्धन 116
- हर्ष का प्रशासन..... 116
- प्रांतीय प्रशासन 117
- कर लगाना..... 117
- समाज 117
- धार्मिक नीति..... 118
- हर्ष के समय में कला और साहित्य का संरक्षण..... 118

15. पूर्व में साम्राज्य..... 119-121

- बंगाल..... 119
- पाल साम्राज्य 119
- पाल शासक 119
- धर्मपाल..... 119
- देवपाल 120
- धर्म के प्रति नीति..... 120
- असम..... 121
- ओडिशा 121

16. दक्षिण भारतीय साम्राज्य.....122-130

- पल्लव..... 122
- वेंगी के पूर्वी चालुक्य 129
- बनवासी के कदंब 129
- मैसूर के पश्चिमी गंग 130

17. प्राचीन इतिहास की विरासत: मध्यकाल की ओर संक्रमण.....131-135

- समाज में परिवर्तन 131
- दर्शन..... 132
- पड़ोसी देशों की संस्कृति पर प्रभाव..... 133
- विज्ञान और सभ्यता में विरासत 134
- प्राचीनकाल से मध्यकाल 134

18. प्राचीन काल में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली 136-141

- वैदिक काल 136
- वैदिक युग में विवाह के प्रकार..... 137
- वैदिक ग्रंथों में नदियाँ..... 137
- जैन धर्म और बौद्ध धर्म..... 137
- बोधिसत्व (दुनिया के कल्याण के लिए काम करके निर्वाण प्राप्त करने वाला व्यक्ति)..... 138
- मगध साम्राज्य 138
- कुषाण साम्राज्य और सातवाहन..... 139
- संगम युग 140
- संगम युग में सिंचाई से संबंधित शब्द..... 140
- गुप्त काल..... 140
- गुप्तोत्तर काल और अन्य पद 141

19. समयरेखा: प्राचीन भारत का इतिहास...142-150

UPSC WALLAH

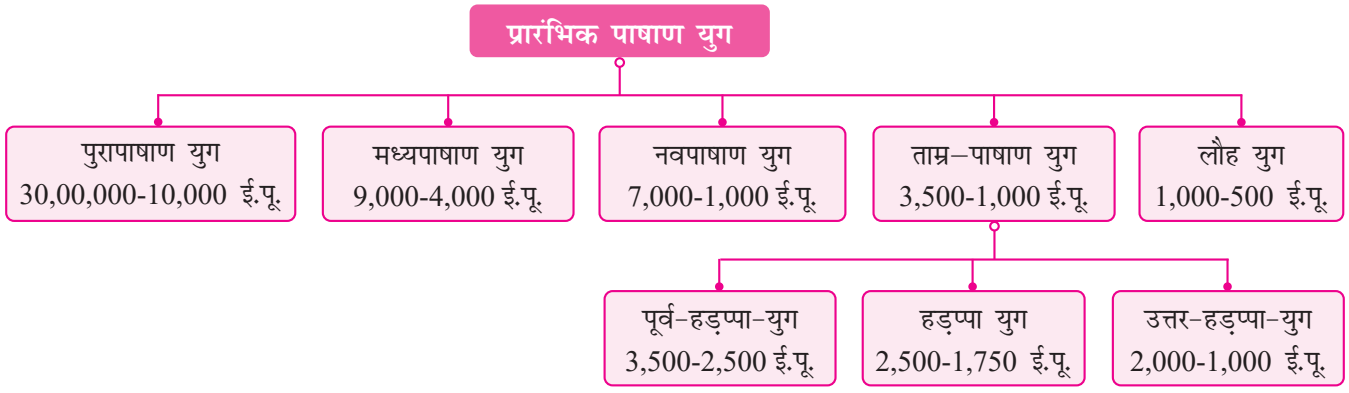
1 प्रारंभिक पाषाण युग

परिचय

- 19वीं शताब्दी के बाद से भारतीय उपमहाद्वीप में कई प्रागैतिहासिक स्थलों की खोज की गई है, और नए दृष्टिकोणों और विचारों ने पाषाण युग (मानव इतिहास का वह काल जो सबसे लंबे समय तक चला) के बारे में हमारे ज्ञान में वृद्धि की है।
- सबसे प्रचुर और महत्वपूर्ण स्रोत इतिहास के तीन खंड हैं।
- **प्रागैतिहास (Prehistory):** उन घटनाओं का अध्ययन है जो लेखन कला के विकास से पहले हुई थी, जिसे आमतौर पर तीन पाषाण युगों द्वारा दर्शाया गया है।
- **आद्य-इतिहास (Proto-history):** जब किसी सभ्यता में लेखन कला का विकास नहीं हुआ था, लेकिन इसे एक समकालीन साक्षर सभ्यता के लिखित अभिलेखों में दर्ज किया गया है, तो यह प्रागैतिहास और इतिहास के बीच की अवधि को दर्शाया है। उदाहरण के लिए हड़प्पा सभ्यता की लिपि अभी तक कोई नहीं पढ़ पाया है।
- **इतिहास (History):** लेखन के आविष्कार के बाद अतीत का अध्ययन है और लिखित और पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग करके साक्षर समाजों का अध्ययन है।

प्रागैतिहासिक काल: 30,00,000BC – 600BC

- **यह 5 कालों से मिलकर बना है–** पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग।
- **इस काल का कोई लिखित अभिलेख** उपलब्ध नहीं है।
- **पुरातात्विक अवशेष:** प्रागैतिहासिक लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पत्थर के औजार, मिट्टी के बर्तन, कलाकृतियां और धातु के उपकरण हैं।
- **रॉबर्ट ब्रूस फूट ने भारत में संभवत:** पहला पुरापाषाण उपकरण "पल्लावरम हस्तकुल्हाड़ी" खोजा था। आर.बी. फूट को "प्रागैतिहासिक पुरातत्व के जनक" के रूप में जाना जाता है। रॉबर्ट ब्रूस फूट भारतीय प्रागैतिहास का प्रारंभिक, गहन अध्ययन करने के लिए श्रेय के पात्र हैं।
- **सर मोर्टिमर व्हीलर:** भारत की पूर्व-ऐतिहासिक संस्कृतियों और उनके अनुक्रम के बारे में हमारे ज्ञान में बढ़ोत्तरी की।



चित्र 1.1 **प्रागैतिहासिक काल**

ऐतिहासिक स्रोत

स्रोत	साक्ष्य	जानकारी
सामग्री अवशेष	• **रेडियो-कार्बन डेटिंग:** यह किसी वस्तु की उम्र निर्धारित करने के लिए एक विधि होती है। • **डेंड्रो-कालक्रम:** पेड़ों के वलयों (जिन्हें विकास वलय भी कहा जाता है) को उनके बनने के सटीक वर्ष का निर्धारण करने की वैज्ञानिक विधि। • **निर्माण संरचनाएं:** दक्षिणी भारत के भव्य पत्थर के मंदिर; पूर्वी भारत के ईंट मठ; टीले की ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज खुदाई; महापाषाण (दक्षिण भारत)	• जीवन शैली के लगभग हर पहलू जैसे, मिट्टी के बर्तनों का उपयोग, गृह निर्माण का तरीका, कृषि (उत्पादित अनाज), पालतू जानवर, औजारों के प्रकार, हथियार आदि और समय और स्थान में प्रचलित अंतिम संस्कार की प्रथाएं। • **लंबवत उत्खनन:** भौतिक संस्कृति का कालानुक्रमिक अनुक्रम प्रदान करता है। • **क्षैतिज उत्खनन:** संस्कृति विशेष का पूरा परिचय प्रदान करता है।
सिक्के	• सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (Numismatics)** कहा जाता है। • **खुदाई** में सिक्कों को **एकत्र किया गया** और पूरे देश और **बाहर के विभिन्न संग्रहालयों** में **सूचीबद्ध किया गया।**	• आरंभिक सिक्कों में अधिक प्रतीकों का प्रयोग नहीं किया गया है; बाद के सिक्कों में राजाओं या जारीकर्ता (गिल्ड / व्यापारियों), देवताओं या तिथियों के नाम का उल्लेख किया गया है; यह कालक्रम के साथ धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास के लेखन में मदद करता है। • ऐसे स्थानीय और सीमा-पार लेनदेन जिनमें इन सिक्कों प्रयोग हुआ है, हमें विभिन्न शासक राजवंशों और उनके शासन के बारे में बताते हैं। • सिक्कों में प्रयुक्त धातु और संख्या किसी साम्राज्य में व्यापार, वाणिज्य और धन के स्तर को इंगित करती है। • गुप्तकाल के बाद सिक्कों की कम संख्या उस अवधि में व्यापार और वाणिज्य के पतन का संकेत करते हैं।
शिलालेख	• **पुरालेख विद्या (Epigraphy):** अभिलेखों का अध्ययन • **पुरालेखन (Palaeography):** अभिलेखों तथा अन्य अभिलेखों पर पुराने लेखों का अध्ययन। • मुहरों, पत्थर के खंभों, चट्टानों, तांबे की प्लेटों, मंदिर की दीवारों और ईंटों या तस्वीरों पर खुदे हुए शिलालेख। • सबसे पहले प्राकृत में (300 ईसा पूर्व), फिर संस्कृत में और उसके बाद क्षेत्रीय भाषाओं में।	• चित्रात्मक हड़प्पा शिलालेखों को **अभी पढ़ा जाना बाकी है।** • **दक्षिण भारत:** मंदिर की दीवारों पर शिलालेख। • शिलालेखों ने विभिन्न सूचनाओं जैसे **शाही फरमानों और सामाजिक, धार्मिक और प्रशासनिक मामलों (जैसे, अशोक के शिलालेख) के बारे में निर्णयों को अधिकारियों और सामान्य रूप से लोगों तक पहुँचाया।** • **अशोक के शिलालेख:** प्रयुक्त लिपियाँ - ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक और आरमेइक। • दान, भूमि अनुदान, और राजाओं और विजेताओं की उपलब्धियाँ (समुद्रगुप्त और पुलकेशिन द्वितीय आदि)।
साहित्यिक स्रोत	• चार **वेद**, **रामायण** और **महाभारत**, **स्मृतियाँ** और **धर्मसूत्र**, **महाकाव्य**, जैन और बौद्ध ग्रंथ, कविता, संगम साहित्य, **नाटक** आदि।	• भारत में, सबसे पुरानी पांडुलिपियां सनौबर की छाल और ताड़ के पत्तों पर लिखी गई थीं। • कौटिल्य का **'अर्थशास्त्र'** एक राजा और उसकी, अर्थनीति, प्रशासन और बड़े पैमाने पर समाज से संबंधित मामलों की विस्तृत जानकारी देता है।

		• **"पुराण"** गुप्त शासन तक वंशवादी इतिहास की जानकारी प्रदान करते हैं। • ये स्रोत भाषा, लिपि और लेखन की शैली के उपयोग के बारे में भी संकेत देते हैं। • **राजतरंगिणी:** यह कल्हण द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक है और इसमें 12वीं शताब्दी CE कश्मीर के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को दर्शाया गया है। • **संगम साहित्य:** यह प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य है, जो एक साथ एकत्र हुए कवियों (संगम) द्वारा निर्मित है और तमिलनाडु के डेल्टा में रहने वाले लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है। • **कालिदास की साहित्यिक कृतियां:** महान कवि कालिदास की रचनाओं में काव्य और नाटक शामिल हैं, जिनमें अभिज्ञान शाकुंतलम सबसे महत्वपूर्ण हैं।
विदेशी विवरण	• इतिहासकारों, राजनयिकों, तीर्थयात्रियों या नाविकों/खोजकर्ताओं के रूप में यूनानी, रोमन या चीन के लोगों का विवरण।	• **सिकंदर का आक्रमण:** ग्रीक स्रोतों के आधार पर पूरी तरह से दोबारा लिखा गया। • **मेगास्थनीज का "इंडिका"** मौर्य काल के बारे में जानकारी प्रदान करता है। • **प्लिनी का "नेचुरेलिस हिस्टोरिया":** भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार असंतुलन का लेखा-जोखा प्रदान करता है। • **फाह्यान:** एक बौद्ध यात्री, गुप्तकाल की जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। • **ह्वेन -त्सांग : बौद्ध तीर्थयात्री, ने भारत का दौरा किया और राजा** हर्षवर्धन के शासनकाल और नालंदा विश्वविद्यालय की शान के द्वारा भारत का विवरण प्रस्तुत किया।

भारतीय पाषाण युग को मोटे तौर पर भूवैज्ञानिक युग, पत्थर के औजारों के प्रकार और तकनीक और जीवनयापन के स्तर के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1. **पुरापाषाण युग या पैलिओलिथिक एज**
2. **मध्य पाषाण युग या मेसोलिथिक एज**
3. **नव पाषाण युग या नियोलिथिक एज**

पुरापाषाण या पुराना पाषाण युग: 30,00,000 BC–10,000BC

- पाषाण युग का पहला चरण, जो प्लेइस्टोसिन या हिम युग के दौरान उभरा, पुरापाषाण युग के रूप में जाना जाता है।
- पुरापाषाण संस्कृतियाँ प्लेइस्टोसिन भूवैज्ञानिक युग की हैं, जबकि उत्तर पाषाण और नवपाषाण संस्कृतियाँ होलोसीन युग की हैं।
- पाषाण युग के पुरापाषाण और नवपाषाण काल को 1863 में जॉन लुबॉक द्वारा दो समूहों में विभाजित किया गया था।
- एडुआर्ड लार्टेट ने कुछ साल बाद पुरापाषाण को आंशिक रूप से विभिन्न उपकरण प्रकारों से जुड़े जीवों में भिन्नता के आलोक में निम्न, मध्य और उच्च पुरापाषाण काल में विभाजित करने का प्रस्ताव दिया।

भारत में पुरा पाषाण युग के प्रसिद्ध स्थल

- सोन घाटी और पोतवार पठार
- उत्तर भारत में शिवालिक की पहाड़ियाँ

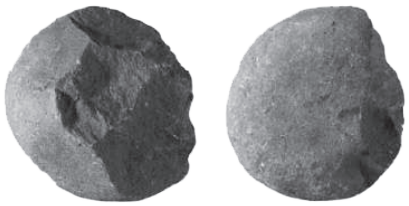
भारत में निम्न पुरापाषाण युग

- **होलोसीन सीमा के अपवाद के साथ, उपमहाद्वीप की पाषाण युग की संस्कृतियाँ** एक ही रेखा में समान रूप से और व्यवस्थित ढंग से विकसित नहीं हुई। **उनकी कुछ विशेषताएं क्षेत्रीय रूप से भिन्न होती हैं**, और उनकी तिथियों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है। सिंधु और गंगा जलोढ़ मैदानों को छोड़कर, यह लगभग पूरे भारत देश में पाई जाती हैं।

- **सिंध की** रोहरी पहाड़ियों और उत्तरी विंध्य पर्वत जैसे विभिन्न घाटियों के किनारों के अंदर या किनारों पर चट्टानी बहिर्वाहों पर पहचाना गया है।



Handaxe



Chopping tool, flaked on both sides



Cleaver



Pebble tool

- **किंवदंती के अनुसार, नेग्रिटो जाति में पुरापाषाणकालीन मानव शामिल थे** जो भारत में रहते थे तथा गुफाओं और चट्टानी आश्रयों में निवास करते थे।
  - **वे शिकारी और भोजन एकत्र करने वालों में से थे** जो जंगली फलों और सब्जियों पर निर्वाह करते थे।
  - **उनके पास खेती**, गृह निर्माण, मिट्टी के बर्तन या धातु में कोई विशेषज्ञता नहीं होती थी।
  - **उन्होंने बाद के चरणों में ही आग की समझ विकसित की।**
  - **इस पूरे समय में मनुष्य ने बिना पॉलिश किए, बिना तराशे खुरदरे पत्थर के औजारों का इस्तेमाल किया।** मुख्य रूप से हाथ की कुल्हाड़ी, क्लेवरर्स, चॉपर, ब्लेड, ब्रूइन और स्क्रेपर्स।
- **भारत में, पुरापाषाण पुरुषों को "क्वार्टजाइट मेन" के रूप में भी जाना जाता है** क्योंकि पत्थर के औजारों का निर्माण कठोर चट्टान "क्वार्टजाइट" से किया गया था।

भारत में निम्न पुरापाषाण युग के स्थान:

- **पोतवार पठार और शिवालिक में हाल ही में** निम्न पुरापाषाण काल से जुड़ी कई महत्वपूर्ण जानकारी पाई गई हैं।
- **पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र में रावलपिंडी के करीब एक शहर रिवात** में निम्न पुरापाषाण काल से संबंधित जानकारी मिली है। गुर्हा साहन में 2.4 से 2 मिलियन वर्ष पुराने पत्थर के औजारों की खोज की गई और पीएस-57 **शिवालिक के पिंजौर तल** से जुड़ा हुआ है।
- **शिवालिक पहाड़ियों के जम्मू और हिमाचल भागों में पाए गए पत्थर के औजार एक ही कालावधि के प्रतीत होते हैं।**
  - कारखाने आम तौर पर कच्चे माल के स्रोतों के करीब होते थे, और उन्हें निर्माण के विभिन्न चरणों में पत्थर के औजारों की प्रचुरता से पहचाना जा सकता है।
- **बदरपुर पहाड़ियों में खुदाई के दौरान** हजारों शुरुआती और बाद के एश्यूलियन उपकरण मिले, साथ ही कई यमुना नदी उत्तर पाषाणकाल की धाराओं के संकेत भी मिले हैं।
- **राजस्थान में, निम्न, मध्य और उत्तर पुरापाषाण उपकरण अजमेर के आसपास पाए गए हैं** और **लूनी घाटी में निम्न** पुरापाषाण औजारों के छिटपुट अवशेष पाए गए हैं।
- **गुजरात में, साबरमती**, इसकी **ओरसंग और कर्जन** सहायक नदियों की घाटियों और सौराष्ट्र में **भादर घाटी में निम्न पुरापाषाणकालीन औजार पाए गए हैं।**
- **उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी में**, विस्तृत अध्ययनों से **निम्न पुरापाषाण काल से नवपाषाण काल और आद्य ऐतिहासिक काल तक पाषाण युग के उद्योगों की एक शृंखला सामने आयी है।**
- **कोर्तलयार नदी घाटी में अत्तिरमपक्कम, तमिलनाडु के सबसे समृद्ध पुरापाषाण स्थलों में से एक है।**

मध्य पुरापाषाण स्थल:

- पुरापाषाण काल में पत्थर के औजार धीरे-धीरे विकसित हुए। कुल्हाड़ी, काटने के उपकरण, और अलग करने के उपकरण पूरी तरह से गायब नहीं हुए, लेकिन ये **छोटे, हल्के परत वाले औजारों में बदल गये**, जिनमें से कुछ **तैयार मुख्य प्रक्रियाओं जैसे Levallois तकनीक के द्वारा बनाए गए थे।**
- **शल्क संस्कृति:** शल्कों से बने औजारों की अधिकता के कारण।
- **मध्य पुरापाषाण औजार उपमहाद्वीप के कई स्थानों में पाए गए हैं**, जो अक्सर नदी की बजरी और निक्षेपों में पाए जाते हैं, जो वहां की जलवायु परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- उत्तर-पश्चिम में सिंधु और झेलम नदियों के बीच **पोतवार पठार में पाए गए पत्थर के कई औजार, ज्यादातर मध्य पुरापाषाण काल के हैं।**
- **बुद्ध पुष्कर झील के आसपास बड़ी संख्या में मध्य पुरापाषाण काल से संबंधित पाषाण युग के स्थल स्थित हैं।**
- मध्य और उत्तर पुरापाषाणकालीन उपकरण **अजमेर और लूनी नदी तंत्र के आसपास भी पाए जाते हैं।**

- **नेवासन उद्योग का नाम नेवासा के स्थान के नाम पर रखा गया है**, जहां प्रमुख पुरातत्वविद् एच. डी. सांकलिया ने मध्य पुरापाषाण युग की कलाकृतियों का पता लगाया था।
- दक्षिण भारत में, मध्य पुरापाषाण संस्कृति को एक शल्क उपकरण उद्योग द्वारा पहचाना जाता है। विशाखापत्तनम तट पर, क्वार्टजाइट, चर्ट और क्वार्टज का उपयोग अक्सर पत्थर के औजार बनाने के लिए किया जाता था।



PALEOLITHIC TOOLS

LOWER PALEOLITHIC



Chopper: pebble, roughly worked on one side used for diggingAnd skinning



Biface: handAxe knapped on both side. Used for cutting.

MIDDLE PALEOLITHIC



Knife: utensil knaped on one side. Used for cutting orAsA weapon.



Scraper: used for cleaning-Animal hidesAnd sharpening knives.

UPPER PALEOLITHIC

Blade: finely knaped. UsedAs spear heads.





Harpoon: used for fishing



Spear thrower: used to throw javelins.



Javelin: weapon for throwing. Similar toA small spear.



Needle: made of boneAnd used for sewing.



Perforator: used for making holes in hides.

उत्तर पुरापाषाण स्थल:

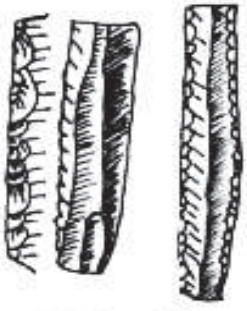


Blade

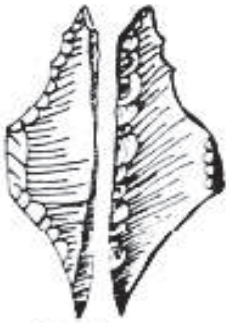




Backed blades



Blades with retouched margin



Double borer on blade

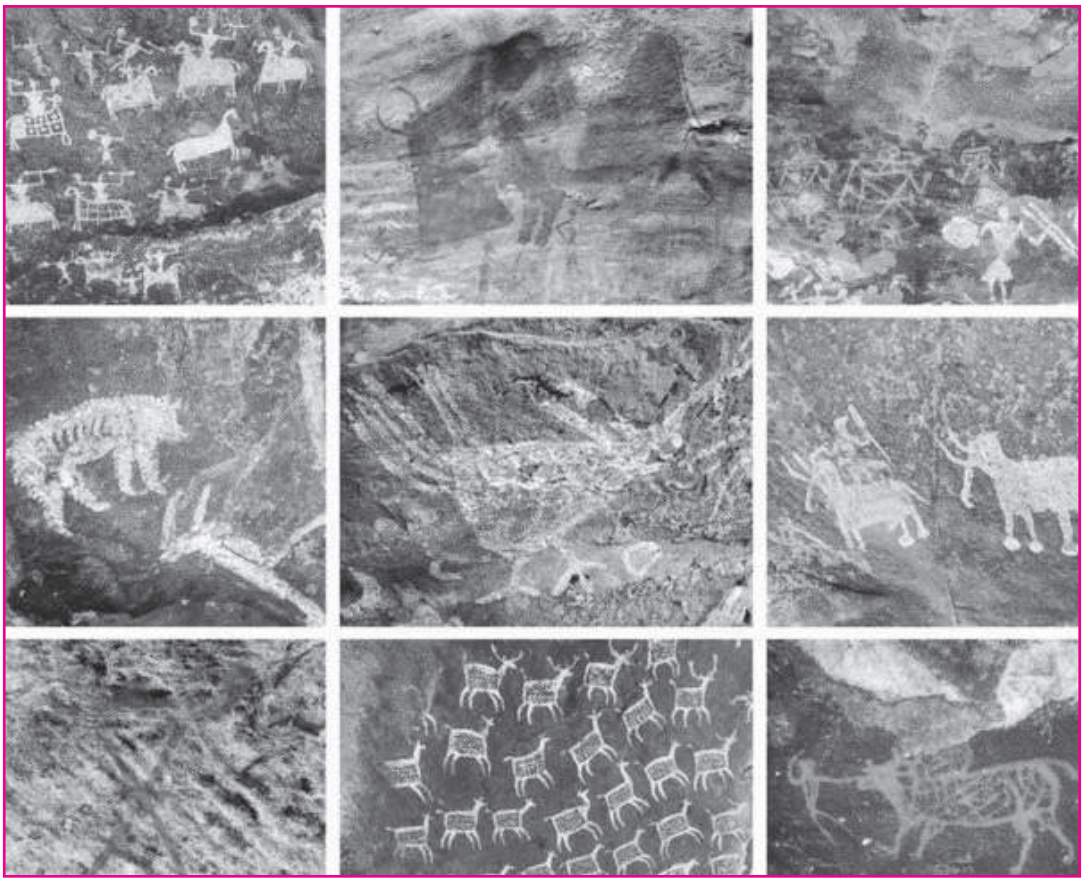
- **समानांतर पक्षीय फलक वाले औजारों का उत्पादन उत्तर पुरापाषाण की एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि थी।** दफन किए जाने वालों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। **छोटे उपकरणों की ओर रुझान** पर्यावरणीय परिवर्तनों की प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप हुआ होगा।
- **शल्क-ब्लेड संस्कृति:** शल्क-ब्लेड से बने औजारों की अधिकता के कारण।
- **उत्तर भारत में कश्मीर उत्तर पुरापाषाण लगभग 18,000 साल पहले का है**, जो एक गर्म वातावरण के आगमन के साथ मेल खाता है।
- बढ़ती शुष्कता के कारण थार में पिछले चरण की तुलना में कम उत्तर पुरापाषाण स्थल पाए जाते हैं।
  - बुद्ध पुष्कर में झील के आसपास के क्षेत्र में अभी भी लोगों का कब्जा था।
- **विंध्य** के शैलाश्रयों और **गुफाओं में उत्तर पुरापाषाणकालीन आश्रय स्थलों की खोज की गई है।**
- बेलन घाटी में 10,000 साल पहले सोन घाटी में उत्तर पुरापाषाण काल से संबंधित स्थल पाया गया था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि बेलन घाटी में चोपानी मांडो एक मानव बस्ती थी जिसमें **उत्तर पुरापाषाण काल से नवपाषाण तक सांस्कृतिक प्रगति हुई थी।**
- **छोटानागपुर क्षेत्र** और राजमहल पहाड़ियों के दामिन क्षेत्र में **कई उत्तर पुरापाषाण स्थल हैं।** इनमें मुंगेर जिला (बिहार) का पैसरा भी शामिल है।

- **उत्तर पुरापाषाणकालीन औजार पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों में पाए गए हैं।**
  - **असम और उत्तर-पूर्व के अन्य भागों में पुरापाषाण काल के पर्याप्त प्रमाण नहीं मिले हैं।**
- **मुचचटला के उत्तर पुरापाषाण गुफा स्थल आंध्र प्रदेश में चिंतामनु गावी** उपमहाद्वीप में एकमात्र ऐसी जगह है जहां जानवरों की हड्डियों से बने उपकरण उत्तर पुरापाषाण काल के संदर्भ में पाए गए हैं।

पुरापाषाण कला और संस्कृति:

कला का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से शुरू होता है। यह प्राचीन लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करता है। **रॉक कला में शिलोत्की**र्णन भी **शामिल हैं**, जिसमें उत्कीर्णन, चोट, हथौड़े से, छेनी या स्कूपिंग के माध्यम से चट्टान की सतह के एक हिस्से को हटा दिया जाता है। **चट्टानों पर चित्रकारी के लिए पेट्रोग्लिफ एक अन्य शब्द है।**

- **पुरापाषाण कालीन नक्काशियों और चित्रों के पर्याप्त और ठोस प्रमाण मिले हैं।**
  - प्राथमिक कृतियां जानवरों की हैं, और कुछ छवियों का उपयोग आनुष्ठानिक शिकार में किया गया हो सकता है।
  - वीनस मूर्तियाँ या महिला मूर्तियाँ, प्रजनन संस्कार और विश्वासों का प्रतीक हो सकती हैं।
- **भारत में पुरापाषाण कला के अधिक प्रमाण नहीं पाए गए हैं। भीमबेटका में "सभागार गुफा"**, जिसे गुफा III F-24 के रूप में भी जाना जाता है, कलात्मक-सह-सांस्कृतिक गतिविधि के महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करते हैं।
  - **ऐसा लगता है कि यह निचले और मध्य पुरापाषाण काल के बीच की सीमा रेखा से संबंधित है।**
- बेलन घाटी (यूपी) में लोहंडा नाला में एक बहुत क्षतिग्रस्त अवस्था में उत्तर पुरापाषाण नक्काशीदार हड्डी से बना हुआ औजार मिला था।
- कुरनूल की एक गुफा में पाए गए जानवरों के दांतों में खांचे बने हुए हैं, जो बताते हैं कि उन्हें एक तार से जोड़कर आभूषण के रूप में पहना जा सकता है।
- 9000-8000 ईसा पूर्व बघोर I के स्थल में पाए गए मंदिर में उत्तर पुरापाषाण काल के आकर्षक प्रमाण मिले हैं।
- **यह ध्यान देने योग्य है कि कोल और बैगा आदिवासी** लोग, जो अभी भी कैमूर पहाड़ियों के इस क्षेत्र में निवास करते हैं, गोलाकार मलबे के चबूतरे बनाते हैं और ऐसे त्रिकोणीय पत्थरों को स्त्री सिद्धांत के प्रतिनिधित्व या देवताओं के रूप में पूजते हैं।



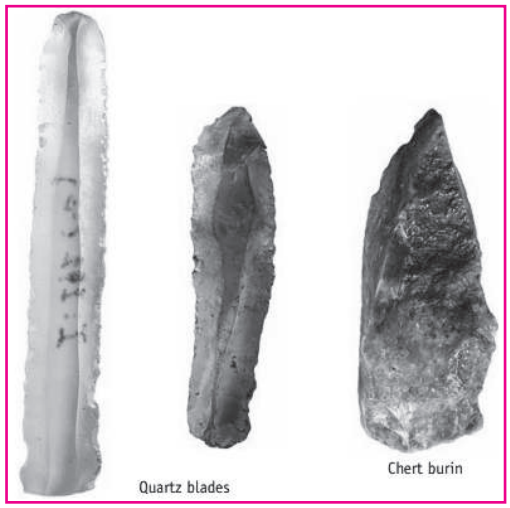
पुरापाषाण शिकारी-संग्रहकर्ताओं की जीवन-पद्धतियाँ:

उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वालों की पुरापाषाण जीवन शैली इस बात पर आधारित थी कि वे उन विशेष परिस्थितियों के लिए कितनी अच्छी तरह अनुकूलित थे।

- हालांकि, शिकारियों और संग्राहकों के इन समाजों ने एक दूसरे के साथ कई मूलभूत लक्षण साझा किए।
- पुरापाषाण काल के दौरान लोग ईख, घास, टहनियों या चट्टानों से निर्मित आश्रयों में निवास करते थे।
- अधिक और कम स्थायी बस्तियों के बीच अंतर करना संभव था, और कुछ स्थान विशेष प्रकार की गतिविधियों के लिए जाने जाते थे।
  - हुंस्गी और भीमबेटका जैसे पर्यावास दीर्घकालीन आवास का प्रमाण हैं।
  - अन्य स्थल अस्थायी शिविर स्थलों की ओर इशारा करते हैं जहां लोग पहुंचे, कुछ समय के लिए रुके और फिर चले गए।
- **पुरापाषाण काल के शिकारी-संग्राहकों की एक मौलिक सामाजिक संरचना हो सकती है जो मानवविज्ञानियों द्वारा संदर्भित "बैंड समाज" के समान थी।**
  - **बैंड में आमतौर पर 100 से कम सदस्य होते हैं।**
- **वे जिन जानवरों का शिकार करते हैं उनकी मौसमी उपलब्धता और उनके द्वारा इकट्ठा किए जाने वाले भोजन के आधार पर** वे अक्सर घूमते रहते हैं या काफी हद तक खानाबदोश होते थे।
- **एक बैंड के सदस्य आमतौर पर एक दूसरे से रिश्तेदारी संबंध रखते थे**, और वे श्रम को लिंग और उम्र के अनुसार विभाजित करते थे।
- आर्थिक विनिमय पर आधारित होने के बजाय, पारस्परिकता के नियम उत्पादों के आदान-प्रदान को नियंत्रित करते थे।
  - जिन प्राकृतिक संसाधनों पर पूरा बैंड निर्भर रहता था, वे किसी एक व्यक्ति या लोगों के सामूहिक 'स्वामित्व' में नहीं होते थे।
- **समूह के सदस्यों का व्यवहार बल द्वारा नहीं बल्कि रीति-रिवाजों, मानदंडों और सामाजिक शिष्टाचार के माध्यम से नियंत्रित होता था।**

मेसोलिथिक संस्कृति या मध्य पाषाण युग

- पाषाण युग की संस्कृति के मध्य चरण का प्रतिनिधित्व मेसोलिथिक युग या मध्य पाषाण युग द्वारा किया जाता है। होलोसीन काल में मेसोलिथिक और नियोलिथिक संस्कृतियां शामिल हैं।
- यह पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच का **संक्रमण काल है।**
- मध्य पाषाण युगीन **चित्रकारी में सांपों को चित्रित नहीं किया गया है।**
- भारत में मध्यपाषाणकालीन पुरातात्विक सामग्री की खोज का श्रेय **जॉन इवान को जाता है।**
- **मध्यपाषाण काल के लोग शिकार, मछली पकड़ने, भोजन इकट्ठा करने और बाद में जानवरों को पालने पर निर्वाह करते थे।**
- **प्रसिद्ध औजारों का आकार घटाना मध्यपाषाण युग की मुख्य विशेषताओं में से एक था।**
- **माइक्रोलिथ्स**, जिसमें ज्यामितीय और विषम दोनों आकार हो सकते हैं और आमतौर पर क्रिप्टो-क्रिस्टलीय सिलिका, केल्सेडनी या चर्ट से बनते हैं, इस अवधि के विशिष्ट उपकरण थे।
  - माइक्रोलिथ औजारों की लंबाई 1 सेमी से लेकर 5 सेमी तक होती थी।
- **एपी- पुरापाषाण शब्द का प्रयोग कभी-कभी उपकरणों के संक्रमणकालीन चरण के लिए किया जाता है** जो उत्तर पुरापाषाण के उपकरणों से छोटे होते थे, लेकिन माइक्रोलिथ या लघुपाषाणी औजारों से छोटे होते थे।



मेसोलिथिक संस्कृति या मध्य पाषाण युग संस्कृति की विशेषताएं:

- **अर्थव्यवस्था:** मध्यपाषाण अर्थव्यवस्था, पुरापाषाण काल की तरह, अनिवार्य रूप से शिकार और संग्रहण पर आधारित थी, लेकिन कुछ स्थलों ने पालतू जानवरों को रखने के प्रमाण दिए हैं।
- **मिट्टी के बर्तन** अधिकांश मध्य पाषाण स्थलों पर मिट्टी के बर्तन नहीं मिले हैं, लेकिन यह गुजरात के लंघनाज और मिर्जापुर (यूपी) के कैमूर क्षेत्र में पाए गए हैं।

- **बस्तियों के प्रकार:** ऐसा प्रतीत होता है कि स्थायी या अर्ध-स्थायी बस्तियाँ पाई गई हैं, या कम से कम ऐसी बस्तियाँ हैं जो लंबे समय तक बार-बार बसी थीं।
- **फसलें:** इस युग के अंतिम चरण में पौधों की खेती की शुरुआत देखी गई। बेलन घाटी में **चोपानी मांडो में शिकार-संग्रह से स्थिर कृषि की शुरुआत तक के** संक्रमण काल का पता लगाया जा सकता है।
  - **जंगली मवेशियों और भेड़/बकरियों की हड्डियाँ पायी गई हैं।**
- **निवास स्थान:** ईख की छाप वाली जली हुई मिट्टी के टुकड़ों से पता चलता है कि चोपानी मांडो के मध्यपाषाण काल के लोग झुग्गी-झोपड़ियों में रहते थे।

मध्य पाषाण युगीन स्थल

- **बागोर (पूर्वी राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में)** सबसे अच्छा प्रलेखित मेसोलिथिक स्थलों में से एक है।
- **प्रायद्वीपीय भारत में, मुंबई** के आसपास पाए जाने वाले लघुपाषाण स्थल तटीय मध्य पाषाण युगीन समुदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्होंने भोजन के लिए समुद्री संसाधनों का दोहन किया।
  - लघुपाषाण स्थल महाराष्ट्र के अन्य भागों में भी पाए गए हैं।
- कर्नाटक में बैंगलोर के पास जलाहल्ली और किब्बनहल्ली में, गोवा में और नागार्जुनकोंडा (दक्षिणी आंध्र प्रदेश में) और रेनिगुंटा (चित्तूर जिले, आंध्र प्रदेश में) में भी पाए गए हैं।
- **भारत का मध्य क्षेत्र: छोटानागपुर, पशुपालन** के सबसे पुराने उदाहरण आदमगढ़, मध्य प्रदेश और बागोर में देखे जा सकते हैं।
- उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य पाषाण युगीन स्थल सामुदायिक संपर्क और प्रवासन के प्रमाण प्रदान करते हैं।

मध्य पाषाण युगीन कला

- **प्रागैतिहासिक शैल कला पहली बार** मध्य पाषाण **काल के दौरान देखी गई।** 1867 में सोहागीघाट (कैमूर हिल्स, यूपी) में पहले भारतीय शैल चित्रों को उजागर किया गया था। **तब से, भारत में 150 से अधिक** मध्य पाषाण युगीन शैल कला स्थल पाए गए हैं। विशेष रूप से मध्य भारत में **भीमबेटका गुफाओं, खरवार, जावरा, और कथोटिया (एमपी), सुंदरगढ़ और संबलपुर (उड़ीसा), और एजुथु गुहा (केरल) जैसे स्थानों में कई स्थान पर कला स्थल पाए गए हैं।**
- अधिकांश मेसोलिथिक मध्य पाषाण **काल के शैल चित्रों में** कला स्थलों में ऐसे दृश्य हैं जिन पर अधिकांशत: जानवरों के चित्र बनाए गए हैं। हालाँकि, मध्य पाषाण काल के चित्रों में साँप और मिट्टी के बर्तनों को नहीं दिखाया गया है।

भीमबेटका का विवरण

- **सात पहाड़ियों में से एक, भीमबेटका एक भव्य प्राकृतिक सौन्दर्य द्वारा स्थापित है।** यहाँ के 642 शैलाश्रयों में से लगभग 400 में कलाकृति, नक्काशियाँ, या रगड़ के निशान पाए गए हैं।
- वे स्पष्ट रूप से अपनी शैली, विषय और पहनावे की स्थिति के आधार पर प्राचीन युग के हैं।
- **सोलह अलग-अलग रंग या वर्ण हैं**, जिनमें **सफेद और हल्का लाल सबसे लोकप्रिय है।**
- **रंगों को खनिजों को पीसकर बनाया गया था**, जिन्हें तब **पानी** या अंडे की सफेदी, मज्जा या पशु वसा जैसे अन्य पदार्थ के साथ मिलाया जाता था।
- **लाल रंग आयरन ऑक्साइड (गेरू) का उपयोग करके बनाया गया था**, सफेद रंग चूना पत्थर का उपयोग करके, और हरा रंग शायद हरे स्फटिक का उपयोग करके बनाया गया था।
- **चित्रकारी एक रंग और बहु रंग दोनों रूपों में होती थी।**
- **ब्रश भी** सेमल (रेशम कपास), पशु फर, या गिलहरी की पूंछ से बनाया जाता था।
- **भीमबेटका में दृश्यों में जानवरों के चित्रों की प्रधानता है।** कलाकृति में चीतल (जो सबसे अधिक प्रचलित है), तेंदुआ, बाघ, पैंथर, हाथी, गैंडा, मृग, हिरण और गिलहरी सहित **29** विभिन्न प्रकार के जानवर हैं।
- भीमबेटका और अन्य स्थानों से मध्य पाषाण काल में जानवरों को या तो स्वयं या शिकार के **एक भाग के रूप में चित्रित किया गया है।**
- **शिकारी एकल या सामूहिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं** और कभी-कभी मुखौटे और सींग या सींग वाले मुकुट पहनते थे।
- कुछ **चित्र 'एक्स-रे शैली' में हैं, जिनमें** मादा पशुओं के गर्भ में भ्रूण सहित आंतरिक अंगों को दिखाया गया है।
- **भीमबेटका और अन्य स्थलों पर मेसोलिथिक पेंटिंग भी पुरुषों और महिलाओं, युवा और वृद्धों को दर्शाती हैं।**
- इसमें लिंग के आधार पर **श्रम के विभाजन को दर्शाया गया है।** पुरुषों को शिकार करते हुए और महिलाओं को भोजन इकट्ठा करते और तैयार करते हुए दिखाया गया है। उदाहरण के लिए भोजन के अनाज को चक्कियों में पीसना।



मध्य पाषाण या मेसोलिथिक चित्रों के अन्य स्थल:

- **भारत के अन्य स्थानों में भी प्रागैतिहासिक शैल कला स्थल मिले हैं।** उड़ीसा के पश्चिमी क्षेत्रों में, विशेष रूप से सुंदरगढ़ और संबलपुर जिलों में, **शैल चित्रों की विशेषता वाले लगभग 55 शैल आश्रयों की** खोज की गई है।
- **चेंगपहाड़ और गर्जनपहाड़ के आरक्षित वनों में लेखमोड़ा समूह के 12 शैलाश्रय** रॉक कला के लिए सबसे विपुल स्थान हैं।
- इन शैल आश्रयों में से एक की खुदाई की गई थी, और इसमें मध्य पाषाण **से ताम्रपाषाण युग तक की सांस्कृतिक प्रगति को दिखाया गया।**
- **एक ही आश्रय में चित्रों और उत्कीर्णन का सह-अस्तित्व उड़ीसा की शैल चित्रकला का एक दिलचस्प पहलू है।**
  - **इनका जोर सजावटी तरीकों पर है, जो भावात्मक हैं और प्रकृति में ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय दोनों हैं। इसमें दिखाये जाने के** मामले में मनुष्य के चित्र जानवरों से भी कम हैं।
- **केरल में भी चित्रों और नक्काशियों के साथ अनेक शैल कला स्थल हैं।** सबसे पुराने स्थलों में से एक गुफा है जिसे एझुथु गुहा के नाम से जाना जाता है।
- **जावरा (म.प्र.) के एक शैलाश्रय में एक बहुत ही रोचक, बल्कि भावात्मक पेंटिंग मिली है।** शायद यह वायु, पृथ्वी और अग्नि से मिलकर बनी दुनिया के एक दृश्य को दर्शाता है।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. भारत की मध्य पाषाण युगीन या मेसोलिथिक शैल वास्तुकला न केवल उस समय के सांस्कृतिक जीवन को दर्शाती है बल्कि इसमें आधुनिक चित्रकला की तुलना में एक बेहतरीन सौंदर्य बोध भी है। इस टिप्पणी का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। (2015)

❖ ❖ ❖

2 नवपाषाण और ताम्रपाषाण संस्कृति

नियोलिथिक या नव पाषाण काल: 7000 ई.पू.-1000 ई.पू:

- लगभग 8000-6000 ईसा पूर्व **विश्व के पहले कृषि गाँव दिखाई दिये।** भेड़ और बकरियाँ पश्चिम एशिया के पहले पालतू जानवरों में से एक थे, जो गेहूं और जौ की खेती का प्रारंभिक केंद्र भी था।
- **मेहरगढ़ की खुदाई,** जिसमें मवेशियों, भेड़ों और बकरियों के साथ-साथ गेहूं और जौ की कृषि के साक्ष्य सामने आए, से ज्ञात हुआ कि दक्षिण एशिया में बलूचिस्तान **प्रारंभिक कृषि का क्षेत्र था।**



नवपाषाण युग की उन्नति:

- नवपाषाण प्रौद्योगिकी की प्रगति, जिसमें नुकीले और पॉलिश किए गए पत्थर के औजारों के निर्माण के साथ-साथ खाद्य उत्पादन की शुरुआत भी शामिल है, इस अवधि से संबंधित् है।
- **पत्थर के औजारों में संशोधनों के साथ निर्वाह रणनीति में परिवर्तन सह संबद्ध थे।**
- प्रकृति में मानवीय हस्तक्षेप के एक अनूठे रूप के साथ-साथ व्यक्तियों, पौधों और जानवरों के बीच संबद्धता में एक नया विकास पौधों और जानवरों के पालन से उजागर हुआ।
  - इसमें पौधों और जानवरों को उनके प्राकृतिक आवासों से समाप्त के साथ-साथ चयनात्मक प्रजनन और मानव लाभ के लिये जानवरों को कृत्रिम रूप से प्रेरित करना शामिल था।
- **लगभग 8000-6000 ईसा पूर्व, उत्तर भारत में नवपाषाण युग का विकास शुरू हुआ।**
- यह दक्षिण और पूर्वी भारत के कुछ क्षेत्रों में 1000 ईसा पूर्व के रूप में है।
- **नवपाषाण क्रांति, जैसा कि वी. गॉर्डन चाइल्ड** द्वारा परिभाषित किया गया है, प्रगैतिहसिक काल में इसके महत्त्व का एक अच्छा संकेतक है। इसने कई सुझाव प्रस्तुत किए, जिनमें शामिल हैं:
- **खाद्य-उत्पादक समाज में स्थानांतरण:** ऐसी स्थिति में जहाँ जानवर और पौधे अपने प्राकृतिक आवास पर रहने के लिये बाध्य नहीं हैं। एक खाद्य-उत्पादक समाज की एक कार्यशील परिभाषा वह है जो पालतू पशुओं और/या पौधों के लिये कम-से-कम वर्ष के एक हिस्से के लिये आधी भोजन आवश्यकताओं को प्राप्त करता है।
  - नवपाषाण काल के मनुष्य रागी और कुलथी जैसे अनाजों की खेती करते और उगाते थे।
  - उन्होंने पालतू जानवरों के रूप में भेड़, बकरियाँ और मवेशियों का पालन किया।
- **मृदभांड:** पूरे नवपाषाण युग के समुदायों ने पहले हाथ से मृदभांड बनाए, फिर कुम्हार के चाक के प्रयोग से। **उनके मृदभांड में चटाई से प्रभावित, ग्रे और काले पॉलिशयुक्त बर्तन शामिल थे।**
  - इसलिये, यह दावा किया जा सकता है कि इस अवधि के दौरान सर्वप्रथम बड़े पैमाने पर मृदभांडों का पहली बार निर्माण हुआ।
- **उत्तर नवपाषाण युग में जब लोग बसने लगे तो आत्मनिर्भर ग्राम समूह उभरने लगे।** उन्होंने मिट्टी और बेंत से बने गोलाकार और आयताकार घरों में निवास किया।
  - इसके अतिरिक्त, **वे कपड़े बुनने, सूत और ऊन कातने और नाव बनाने में कुशल थे।**
- **आयु और लिंग आधारित श्रम विभाजन:** जैसे-जैसे सभ्यता विकसित हुई, यह स्पष्ट हो गया कि अधिक श्रम की आवश्यकता थी, इसलिये अन्य गैर-पारिवारिक समूहों का भी श्रम की आपूर्ति के लिये उपयोग किया गया।

- **नए उपकरण:** नवपाषाण युग के लोगों ने पत्थर के औजार बनाने, पॉलिशदार और पत्थर के औजार जैसी वस्तुओं को बनाने के लिये नई तकनीकें निर्मित की।
    - औजार बनाने के लिये उन्होंने क्वार्टजाइट के अलावा पॉलिश किए हुए पत्थरों का इस्तेमाल किया। सेल्ट्स का उपयोग पॉलिश किए गए और जमीन वाले हैंडक्स के लिये महत्त्वपूर्ण थे।



नोट: उत्तर प्रदेश की बेलन नदी घाटी और मध्य प्रदेश की नर्मदा नदी घाटी के मध्य क्षेत्र में, पाषाण युग के लगातार तीन चरण: पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण निरंतर रूप से पाए गए हैं।

भारत में नवपाषाण संस्कृति

सामान्यतया, नवपाषाण युग खाद्य उत्पादन, चीनी मिट्टी की चीजें और गतिहीन जीवन शैली से संबंधित है। भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले कुछ नवपाषाण लक्षणों को मध्य पाषाण युग में खोजा जा सकता है।

- पालतू जानवरों और पौधों के विकास से शिकार और संग्रहण के अस्तित्व का अंत नहीं हुआ।
- कृषि और पशुपालन में लगे समुदाय ने आमतौर पर शिकार करना और भोजन एकत्रित करना जारी रखा।
- उपमहाद्वीप में भोजन का उत्पादन करने वाले प्रारंभिक उपनिवेशों में एक विविध क्षेत्रीय विविधता और रुपरेखा है।
- खाद्य-उत्पादक नवपाषाण संस्कृति कुछ क्षेत्रों (उदाहरण के लिये, उत्तरी विंध्य) में पूर्व मेसोलिथिक युग से उत्पन्न हुई थी।
    - कुछ क्षेत्रों (जैसे उत्तर-पश्चिम) में कोई मेसोलिथिक चरण नहीं है, और वहाँ की सबसे पुरानी बस्तियाँ नवपाषाण कालीन चरवाहों और कृषकों से संबंधित प्रतीत होती हैं।
- बलूचिस्तान के कई स्थलों से पता चलता है कि कैसे अर्द्ध-खानाबदोश ग्रामीण जीवन ने स्थायी कृषि को बढ़ावा दिया।
- मेहरगढ़ वह स्थान है, जहाँ सबसे पुराना और सबसे व्यापक साक्ष्य प्राप्त हुए है।
- बेलन घाटी, जो कच्ची मैदान के उत्तरी क्षेत्र में है, वह स्थान है जहाँ यह स्थल स्थित है।
- लोगों और जानवरों ने बहुत शुरुआती समय से इस रास्ते पर यात्रा की होगी क्योंकि बेलन घाटी सिंधु के मैदानों और उत्तरी बलूचिस्तान की पहाड़ी घाटियों के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम करती थी।
- हजारों माइक्रोलिथ (छोटे पत्थर के औजार), जिनमें से कई फलक आधारित थे, पत्थर के औजारों का हिस्सा थे।
- कुछ जमीनी नवपाषाण हस्तकुठार (सील्ट) भी खोजे गए। कुछ ब्लेडों पर मोटी कोलतार की परत चढ़ी हुई थी जो ठोस लकड़ी के हत्थे से चिपकी हुई थी, यह दर्शाता है कि उनका उपयोग अनाज काटने वाले दरांती के रूप में किया गया होगा।
- वे अपने घरों के बीच के खुले क्षेत्रों में अपने मृतकों को दफनाते थे।
- शवों को अंडाकार गड्ढों में मुड़ी हुई स्थिति में व्यवस्थित किया जाता था। हड्डियों पर लाल गेरू की उपस्थिति अक्सर प्रजनन संबंधी अनुष्ठानों का किसी-न-किसी रूप में संकेत देती है।
- कब्रों में से एक में एक तांबे का मनका शामिल था। फिरोज और लाजवर्द मोतियों की उपस्थिति विशेष रूप से पेचीदा है।
- कृषि साक्ष्य में छह-पंक्ति वाली जौ और दो-पंक्ति वाली जौ शामिल थी, जो जंगली और घरेलू दोनों प्रकार की थी।
- **स्थानों पर प्राप्त जौ की जंगली, संक्रमणकालीन और स्वदेशी किस्मों की खोज से पता चलता है** कि मेहरगढ़, जो स्वदेशी जौ के एक विशाल क्षेत्र का एक हिस्सा था और उत्तर बलूचिस्तान जंगली जौ के लिये प्राकृतिक आवास क्षेत्र था।
- छिलके वाला इकोर्न गेहूँ, एम्मर गेहूँ, और बेयर गेहूँ के दाने **स्वदेशी** थे।
- **नवपाषाण काल में मेहरगढ़, पशुपालन से शिकार तक के परिवर्तन का ठोस प्रमाण प्रदान करता है।**
- **पालतू बकरियों के भी प्रमाण मिलते हैं,** और भेड़ों एवं मवेशियों के छोटे होते आकार से संकेत मिलता है कि उन जानवरों को भी पालतू बनाया जा रहा था।
- पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के उत्तरी भाग में पोतवार पठार के किनारे पर स्थित **सराय खोला स्थल** चौथी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से नवपाषाण निवास पर प्रकाश डालता है।
- हड्डी के कई टुकडे थे, साथ ही साथ जमीन और पॉलिशदार पत्थर के सिल्ट, ब्लेड और माइक्रोलिथ भी थे। खिलौना गाड़ियाँ और टेराकोटा के पहिए भी खोजे गए थे।
- माइक्रोलिथ, कूबड़ वाले बैल की टेराकोटा मूर्तियाँ, पत्थर से बने मनके, लाजवर्द, खोल और हड्डी से बनी कलाकृतियाँ और कुछ तांबे की वस्तुएँ थी।



- **हरियाणा के फतेहाबाद जिले में, भिराना** हाल ही में खोजा गया एक पुरातात्विक स्थल है। लोग गड्ढेयुक्त घरों में रहते थे जिनका आकार 230 से 340 सेमी. व्यास और 34 से 58 सेमी. गहराई तक होता था। आवासीय गड्ढों के साथ-साथ औद्योगिक गतिविधियों के लिये गड्ढे, बलि और कूड़ा-कचरा भी मिला है।
- **दक्षिणी उत्तर प्रदेश में विंध्य सीमाएँ,** जहाँ बेलन, अदवा, सोन, रिहंद, गंगा, लापारी और पैसुनी नदियों में अन्वेषणों के परिणामस्वरूप 40 से अधिक नवपाषाण स्थलों की खोज की गई है, कृषि-देहाती समाजों का एक और प्रारंभिक केंद्र थे।
  - कोल्डीहवा, महागारा, पचोह और इंदारी सहित कई उत्खनन स्थलों में नवपाषाण स्तर पाए गए हैं।

- **इस क्षेत्र में, एक परिपक्व मेसोलिथिक युग ने नवपाषाण संस्कृति को जन्म दिया।** हालाँकि मवेशियों को पालने और चावल की खेती जैसे महत्त्वपूर्ण नए साक्ष्य भी हैं, जो कुछ मेसोलिथिक विशेषताओं जैसे कि माइक्रोलिथ ब्लेड और भारी पत्थर के औजारों की श्रेणी के विपरीत हैं।
- **कोल्डीहवा और महागरा (दोनों प्रयागराज जिले, यूपी में)।** कोल्डीहवा में नवपाषाण काल से लेकर लौह युग तक की सांस्कृतिक निरंतरता देखी गई। यहाँ नवपाषाण स्तरों पर, जली हुई मिट्टी के टुकड़ों में चावल के अवशेष और चावल की भूसी के निशान पाए गए हैं।
  - तीन प्रकार के मृदभांड सभी हस्तनिर्मित थे और नेट-मार्क या कॉर्ड-मार्क, सादे-लाल और काले तथा लाल संस्करणों में आते थे। सबसे सामान्य आकार गहरे कटोरे और भंडारण जार थे।
- **कुंझुन, मध्य प्रदेश के सीधी जिले में सोन घाटी में है:** यहाँ की नवपाषाणकालीन बस्ती, जो ईसा पूर्व चौथी सहस्राब्दी की है, में जंगली और घरेलू चावल का उत्पादन होता था। ऐसा प्रतीत होता है कि कुंझुन एक कारखाना स्थल रहा होगा जिसकी विशेषज्ञता पत्थर की कलाकृतियाँ बनाने में थी।
- **कश्मीर घाटी में, श्रीनगर के पास और बारामूला और अनंतनाग के बीच कई नवपाषाण स्थल हैं।**
  - **बुर्जहोम, इस क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण उत्खनन स्थलों में से एक,** झेलम नदी के बाढ़ के मैदान के ऊपर करेवा मिट्टी की एक कगार पर स्थित है।



Burnished Globular Jar with Long Neck, Burzahom



Neolithic Stone Tools, Burzahom

- **मिट्टी से प्लास्टर वाले गड्ढे वाले घर बुर्जहोम की विशिष्ट विशेषताओं में से एक हैं।**
  - अधिकांश गड्ढे आकार में गोल या अंडाकार थे, जो आधार के पास चौड़े और शीर्ष पर संकरे थे।
  - **गड्ढों में लकड़ी का कोयला, राख, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े और पत्थर या मिट्टी के चूल्हे थे।**
  - कुछ 1 मीटर गहरे चौकोर और आयताकार गड्ढे वाले कक्ष भी थे।
  - यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि गोल/अंडाकार गड्ढों के कक्ष बस्ती के बाहर खोजे गए थे जबकि वर्गाकार/आयताकार केंद्र में स्थित थे।
  - 60 से 91 सेमी व्यास वाले छोटे भंडारण गड्ढे आवास गड्ढों के बगल में स्थित थे और इसमें पत्थर और हड्डी के साथ-साथ जानवरों की हड्डियों से बने उपकरण थे।
  - बुर्जहोम में अन्य खोजों में सलेटी, लाल, भूरे और बर्फ के रंगों में दस्तकारी, मोटे मिट्टी के बर्तन शामिल हैं।
  - **पत्थर के औजारों में अंडाकार और आयताकार पत्थर की कुल्हाड़ियाँ,** छेनी, नुकीली, पीसने वाले पत्थर, अंगूठी के पत्थर और गदा के सिर शामिल थे।
  - माध्यमिक अंत्येष्टि और अमानवीयकरण दोनों कार्यरत थे। माध्यमिक अंत्येष्टि में हड्डियों पर कभी-कभी लाल गेरू लगाया जाता है। प्राथमिक-अंत्येष्टि के दौरान शव को सीधा कर दिया जाता था।
  - मनुष्यों को कभी-कभी जंगली जानवरों जैसे हिरण, भेड़िया, आइबेक्स, नीलगाय, हिम तेंदुआ और सुअर तथा पालतू जानवरों जैसे मवेशी, भैंस, कुत्ते, भेड़ और बकरी के साथ दफनाया जाता था।
  - मिट्टी के बर्तन कलाकृतियों में से थे, जिनमें से अधिकांश हस्तनिर्मित थे। काले जले हुए मिट्टी के बर्तनों के साथ कुछ नई आकृतियाँ देखी गई हैं जो प्रीमियम वेयर प्रतीत होती थीं।
  - चमकीले रिम, गोलाकार शरीर और आधार के साथ एक **उच्च गर्दन वाला जार** काले जले हुए मिट्टी के बर्तनों में एक पहचानने योग्य प्रकार है।
  - शिकार और मछली पकड़ना बुर्जहोम के नवपाषाण काल के लोगों के जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था।

- तमिलनाडु के तट पर पांडिचेरी के निकट एक अपवाद के आलावा **पेन्नार, कृष्णा, या गोदावरी नदियों के डेल्टा में कोई नवपाषाण स्थल प्रतीत प्राप्त नही हुआ है।**
  - सबसे पुराने नवपाषाण गाँव आमतौर पर दक्षिणी दक्कन के पठार में ढलानों और पठारों पर पाए गये हैं, जहाँ ग्रेनाइट की पहाड़ियों से कपास की काली मिट्टी उपन्न होती है।
  - बुदिहाल उत्खनन से राख के टीलों से सीधे तौर पर जुड़े एक आवास स्थल की उपस्थिति का पता चला है।
- यद्यपि नवपाषाण चरण आमतौर पर निर्वाह-स्तर की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। मेहरगढ़ जैसे स्थलों पर विशेष शिल्प और लंबी दूरी के आदान-प्रदान के प्रमाण हैं। कुंझुन और गणेश्वर काफी अच्छी तरह विकसित शिल्प परंपराओं और स्थल विशेषज्ञता का संकेत देते हैं।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए: (2021)

ऐतिहासिक स्थान : के लिये विख्यात

1. बुर्जहोम : चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर
2. चंद्र-केतुगढ़ : टेराकोटा कला
3. गणेश्वर : तांबे की कलाकृतियाँ

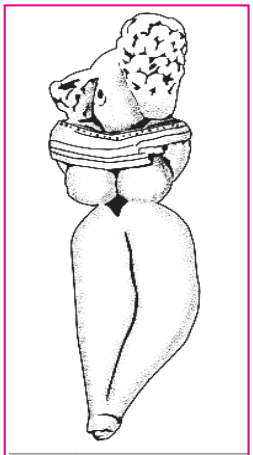
उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(*a*) केवल 1 (*b*) 1 और 2

(*c*) केवल 3 **(*d*) 2 और 3**

प्रारंभिक कृषकों का जीवन:

- **नवपाषाणकालीन समाज को आमतौर पर खाद्य आपूर्ति और जनसंख्या के बीच संतुलन के साथ अपेक्षाकृत आत्मनिर्भर** माना जाता है।
  - वे जिस पर्यावरण क्षेत्र में रहते थे, **उसकी संसाधन क्षमता और उनके अनुकूलन की तकनीकों के आधार पर, समुदायों के विशिष्ट निर्वाह स्वरूप अलग-अलग थे।**
- **विभिन्न उपकरण के प्रकार, चीनी मिट्टी की चीजें और आवास प्रकार विभिन्न शिल्प परंपराओं और जीवन शैली का संकेत देते हैं।**
- **अलग-अलग धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएँ** शवाधान परंपराओं और संभावित महत्वपूर्ण सांस्कृतिक वस्तुओं में परिलक्षित होती हैं।
- **एक उच्च-प्रोटीन आहार जो शुरुआती किसानों की तुलना में शिकारी-संग्राहकों के लिये अधिक विविध, संतुलित और स्वास्थ्यवर्धक था, जिनके आहार में अनाज या मूल फसलों पर ध्यान देने के साथ कार्ब्स में उच्च होने की प्रवृत्ति थी,** पोषण और बीमारी पर आधारित अध्ययनों के अनुसार मानव हड्डियों के विश्लेषण का सुझाव दिया गया है।
  - जो लोग कम सक्रिय थे वे महामारी और संक्रामक रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील थे। यह कुछ शुरुआती कृषि संस्कृतियों के कंकाल अवशेषों में देखे गए रोग के उच्च प्रसार के संदर्भ में कुछ अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।
- **गतिहीन जीवन शैली और कृषि से जुड़े आहार के परिणामस्वरूप गर्भवती महिलाओं पर कम तनाव और माँ एवं बच्चे** के लिये अधिक स्थिर प्रसवोत्तर स्थिति होती थी।
- **उच्चकार्ब डाइट को छोटे जन्म अंतराल से भी जोड़ा गया है।**
- **इन सभी तत्त्वों के योग से जन्म दर में वृद्धि हुई होगी।**
  - निष्क्रिय जीवन शैली छोटे बच्चों और बुजुर्ग व्यक्तियों पर कम तनावपूर्ण होती थी और उनकी **जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हो सकती थी।**
  - इन कारकों के कारण, खाद्य उत्पादन की शुरूआत अंततः जनसंख्या में वृद्धि और समुदायों के भीतर आयु के वितरण में परिवर्तन के रूप में हुई होगी।
- **लोगों के बड़े समूहों को नए सामाजिक मानदंडों और बातचीत के तरीकों को विकसित करना पड़ा होगा,** जब वे बसे हुए समुदायों के सह-अस्तित्व में आने लगे थे, जो शिकारी-संग्रहकर्ताओं के स्तर के बीच देखे जाने वाले लोगों से अलग थे।
- **शुरुआती किसानों और पशुपालकों के समुदायों में आंतरिक आयु और लिंग** भेद किए गए होंगे।
- विभिन्न घरों के आकार और कुछ स्थानों पर कब्र की वस्तुओं की संख्या और क्षमता में भिन्नता **सामाजिक वर्गों के अस्तित्व का संकेत देती है।**



FEMALE FIGURINE, MEHRGARH

सांस्कृतिक और विश्वास प्रणालियों में परिवर्तन:

- जानवरों को पालतू बनाने और पौधों की खेती ने उर्वरता नियंत्रण के जादुई-धार्मिक तरीकों में लोगों की रुचि को बढ़ाया होगा।
- नवपाषाण काल के आरंभिक स्थलों, जैसे कि उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में खोजी गई टेराकोटा की महिला मूर्तियों को मातृ देवी का सामान्य नाम दिया गया है।
- यह देखते हुए कि महिलाओं ने जन्म दिया है, यह काफी संभावना है कि कृषक जनजातियों ने महिलाओं को प्रजनन क्षमता से जोड़ा।
- यह भी बोधगम्य है कि वे उर्वरता देवी के प्रतिरूपों का सम्मान करते थे।
- नवपाषाण या नवपाषाण-ताम्रपाषाण युग में प्रथम जानबूझकर निर्मित, मानकीकृत कब्रें देखने को नहीं मिलती हैं। हालाँकि इनका अधिक प्रचलन था।
  - इस तरह के अंत्येष्टि मृत व्यक्ति के भौतिक अवशेषों के लिये दिए गए महत्व को दर्शाते हैं।
- मेहरगढ़ में, शवों को दफनाने से पहले लाल गेरुए से मलने की प्रथा प्रजनन संस्कार की संभावना को बढ़ाती है।
- बुर्जहोम में इंसानों और जानवरों का एक साथ दफनाना दोनों प्रजातियों के बीच गहरे बंधन को दर्शाता है।
- **विभिन्न वर्गों के लोगों से जुड़ी विभिन्न शवाधान परंपराओं** को सरलीकृत बनाम अधिक अलंकृत कब्रिस्तानों में परिलक्षित देखा जा सकता है।
- शवाधान के सामान में खाद्य पदार्थों की उपस्थिति मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास की ओर इशारा करती है।

ताम्रपाषाण युग/ताम्र-पाषाण युग: 3500ई.पू.-1000ई.पू:

- ताम्रपाषाण युग में पहली बार पत्थर और धातु के औजारों का एक साथ उपयोग किया जाने लगा। **तांबा, उपयोग की जाने वाली पहली धातु थी जबकि कांस्य का भी कभी-कभी उपयोग किया जाता था।**
- **भारत का प्रथम धातु युग** ताम्रपाषाण कालीन युग कहलाता है। इसे पाषाण-ताम्र युग भी कहा जाता था।
- **ताम्रपाषाण कालीन:** चाल्को + लिथिक ग्रीक शब्द "खल्कोस" + "लिथोस" से लिया गया जिसका अर्थ है "तांबा" और "पत्थर" या "ताम्रपाषाण युग"।
- ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियाँ नदी घाटियों में विकसित हुई थीं। **हड़प्पा संस्कृति** को ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति का अंग माना जाता है।
- यद्यपि यह कांस्य हड़प्पा संस्कृति के बाद देश के विभिन्न क्षेत्रों में उभरी। ताम्रपाषाण कालीन चरण आम तौर पर पूर्व-हड़प्पा बस्तियों पर लागू होता है।
- यद्यपि यह कहना संभव है कि अधिकांश ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियां हड़प्पा के बाद की हैं, कुछ हड़प्पा सभ्यता के समकालीन हैं और कुछ पूर्व-हड़प्पा संस्कृतियों के साथ की हैं।
  - पूर्व-हड़प्पा ताम्रपाषाण स्थलों में गणेश्वर जो राजस्थान में खेतड़ी खानों के करीब स्थित है, राजस्थान में कालीबंगा, हरियाणा में बनावली और सिंध (पाकिस्तान) में कोटदीजी शामिल हैं।
- **ताम्रपाषाण कालीन निवासियों ने हिरण और पालतू गायों, भेड़, बकरियों, सूअरों और भैंसों का शिकार किया।**
- वे गोमांस खाते थे लेकिन सुअर को नापसंद करते थे तथा उन्हें घोड़ों का कोई अनुभव नहीं था।
- तथ्य यह है कि पालतू जानवरों के दूध को डेयरी उत्पादों के बजाय खाने के लिये मारा गया, यह विचार करने योग्य है।
- **वे बड़ी स्तर पर झूम कृषि या स्लेश-बर्न तकनीक का उपयोग करते थे।** हालाँकि, इस समय अवधि से किसी भी स्थल से कुदाल या हल प्राप्त नहीं हुआ है।
- **वे विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे, जिनमें सर्वाधिक प्रचलित काले और लाल मिट्टी के बर्तन थे।** इस एक कुम्हार के चाक पर बनाया गया था और एक सफेद रेखीय पैटर्न के साथ चित्रित किया गया था।

ताम्रपाषाण युग के मानव की विशेषताएँ:

- **वे सामान्यत: मिट्टी की ईंटों और फूस से निर्मित इमारतों में रहते थे** तथा पकी हुई ईंटों से अपरिचित थे। उनकी अर्थव्यवस्था समुदाय पर आधारित थी।
- **ताम्रपाषाण युग के लोग लेखन कला से परिचित नहीं थे।**
- **उनकी बस्तियाँ सघन थी,** जिनमें झोपड़ियाँ एक दूसरे के करीब स्थित थी।
- **ताम्रपाषाण काल के लोग अपना भोजन पकाते थे।**

- **ताम्रपाषाण कालीन स्थलों पर पृथ्वी देवी की छोटी मिट्टी की मूर्ति खोजी गई हैं।** इस प्रकार देवी माँ उनके द्वारा पूजनीय थी, ऐसा कहा जाता है।
- **मालवा और राजस्थान से प्राप्त शैलीबद्ध बैल टेराकोटा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बैल संभवतः उनके धार्मिक पंथ** का प्रतीक था।
- ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति में **कुशल ठठेरे या ताम्रकार** विद्यमान थे। वे पत्थर के कुशल राजमिस्त्री थे और ताँबे गलाने की कला से परिचित थे।
- **उन्होंने क्वार्ट्ज क्रिस्टल, कार्नेलियन और सेलखड़ी से बने अर्द्ध-कीमती पत्थर के मनकों का उत्पादन किया।**
- वे कुशल जुलाहे और सूत कातने वाले थे।

भारत में ताम्रपाषाण कालीन स्थानः

दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र, साथ ही साथ दक्षिणी और पूर्वी भारत के अन्य क्षेत्रों में ताम्रपाषाणिक गाँवों की पहचान की गई है।

- मिट्टी के बर्तनों के साथ-साथ अनाज के उत्पादन और खपत में क्षेत्रीय विविधताएँ देखी जा सकती हैं।
- महाराष्ट्र में मृतकों को उत्तर-दक्षिण दिशा में दफनाया गया था, जबकि दक्षिण भारत में उन्हें पूर्व-पश्चिम दिशा में दफनाया गया था। पूर्वी भारत में आंशिक शवाधान प्रचलित था।
- **राजस्थान की बनास घाटी अहर** (गलाने और धातु विज्ञान, पत्थर के घरों) के साथ-साथ गिलुंड (कभी-कभी जली हुई ईंटों का उपयोग) सभ्यता का घर है।
- **नेवासा, जोर्वे (गैर-हड़प्पा संस्कृति), नवदाटोली** (लगभग सभी खाद्यान्न वहाँ उगाए जाते थे), दैमाबाद (गोदावरी घाटी में सबसे बड़ा जोरवे संस्कृति स्थल, जो कांस्य कलाकृतियों की खोज के लिये प्रसिद्ध है), सोनगांव, इनामगांव (भट्टियों वाले बड़े मिट्टी के घर और वृत्ताकार गड्ढे वाले घर) तथा नासिक, महाराष्ट्र अन्य उल्लेखनीय स्थान हैं।
- **नवपाषाण-ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ, जो धातु के उपयोग के साथ नवपाषाण विशेषताओं से सम्बंधित हैं।** 'पूर्ण नवपाषाण' स्थलों (मुख्य रूप से तांबे) की तुलना में बहुत अधिक हैं।
  - अब भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य क्षेत्रों (जैसे राजस्थान) में एक नवपाषाण या यहाँ तक कि नवपाषाण-ताम्रपाषाण चरण का प्रमाण है।
  - भारतीय उपमहाद्वीप (जैसे राजस्थान) के अन्य क्षेत्रों में नवपाषाण या यहाँ तक कि नवपाषाण ताम्रपाषाण चरण के अब बहुत कम प्रमाण उपलब्ध है।
- **राजस्थान, मालवा और उत्तरी दक्कन के क्षेत्रों में,** व्यवस्थित जीवन की शुरुआत नवपाषाण चरण के बजाय ताम्रपाषाण से **संबंधित है।**
- **कई प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का नाम उन स्थानों के नाम पर है जहाँ वे पहली बार पाई गई थी।** कभी-कभी मिट्टी के बर्तनों की शैली एक पुरातात्विक सभ्यता के नाम के रूप में कार्य करती है।
  - तथ्य यह है कि यह एक नैदानिक प्रकार है, जो यह सुझाव नहीं देता है कि यह केवल मिट्टी के बर्तनों का प्रकार है, जो पाया जा सकता है।
- **राजस्थान का दक्षिण-पूर्व क्षेत्र अहर सभ्यता का घर था।**
  - अहर या बनास संस्कृति की पहचान बनास और बेड़च नदी तंत्रों में की गई है जो मोटे तौर पर उदयपुर और जयपुर के मध्य स्थित है।
  - अंगूठियाँ, चूड़ियाँ, सुरमे की छड़ें और एक धारदार चाकू सहित **कई तांबे के सामान मौजूद थे।**
  - तांबे को पिघलाया गया था, जैसा कि तांबे की चादर और कॉपर शीट और धातुमल द्वारा दिखाया गया है।
  - उदयपुर जिले का बालाथल एक महत्त्वपूर्ण आहार संस्कृति स्थल है।
- **पहला स्थान जहाँ गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति की खोज की गई, जोधपुरा था,** जो साहिबी नदी के तट पर स्थित है।
  - स्थानीय स्तर पर मिट्टी के बर्तनों को अक्सर चाक से बनाया गया है तथा इनपर नारंगी से लाल रंग के नक्काशीदार पैटर्न निर्मित किये गये थे।
- **मालवा क्षेत्र में कायथा संस्कृतिः** कायथा उज्जैन जिले में, छोटी काली, सिंध के तट पर स्थित है। काली, सिंध की एक सहायक नदी, जो चंबल नदी की एक सहायक नदी में परिवर्तित हो जाती है, पर स्थित है। इसी के नाम पर इस संस्कृति का नाम रखा गया।
  - कायथा संस्कृति स्थलों से तीन भिन्न किस्मों के मृदभांड प्राप्त हुए हैं। विशिष्ट कायथा मृदभांड ठोस, मजबूत तथा चाक पर निर्मित किये गये हैं।

- **प्रारंभिक हड़प्पा के मिट्टी के बर्तन और कायथा के बर्तन कुछ मायनों में समान हैं** तथा इन दोनों संस्कृतियों में सेलखड़ी द्वारा निर्मित सूक्ष्म-मनकों का समान रूप से उपयोग किया गया है।

- **उत्तर बिहार के जलोढ़ मैदानों में कई नवपाषाण और नवपाषाण-ताम्र पाषाण स्मारक मौजूद हैं।**
  - **चिरांद, सेनुआर,** चेचर-कुतुबपुर, मनेर और ताराडीह पाँच ऐसे स्थान हैं जिनका उत्खनन किया गया है।
  - **नियोलिथिक काल के चिरांद** स्थान से लाल, ग्रे और काले सहित विभिन्न रंगों में मृदभांडों का निर्माण हुआ।
  - एक अन्य **वस्तु लाल और काले बर्तन थे।** कुछ घूर्णिका निर्मित टुकड़ों के बावजूद, अधिकांश मृदभांडों को हाथ से बनाया गया था।
  - चिरांद के नवपाषाण कालीन निवासी मिट्टी के गोल घरों में रहते थे।

ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियाँ	स्थल
आहर संस्कृति	आहर (राजस्थान), बलाथल, गिलुंद आदि, विशिष्ट विशेषता काले और लाल बर्तन हैं।
कायथा संस्कृति	चंबल और उसकी सहायक नदियों में स्थित, चॉकलेट डिजाइन के साथ मजबूत लाल चिकने बर्तन मुख्य विशेषता।
मालवा संस्कृति	गुजरात में नर्मदा और उसकी सहायक नदियाँ सबसे बड़ी ताम्रपाषाण कालीन बस्तियों में से एक।
स्वालदा संस्कृति	महाराष्ट्र का धूलिया जिला।
प्रभास और रंगपुर संस्कृति	ये दोनों हड़प्पा संस्कृति से उत्पन्न संस्कृति हैं। पॉलिशयुक्त लाल बर्तन इस संस्कृति की पहचान हैं।

लौह युग (1000 ई.पू.- 500 ई.पू.)

- ताम्रपाषाण कालीन युग के बाद लौह युग आता है।
- **वेदों में लोहे** का बार-बार उल्लेख मिलता है।
- दक्षिणी प्रायद्वीप का लौह युग अक्सर महापाषाण शवाधानों से संबंधित होता है। मेगालिथ का अर्थ होता है बड़ा पत्थर।
- इन पत्थरों से ढके कब्रगाह दक्षिण भारत में बड़े पैमाने पर पाए जाते हैं।
- **महत्वपूर्ण महापाषाण स्थल:** कर्नाटक में हलूर और मास्की, आंध्र प्रदेश में नागार्जुनकोंडा और तमिलनाडु में आदिच्चनल्लूर।

❖ ❖ ❖

3 हड़प्पा सभ्यता

परिचय

हड़प्पा सभ्यता, जो मेसोपोटामिया और मिस्र सभ्यताओं के समकालीन थी, दक्षिण एशिया की पहली शहरी सभ्यता थी। हड़प्पा सभ्यता, उपरोक्त तीन सभ्यताओं में सबसे बड़ी थी। इसका क्षेत्र लगभग 8,00,000 वर्ग किमी था।

शहरीकरण शहरों के विकास की प्रक्रिया है। यद्यपि "सभ्यता" शब्द अधिक बड़े और अमूर्त विचारों को दर्शाता है, यह वास्तव में मानव संस्कृति के एक विशेष चरण को संदर्भित करता है जो अक्सर लेखन और शहरों से जुड़ा होता है।

- दयाराम साहनी ने 1920 में हड़प्पा में खुदाई का काम शुरू किया और आर. डी. बनर्जी ने 1921 में मोहनजोदड़ो में खुदाई का काम शुरू किया।
- पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक जॉन मार्शल ने आधिकारिक तौर पर 1924 में सिंधु या हड़प्पा सभ्यता की खोज की घोषणा की।
- सिंधु घाटी और उसकी सहायक नदियाँ हैं, जहाँ पुरातत्वविदों को प्राचीन सभ्यता के पहले अवशेष मिले हैं। परिणामस्वरूप इसे "सिंधु सभ्यता" या "सिंधु घाटी सभ्यता" कहा गया।
- वर्तमान में लगभग 1,022 हड़प्पा स्थल हैं, जिनमें से 406 पाकिस्तान में हैं और 616 भारत में हैं। अभी तक इनमें से केवल 97 स्थल पर खुदाई की जा सकी है।
- सभ्यता के व्यापक भौगोलिक दायरे को देखते हुए "सिंधु" या "सिंधु घाटी" सभ्यता के नाम का विरोधाभास स्पष्ट होना चाहिए।
  - कुछ शिक्षाविद "सिंधु-सरस्वती" या "सिंधु-सरस्वती" सभ्यता शब्द का भी उपयोग करते हैं।
  - यह इस तथ्य के कारण है कि ये स्थल घग्घर-हकरा नदी के किनारे स्थित हैं, जिसे कुछ शिक्षाविद ऋग्वेद में संदर्भित प्राचीन सरस्वती नदी मानते हैं।

किसी स्थल को हड़प्पा सभ्यता स्थल के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए जाँच सूची

- पारंपरिक हड़प्पा मृद्भाण्डों के रूपों और विषयों में एक सीमित विविधता होती है। ये लाल रंग के होते हैं और उन पर काले रंग के डिजाइन चित्रित होते हैं।
- टेराकोटा ईंट, जो अक्सर त्रिकोणीय होते हैं, लेकिन कभी-कभी गोल हो सकते हैं और जिनका सटीक उपयोग अज्ञात है। 1: 2: 4 अनुपात में एक समान ईंट का आकार और विशिष्ट प्रकार के पत्थर और तांबे की कलाकृतियाँ सभ्यता से जुड़ी अतिरिक्त भौतिक विशेषताएँ हैं।
- किसी स्थल को हड़प्पाकालीन स्थल के रूप में संदर्भित किया जाता है जब हड़प्पाकालीन भौतिक विशेषताओं के मुख्य समूह को एक दूसरे से जुड़ा हुआ पाया जाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता: भूगोल, प्रसिद्ध स्थल और पुरातात्विक खोज

स्थल	विशेषताएं
हड़प्पा: खोजा जाने वाला पहला पुरातात्विक स्थल	• **देश:** पाकिस्तान (पंजाब) • **नदी:** रावी • **उत्खननकर्ता:** दयाराम साहनी (1921) • **खोज:** अन्न भंडार, लाल बलुआ पत्थर निर्मित नर का धड़, लिंगम और योनी के पत्थर के प्रतीक, चित्रित मिट्टी के बर्तन, मातृदेवी, पासा।
मोहनजोदड़ो	• **देश:** पाकिस्तान (सिंध) मोहन जोदड़ो के पास • **नदी:** सिंधु • **उत्खननकर्ता:** आर.डी. बनर्जी (1922), ई. मैके, काशीनाथ दीक्षित, सर जॉन मार्शल (1930) • **निष्कर्ष:** सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल, अंतिम संस्कार के बाद दफन, बड़े अन्न भंडार, बड़े स्नानागार (सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत), पशुपति और देवी मां, नृत्य करने वाली लड़की की कांस्य प्रतिमा के साथ मोहरें।

चन्हुदड़ो	• **देश:** पाकिस्तान (सिंध), मोहनजोदड़ो के पास • **नदी:** सिंधु • **उत्खननकर्ता:** एनजी मजूमदार (1931) और ई. मैके • **खोज:** दवात, लिपस्टिक, धातु श्रमिक, शंख-आभूषण निर्माता और मनका बनाने का कारखाना, ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप, बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल, कांस्य खिलौना गड़ी।
लोथल	• **राज्य:** गुजरात (अहमदाबाद जिला, खंभात की खाड़ी के मुहाने पर) • **नदी:** भोगवा और साबरमती नदी का संगम • **उत्खननकर्ता:** 1953 में एस राव। • **खोज:** महत्वपूर्ण नौसैनिक व्यापार स्थल, श्मशान स्थल, डॉकयार्ड, अन्न भंडार, चावल की भूसी, डबल दफन (पुरुष महिला एक साथ) आदि
धोलावीरा	• **राज्य:** गुजरात • **नदी:** लूणी • **उत्खननकर्ता:** 1985 में आर बिष्ट (संदर्भ एनसीईआरटी); नोट: कुछ पुस्तकों में जेपी जोशी (1990-91) का उल्लेख है। • **खोज:** अद्वितीय जल संचयन प्रणाली और इसकी जल निकासी प्रणाली, 3 भागों में विभाजित एकमात्र स्थल, पुरापाषाणकालीन पत्थर का घेरा, विशाल जलाशय आदि।
सुरकोटदा	• **राज्य:** गुजरात • **उत्खननकर्ता :** जेपी जोशी (1964) • **खोज:** एकमात्र स्थल जहां घोड़े की हड्डियां, अंडाकार कब्र, दफन बर्तन, पॉटशर्ड पर सैनिकों के हस्ताक्षर पाए गए हैं।
कालीबंगा (काली चूड़ियाँ)	• **राज्य:** राजस्थान • **नदी:** घग्गर • **उत्खननकर्ता:** अमलानंद घोष (1953), डॉ. बी.बी. लाल और बी.के. थापर (1961) • **खोज:** चूड़ी का कारखाना, जुते हुए खेत की सतह, ऊँट की हड्डियाँ, आग की वेदी।
बनावली	• **राज्य:** हरियाणा • **नदी:** घग्गर • **उत्खननकर्ता:** आरएस बिष्ट (1973-74) • **खोज:** अंडाकार आकार की बस्ती, व्यवस्थित जल निकासी प्रणाली का अभाव, जौ के दाने, लापीस लाजुली, अग्नि वेदी, घुमावदार सड़कों वाला एकमात्र शहर; पूर्व-हड़प्पा, विकसित हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा सभ्यता का केंद्र।
रोपड़	• **राज्य:** पंजाब • **नदी:** सतलज • **उत्खननकर्ता:** वाई डी शर्मा (1955-56) • **खोज:** अंडाकार गड्ढे में मानव के साथ कुत्ते को दफनाया गया, तांबे की कुल्हाड़ी, आजादी के बाद खुदाई वाला पहला स्थल
राखीगढ़ी	• **राज्य:** हरियाणा • **खोज:** सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा भारतीय स्थल। अन्न भंडार, कब्रिस्तान, नालियां, टेराकोटा की ईंटें। हड़प्पा संस्कृति के तीनों चरणों को दर्शाता है।

रंगपुर	• **राज्य:** गुजरात (लोथल के पास) • **नदी:** मदार नदी • **उत्खननकर्ता:** एम. एस. वत्स (1931) एस.आर. राव (1953-54) • **खोज:** पूर्व-हड़प्पा और विकसित हड़प्पा संस्कृति दोनों के अवशेष; पूर्व हड़प्पा के लोगों के पीले और भूरे रंग के बर्तन।
आलमगीरपुर	• **राज्य:** उत्तर प्रदेश • **नदी:** हिंडन • **उत्खननकर्ता:** वाई डी शर्मा (1958) • **खोज:** टूटा हुआ तांबे का ब्लेड, चीनी मिट्टी की वस्तुएं और द्रोणी पर कपड़े की छाप।
दैमाबाद	• **राज्य:** महाराष्ट्र • **नदी:** प्रवरा • **उत्खननकर्ता:** वाई डी शर्मा (1958) • **खोज:** कांस्य चित्र (रथ, बैल, हाथी और गैंडे के साथ सारथी)
कोट दीजी	• **राज्य:** सिंध (पाकिस्तान) • **नदी:** सिंध • **उत्खननकर्ता:** घुरे (1835) फजल अहमद (1955) • **खोज:** कांस्य चित्र (रथ, बैल, हाथी और गैंडे के साथ सारथी)
अमरी	• **राज्य:** सिंध (पाकिस्तान) • **नदी:** सिंध • **उत्खननकर्ता:** घुरे (1835) फजल अहमद (1955) • **खोज:** पूर्व-हड़प्पा समझौता; पूर्व और हड़प्पा संस्कृति के बीच संक्रमणकालीन संस्कृति, गैंडों के वास्तविक अवशेष, उत्तर हड़प्पा अग्नि वेदियों में झंगर संस्कृति के निशान।
सुतकांगेडोर	• **राज्य:** सिंध (पाकिस्तान) • **नदी:** दश्त/धदशक नदी • **उत्खननकर्ता:** ए स्टीन, जॉर्ज डेल्स • **खोज:** राख से भरा बर्तन, तांबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी की चूड़ियाँ और मिट्टी के बर्तन, मूल रूप से बंदरगाह लेकिन बाद में तटीय उत्थान के कारण समुद्र से कट गया, बेबीलोन के साथ व्यापारिक संबंध थे।

प्रारंभिक, विकसित और उत्तर हड़प्पा चरण के बीच संबंध

प्रारंभिक हड़प्पा, विकसित हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा चरणों ने हड़प्पा संस्कृति को बनाने वाली लंबी और जटिल सांस्कृतिक प्रक्रिया का निर्माण किया।

1. **संस्कृति का प्रारंभिक, प्रोटो-शहरी युग प्रारंभिक हड़प्पा काल था।**
    - इसे कभी-कभी क्षेत्रीयकरण युग के रूप में जाना जाता है। इसका संबंध हकरा बस्तियों के चरण से है, जो उनके किलेबंदी, विशेष शिल्प जैसे पत्थर के काम, मनके बनाने और धातु के काम में काफी मात्रा में कौशल, पहिएदार परिवहन के उपयोग और व्यापार नेटवर्क की उपस्थिति से पहचाने जाते हैं।
    - इसमें बड़े शहरों का अभाव था जो उन्नत हड़प्पा चरण की विशेषता थी, साथ ही साथ शिल्प विशेषज्ञता में दक्षता का स्तर भी।
    - गुजरात में पादरी, राजस्थान में कालीबंगन, कच्छ में धोलावीरा, पश्चिम पंजाब में हड़प्पा, हरियाणा में बालाकोट, आमरी और भिर्राना, कोटदीजी और गुमला कुछ शुरुआती हड़प्पा पुरातात्विक स्थल हैं।

सभ्यता का पूर्ण विकसित स्तर, शहरी चरण, विकसित हड़प्पा युग की विशेषता है।

- हड़प्पा सभ्यता का शहरी चरण, जिसे विकसित हड़प्पा चरण या एकीकरण युग के रूप में जाना जाता है, ने पूरी तरह से विकसित सभ्यता के लक्षणों का प्रदर्शन किया।
- **सांस्कृतिक अभिसरण:** इस तथ्य के साथ कि विकसित हड़प्पा संस्कृति के कुछ पहलू प्रारंभिक हड़प्पा काल में पहले से ही मौजूद थे। क्षेत्रीय परंपराओं की एक श्रृंखला से सांस्कृतिक एकरूपता के एक प्रगतिशील बदलाव जो सभी क्षेत्रें में स्पष्ट है।
- जेद या हरिताश्म के अपवाद के साथ विकसित हड़प्पा काल में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल की तुलना शुरुआती हड़प्पा शहरों में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल से की जा सकती है, जिसकी खोज नहीं की गई है।

उत्तर हड़प्पा काल के उत्तर-शहरी चरण ने शहरों के पतन को चिह्नित किया।

- उत्तर हड़प्पा चरण, जिसे स्थानीयकरण युग के रूप में भी जाना जाता है, हड़प्पा सभ्यता का अंतिम चरण था और शहरों के पतन इसकी विशेषता थी।
- पश्चिम पंजाब चरण (कब्रिस्तान-एच संस्कृति), पूर्वी पंजाब चरण, झूकर चरण, रंगपुर चरण, और गंगा यमुना दोआब चरण पांच भौगोलिक क्षेत्र हैं जो उत्तर हड़प्पा चरण बनाते हैं। विकसित हड़प्पा बस्तियों की तुलना में, उत्तर हड़प्पा गाँव मामूली थे।
- हालांकि वे छोटे और अधिक ग्रामीण और अधिक संख्या में थे, फिर भी उत्तर हड़प्पा समुदायों की विशेषता व्यापक कृषि आधाार की थी।
- मामूली विविधाताओं के बावजूद हड़प्पा सभ्यता के सभी चरणों में एक स्पष्ट सांस्कृतिक निरंतरता है।

विकसित हड़प्पा बस्तियों की सामान्य विशेषताएं

हालांकि हड़प्पा संस्कृति काफी हद तक शहरी थी, लेकिन इसकी सभी बस्तियों में यह विशेषता नहीं थी। वास्तव में, अधिकांश गांव थे। गांवों ने शहरों को भोजन और संभवत: श्रम प्रदान किया, और महानगरों में निर्मित विभिन्न प्रकार की चीजें गांवों में पहुंच गईं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रें के बीच सक्रिय संपर्क के परिणामस्वरूप हड़प्पाई कलाकृतियों की विशिष्ट विविधता छोटे ग्रामीण स्थलों तक भी पहुँची।

- **बस्तियों के विविध आकार:** हड़प्पा स्थलों के आकार और कार्य में काफी भिन्नता थी, जिनमें बड़े शहरों से लेकर साधारण देहाती बस्तियां शामिल थीं।
  - मोहनजोदड़ो (200 हेक्टेयर से अधिक), हड़प्पा (150 हेक्टेयर से अधिक), गनवेरीवाला (81.5 हेक्टेयर से अधिक), राखीगढ़ी (80 हेक्टेयर से अधिक), और धोलावीरा सबसे बड़ी बस्तियों (लगभग 100 हेक्टेयर) में से हैं।
- **सड़कों की ग्रिड प्रणाली:** लंबे समय से यह माना जाता था कि हड़प्पा के शहरों में सड़कों और घरों का निर्माण एक ग्रिड योजना में किया गया था जो उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम की ओर उन्मुख थी।
  - हड़प्पा के शहरों में, सड़कें हमेशा बिल्कुल सीधी नहीं होती थीं और वे हमेशा समकोण पर नहीं मिलती थीं।
  - लेकिन यह स्पष्ट है कि बस्तियों की योजना बनाई गई थी। एक कस्बे का आकार और नियोजन का स्तर सीधे तौर पर संबंधित नहीं थे।
  - उदाहरण के लिए, कालीबंगन की तुलना में, जो दो गुना बड़ा है, लोथल का तुलनात्मक रूप से छोटा स्थल योजना के बेहतर स्तर को प्रदर्शित करता है।
- बस्ती को मुख्य सड़क द्वारा आयताकार और वर्गाकार खंडों के बीच विभाजित किया गया था, जो दस मीटर चौड़ी थी।
- दो भागों में शहरों का विभाजन: हड़प्पा शहर को आम तौर पर दो वर्गों में विभाजित किया गया था। गढ़ या उठा हुआ भाग, जो छोटा था और आमतौर पर शहर के पश्चिम में स्थित था।
  - यहाँ नगर के शासक निवास करते थे। इसमें महत्वपूर्ण कार्यशालाएँ, अन्न भंडार और सार्वजनिक भवन भी थे।
  - निचला भाग - शहर का यह क्षेत्र वह है जहाँ अधिकांश आबादी निवास करती थी और काम करती थी।
- **लैम्पपोस्ट:** लैम्पपोस्टों को रास्ते के किनारे-किनारे रखा गया था।
- **ईंटों का आकार एक अनुपात में था:** उन्होंने उच्च गुणवत्ता वाली पकी हुई ईंटों का उपयोग किया था और इस विशेष ईंट में सभी हड़प्पा संरचनाओं में समान मोटाई: चौड़ाई: लंबाई अनुपात होने का विलक्षण गुण था, जो 1:2:4 था।
  - ईंट के आकार की स्थिरता, जो शहर की दीवारों के लिए औसतन $10 \times 20 \times 40$ सेमी और घरों के लिए $7 \times 14 \times 28$ सेमी. थी, भी चौंकाने वाली थी।
  - तथ्य यह है कि मोहनजोदड़ो में कुछ घर की दीवारें 5 मीटर की ऊंचाई तक हैं, जो ईंटों की ताकत और हड़प्पावासियों के ईंट-बिछाने के कौशल को दर्शाती हैं।

- घर आकार में भिन्न थे और मुख्य रूप से एक केंद्रीय प्रांगण के चारों ओर समूहित कमरों से बने थे। दरवाजे और खिड़कियां शायद ही कभी मुख्य सड़कों पर खुलती थी और आम तौर पर गली में खुलती थीं।
  - एक दीवार ने गली से आंगन में देखने को अस्पष्ट कर दिया था।
- घरों में लकड़ी के दरवाजे और खिड़कियां और साथ ही कालीन भी थे। यह मिट्टी के घर के मॉडल से देखा जा सकता है कि दरवाजे पर कभी-कभी बुनियादी नक्काशी या पेंटिंग होते थे।
  - अमीर शहर के लोगों के लिए काम करने वाले सेवा समूहों के घर बड़े घरों के निकट छोटे निवास हो सकते हैं।
- बहुत सारे आवासों या घरों के समूह में अलग-अलग स्नानघर और शौचालय थे। एक कुएँ के पास के कमरों में, नालियों के साथ नहाने के चबूतरे अक्सर पाए जाते थे।
  - आमतौर पर, स्नान क्षेत्र के फर्श को बनाने के लिए कसकर फिट की गई ईंटों का उपयोग किया जाता था। उचित रूप से ढलान वाली, जलरोधी सतह बनाने के लिए इन ईंटों को अक्सर किनारों पर रखा जाता था।
  - यहां एक छोटा नाला था जो घर की दीवार को काटकर गली में निकलकर बड़ा सीवर नाला बन जाता था।
- **सुनियोजित जल निकासी व्यवस्था:** रख-रखाव में आसानी के लिए, ईंटों के बड़े-बड़े स्लैब नालों को ढक देते थे, जिनका निर्माण मोर्टार, चूने और जिप्सम से किया जाता था।
  - मुख्य नालियों को ईंट या पत्थर की पटियों से बने नुकीले मेहराबों पर टिकाया जाता था। नियमित अन्तराल पर ठोस अपशिष्ट एकत्र करने के लिए आयताकार सोख-गढ्ढा होते थे।
- यह संभव है कि अनेक बार स्नान करने का भी कोई कर्मकांड या धार्मिक तत्व हो। नदियों, कुओं, और जलाशयों या गढ्ढों का उपयोंग पानी के स्रोतों के रूप में किया जाता था।
  - मोहनजोदड़ो बहुत सारे कुओं के लिए प्रसिद् है। हड़प्पा में बहुत कम संख्या में कुएँ थे, लेकिन शहर के केंद्र में एक गढ्ढा, तालाब या जलाशय हो सकता है जो शहर के निवासियों को पानी उपलब्ध कराता था।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

1. सिंधु घाटी सभ्यता की शहरी योजना और संस्कृति ने किस हद तक वर्तमान शहरीकरण को इनपुट प्रदान किया है? चर्चा कीजिए। (2014)

हड़प्पा शिल्प और तकनीक

- हड़प्पा स्थलों पर मानकीकृत, बड़े पैमाने पर उत्पादित हस्तशिल्प की एक विस्तृत विविधता है। जबकि कुछ स्थलों पर या तो एक या बहुत कम संख्या में उत्पादों का उत्पादन होता था। जैसे हड़प्पा, ने बड़ी मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन किया।
- टेराकोटा और ईंटों सहित मिट्टी को पकाकर बनाए गए सभी उत्पादों को सिरेमिक से बना हुआ माना जाता है।
- हड़प्पा के मृद्भाण्ड प्रभावी सामूहिक निर्माण कार्य को दर्शाते हैं। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, नौशारो और चन्हुदड़ो सभी में मृद्भाण डों के भटट्यिां होती थी।
  - बर्तनों को कीप के आकार के अप-ड्राफ्ट बंद भटट्यिां में पकाया जाता था। हालांकि यह संभव है कि खुली भटट्यिां भी हो।
  - सिरेमिक की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है जिसमें लाल और काले रंग, धूसर, बफ और बर्तन शामिल हैं।
  - अधिकांश बर्तन एक चाक पर बनाए जाते थे। कपड़े महीन या मोटे हो सकते हैं और उनकी मोटाई अलग-अलग होती है।
  - पॉलीक्रोम पेंटिंग दुर्लभ है।
  - कुछ डिजाइनें, जैसे कि पीपल के पत्ते, मछली के तराजू और एक दूसरे को काटते हुए छल्ले, प्रारंभिक हड़प्पा काल के हैं। मानव आकृतियाँ असामान्य और आदिम हैं।
- शायद बड़े मर्तबानों में अनाज या पानी रखा जाता था। सबसे अलंकृत चित्रित बर्तन अनुष्ठानों में उपयोग किए गए होंगे या धनी व्यक्तियों के पास होते थे। छोटे बर्तन, पानी या अन्य तरल पदार्थ पीने के गिलास के रूप में काम कर सकते थे।
  - हड़प्पावासी मिट्टी के बर्तनों के अलावा धातु के बर्तनों का उत्पादन और उपयोग करते थे।
- हड़प्पा स्थलों पर टेराकोटा बहुतायत में पाए गए हैं।
- मूर्तियों में बैल, भैंस, बंदर और कुत्ते सहित जानवर शामिल हैं।
  - मजबूत पहियों वाली खिलौना गाड़ियाँ भी मिली हैं।
- नर मूर्तियाँ और विभिन्न किस्मों की महिला मूर्तियाँ मानव मूर्ति श्रेणियो को बनाती हैं।
- टेराकोटा कंगन हड़प्पा के कारीगरों के एक अन्य उत्पाद थे। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा दोनों ने ही टेराकोटा के मुखौटे मिले हैं।
- हड़प्पावासियों ने कंगन, अंगूठियां, पेंडेंट और मूर्तियों (बंदरों और गिलहरियों सहित) जैसे अलंकृत आभूषणों का निर्माण किया।

- पत्थर की चूड़ियाँ, जो कठोर, क्रिमसन कंगन हैं, हड़प्पा का एक और विशिष्ट कौशल थीं।
  - इन पर आमतौर पर छोटे अक्षर लिखे होते थे और 5.5-6 सेमी. के आंतरिक व्यास के साथ अत्यधिक पके हुए क्रिमसन या धूसर-काले रंग होते थे।
- एक और महत्वपूर्ण शिल्प पत्थर का काम था। नुकीले किनारे वाली तकनीक का उपयोग करके बड़े पैमाने पर उत्पादित चर्ट ब्लेड सभी हड़प्पा स्थलों पर आम रूप से पाए गए हैं।
  - इनमें से कुछ का प्रयोग रसोई के चाकू के रूप में किया गया होगा, जबकि अन्य का प्रयोग दरांती के रूप में हुआ होगा।
- हड़प्पा संस्कृति में तांबे की कलाकृतियों की प्रचुरता है।
  - हड़प्पा के कारीगरों ने शुद्ध तांबे को शिल्पकृतियों में गढ़ने के अलावा, ताँबे को आर्सेनिक, टिन, या निकेल के साथ मिश्रित भी किया।
  - हड़प्पा में सोलह तांबे की भट्टियां मिलीं और लोथल में तांबे की कार्यशालाएं मिलीं।
- यह स्पष्ट है कि धातु की चीजों को महत्व दिया जाता था क्योंकि उनके मालिक उन्हें सुरक्षित रखने के लिए जमीन में गाड़ देते थे।
  - हार, कंगन, ब्रोच, पेंडेंट और कान की बाली सहित उत्कृष्ट रूप से तैयार किए गए सोने और चांदी के आभूषण पाए गए हैं।
- हड़प्पावासियों द्वारा डब्बे बनाने के लिए चांदी का उपयोग करके शंखों को उकेरा गया था।
  - प्लंब बॉब्स और तांबे की ढलाई दोनों में सीसे का इस्तेमाल किया गया है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि लोथल में खोजी गई दो धातु वस्तुओं में क्रमशः 39.1% और 66.11% लोहा मिला है।
- पत्थर और धातु की उपयोगितावादी वस्तुओं के अलावा हड़प्पा स्थलों पर कुछ पत्थर और धातु की मूर्तियां भी मिली हैं।
- इनमें पुरूष की पत्थर की मूर्ति (17.78 सेमी ऊंची) शामिल है जिसे "पुजारी-राजा" के रूप में जाना जाता है। इसे मोहनजोदड़ो में खोजा गया था। हड़प्पा में, एक पुरुष मूर्ति (लगभग 10 सेंटीमीटर ऊँचे) के दो एकल पत्थर के धड़ खोजे गए थे।
  - मोहनजोदड़ो में दो कांस्य महिला मूर्तियां मिलीं। उनमें से एक 'नृत्य करती हुई लड़की' के नाम से मशहूर हो चुकी हैं। इसे लॉस्ट-मोम विधि द्वारा बनाया गया था।
- एक महत्वपूर्ण हड़प्पा शिल्प मुहर निर्माण था। अधिकांश मुहरें आयताकार या चौकोर आकार की होती हैं।
  - वर्गाकार मुहरों का आकार 2.54 से 6.35 सेमी तक होता है, जिनमें से कुछ थोड़ी बड़ी होती हैं।
- कुछ गोलाकार और बेलनाकार मुहरें भी खोजी गई हैं।
  - अधिकांश मुहरें सेलखड़ी से बनी होती हैं, जबकि कई चांदी, फैयेंस और केल्साइट से भी बनी होती हैं।
  - मोहनजोदड़ो में, दो पालिश की हुई चांदी के गेंडा-थीम वाली मुहरें मिली हैं और तांबे तथा सेलखड़ी से बनी अन्य मुहरें लोथल में मिलीं हैं।
- हाथी, बाघ, मृग, मगरमच्छ, खरगोश, कूबड़ वाला बैल, भैंस, गैंडा, और एक सींग वाला गेंडा-एक पौराणिक प्राणी - बनाए गए खिलौनों में से हैं।
- मनके बनाना भी एक महत्वपूर्ण शिल्प था। मोती बनाने के लिए सुलेमानी और कार्नेलियन जैसे कीमती और कम कीमती पत्थरों का इस्तेमाल किया जाता था। मनके सेलखड़ी से बनाए जाते थे।
- चन्हुदड़ो और लोथल में, उपकरण, भट्टियों और तैयारी के विभिन्न चरणों में मोतियों के साथ मनका निर्माण सुविधाओं की खोज की गई है।
  - इस बात के प्रमाण मिले हैं कि गुजरात के बगसरा में अर्ध-कीमती पत्थरों से बने मनके, फेनेंस और शंख कला का उत्पादन किया जाता था।
- सीप के काम में दक्ष कारीगरों का प्रमाण सीप से बने मोतियों, कंगनों और अलंकृत जड़ाऊ काम से मिलता है।
  - शंख का उपयोग अक्सर कंगन बनाने के लिए किया जाता था। चन्हुदड़ो और बालाकोट दोनों ही महत्वपूर्ण शंख और सीप कारीगरी के केंद्र थे।
- हड़प्पा में सूती धागे मिले थे। हड़प्पावासियों द्वारा ऊन और सूती वस्त्रों का उत्पादन किया जाता था। लोगों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों के प्रकार जो वस्त्रों (शॉल, स्कर्ट, आदि) में पहने जाते हैं, टेराकोटा मूर्तियों में परिलक्षित होते हैं।
- मेसोपोटामिया के लेखों में कपास का उल्लेख मेलुहा (एक क्षेत्र जिसमें सिंधु घाटी शामिल है) से आयात के रूप में किया गया है। मोहनजोदड़ो में सूती कपड़े के अवशेष मिले हैं।

हड़प्पा सभ्यता की मुहरों और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध

हड़प्पा अर्थव्यवस्था के बारे में निष्कर्ष इसके पड़ोसी फारसी और मेसोपोटामिया सभ्यताओं के साथ इसके फलते-फूलते व्यापारिक संबंधों से निकाले गए हैं।

- सिंधु क्षेत्र मेसोपोटामिया के लोगों द्वारा मेलुहा के नाम से जाना जाता था। मेसोपोटामिया के लेखन में तीन मध्यस्थ व्यापारिक स्थानों का उल्लेख है।
  - वे दिलमुन, माकन और मेलुहा हैं। दिलमुन फारस की खाड़ी में स्थित बहरीन के सबसे निकट है। माकन संभवतः ओमान में मकरान तट है।
- हड़प्पा संस्कृति में मुहरों का विशेष महत्व है। प्रत्येक व्यापारी के पास संभवतः एक नाम या एक तरु एक संक्षिप्त विवरण और एक प्रतीक के साथ एक मुहर होती थी, जो अक्सर एक धार्मिक व्यक्ति की होती थी।

हड़प्पा के व्यापारिक नेटवर्क और अर्थव्यवस्था के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं:

- वे घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों तरह के व्यापार में लगे हुए थे।
- वस्तु विनिमय, विनिमय का प्राथमिक रूप था क्योंकि धातु मुद्रा का कोई उपयोग नहीं होता था।
- अंतर्देशीय परिवहन के लिए ज्यादातर बैलगाड़ियों का उपयोग किया जाता था। हड़प्पा सभ्यता की मुहरें मेसोपोटामिया के उर और सुसा जैसे स्थलों से मिली हैं।
- निप्पुर में एक यूनिकॉर्न और हड़प्पा लेखन के साथ एक मुहर की खोज की गई है।
- हड़प्पाई मुहरों को हाल ही में बहरीन और फैलका समेत कई प्राचीन फारस की खाड़ी के स्थानों पर खोजा गया है।
- मोहनजोदड़ो में मेसोपोटामिया प्रकार की तीन सिलेंडर वाली मुहरें पाई गई हैं, जो उनके व्यापार संबंधों को उजागर करते हैं।
- लोथल में एक बटन मुहर मिली है।
- चन्हुदड़ो और लोथल में मनके बनाने के कारखाने थे।
- इन कारखानों में निर्यात योग्य वस्तुओं का उत्पादन होता था।
- रंगपुर, सोमनाथ और बालाकोट में बंदरगाहों की खोज की गई है और लोथल में एक गोदी की खुदाई की गई है।
- ओमान प्रायद्वीप हड़प्पावासियों का व्यापारिक भागीदार था। उम्म-ए-नर में, हड़प्पा-शैली के उत्कीर्णन के साथ एक कार्नेलियन मनका खोजा गया था। कुछ अन्य प्रकार की चीजों (वजन आदि) और हड़प्पा सभ्यता की कलाकृतियों में समानताएं पाई गयी हैं।

हड़प्पा नगरों द्वारा आयात

- **लापीस लाजुली संभवतः** अफगानिस्तान से हड़प्पा में लंबी दूरी से आयात किए जाने वाले स्थलों से एक था।
- टिन मध्य एशियाई फरगना और पूर्वी काजाकिस्तान में पाया गया है।
- मोहनजोदड़ो में नक्काशीदार क्लोराइट और हरे शिस्ट जहाजों के कुछ टुकड़े, जो पश्चिम एशिया और फारस की खाड़ी में एक आम व्यापार वस्तु थे, की खोज की गई है।
  - ये बलूचिस्तान या दक्षिणी ईरान से आए होंगे। हड़प्पा के संदर्भ में, बहुत कम पश्चिम एशियाई शिल्पकृतियाँ पाई गई हैं।
- लोथल में फारस की खाड़ी की तरह की मुहर की खोज की गई थी।
- हड़प्पावासियों को मेसोपोटामिया के निर्यात में कपड़े, ऊन, इत्र, चमड़े के सामान और चांदी जैसी चीजें शामिल थीं।

लेखन की प्रकृति और उपयोग

- हड़प्पावासी किस भाषा (या भाषाओं) का इस्तेमाल करते थे और उनकी लेखन प्रणाली उनकी संस्कृति के बारे में दो प्रमुख अनसुलझे प्रश्न हैं।
- यह संभावना है कि हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न क्षेत्रों के निवासियों द्वारा कई भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती थीं।
- ऐसी संभावना सबसे अधिक है कि मुहरों पर शिलालेख कुलीन वर्ग की भाषा में लिखा गया था।
- अधिकांश लेखन मुहरों और मुहरों की छाप पर पाया जाता है, लेकिन तांबे की गोलियों, तांबे/कांस्य के औजारों, मिट्टी के पात्र और अन्य याद्धच्छिक वस्तुओं पर भी लिखा गया है।
- अधिकांश शिलालेख काफी संक्षिप्त हैं, औसतन पाँच संकेत प्राप्त होते हैं। सबसे लंबा 26 चिन्हों वाला है। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि लिपि में समय के साथ कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है और ऐसा लगता है कि यह पूरी तरह से विकसित अवस्था में उभरी है।
- लिपि प्रतीक - शब्दांश है, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक प्रतीक एक शब्द या शब्दांश के लिए है। 400-450 मूल संकेत हैं।
  - सामान्य तौर पर, यह बाएं से दाएं पढ़ने के लिए लिखे गये थे।
  - हालाँकि, कुछ मामले ऐसे हैं जहाँ बाएँ से दाएँ लेखन का उपयोग किया जाता है।
  - कभी-कभी कई पंक्तियों के साथ लंबे शिलालेख बोस्ट्रोफेडन या सर्पलेखन तरीके से लिखे गए थे, जिसमें नीचे वाली पंक्तियाँ विपरीत दिशाओं में शुरू होती हैं।
- धोलावीरा में "साइनबोर्ड" शहरी साक्षरता के उच्च स्तर का दर्शाता हो सकता है और नहीं भी, लेकिन यह नागरिक लेखन का प्रतिनिधित्व करता है।

- हड़प्पा लेखन जो बच गई है, शायद अत्यंत साधारण है और लोगों ने नष्ट होने वाली वस्तुओं पर भी लिखा है।

हड़प्पा सभ्यता के दौरान तोलन और मापन

- हड़प्पा संस्कृति में वजन और माप की सटीकता और मानकीकरण असाधारण थे।
- उसके बाद छोटे मूल्यवर्ग (1, 2, 8, 16, 32, 64) के लिए एक द्विआधारी प्रणाली और 160 (160, 320, 640, 1600, 3200, आदि) के गुणकों के लिए एक दशमलव प्रणाली का उपयोग करके वजन मापा जाता था।
  - बाटों को बनाने के लिए चर्ट, चूना पत्थर और सेलखड़ी का उपयोग किया जाता था जो आमतौर पर आकार में घनाकार होते थे।
- लंबाई मापने के लिए फुट (37.6 सेमी) और हाथ (51.8 से 53.3 सेमी) का उपयोग किया जाता था।
- लोथल में हाथी दांत का एक पैमाना मिला था, सौराष्ट्र में शंख से बना एक उपकरण मिला था जिसका उपयोग संभवत: कोणों को मापने के लिए किया जाता था और शंख से बना एक पैमाना मोहनजोदड़ो में पाया गया था।

धर्म और आस्था तंत्र

- चूंकि ऐसी कोई संरचना नहीं मिली है जिसे मंदिर समझा जा सके, इसलिए हड़प्पा सभ्यता को धर्मनिरपेक्ष माना जाता है। मोहनजोदड़ो में महान स्नानागार, जहां कुलीन लगभग निश्चित रूप से अनुष्ठानिक गतिविधियों में लगे हुए थे, जिसमें औपचारिक स्नान शामिल था, पवित्र अनुष्ठान स्थानों में से एक था।
- मूर्तिपूजा प्रचलित थी।
- मातृ देवी पशुपति महादेव या प्रोटो-शिव (मुख्य रूप से उच्च वर्ग की एक पसंद; मुहरें उन्हें एक योगिक स्थिति में दिखाती हैं) अक्सर हड़प्पा के लोगों द्वारा वंदित की जाती थीं।
  - पशुपति महादेव की मुहर को घेरे हुए हाथी, बाघ, गैंडे, भैंस, हिरण और गैंडे संकेत देते हैं कि ये जानवर भी पूजनीय थे।
- योनी और लिंगम (प्रजनन क्षमता का पंथ) की पूजा होती थी।
- पीपल का पेड़, कूबड़ वाला बैल, पक्षी (कबूतर) और एक सींग वाला गेंडा।
- कालीबंगन और लोथल जैसे अन्य स्थानों पर अग्नि पूजा के प्रमाण मिलते हैं।
  - कालीबंगन में कई उभरे हुए ईंट के चबूतरे मिले हैं जिनमें राख और जानवरों के अवशेष वाले गड्ढे पाए गए हैं।
  - कालीबंगन और लोथल दोनों जगह अग्नि वेदियों की खोज हुई है।
- **दफन प्रथाएं:** सामान्य तौर पर, शवों को औजारों, भोजन, मिट्टी के पात्र, सजावट और अन्य वस्तुओं के साथ उत्तर-दक्षिण दिशा में व्यवस्थित करते हुए दफनाया जाता था।
  - समकालीन मेसोपोटामिया या मिस्र के सामानों की तुलना में, ये कम महंगे होते थे।

सामाजिक व्यवस्था

- ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पा सभ्यता में मातृसत्ता का बोलबाला था। यह विचार पंजाब और सिंध क्षेत्र में कई मिट्टी की महिला आकृतियों की खोज से समर्थित है, जिससे पता चलता है कि उस समय मातृ देवी कितनी लोकप्रिय थीं।
- हड़प्पा और लोथल जैसे स्थलों पर मिले संरचनात्मक अवशेषों से पता चलता है कि विभिन्न प्रकार के भवनों का उपयोग विभिन्न वर्गों द्वारा निवास के रूप में किया जाता था।
- बहुसंख्यक मध्य वर्ग ने हड़प्पा समाज का निर्माण किया, जो प्रकृति में शहरी था।
  - खोजे गए आवास कम से कम तीन अलग-अलग सामाजिक वर्गों के अस्तित्व का संकेत देते हैं : शासित, धनी व्यापारी और निम्न वर्ग के मजदूर जो शहर के सबसे निचले हिस्से में रहते थे।
  - हड़प्पा संस्कृति में विरासत की प्रकृति अभी भी इतिहासकारों के बीच बहस का विषय है।
- कई शिक्षाविदों ने ध्यान दिया है कि आधुनिक मेसोपोटामिया और मिस्र की तुलना में, हड़प्पा सभ्यता में युद्ध, संघर्ष और बल की विशेषताएं कमजोर दिखाई देती हैं।
- हड़प्पा स्थलों पर खोजी गई कलाकृतियों में आमतौर पर हथियार शामिल नहीं होते हैं। टेराकोटा और फाइयेंस टुकड़ों पर कथात्मक लेख शायद ही कभी लोगों के बीच संघर्ष को दर्शाते है।
- हालांकि, धोलावीरा जैसे स्थानों पर विशेष रूप से विशाल, किलेबंदी, को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। संभवत: हड़प्पा सभ्यता में बल के महत्व को अधिक आंका गया है।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. ऋग्वैदिक आर्यों और सिंधु घाटी के लोगों की संस्कृति के बीच अंतर के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) ऋग्वैदिक आर्यों ने युद्ध में कवच और टोप का प्रयोग किया जबकि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों में इनके प्रयोग का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

(2) ऋग्वैदिक आर्य सोना, चांदी और तांबा जानते थे जबकि सिंधु घाटी के लोग केवल तांबा और लोहा जानते थे।

(3) ऋग्वैदिक आर्यों ने घोड़े को पालतू बनाया था, जबकि सिंधु घाटी के लोगों को इस जानवर के बारे में पता होने का कोई सबूत नहीं है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

2. निम्नलिखित में से कौन सा सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों की विशेषता/लक्षण है? (2013)

(1) उनके पास बड़े-बड़े महल और मंदिर थे।

(2) वे नर और मादा दोनों देवताओं की पूजा करते थे।

(3) उन्होंने घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों का इस्तेमाल किया।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही कथन/कथनों का चयन करें:

(a) 1 और 2 केवल

(b) केवल 2

(c) 1, 2 और 3

(d) ऊपर दिए गए कथनों में से कोई भी सही नहीं है

कृषि

- कपास का उत्पादन करने वाली सबसे पहली ज्ञात सभ्यता हड़प्पा सभ्यता थी।
  - यूनानियों ने "सिंधोन" को सिंध से होने के रूप में संदर्भित किया।
- सिंधु के मैदान में, ग्रामीण बाढ़ के पानी के कम होने के बाद नवंबर में बाढ़ के मैदानों में बीज बोते थे और अगली बाढ़ आने से ठीक पहले अप्रैल में अपनी गेहूं और जौ की फसल काट लेते थे।
  - वे अपना भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त खाद्यान्न पैदा करते थे, और अतिरिक्त अन्न भंडारों में रखा जाता था।
- हड़प्पा कृषि पद्धतियों की विशिष्ट विशेषताएं निम्नलिखित हैं:
- गेहूं, जौ, चना, मटर, खरबूजा, तरबूज, तिल, खजूर, बाजरा, अंगूर, मेंहदी (मेहंदी), लहसुन, सरसों और चावल हड़प्पावासियों द्वारा खासकर मेहरगढ़ (लोथल) में उगाई जाने वाली फसलें थीं,
- जब भी संभव था तब उन्होंने समुद्री और नदी संसाधानों का उपयोग किया। उदाहरण के लिए, घोंघे गुजराती लोगों के लिए उनके तटीय समुदायों में प्रोटीन युक्त आहार का एक महत्वपूर्ण स्रोत थे।
- हड़प्पावासियों द्वारा जानवरों को बड़े पैमाने पर पाला जाता था। मवेशियों के अलावा बिल्लियों और कुत्तों (बैल, भैंस, बकरी, कूबड़ वाले बैल, भेड़, सूअर, गधो और ऊंट सहित) को पाला जाता था।
- हालाँकि घोड़ों का अक्सर इस्तेमाल नहीं किया जाता था, हड़प्पावासी हाथी और गैंडे दोनों से परिचित थे।
  - यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि हड़प्पा सभ्यता अश्व केंद्रित नहीं थी।
- बाघों की मूर्तियाँ आम थीं, जबकि चीतों की मूर्तियाँ असामान्य थीं।
- छोटे पैमाने पर सिंचाई कुओं से पानी खींचकर या नदी के पानी को चौनलों में मोड़कर की जाती थी।
- कालीबंगन में, जो खेत लकड़ी के हल से जोते गए थे, मिले हैं। बनावली और बहावलपुर में टेराकोटा से बने हल के मॉडल खोजे गए हैं।
- सुरकोटडा में घोड़ों और रोपड़ में कब्रों में कुत्ते और आदमी के अवशेष मिले हैं।

हड़प्पा सभ्यता का पतन

हड़प्पा के शहरों में किसी बिंदु पर चीजें गलत होने लगीं। मोहनजोदड़ो में, 2200 ईसा पूर्व तक गिरावट शुरू हो चुकी थी, और 2000 ईसा पूर्व तक, बस्तियां पूरी तरह से गायब हो गई थीं।

- सभ्यता 1800 ईसा पूर्व तक कुछ स्थानों पर बनी रही। तारीखों के अलावा घटने की दर में भी अंतर था।
  - जबकि कालीबंगन और बनावली में शहर का जीवन अचानक समाप्त हो गया, मोहनजोदड़ो और धोलावीरा में लगातार गिरावट देखी जा सकती है।
- हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों में सबसे कम सहायक आंकड़ों वाला सिद्धांत सबसे अधिक प्रचलित सिद्धांतों में से एक है।
  - रामप्रसाद चंदा ने पहली बार इस सिद्धांत को प्रस्तावित किया कि 1926 में आर्य आक्रमणकारियों द्वारा सभ्यता को नष्ट कर दिया गया था; हालाँकि, बाद में उन्होंने अपना विचार बदल दिया। मोर्टिमर व्हीलर ने बाद में इस सिद्धांत (1947) को विकसित किया।

- व्हीलर ने जोर देकर कहा कि ऋग्वेद में भगवान इंद्र को दिए गए विभिन्न प्रकार के किले, गढ़वाले शहरों पर हमले, और विशेषण पुरंदर (किला विध्वंसक) का ऐतिहासिक आधार होना चाहिए और हड़प्पा सभ्यताओं पर आर्यों के आक्रमण को दर्शाना चाहिए।

- प्राकृतिक आपदाएं, हालांकि हमेशा तात्कालिक या एकाकी नहीं होतीं, परन्तु एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। मोहनजोदड़ो में, गाद की कई परतें इस बात का प्रमाण देती हैं कि शहर बार-बार होने वाली सिंधु नदी की बाढ़ से प्रभावित था।
- गुरदीप सिंह (1971) राजस्थान में झीलों से पराग के अपने विश्लेषण के आधार पर शुष्क वातावरण के आगमन और हड़प्पा सभ्यता के पतन के बीच एक कड़ी की परिकल्पना करते हैं।
- **कम वर्षा:** हड़प्पा जलवायु में एक और विनाशकारी परिवर्तन हो सकता है कि पूर्व की ओर बढ़ रहा मानसून, या हवाएँ जो भारी बारिश का कारण बनती हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के संभावित पतन के सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं को पुरातात्विक साक्ष्यों से प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, यह बहुतायत से स्पष्ट करता है कि हड़प्पा समाज ने धीरे-धीरे वि-शहरीकरण प्रक्रिया का अनुभव किया।

उत्तर हड़प्पा सभ्यता चरण

उत्तर हड़प्पा काल, जिसकी विशेषता शहरी जीवन के पतन और कृषि के विविधीकरण की थी, विकसित हड़प्पा चरण के बाद आया।

- गंगा-यमुना दोआब, गंगा-यमुना घाटी, पूर्वी पंजाब और हरियाणा, कच्छ और सौराष्ट्र, और सिंध उत्तर हड़प्पा चरण के पांच भौगोलिक क्षेत्र हैं।
- हड़प्पा सभ्यता की सौन्दर्यपरक एकरूपता लुप्त हो गई और उत्तर हड़प्पा चरण में शैलीगत भिन्नता की विशेषता थी।
- **शहरी चरित्रें का पतन:** मुहरें, विशिष्ट व्यापार, शहर, लंबी दूरी का व्यापार और अन्य शहरीकरण संबंधी तत्व कम हो गए लेकिन पूरी तरह से गायब नहीं हुए।
- उत्तर हड़प्पा युग के दौरान कृषि का विविधीकरण एक महत्वपूर्ण घटना थी। बलूचिस्तान के पिराक में पहली बार दोहरी फसलों को अपनाया गया था, जहाँ चावल (सिंचित), बाजरा और ज्वार की गर्मियों की फसलों के साथ-साथ गेहूँ और जौ की सर्दियों की फसल की खेती की जाती थी।
- उत्तर हड़प्पा चरण शहरी नेटवर्क के विघटन और ग्रामीण नेटवर्क के विकास की एक व्यापक तस्वीर पेश करता है।
- हरियाणा में भगवानपुरा और दधोरी, साथ ही पंजाब में कटपालों और नगर जैसे स्थानों पर, उत्तर हड़प्पा और चित्रित मृद्भाण्ड (पीजीडब्ल्यू) सभ्यता के बीच एक संक्रमण है।

समकालीन सभ्यताओं से भिन्नता

मेसोपोटामिया और हड़प्पा संस्कृतियाँ कई उल्लेखनीय तरीकों से भिन्न हैं। मेसोपोटामिया के लोगों के पास एक पूरी तरह से अलग लेखन था, कांस्य का बहुतायत में उपयोग किया जाता था, अलग-अलग शहर योजनाएँ थीं और उनके पास पर्याप्त नहर नेटवर्क था जो कि हड़प्पा सभ्यता की कमी प्रतीत होती है।

विशेषताएं	हड़प्पा	मेसोपोटामिया सभ्यता/मिस्र
नगर नियोजन	ग्रिड और पैटर्न प्रणाली के साथ विस्तृत योजना। हड़प्पा के सभी शहरों में आयताकार घर हैं जिनमें सीढ़ियाँ, स्नानघर और ईंटों से बने कुएँ हैं।	ऐसी कोई योजना नहीं मिली। शहरीकरण अव्यवस्थित था
जलनिकासी	सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों के पास प्रभावी सीवेज प्रबंधन, जलनिकासी और स्वच्छता व्यवस्था थी।	जबकि मिस्र के लोग पानी निकालने के लिए तांबे के पाइप का इस्तेमाल करते थे, मेसोपोटामिया सभ्यता में बहुत अधिक जटिल जल निकासी व्यवस्था थी।
पकी हुई ईंटें	हड़प्पा के लोग भवनों के निर्माण में उल्लेखनीय रूप से पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे।	उसी समय मिस्रवासी सूखी ईंटों का उपयोग कर रहे थे। मेसोपोटामिया में भी पक्की ईंटों का इस्तेमाल होता था, लेकिन सिंधु घाटी के लोगों की तुलना में यह काफी कम था।
लिपि	उन्होंने समकालीन सभ्यता के प्रभाव से स्वतंत्र होकर अपनी स्वयं की लिपि विकसित की।	क्यूनिफार्म लिपि मेसोपोटामिया में पाई जाती है और चित्रलिपि लेखन मिस्र में पाया जाता है। दोनों लिपियों को पढ़ लिया गया है, जिससे दोनों सभ्यताओं के बारे में बहुत कुछ पता चला है।

लिखने का स्थान	अधिकतर मुहरों पर लिखा गया है।	मिस्र के लोगों ने सरकंडे पर आधारित पपाइरस पर लिखा जबकि मेसोपोटामिया के लोगों ने गीली मिट्टी की गोलियों पर अक्षर अंकित किए।
विस्तार	यह एक व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में फैली हुई थी।	न्यूनतर विस्तार
कानून	सिंधु घाटी सभ्यता में लोगों ने खुद को लगभग समान माना और कुछ कानून जैसे सामाजिक कानून, मानव कानून और व्यक्तिगत कानून भी थे।	मेसोपोटामिया के राजा हम्मुराबी, जिन्होंने बेबीलोनियन राजवंश के दौरान 1792 से 1750 ईसा पूर्व तक शासन किया था, को हम्मूराबी कोड बनाने का श्रेय दिया जाता है, जो सबसे पहली और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित लिखित कानून प्रणालियों में से एक है।
राजनीतिक संगठन	सिंधु घाटी के लोगों की राजनीतिक संरचना के बारे में बहुत कम जानकारी है।	मिस्र, मेसोपोटामिया और माया सभ्यता के समय में अलग-अलग आकार के राज्य सत्ता में आए। मिस्र में पुत्री को राज्य या उत्तराधिकार प्राप्त होता था, किन्तु सिन्धु घाटी में मातृसत्तात्मक व्यवस्था का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।
पिरामिड और मंदिर	किसी भी मंदिर और पिरामिड रूप के संरचनात्मक अवशेषों का अभाव।	मिस्र की सभ्यता को पिरामिड निर्माताओं के युग के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि इस अवधि के दौरान गीजा के पिरामिड बनाए गए थे।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

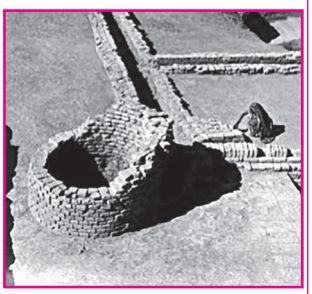
1. भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन सभ्यता मिस्र, मेसोपोटामिया और यूनान की सभ्यताओं से इस बात में भिन्न थी कि इसकी संस्कृति और परंपराएं आज तक बिना किसी बदलाव के संरक्षित हैं। टिप्पणी करें। (2015)

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	राज्य	उल्लेखनीय विशेषताएं
मोहनजोदड़ो	सिंध, पाकिस्तान	• स्थल में दो टीले होते हैं, एक ऊंचा लेकिन छोटा पश्चिमी टीला और एक निचला लेकिन बड़ा पूर्वी टीला। • मोहनजोदड़ो में पश्चिमी टीला (गढ़ के रूप में जाना जाता है) मैदान से 12 मीटर ऊपर उठा होता है। यहाँ की संरचनाएँ एक कृत्रिम मिट्टी और मिट्टी की ईंट के चबूतरे पर बनाई गई थीं। • विशाल स्नानागार, तथाकथित 'अन्न भंडार', और 'पुजारियों का कॉलेज'। विशाल स्नानगार, हड़प्पा के इंजीनियरिंग कौशल का एक उदाहरण है, जिसकी लंबाई लगभग 14.5 × 7 मीटर है, और अधिकतम गहराई 2.4 मीटर है। • एक चौड़ी सीढ़ी उत्तर और दक्षिण से तालाब में नीचे जाती है। • तालाब के फर्श और दीवारों को जिप्सम मोर्टार के साथ किनारे से किनारे तक बारीक ईंटों से जलरोधी बनाया गया था। • वहाँ एक 'बड़ा' अन्न भंडार भी बनाया गया था। • गढ़ टीले के दक्षिणी भाग में, एक बड़ी इमारत (27 × 27 मीटर) है जिसे 'सभा कक्ष' का नाम दिया गया है।

चन्हुदड़ो	पाकिस्तान	• यह एक एकल टीला स्थल है जिसमें कोई किलेबंदी नहीं है। • कम से कम तीन सड़कों के निशान पाए गए हैं। • शिल्प गतिविधि का एक महत्वपूर्ण केंद्र। • कुछ घरों में कार्लिनियन, सुलेमानी, नीलम जैसे कच्चे माल की उपज होती थी। • मनके के कारखाने की खोज अधिक आश्चर्यजनक थी, जिसमें ढेर सारे तैयार और अधूरे मनके पाए गए थे। • ऐसा प्रतीत होता है कि मुहर बनाना, शंख बनाना और पत्थर के बाट बनाना अन्य महत्वपूर्ण शिल्प थे जो यहाँ पर किए जाते थे।
हड़प्पा	पाकिस्तान	• उच्च गढ़ का टीला पश्चिम में स्थित है, इसके दक्षिण-पूर्व में एक निचला लेकिन बड़ा निचला शहर है। • यह विशाल मीनारों और प्रवेश द्वारों के साथ एक मिट्टी-ईंट की दीवार से घिरा हुआ था, और अंदर की संरचना एक या एक से अधिक ऊंचे चबूतरे पर खड़ी थी। • अनाज के लिए एक मंढ़ाई चबूतरा है। • अनाज पीसने के लिए लकड़ी का ओखली का प्रयोग। • विभिन्न कार्यशालाओं की पहचान की गई है जहाँ शंख, गोमेद और तांबे की कलाकृतियाँ बनाई जाती थीं।
कालीबंगन ('काली चूड़ियाँ')	हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान	• इसका नाम इसके टीले की पूरी सतह पर पड़ी काली चूड़ियों के मोटे गुच्छों से मिलता है। • घग्घर नदी के सूखे तलहट के तट पर स्थित है। • एक छोटा पश्चिमी टीला और एक बड़ा पूर्वी टीला है, जिसके बीच में एक खुली जगह है। • एक छोटा, तीसरा टीला भी है, जिसमें केवल बड़ी संख्या में अग्नि वेदियाँ हैं। ○ घरों में दीर्घवृत्ताकार अग्नि वेदिका पाई गई हैं। • गढ़ परिसर और निचला शहर दोनों किलेबंद थे। • निचली शहर योजना में एक मोटा समांतर चतुर्भुज था, जो एक मिट्टी-ईंट की दीवार से घिरा था। • अन्य रोचक कलाकृतियों में एक हाथी दांत की कंघी, एक तांबे की भैंस या बैल शामिल है, जो एक आधार के साथ एक पत्थर के लिंग का प्रतीक प्रतीत होता है और एक सींग वाली आकृति के साथ एक टेराकोटा का टुकड़ा है।
बणावली	हिसार जिला (हरियाणा)	• रंगोई नदी के सूखे तल के करीब 300 × 500 मीटर का एक किलाबंद स्थल। • एक दीवार ने गढ़वाले क्षेत्र को दो वर्गों में विभाजित किया-एक उच्च गढ़ क्षेत्र और एक निचला शहर। • स्थल पर प्रारंभिक विकसित और उत्तर हड़प्पा चरणों के सबूत मिले हैं।

		• मिट्टी-ईंट के घरों के बाहर चबूतरे बने हुए थे। पकी हुई ईंटों का उपयोग केवल कुओं, नहाने के फुटपाथों और नालियों के लिए किया जाता था। • मुहरें केवल निचले कस्बे में पाई जाती थीं, दुर्ग परिसर में नहीं। • यहाँ एक हल का टेराकोटा मॉडल मिला है।
राखीगढ़ी	हिसार जिला, हरियाणा।	• पांच टीलों की पहचान की गई है। • मिट्टी-ईंट की किलेबंदी की दीवार से घिरे गढ़ के टीले में चबूतरे, एक ईंट का कुआँ और आग की वेदियाँ थीं। • लगभग 3,000 अधूरे मोतियों के अवशेषों के साथ एक लैपिडरी वर्कशॉप की पहचान की गई। • हड्डियाँ, सींग, हाथीदाँत के टुकड़े और तैयार तथा अधूरे हड्डी के टुकडे, कंघी, सुई और उत्कीर्णन ने हड्डी और हाथी दांत के काम करने का स्पष्ट प्रमाण दिया।
भिरड़ाना	हरियाणा	• बस्ती मिट्टी-ईंट से बनी एक विशाल किलेबंदी की दीवार से घिरी हुई थी। • तीन बहु-कमरे वाले घर परिसरों की खोज की गई। • फर्श मिट्टी की ईंटों से बने थे और ईंट की दीवारों को मिट्टी से प्लास्टर किया गया था। • एक प्रांगण में गोलाकार तंदूर और चूल्हा मिला है। • एक चूल्हे के बगल में जली हुई हड्डियाँ और एक गोजातीय जानवर की खोपड़ी पाई गई थी। • एक मोटी, मजबूत लाल मृदभांड का एक टुकड़ा जिसमें एक उकेरी हुई स्त्री आकृति पाई गई है।
सुत्कागेंडोर	बलूचिस्तान	• हड़प्पा और बेबीलोन के बीच व्यापार केन्द्र। • तांम्र-कांस्य डिस्क से जुड़ा बैक्ट्रिया-मार्जियाना भू-सर्वक्षण परिसर (बीएमएसी)।
लोथल	गुजरात में सौराष्ट्र	• साबरमती नदी और उसकी सहायक नदी भोगवा के बीच स्थित है। • योजना मोटे तौर पर आयताकार, एक दीवार से घिरी हुई है जो शुरू में मिट्टी और बाद में मिट्टी और पकी हुई ईंटों से बनी थी। • उत्तर-पश्चिम में श्मशान भूमि थी। • यहाँ आवासीय भवनों, सड़कों, गलियों, नहाने के फुटपाथों और नालियों के अवशेष मिले हैं। • यहां अग्नि वेदी भी मिली है। • लोथल की सबसे विशिष्ट विशेषता डॉकयार्ड है, जो स्थल के पूर्वी किनारे पर स्थित है। • यह पकी हुई ईंटों की दीवारों से घिरा लगभग समलम्बाकार स्थल है।



धोलावीरा	गुजरात में कच्छ के रण में कादिर द्वीप पर स्थित है	• धोलावीरा की वास्तुकला मिट्टी-ईंटों के साथ स्थानों में संयुक्त रूप से बलुआ पत्थर के बड़े पैमाने पर उपयोग को दर्शाती है। • यह बाहरी सतह पर पत्थर के टुकड़ों की परत के साथ मिट्टी-ईंट से बनी बाहरी किलेबंदी की दीवार से घिरा हुआ है। • एक दिलचस्प विशेषता महल-बेली और मध्य शहर के बीच एक बड़ा खुला क्षेत्र (जिसे 'स्टेडियम' कहा जाता है) है, जिसका उपयोग विशेष अनुष्ठानिक अवसरों के लिए किया जा सकता है। • धोलावीरा में साइनबोर्ड दिखाई पड़ते हैं। • कब्रिस्तान क्षेत्र में पत्थर की ईंटों के साथ पंक्तिबद्ध आयताकार गड्ढ़े वाले दफन स्थलों का पता चला है। • शहर में एक प्रभावशाली और अद्वितीय जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली थी। • जलाशयों में उनके पानी को प्रवाहित करने के लिए इन पर बांध बनाए गए थे। • गढ़ और निचले शहर में स्थित कई बड़े, गहरे पानी के कुंड और जलाशय (कम से कम 16) बारिश के पानी के कीमती भंडार को संरक्षित करते थे। 
अल्लाहदीनों	पाकिस्तान	• हड़प्पा सभ्यता का दुर्गम ग्राम स्थल। • मिट्टी की ईंटों से बने घर, अक्सर पत्थर की नींव पर टिके होते हैं। • अल्लादीनो के कुओं का व्यास बहुत छोटा था, और उनके मुंह 60 सेमी से 90 सेमी तक थे। ○ यह हाइड्रोलिक दबाव के कारण भूजल को ऊपर उठाने के लिए हो सकता है। • यह लगता है कि आसपास के खेतों की सिंचाई के लिए कुएं के पानी का इस्तेमाल किया जाता होगा।
कोट-दीजी	पाकिस्तान	• इसमें लगभग 3000 ईसा पूर्व की एक पत्थर की मलबे की दीवार है जो एक गढ़ और कई निवासों को घेरे हुए है। • मिट्टी के बर्तनों सहित कलाकृतियाँ, जो एक अलग कोटडिजियन शैली को प्रदर्शित करती हैं, की खुदाई की गई है।
देसलपुर	गुजरात	• एक विशाल किलेदार हड़प्पा स्थल। • उत्खनन की खोजों में तीन लिपि-युक्त मुहरें और मिट्टी के बर्तन मिले हैं। • ये तीनों क्रमशः टेराकोटा, ताँबे और सेलखड़ी के बने थे।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. नम्नलिखित में से कौन सा एक हड़प्पा स्थल नहीं है? (2019)

(*a*) चुन्हदड़ो
(*b*) कोटदीजी
(*c*) सोहगौरा
(*d*) देसलपुर

2. निम्नलिखित प्राचीन नगरों में से कौन-सा बांधों की एक श्रृंखला बनाकर और जुड़े जलाशयों में जल प्रवाहित करके जल संचयन और प्रबंधन की विस्तृत प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है? (2021)

(*a*) धोलावीरा
(*b*) कालीबंगा
(*c*) राखीगढ़ी
(*d*) रोपड़

❖ ❖ ❖

4 आर्य संस्कृति और पूर्व-वैदिक काल

वैदिक संस्कृति, एक महान सभ्यता और संस्कृति, हड़प्पा युग के बाद आई। इसे वैदिक काल के रूप में जाना जाता है क्योंकि इसकी पुनर्स्थापना में वैदिक लेखन का मुख्य रूप से उपयोग किया गया था।

वैदिक ग्रंथों के रचयिताओं पर वाद-विवाद

- जिन पुजारियों ने बताया कि अनुष्ठान कैसे किए जाते हैं और जिन कवियों ने देवताओं की पूजा और प्रार्थना की, वैदिक कविताएँ लिखीं, वे इतिहासकार नहीं थे।
- **वैदिक साहित्य कर्मकांडयुक्त और पवित्र लेख हैं, परन्तु ऐतिहासिक नहीं।**
- **हालाँकि, उन्हें** प्रासंगिक पुरातात्विक आंकड़ों के साथ जोड़कर, **दूसरी और पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व में** अधिकांश **सिंधु घाटी, सिंधु-गंगा के बीच के भागों और ऊपरी गंगा घाटी में रहने वाले लोगों के लिए जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में ज्ञान के स्रोतों के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।**

भारतीय-आर्य

भारत के प्रारंभिक इतिहास से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक आर्यों से जुड़े हुए प्रश्न हैं। नीली आंखों वाले श्वेतों और यूरोपीय लोगों से इनके संबंध आर्य विचारधारा से जुड़े थे। नाजियों ने अपने राजनीतिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए आर्य विचारधारा का इस्तेमाल किया, जिसका परिणाम अंततः सर्वनाश के रूप में हुआ।

- हाल के शोध से पता चला है कि "आर्य" शब्द केवल भारतीय-आर्य भाषाओं के मूल वक्ताओं को संदर्भित करता है और किसी विशेष जाति से संबंधित नहीं है।

आर्यों की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांत

सिद्धांत	प्रतिपादित और समर्थित	विशेषताएं
मध्य एशियाई सिद्धांत	मैक्समूलर	• आर्यों की उत्पत्ति मध्य एशिया में हुई। • "अवेस्ता" (एक ईरानी ग्रंथ) और "वेदों" के बीच एक चौंकाने वाली भाषाई समानता का पता चलता है।
आर्कटिक क्षेत्र सिद्धांत	बाल गंगाधर तिलक	• उत्तरी आर्कटिक क्षेत्र आर्यों का मूल स्थान है।
भारतीय सिद्धांत	संपूर्णानंद और एसी दास ने सप्त सिंधु विचार का समर्थन किया।	• वेद निर्णायक साहित्यिक प्रमाण प्रदान करते हैं कि आर्य सप्त सिंधु को अपना पैतृक घर मानते थे।
तिब्बत सिद्धांत	स्वामी दयानंद सरस्वती	• वेदों और अन्य आर्य साहित्य के अनुसार, तिब्बत वह जगह है जहाँ पहले आर्य रहते थे।
यूरोपीय सिद्धांत	सर विलियम जोन्स (1786)	• आर्य यूरोप महाद्वीप के मूल निवासी हैं। • ग्रीक, लैटिन, जर्मन, गॉथिक, सेल्टिक और संस्कृत (सभी इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार के सदस्य) में कुछ संरचनात्मक समानताएं और संबंध हैं। • **उदाहरण के लिए:** अश्व और ऋग्वेद के कई अन्य शब्द इंडोआर्यन भाषा मूल को साझा करते हैं।

आर्यों की उत्पत्ति पर आधुनिक आनुवंशिकी

नए डीएनए सबूतों पर आधारित आनुवंशिक अनुसंधान दुनिया भर के वैज्ञानिकों को आर्यों की उत्पत्ति के एक स्पष्ट उत्तर पर एकमत कर रहा है।

- एम 17, एक अनुवांशिक संकेतक (डीएनए) कहा जाता है जो इंडो-यूरोपियन भाषा बोलने वालों में पाया गया है।

वैदिक साहित्य

'वेद' शब्द की उत्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है जानना।

दूसरे शब्दों में, "वेद" का अर्थ "बेहतर समझ" है।

- **चार वेद - ऋग, यजुर, साम और अथर्व**- वैदिक साहित्य का निर्माण करते हैं।
- **चार वेदों में सबसे पुराना ऋग्वेद है,** जिसमें 1028 सूक्तियां हैं।
- **आहूति के दौरान पालन किए जाने वाले दिशा-निर्देशों के संबंध में यजुर्वेद** में कई विशिष्ट विवरण हैं।
- **सामवेद को समस्वरित किया गया है ताकि आहूति देते समय इसका उच्चारण किया जा सके।**
  - इसे मंत्रों के ग्रंथ के रूप में जाना जाता है और इससे भारतीय संगीत की उत्पत्ति का पता चलता है।
- **अथर्ववेद** में संस्कारों का गहनता से वर्णन है।

वे मौखिक रूप से कई पीढ़ियों के बीच परिचालित हो गए हैं और श्रुति का दर्जा प्राप्त हैं (जो सुना गया हो)। हो सकता है कि वेदों को उन पुजारियों द्वारा व्यवस्थित और संकलित किया गया हो जो अपने आहूति यज्ञों के लिए एक विश्वसनीय पुस्तक तैयार करना चाहते थे।

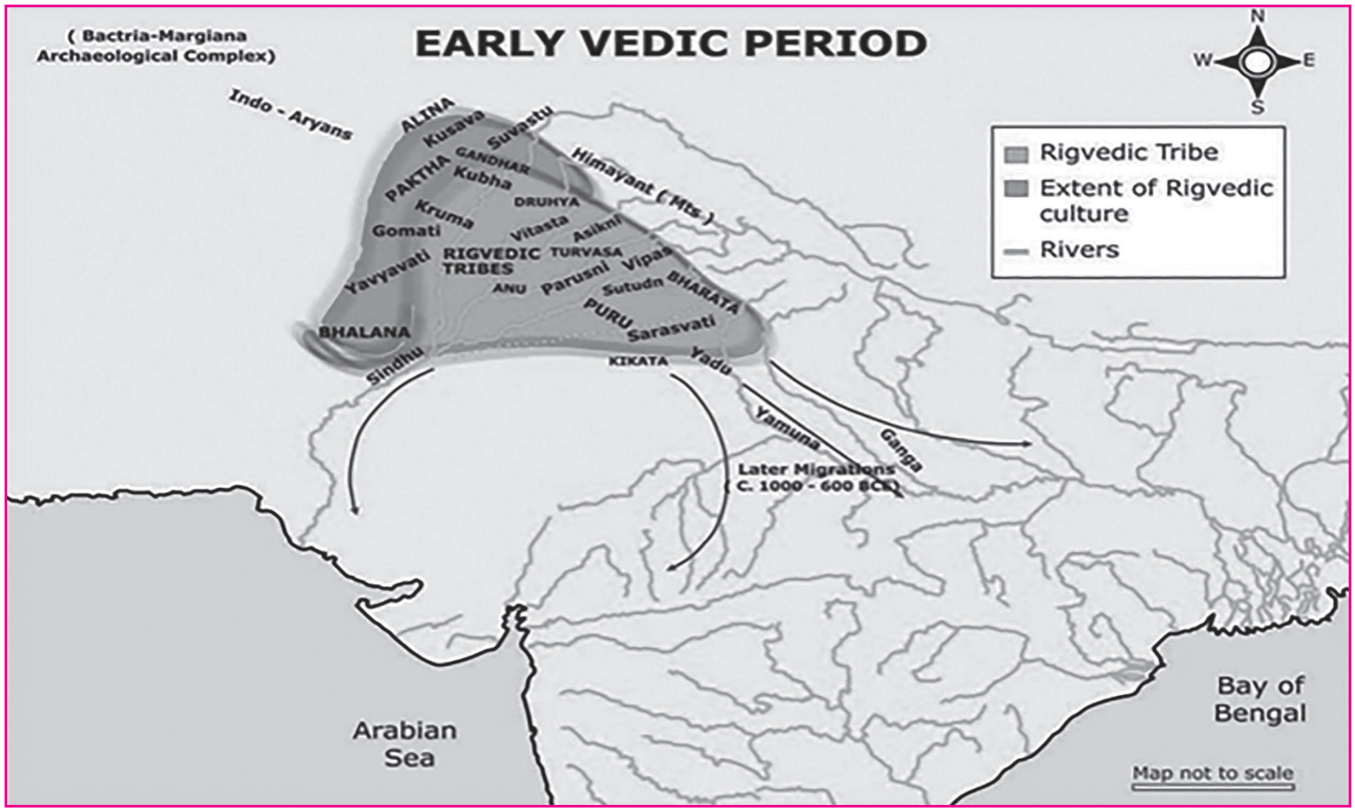
उत्तर-वैदिक साहित्य

- **प्रार्थना और आहूति पर ग्रंथ ब्राह्मणों के रूप में जाने जाते हैं।**
- **उपनिषद दार्शनिक लेखन** हैं जिनमें आत्मा, परमतत्व, दुनिया कैसे बनी और प्राकृतिक दुनिया के रहस्य जैसे विषय शामिल हैं।
- **आरण्यक, जिसे अरण्य साहित्य के रूप में भी जाना जाता है,** रहस्यवाद, आहूति दान और संस्कारों का वर्णन करते हैं।

ऋग्वैदिक संस्कृति या पूर्व-वैदिक संस्कृति

पूर्व-वैदिक और **उत्तर-वैदिक**, वैदिक साहित्य वैदिक कोष के अधिकांश हिस्से का निर्माण करते हैं।

पूर्व-वैदिक काल, जिसे ऋग्वैदिक काल के रूप में भी जाना जाता है, 1500 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व तक चलता है। बाद का वैदिक काल 1000 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व तक है।



- कई इतिहासकार ऋग्वेद के शुरुआती खंडों की रचना को या तो 1200-1000 ईसा पूर्व या 1500-1000 ईसा पूर्व के बीच रखते हैं।
- **ऋग्वेद संहिता की सबसे पुरानी मंडलो, 2 से 7** तक की मंडल को भी पारिवारिक मंडल के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि विशिष्ट द्रष्टा-कवियों- **गृत्समदा, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज और वशिष्ठ** ने उनके लेखन में योगदान दिया है।
  - **मंडल 1, 8, 9 और 10 बाद की समयावधि की प्रतीत होती हैं।**
- इस संहिता के मंत्रों को एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया गया है।
- उन्हें देवताओं, छंदों की संख्या और मीटर द्वारा परिवार की किताबों में समूहीकृत किया जाता है।
- **ऋग्वेद को हाल ही में यूनेस्को द्वारा** विश्व मानव धरोहर को दर्शाने वाले साहित्य की सूची में जोड़ा गया है।
- ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है और इससे जुड़े पुजारी को होत्री या होतृ कहा जाता है।

भौगोलिक विस्तार

- अधिकांश आर्य ऋग्वैदिक काल के दौरान सिंधु घाटी तक ही सीमित थे।
- सात नदियों की भूमि या सप्त सिंधु को ऋग्वेद में संदर्भित किया गया है। सिंधु और सरस्वती (आधुनिक घग्गर-हकरा) के साथ इसमें पंजाब की पाँच नदियाँ भी शामिल हैं: झेलम, चिनाब, रावी, व्यास और सतलुज।

ऋग्वैदिक आर्यों का सामाजिक जीवन और महिलाओं की स्थिति

- **ऋग्वेद काल का समाज पितृसत्तात्मक था।**
- **परिवार या गृह** समाज की मूलभूत इकाई थी।
- परिवार के मुखिया को **ग्रहपति कहा जाता था।**
- **बहुविवाह, शाही और कुलीन परिवारों में आम था,** हालांकि एक विवाह आदर्श प्रथा थी।
- पत्नी घर का प्रबंधन करती थी और सभी महत्वपूर्ण अनुष्ठानों में भाग लेती थी।
- **उनके बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के लिए महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर प्रदान किए गए।**
- ऋग्वैदिक काल के दौरान, अपाला, विश्ववारा, घोषा और लोपामुद्रा सहित महिला कवियित्री हुईं।
- **सभा और समितियों जैसी बड़ी सभाओं में महिलाओं को बुलाया जाता था।**
- **बाल विवाह नहीं होते थे और सती प्रथा का प्रचलन नहीं था।**
- **ऐसा प्रतीत होता है कि बहुपति प्रथा अस्तित्व में थी** और विधवा पुनर्विवाह भी प्रचलित था।
- अविवाहित महिलाओं के भी उल्लेख मिलते हैं।

ऋग्वेद में वर्ण व्यवस्था: दास और दास्यु

- उस काल के साहित्य में "वर्ण" शब्द बार-बार आता है और आमतौर पर प्रकाश या रंग को संदर्भित करता है। हालांकि यह अन्य वर्गों में आर्यों और दासों से जुड़ा हुआ है।
- **उन्हें ऋग्वेद में अ- व्रत** (देवताओं के नियमों की अवज्ञा करने वाले) और **अ- क्रतु** (जो यज्ञ नहीं करते हैं) के रूप में जाना जाता है।
  - **ऋग्वेद में दास्युओं को कृष्ण-त्वच या असिक्नी-त्वच के रूप में संदर्भित किया गया है।** इसका शाब्दिक अर्थ "अश्वेत त्वचा" हो सकता है या यह अंधकार के लिए एक रूपक हो सकता है।
- **जाहिर तौर पर आर्यों ने मूल निवासियों के रंग से खुद को अलग करने का प्रयास किया,** जो विभिन्न सांस्कृतिक रीति-रिवाजों का पालन करते थे।
- इस काल की पुस्तकों में आमतौर पर "ब्राह्मण" और "क्षत्रिय" शब्दों का प्रयोग किया गया है। लेकिन "वर्ण" शब्द इन शब्दों में से किसी से भी संबंधित नहीं है।
  - **ब्राह्मणों द्वारा सोमपान करने और भजनों का जाप करने के संदर्भ हैं** और जबकि वे एक सम्मानित समुदाय से प्रतीत होते हैं। **इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि इस वर्ग में भागीदारी जन्म पर निर्भर थी।**
  - **वैश्यों और शूद्रों का उल्लेख नहीं है।**
- **कठोर सामाजिक पदानुक्रम का अभाव** और सामाजिक गतिशीलता का अस्तित्व ऋग्वेद में मौजूद है।
- **ऋग्वेद संहिता की मंडल 10 में पुरुष- सूक्ति (पुरुष भजन) चार सामाजिक समूहों - ब्राह्मण, राजन्य (क्षत्रिय के बजाय), वैश्य और शूद्र को संदर्भित करता है। हालांकि वर्ण शब्द का उल्लेख नहीं है।**
  - कहा जाता है कि ये सामाजिक विभाजन पूर्व-वैदिक काल के समापन के आसपास शुरू हुए थे।
- **कई विशिष्ट संगठनों के संदर्भ भी हैं** जिनमें नाई, पुजारी, पशुपालक, किसान और योद्धा शामिल हैं।
- **हालाँकि दासता की चर्चा ऋग्वेद में की गई है।**

- **पुरुष हो या महिला, एक दास को स्वामी की संपत्ति माना जाता था** और उसे कोई भी कार्य करना पड़ता था, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो। उसके पास कोई अधिकार, शक्ति, स्वायत्तता या सम्मान नहीं होता था।
- **ऋग्वेद में दासता का उल्लेख युद्ध के दौरान या ऋण के परिणामस्वरूप होने के रूप में किया गया है।**

- **दास और दासी, पुरुष और महिला दोनों के लिए पदनाम** का अर्थ है कि जातीय भेद शुरू में दासता का एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है।
- **पुरुष और महिला दास ज्यादातर घरों में काम करते थे लेकिन उन कार्यों में शामिल नहीं होते थे जो सीधे उत्पादन से संबंधित थे।**

ऋग्वैदिक चरण के दौरान राजनीतिक संगठन

- **कुल या परिवार, राजनीतिक संगठन की मूलभूत इकाई थी।**
- उनकी रिश्तेदारी के परिणामस्वरूप, कई परिवार एक गांव या ग्राम का निर्माण करने के लिए एक साथ संगठित हो गए। ग्रामणी **ग्राम के नेता का नाम होता था।**
- विश एक बड़ी इकाई थी जो कई बस्तियों से मिलकर बनती थी। **विषयपति इसके नेता के रूप में कार्य करता था।**
- जन या जनजाति, सरकार का उच्चतम स्तर था।
- **भरत, मत्स्य, यदु और पुरु सहित कई कबीलाई राज्य थे। राजन, जो "राजा" के लिए हिंदी शब्द है,** सम्राट की उपाधि होती थी।
- **ऋग्वैदिक राजनीतिक व्यवस्था आमतौर पर राजतंत्रीय थी जिसमें वंशानुगत उत्तराधिकार होता था।**
- **अन्य के साथ सभा और समिति का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।**
- उनकी संबंधित भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से एक दूसरे से अलग नहीं हैं।
- **राजन की अध्यक्षता में समिति की बड़ी बैठक होती थी।** लेकिन सभा एक छोटी, अधिक कुलीन सभा प्रतीत होती है।
  - संसाधनों के वितरण में ये सभाएँ महत्वपूर्ण रही होंगी।
- विदथ को परंपरागत रूप से एक बहुउद्देशीय कबीलाई सभा के रूप में देखा गया है।
- **न्याय व्यवस्था का उल्लेख नहीं है।**
- **व्रजपति उस सिपाही का नाम था जो उस क्षेत्र में गश्त करता था।**
  - वह ग्रामणी या लड़ाकू इकाइयों के नेताओं का समर्थन करता था।

राजनीतिक विवाद

- **ऋग्वेद में लगभग 30 कबीलों और कुलों का उल्लेख है।**
- पांच कबीलों- यदु, तुर्वशा, पुरु, अनु और द्रुह्यु को सामूहिक रूप से **'पांच व्यक्तियों' (पंच-जन, पंच-कृत्य, या पंच-मानुष)** के रूप में जाना जाता है।
- आर्यों उनके विरोधियों और उनके द्वारा किए गए संघर्षों का उल्लेख वेदों में किया गया है। लड़ाई में अधिक मवेशी और माल दांव पर होते थे और युद्ध में लूटा गया सामान वितरित किया जाता था।
  - वे न केवल गैर-आर्यों के साथ बल्कि आपस में भी लड़ते रहते थे।
  - उन्होंने अपने संघर्षों में सहायता के लिए देवताओं से प्रार्थना की।
- उनका दृढ़ विश्वास था कि संस्कार, आहूति दान और प्रार्थना उनके दैनिक जीवन में सहायता कर सकते हैं।
- **पुरंदर नाम, जिसका अर्थ है बस्तियों को नष्ट करने वाला**- संभवतः परकोटे से घिरी या नियोजित बस्ती- **भगवान इंद्र को दिया गया है।**
- **वशिष्ठ ऋषि** ने प्रमुख आर्य वंशों, भरत और त्रित्सु का समर्थन किया।
  - **भरत कबीलें के नाम पर, भारत क्षेत्र को भारत वर्ष नाम दिया गया था।**
- **दस नेताओं ने भरत परिवार का विरोध किया,** और उनमें से पाँच आर्य थे।
  - **दस राजाओं का युद्ध (दशरजना),** इस युद्ध का नाम था। **परुष्णी नदी के तट पर युद्ध हुआ,** जिसे अक्सर **रावी नदी के रूप में जाना जाता है।**
- **इस लड़ाई में, दिवोदास के पौत्र, भरत कबीलें के प्रमुख सुदास ने 10 कबीलों के संघ के खिलाफ लड़ाई लड़ी।**
- **गोप या गोपति** (मवेशियों के स्वामी) के रूप में सरदार का संदर्भ इंगित करता **है कि मवेशियों के झुंड की रक्षा करना और उसे बढ़ाना** उनकी अन्य प्रमुख भूमिका थी।
- शाही पुजारी समारोहों के निष्पादन का निरीक्षण करता था, प्रार्थना करता था और राजन के साथ युद्ध में जाता था।
- **बहुत से वैदिक गीत वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे शाही पुजारियों के महत्व को दर्शाते हैं।**

- बलि देवताओं को दी जाने वाली भेंट और राजन को बार बार दिए **जाने वाले आदर को दर्शाता है।**
- **इसमें कोई संदेह नहीं है कि युद्ध में हारने वाली कबीलों को भी भेंट देनी पड़ती थी।**
- **नियमित करों की कोई स्थापित प्रणाली नहीं थी।**

अर्थव्यवस्था

- **ऋग्वैदिक आर्य चरवाहा खानाबदोश थे जो ज्यादातर मवेशी पालने से अपना जीवन यापन करते थे।** उनके जानवरों का इस्तेमाल उनके धन को मापने के लिए किया जाता था।
- **ऋग्वेद में युद्ध के लिए शब्द गविष्टि था जिसका अर्थ है गायों की खोज।**
- **पुजारियों को दिए गए अधिकांश दान गायों और महिला दासियों के थे।** ग्रामीण व्यवस्था के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए कोई भूमि नहीं दी जाती थी।
- जब उन्होंने उत्तर भारत में अपना स्थायी ठिकाना बनाया तो उन्होंने खेती शुरू की।
- लोहे के बारे में अपने ज्ञान और उपयोग के कारण **जंगलों को साफ करने और अधिक भूमि पर खेती करने में सक्षम हुए।**
- **ऋग्वेद में हल के फाल का उल्लेख मिलता है।**
- हल जोतने का शब्द कृषि था और खेत को क्षेत्र कहा जाता था।
- **हल को लंगल और सुरा कहा जाता था जबकि हल से बनाई गई नाली को सीता कहा जाता था।**
- यह संभव है कि मवेशियों द्वारा संचालित चरखी चालित जल-उत्प्लावकों का उपयोग कुओं से सिंचाई के लिए पानी निकालने के लिए किया जाता था। **वे कई मौसमों के साथ-साथ बुवाई, कटाई और मड़ाई के बारे में जानते थे।**
- **उन्होंने गेहूँ (गोधुमा) और यवम (जौ) उगाए।**
- **ऋग्वेद में बढ़ई, रथ बनाने वाले, जुलाहे और चमड़े के कारीगर जैसे शिल्पकारों का उल्लेख मिलता है।**
  - इस समय की प्रमुख प्रगति में से एक तांबा धातु विज्ञान था।
- **ऋग्वेद में ताँबे और काँसे को अय्/अयष् कहा गया है।** ऋग्वेद में लोहार कर्मकार का संदर्भ मिलता है।
- **शब्द "सिरी" या "सूत" जो महिलाओं द्वारा कताई से संबंधित है और "तक्षण" जो बढ़ई को संदर्भित करता है,** का भी उल्लेख किया गया है।
- **यद्यपि पूर्व-वैदिक काल में व्यापारी मौजूद थे हालांकि व्यापारिक गतिविधियाँ बहुत आम नहीं थीं।**
- **पणियों को व्यापारियों के रूप में जाना जाता है और वे कारवां व्यापारी रहे होंगे।**
- "पैन" शब्द व्यापार के एक रूप को संदर्भित करता है जिसे वस्तु विनिमय के रूप में जाना जाता है।
  - **पणियों** ने यात्रा कार्यक्रम या संभवत: कारवां का व्यापार किया। **कुछ कविताओं में** पणियों को शत्रु के **रूप में भी चित्रित किया गया है।**
- **निष्क सोने या चांदी से बनी विनिमय वस्तु थी।** आहुति दानों के भुगतान के रूप में, एक पुजारी को 100 घोड़े और 100 निष्क मिलते थे।
- **श्रम की मुख्य इकाई परिवार थी। श्रम के बदले भुगतान का उल्लेख नहीं है।**

धर्म और कर्मकांड

- **वैदिक सभ्यता में कर्मकांड और धर्म महत्वपूर्ण थे।**
- ऋग्वेद में सूर्य, चंद्रमा, नदियों, पहाड़ों और बारिश की प्राकृतिक शक्तियों को देवताओं के रूप में संदर्भित किया गया था। आस्था **बहुदेववादी और प्रकृतिवादी होती थी। इसका अर्थ है** - कई देवताओं में आस्था जो प्राकृतिक घटनाओं को व्यक्त करते हैं।
- **सबसे महत्वपूर्ण देवता इंद्र थे जिन्हें पुरंदर के नाम से भी जाना जाता है।**
  - उन्हें 250 सूक्त समर्पित हैं।
- **अग्नि** भगवान और नश्वर लोगों के लिए एक मध्यस्थ के रूप में पूजनीय थी।
- **सूर्य** देवता थे जिन्होंने अंधकार को भगा दिया।
- **जल के देवता वरुण,** अगले स्थान पर आते है। इन **देवता ने प्रकृति के नियमों की रक्षा की।**
- **पौधों के देवता सोम के नाम पर इस पेय का नाम सोम रस रखा गया था।**
  - आयोजन के दौरान सोम नामक पेय पदार्थ का सेवन किया जाता था और ऋग्वेद के कई छंदों में इस नशीले पेय को बनाने की विधि का वर्णन किया गया है।
  - **ऋग्वेद में, सोम एक पौधे से निकाला गया रस और एक देवता का नाम है।**
  - **सोम की पहचान अवेस्ता के हाओमा से की जा सकती है।**
  - ऋग्वेद सोम को एक दिव्य पेय के रूप में वर्णित करता है जो अमरत्व प्रदान करता है और कई भजन इसके प्राणपोषक प्रभाव का वर्णन करते हैं।

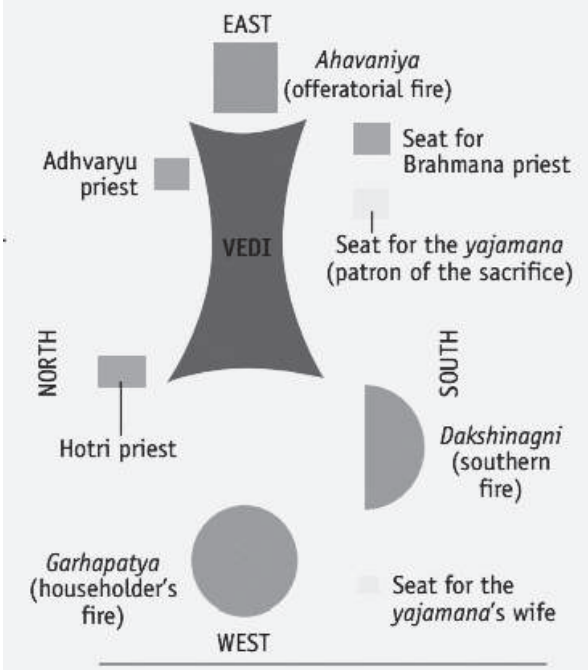


FIGURE 5.1 DIAGRAM OF SACRIFICIAL ARENA

- **शक्ति के देवता मारुत थे।**
- आश्चर्यजनक रूप से **रुद्र और शिव का बहुत कम उल्लेख किया गया है।**
- **भोर की देवी उषा थीं।** अतिरिक्त **देवियों में अदिति, पृथ्वी और सिंवली शामिल हैं।**
- **आदित्य,** वरुण और मित्र **के रूप में जाने जाने वाले आठ-देव समूह के सदस्यों** को अक्सर ऋग्वेद में एक साथ आमंत्रित किया जाता है।
- **आकाश (द्यु), पृथ्वी और मध्य क्षेत्र (अंतरिक्ष)** वैदिक छंदों में **ब्रह्मांड के भाग हैं।**
- **देव, जिसका अर्थ है "चमकदार" या "प्रकाशमान", देवताओं के लिए एक आम शब्द है।**
  - देवताओं का दूसरा नाम **असुर हैं।** यह शब्द मूल रूप से एक शक्तिशाली प्राणी का वर्णन करता था, लेकिन समय के साथ यह केवल राक्षसों के लिए नकारात्मक रूप से उपयोग किया जाने लगा।
- **ऋग्वेद में देवताओं के साथ-साथ गंधर्वों** (आकाशीय प्राणियों), **अप्सराओं** (गंधर्वों की पत्नियां)और राक्षसों, **यतुधन** (जादूगर) और **पिशाच** (मृतकों की आत्माओं) **जैसे बुरे प्राणियों का भी उल्लेख है।**
- **धार्मिक कर्मकांडों और प्रार्थनाओं (यज्ञों) के माध्यम से देवताओं की पूजा की जाती थी।**
  - आहुति ने सामान्य गतिविधि और अनुभव से पवित्र क्षेत्र में बदलाव का संकेत दिया।
- **यजमान का घर,** वह व्यक्ति जिसके लिए यज्ञ किया गया था और जिसने इस हेतु व्यय वहन किया था या भूमि का एक निकटवर्ती क्षेत्र जो उचित रूप से तैयार किया गया था, वह स्थान था जहाँ यज्ञ किए जाते थे।
  - **याजकों भेंट के एक भाग के अधिकारी होते थे।**
- **कुछ आहुति गृहस्थ द्वारा किए जाने वाले रोजाना के कार्य थे।**
  - दूसरे अनुष्ठानों में विशेषज्ञों की भागीदारी की आवश्यकता होती थी।
  - **ऋग्वेद में** यज्ञ **पुजारियों की सात अलग-अलग श्रेणियों** होत्री, अध्वर्यु, अग्निध, मैत्रवरुण, पोत्री, नेष्ट्री और ब्राह्मण का **उल्लेख है** जिनमें से प्रत्येक में उनकी अलग-अलग जिम्मेदारियों की एक सूची होती थी।
- **मंदिर और देवताओं के चित्रों की पूजा का उल्लेख ऋग्वेद में नहीं है** जो बाद के लोकप्रिय हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण तत्व थे।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. पूर्व-वैदिक आर्यों का धर्म मुख्य रूप से ..... था

(*a*) भक्ति

(*b*) छवि पूजा और यज्ञ

(*c*) प्रकृति की पूजा और यज्ञ

(*d*) प्रकृति की पूजा और भक्ति

❖ ❖ ❖

5 उत्तर-वैदिक चरण

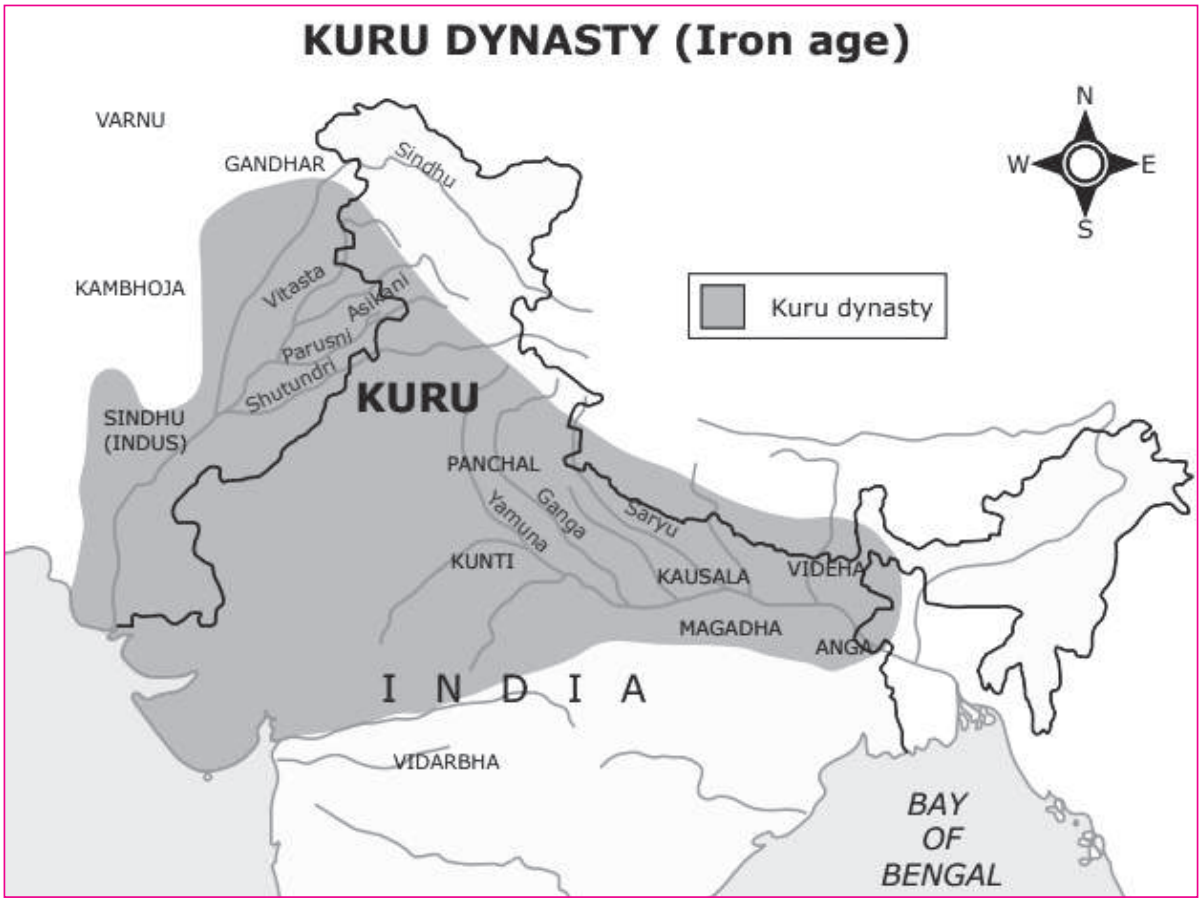
1000 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व के बीच का समय उत्तर वैदिक सभ्यता का समय है।

उत्तर वैदिक सभ्यता लौह युग की चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति से जुड़ी हुई है, जिसे पुरातत्वविदों ने कई उत्खनन स्थलों पर खोजा है।

- इस समय के दौरान राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जटिलता में प्रगति हुई।
- ऋग्वेद संहिताओं को लिखे जाने के बाद, उत्तर वैदिक साहित्य का निर्माण हुआ। ऋग्वेद के बाद यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद लिखे गए।
- सिंधु-गंगा के बीच के क्षेत्र और ऊपरी गंगा घाटी कुरु-पांचाल क्षेत्र है जो उत्तर वैदिक लेखन का प्रमुख भौगोलिक स्थान है।

आर्यों का विस्तार

- उत्तर वैदिक युग में आर्य भाषा बोलने वाले पंजाब से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गंगा यमुना दोआब में चले गए।



- ईरानीयों का संचरण पंजाब क्षेत्र में हुआ, जबकि आर्य गंगा घाटी के पूर्वी भाग में चले गए।
- ऊपरी गंगा घाटी और कुरु, पांचाल क्षेत्र जो सिंधु-गंगा के बीच के क्षेत्र में स्थित हैं, पर उत्तर वैदिक लेखन में चर्चा की गई है।

- शायद ताजा, निर्जन भूमि, भूमि संसाधनों और जनसंख्या के दबाव की इच्छा ने इस विस्तार को जन्म दिया।
- इन कबीलों में कुरु, पांचाल, वाशा और उशीनार शामिल हैं।
  - सरस्वती और दृषद्वती नदियों का उल्लेख उत्तर वैदिक लेखों में भी मिलता है।
- ताम्रपाषाण भौतिक संस्कृति मानने वाले स्थानीय लोगों के संपर्क में आने पर वैदिक आर्यों ने 1000 ईसा पूर्व के आसपास पूर्वी उत्तर प्रदेश में कोशल क्षेत्र और उत्तरी बिहार में विदेह की यात्रा की।
- इस समय के दौरान आर्यों के सबसे पूर्वी क्षेत्र कोसल और विदेह के आसपास के क्षेत्र थे। पांचाल और विदेह वैदिक युग के अंत तक आर्यीकृत हो गए थे।
- अंग और मगध (बिहार) के निवासियों को अथर्ववेद में प्रतिद्वंद्वियों के रूप में दिखाया गया था।
- ऐतरेय ब्राह्मण में बंगाली पुंड्रों और आंध्रों को आर्य पहचान से संबंधित नहीं माना गया था।

लौह धातु का प्रयोग

- इस काल के दौरान, लौह एक महत्वपूर्ण धातु थी जिसका उपयोग औजारों के लिए किया जाता था।
- इसे काली धातु, 'श्याम अयस' अथवा 'कृष्ण अयस' कहा जाता था।
- ऐसा माना जाता है कि गंगा घाटी के जंगल से कृषि क्षेत्र में परिवर्तन में लौह एक प्रमुख घटक था।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश और विदेह में वैदिक युग के अंत तक लोहे की खोज हो चुकी थी।

बस्तियाँ और क्षेत्र

- उत्तर वैदिक लोग कृषि की गहनता के परिणामस्वरूप एक व्यवस्थित जीवन शैली जीते थे जिसके कारण क्षेत्रीय संस्थाओं का निर्माण हुआ।
- ब्राह्मण, जो लगभग 800 ईसा पूर्व के हैं, में "जनपद" शब्द शामिल है, जो क्षेत्र को संदर्भित करता है।
- यहां 1000 से अधिक चित्रित धूसर मृद्भाण्ड सांस्कृतिक स्थल पाए जा सकते हैं, जो यह दर्शाता है कि ऊपरी गंगा घाटी अत्यधिक आबादी वाली थी और वहां नए गांव विकसित हो रहे थे।
  - या तो मिट्टी-ईंट के घर या मवेशी और पुताई वाली दीवारों के घर आदर्श आवास थे।
- उत्तर वैदिक लेखन ने वाणिज्यिक क्षेत्रों का वर्णन करने के लिए "नगर" शब्द का प्रयोग किया। हालाँकि वैदिक युग के अंत तक बड़ी बस्तियाँ बनना शुरू नहीं हुई थीं।

वर्ण पदानुक्रम

- उत्तर वैदिक लेखन विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए उत्पादक संसाधनों तक अलग-अलग स्तर की पहुंच के साथ एक वर्ग प्रणाली के उद्भव को प्रकट करते हैं।
- वर्ण एक विचारधारा का हिस्सा था जो युग की बढ़ते सामाजिक अलगाव को दर्शाता था। संभ्रांत समूहों के दृष्टिकोण से यह भेदभाव एक विचारधारा द्वारा और भी अधिक न्यायसंगत था।
  - इस दर्शन ने समाज को चार वंशानुगत स्तरों में विभाजित करके सामाजिक विभाजन, भूमिकाएं, पद और समारोह शुद्धता को परिभाषित किया।
- उत्तर वैदिक शास्त्र राजा के लिए पुरोहित के महत्व के साथ-साथ राजन्य और कम से कम कुछ ब्राह्मणों के बीच मजबूत संबंधों को रेखांकित करते हैं।
- पहले तीन वर्णों को द्विज के रूप में संदर्भित किया गया था। जिसका अर्थ है "दो बार जन्म"। यह उन व्यक्तियों को संदर्भित करता है जो उपनयन संस्कार के योग्य थे, जिसे दूसरे जन्म के रूप में देखा जाता था।
- वे अज्ञेय या पवित्र वेदी अग्नि की प्रथम स्थापना करने के योग्य थे। इसने गृहस्थजीवन के अनुष्ठान दायित्वों की शुरुआत का संकेत दिया।
- ब्राह्मणों को, विशेष रूप से वेदों के अध्ययन और प्रसारण तथा यज्ञों के साथ उनके जुड़ाव के कारण वर्ण पदानुक्रम में ऊंचा स्थान दिया गया था।
  - इसके अलावा, वह चार लाभ प्राप्त करने से जुड़े थे। उपहार, सम्मान, उत्पीड़न और शारीरिक प्रताड़ना से मुक्ति।
- राजन्य या क्षत्रिय शक्ति, प्रख्याति, शासन और युद्ध से जुड़े थे।
- वैश्यों की पहचान भौतिक संपदा, जीव-जंतुओं, भोजन और कृषि और गाय पालने जैसी श्रम प्रधान गतिविधियों से की जाती थी।
- वर्ण व्यवस्था के आधार पर शूद्रों का स्थान प्रारंभ से ही पूर्वनिर्धारित था।
  - उन्हें निम्नश्रेणी के कार्य करने और उच्च वर्णों की सेवा करने के लिए जाना जाता था। वह वैदिक यज्ञ नहीं कर सकते थे।
  - दीक्षित (जिसने वैदिक यज्ञ की दीक्षा ली हो) के लिए शूद्र से बात करना वर्जित था।
- पूरे समाज में शूद्रों से भी निम्न सामाजिक वर्ग मौजूद थे।
  - गायत्री मंत्र का पाठ शूद्रों द्वारा नहीं किया जा सकता था।
- दान-स्तुतियों में उन उपहारों का उल्लेख है जिनमें दास (दास और दासी) शामिल हैं।

सामाजिक व्यवस्था और महिलाओं की स्थिति:

- वर्ण का सामाजिक आर्थिक स्तर और अधिक दृढ़ हो गया था।
- ब्राह्मणों को शिक्षक माना जाता था।
  - गायों और ब्राह्मणों की पत्नियों को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। चार-वर्ण व्यवस्था ने खुद को मजबूती से स्थापित किया था और समय के साथ कठोर किया था।
- कर्मकांडों के इतने लोकप्रिय होने के कारण ब्राह्मण सत्ता में आने में सक्षम थे।
- कुछ शिल्प संगठन उच्च पद तक पहुँचने में सक्षम थे। उदाहरण के लिए रथकारों के नाम से जाने जाने वाले रथ निर्माताओं के पास पवित्र धागा पहनने का अधिकार था।
  - उत्तर वैदिक युग में गोत्र की अवधारणा पहली बार सामने आई। "गोत्र" शब्द का उपयोग उन लोगों के समूह का वर्णन करने के लिए किया जाता था जो एक पूर्वज साझा करते थे।
- जैसे-जैसे समाज अधिक संगठित होता गया और पितृसत्तात्मक परिवार का महत्व बढ़ता गया, महिलाओं की स्थिति बिगड़ती गई।
  - महिलाओं को उपनयन और गायत्री मंत्र से भी वंचित रखा गया।
- मजबूत ज्येष्ठाधिकार अधिकार मौजूद था। भले ही उन्होंने ऋग्वैदिक युग के दौरान संस्कारों में भाग लिया था परंतु उत्तर वैदिक युग के दौरान महिलाओं को भाग लेने की अनुमति नहीं थी।
  - बेटियों को संघर्ष के संभावित कारण के रूप में देखा जाता है।
  - उनका कार्य मवेशियों का देखभाल करना होता था साथ ही जानवरों का दूध निकालना था और पानी इकट्ठा करना था।
- केवल एक विवाहित पुरुष अपनी वैध पत्नी के साथ यज्ञ में यजमान बन सकता था।

राजनीतिक व्यवस्था

- प्रारंभिक वैदिक युग में कबीलाई राजनीति का शासन था।
- उत्तर वैदिक ग्रंथ वंशावली पर आधारित एक कबीलाई राज्य व्यवस्था से एक क्षेत्रीय राज्य में बदलाव को दर्शाते हैं।
- उत्तर वैदिक काल में राजा की शक्ति का विस्तार हुआ जबकि सभाओं के महत्व में गिरावट आई।
- समिति और सभा इस काल के दौरान बनी रही हालांकि सभा का प्रभाव समाप्त हो गया।
- राजन ने संघर्ष के दौरान सेनापति के रूप में कार्य किया। सम्राट और साम्राज्य के विचार विकसित हुए और वे राजा की बढ़ती महत्वाकांक्षा और अधिकार को दर्शाते हैं।
  - वाजपेय और राजसूय सहित कई यज्ञों के साथ रॉयल्टी की वैधता ने महत्व ग्रहण किया।
- उत्तर वैदिक युग में बड़े राज्यों का गठन हुआ।
- उत्तर वैदिक युग में कई जन या कबीलों को जनपद या राष्ट्र बनाने के लिए विलय कर दिया गया।
- इसके अतिरिक्त, राजाओं ने राजविस्वजन, अहिलभुवनपति (संपूर्ण पृथ्वी के स्वामी), एकराट और सम्राट (एकमात्र शासक) जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
- राजन को सामाजिक संरचना का अधिकार मिला
  - संसाधनों के प्रबंधन के लिए श्रौत यज्ञ किए जाते थे। कुछ लाभ प्राप्त करने के लिए किए गए यज्ञ इस श्रेणी में आते हैं।
  - पुजारी को गायों, घोड़ों, रथों, सोने, कपड़ों और महिला दासों सहित राजाओं से उपहार मिलते थे।
  - ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार, राजा को उस ब्राह्मण को देना चाहिए जो उसे 1000 सोने और मवेशियों का अभिषेक करता है।
  - नतीजतन पुजारी ने राजनीति और रॉयल्टी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- राष्ट्र जैसे शब्द थे जिसका अर्थ था "क्षेत्र" और राज्य, जिसका अर्थ "शाही शक्ति" था।
- बलि जनता द्वारा राजा (विश) को दिया गया एक स्वैच्छिक या आवश्यक उपहार था।
  - इस तरह के अवैतनिक प्रसाद को उपहार के रूप में माना जाता था।
- इसके अलावा पहले से मौजूद पुरोहित, सेनानी और ग्रामणी, अतिरिक्त अधिकारियों की एक महत्वपूर्ण संख्या उत्तर वैदिक काल के दौरान प्रशासन में सक्रिय थी।
- ट्रेजरी अधिकारी, कर संग्राहक और शाही दूत उनमें से कुछ हैं।

अर्थव्यवस्था

- इस समय के दौरान आर्थिक गतिविधि बहुत विविध थी। व्यापार, हस्तशिल्प निर्माण, पशुपालन और कृषि सभी अर्थव्यवस्था के विकास में सहायता करते थे।
- उत्तर वैदिक युग में कृषि उत्पादन में वृद्धि देखी गई। शतपथ ब्राह्मण में राजाओं के कृषि प्रयासों से जुड़े आयोजनों का उल्लेख है।
- इसका तात्पर्य यह है कि सम्राट कृषि को महत्व देते थे और विस्तार करने वाले लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए इसकी ओर रुख करते थे।
- गंगा-यमुना दोआब को सबसे पहले वैदिक लोगों ने चावल से बनाया था। वैदिक कर्मकांडों में गेहूँ के स्थान पर चावल का उपयोग किया जाता है।
  - पशुचारण महत्वपूर्ण रहा। "दक्षिणा" के हिस्से के रूप में मवेशी चढ़ाए जाते रहे।

- कृषि पशु चारण द्वारा पूरक होती थी।
- खेती और पशुपालन के विकास के साथ अनाज, दूध और घी और पौधों से बने विभिन्न प्रकार के भोजन और पेय पदार्थ का सेवन किया जाने लगा।
- पूर्व-वैदिक काल के विपरीत, जहां कम व्यावसायिक समूहों को सूचीबद्ध किया गया है, इस समय के दौरान कला और शिल्प का विकास हुआ और कारीगर विशेषज्ञता का गहरा विकास हुआ।
- सीसा, कांस्य, टिन, तांबा और अन्य धातुएं सूचीबद्ध हैं।
  - विशिष्ट टीमों ने इन धातुओं को पिघलाया और संसाधित किया। तांबे की वस्तुओं का उपयोग शिकार और युद्ध के हथियार बनाने के लिए किया जाता था।
  - बुनाई का काम स्त्रियाँ करती थीं। बढ़ईगीरी, चीनी मिट्टी की वस्तुएं और चमड़े का काम प्रसिद्ध शिल्प थे।
- "कुलाला" जैसे शब्द जो कुम्हारों को संदर्भित करते हैं और "उर्न सूत्र" जो ऊन को दर्शाता है।
- धोबी, शिकारी, नाविक, ज्योतिषी और रसोइयों सहित अन्य व्यवसायों का उल्लेख है।
- उत्तर वैदिक काल के लोग समुद्र से परिचित थे और वे बेबीलोन जैसे देशों के साथ व्यापार में संलिप्त थे।
- वहाँ वंशानुगत व्यापारियों (वणिक) का एक वर्ग विकसित हुआ। वैश्य व्यापार और उद्योग में भी लगे हुए थे।
- उन्होंने अपने बीच में गणों या संघों की स्थापना की।
  - निष्क के अलावा पूरे ऋग्वैदिक युग में सोने और चांदी के सिक्के जैसे सतमान और कृष्णला का भी विनिमय मुद्रा के रूप में उपयोग किया जाता था।

धार्मिक आस्था और विश्वास तंत्र

- आर्यन सांस्कृतिक केंद्र उत्तर वैदिक युग के दौरान ऊपरी गंगा दोआब में स्थित था।
  - कुरु-पंचालों का क्षेत्र, इस क्षेत्र को दिया गया नाम है। अग्नि और इंद्र वैदिक देवताओं का महत्व कम हो गया।
- प्रमुख देवता प्रजापति बने। रुद्र संस्कारों के देवता, जो शिव से जुड़े थे, का महत्व बढ़ गया।
- संस्कृति में कर्मकांडों का महत्व बढ़ गया।
- ऐसा माना गया कि अनुष्ठान और यज्ञ विभिन्न समस्याओं को हल कर सकते हैं।
- अनुष्ठान अधिक जटिल होते गए, अधिक सामग्री की आवश्यकता होती थी और अधिक समय लगता था।
- यह कर्मकांडों की मांग और विशेषाधिकार प्राप्त समूहों के उद्भव को दर्शाता है जो अनुष्ठानों और यज्ञों के लिए अधिक धन दे सकते थे।
- अनुष्ठानों के उचित निष्पादन पर जोर दिया गया था।
- दक्षिणा देने पर जोर दिया गया। रोजमर्रा की कई समस्याओं के समाधान के रूप में कई अनुष्ठानों का सुझाव दिया गया।

उत्तर वैदिक चरण के दार्शनिक पहलू

- **ब्राह्मण ग्रंथ :** ब्राह्मण लेख एक ऐसे समय का चित्रण करते हैं जब यज्ञ समय लेने वाले, महंगे और अलंकृत हो गए थे।
  - यज्ञ को दुनिया को अस्तित्व में लाने के रूप में माना जाता है और इसके उचित निष्पादन को जीवन और ब्रह्मांड दोनों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक माना जाता था।
- **उपनिषद:** उपनिषद, जिसका शाब्दिक अर्थ है "किसी के पास बैठना," आमतौर पर इसका अर्थ यह लिया जाता है कि छात्र अपने शिक्षक के आसपास इकट्ठे होते हैं।
  - आत्म-साक्षात्कार, ध्यान, जन्म और मृत्यु के चक्र और ब्रह्म (सर्वोच्च होने) पर जोर देते हैं।
  - सद्गुणों के रूप में कर्म, नैतिकता, आत्म-नियंत्रण, दया और दान की अवधारणाओं को बढ़ावा देते हैं।
- बृहदारण्यक और छांदोग्य को सबसे प्राचीन उपनिषद माना जाता है।
- उपनिषदों और आरण्यकों द्वारा वर्णित विषय समान हैं और उन्हें अलग करना हमेशा आसान नहीं होता है।
  - बृहदारण्यक उपनिषद, उदाहरण के लिए, आरण्यक और उपनिषद दोनों के रूप में माना जाता है।
- ब्राह्मण और उपनिषद दोनों ही पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र का उल्लेख करते हैं।
- शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जो लोग गलत तरीके से यज्ञ अनुष्ठान करते हैं उन्हें पुनर्जन्म और पश्चाताप का सामना करना होगा।

600 ईसा पूर्व के बाद राज्य ने आकार लेना शुरू किया। उत्तर वैदिक काल में कुलों की वंशावली की विशेषता है और गंगा घाटी के कई क्षेत्रों में छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। इस काल तक जनपद और राष्ट्र जैसी क्षेत्रीय इकाइयाँ अस्तित्व में आ गई थीं।

❖ ❖ ❖

6 महाजनपदों का युग

- लगभग 1000 ईसा पूर्व में आर्यों ने पूर्व दिशा की ओर बढ़ना शुरू किया पूर्व की ओर जाते हुए उन्हें घने वनों से होकर जाना पड़ा।
  - जंगल/वनों को हटाने के लिए बहुत सारे लोहे के औंजारों की आवश्यकता थी।
- गंगा घाटी की समृद्ध मिट्टी और लोहे के फाल के प्रयोग से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।
- लोहे ने धातु के काम, बढ़ईगीरी और मिट्टी के पात्र जैसे शिल्पों के उत्पादन में भी काफी वृद्धि की। इसके बाद शहरीकरण संभव हुआ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में छठी शताब्दी ईसा पूर्व को द्वितीय शहरीकरण काल के रूप में जाना जाता है।
- हड़प्पा नगरों की समाप्ति के बाद और लगभग एक हजार से अधिक वर्षों के अंतराल के बाद शहरी केंद्र फिर से प्रकट हुए। हालांकि सिंधु के मैदान में नहीं बल्कि गंगा केंद्रित क्षेत्र में।
- उत्तर-पश्चिम, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी यूपी (गंगा बेसिन) की जगह आर्थिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन गए।

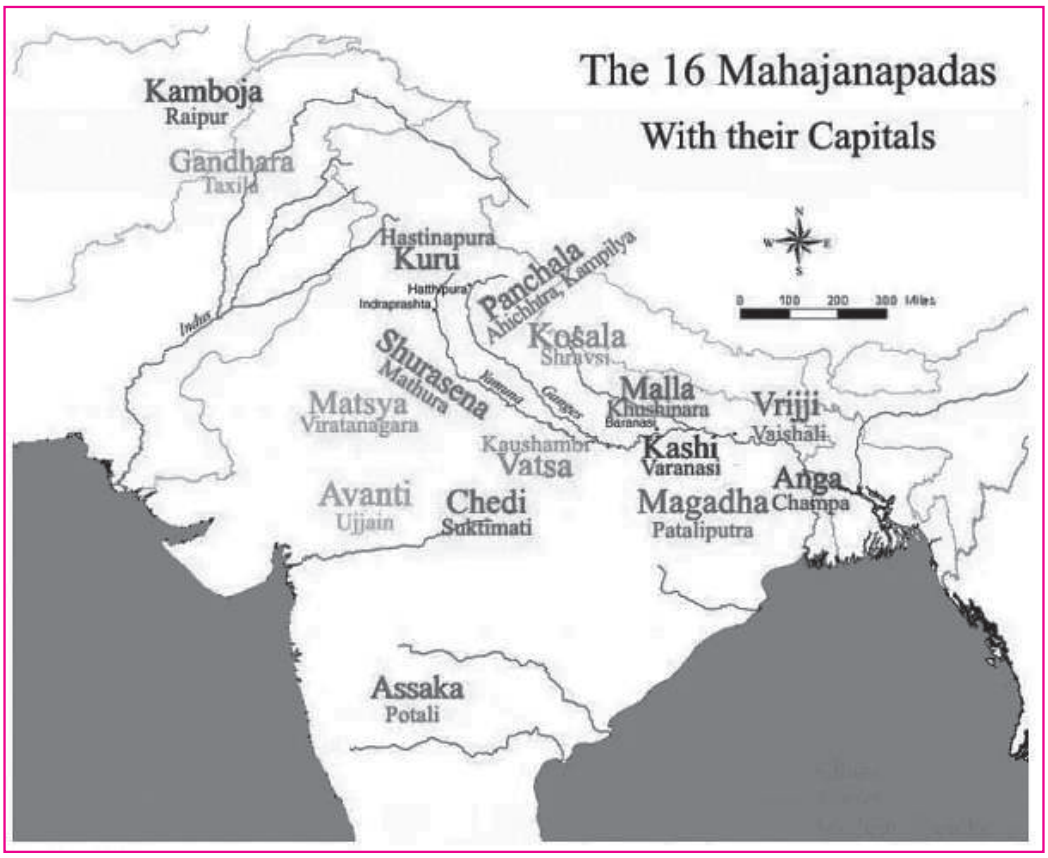
भारत-गंगा के मैदानों में द्वितीय शहरीकरण के विकास के कारण

- मध्य गंगा के मैदानों में विकास के इस चरण के दौरान कृषि का विकास हुआ।
- इस दौरान आवश्यक कृषि अधिशेष उत्पादित हुआ क्योंकि गीले चावल की खेती ने अन्य फसलों की तुलना में अधिक उत्पादन करना शुरू कर दिया।
- लौह प्रौद्योगिकी द्वारा भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई थी।
- प्रौद्योगिकी और इसके द्वारा किसानों को प्रदान की जाने वाली सहायता ने शिल्प के निर्माण को प्रेरित किया। इसी कारण से बाद के काल में व्यापार तेजी से बढ़ा।

जनपद से महाजनपद तक

- 'जन' जो उत्तर वैदिक काल में पूर्व की ओर चले गए थे, उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में खुद को स्थापित/अवस्थित करना शुरू कर दिया था।
- लोगों की निष्ठा जन (कबीला या गोत्र) से जनपद (क्षेत्र) में बदल गई।
- जनपद का सटीक अर्थ था "वह स्थान जहाँ कबीला पनपती है।"
- जनपद संसाधनों और राजनीतिक शक्ति के लिए संघर्ष में लगे हुए थे।
- कुछ जनपदों ने अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार किया और कई जनों को शामिल किया। वे महाजनपद या जनपद के रूप में विकसित हुए।
- महाजनपद जनता-शासित क्षेत्रीय राजशाही (जन) के आगमन का प्रतीक थे।
- राजा एक केंद्रीकृत सरकार की सहायता से राष्ट्र की देखरेख करता था।
  - संप्रभु शासक भी राजा था।
- राजा ने कृषि अधिशेष पर कर लगाकर धन का पुनर्वितरण और बल का उपयोग करके एक पदानुक्रमित समाज में कानून और व्यवस्था को बनाए रखा।
- इन विशेषताओं ने गंगा के मैदानों को एक राज्य-निर्माण क्षेत्र के रूप में पहचाना।
- उनकी राजनीति के आधार पर महाजनपदों को गणसंघों और सरदार राज्यों में विभाजित किया गया है।

16 महाजनपद



अंगुत्तर निकाय में सोलह महाजनपदो की सूची प्रदान की गई है।

महाजनपद	राजधानी	विवरण
काशी	वाराणसी	• क्रमशः उत्तर और दक्षिण में वरुणा और असि नदियों से घिरा हुआ है। ○ इन्हीं दो नदियों के नाम से ही इसकी राजधानी वाराणसी बनी है। • कई काशी राजा राजनीतिक सर्वोच्चता की स्थिति के इच्छुक थे। • काशी कभी-कभी अंग और मगध के साथ संघर्ष में भी शामिल था। • एक समय उत्तर भारत के सबसे शक्तिशाली राज्यों में से एक काशी अंततः कोसल साम्राज्य में समाहित हो गया था।
कोशल	उत्तर में श्रावस्ती और दक्षिण में कुशावती।	• कोशल का शक्तिशाली साम्राज्य पूर्व में सदानीरा (गंडक), पश्चिम में गोमती, दक्षिण में सर्पिका (साई) और उत्तर में नेपाल की पहाड़ियों से घिरा हुआ था। • राज्य के दो हिस्सों की राजधानियाँ सरयू नदी के प्रत्येक किनारे पर स्थित हैं। उत्तर में श्रावस्ती और दक्षिण में कुशावती। • साकेत और अयोध्या दो अन्य महत्वपूर्ण शहर थे और कभी राजनीतिक केंद्र रहे होंगे। • कपिलवस्तु के शाक्यों पर अपनी शक्ति का विस्तार किया और शायद केशपुत्त के कलामों और आसपास के अन्य राज्यों पर भी। • कोशल के राजा पसेनादि (प्रसेनजित) बुद्ध के समकालीन थे और पालि ग्रंथों में उनका बार-बार उल्लेख मिलता है। • प्रसेनजीत के काल में कोशल और मगध वैवाहिक संबंधों से जुड़े थे। • इस शक्तिशाली राजा की मृत्यु के बाद कोशल मगध का हिस्सा बन गया।

मगध	प्रारंभ में गिरिव्रज या राजगृह, आधुनिक राजगीर के पास। बाद में: पाटलिपुत्र	• मगध साम्राज्य मोटे तौर पर बिहार के आधुनिक पटना और गया जिलों तक विस्तृत था। • क्रमश: उत्तर, पश्चिम और पूर्व में गंगा, सोन और चंपा नदियों से घिरा हुआ था और दक्षिण में विंध्य तक फैल गया था। • पुराण बृहद्रथ से शुरू करते हुए मगध राजाओं की सूची देते हैं। • छठी शताब्दी ईसा पूर्व में इस राजवंश का अंत हो गया। • यह उत्तर भारत में राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया। • मगध प्रकृति द्वारा कुछ भौगोलिक और सामरिक लाभों से संपन्न था। इसने उसे शाही महानता तक पहुँचाया।
वज्जि (वृज्जी)	उत्तर बिहार में वैशाली आधुनिक बसाढ़।	• पूर्वी भारत में गंगा के उत्तर में, नेपाल की पहाड़ियों तक फैला हुआ है। • अधिकांश इतिहासकार वज्जी को आठ या नौ कुलों का संघ मानते हैं। • वज्जी महासंघ का नेतृत्व चेतक ने किया था, जो त्रिशला (महावीर की मां) के भाई और मगध राजा बिंबिसार की पत्नी चेलना के पिता थे।
चेदि	सोत्थिवतीनगर	• चेदि साम्राज्य मध्य भारत में बुंदेलखंड के पूर्वी भाग में स्थित था। • राजा: शिशुपाल, कुछ पुराणों के अनुसार, उन्हें मगध के जरासंध और कुरु के दुर्योधन का सहयोगी माना जाता है।
वत्स	कौशाम्बी की पहचान यमुना के दाहिने किनारे पर कोसम गाँव से है	• गंगा के दक्षिण में अपने बढ़िया सूती वस्त्रों के लिए विख्यात था। • उदयन राजा थे। • तीन संस्कृत भाषा के नाटकों-स्वप्नवासवदत्ता, प्रियदर्शिका और हर्ष की रत्नावली में उदयन को नायक के रूप में दिखाया गया है।
पांचाल	पंचाल की राजधानी अहिच्छत्र (बरेली में रामनगर) थी। दक्षिणा (दक्षिण) पांचाल : काम्पिल्य	• इसमें रोहिलखंड क्षेत्र और मध्य दोआब क्षेत्र का हिस्सा शामिल था और इसे गंगा द्वारा दो भागों में विभाजित किया गया था। • कान्यकुब्ज या कन्नौज का प्रसिद्ध नगर इसी राज्य में स्थित था। • कई प्राचीन ग्रंथों में चुलानी नाम के एक राजा का जिक्र है जो ब्रह्मदत्त है। • अर्थशास्त्र के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि पांचालों ने बाद में सरकार के एक कुलीन तंत्र को अपना लिया।
मत्स्य	विराटनगर (आधुनिक बैराट)	• यह राजस्थान में जयपुर क्षेत्र में स्थित है। अलवर और भरतपुर क्षेत्रों में भी फैला हुआ है। • बौद्ध ग्रंथ आमतौर पर मत्स्य को शूरसेन के साथ जोड़ते हैं।
शूरसेन	मथुरा में राजधानी (जिसे मदुरा के नाम से भी जाना जाता है)	• बौद्ध परंपरा शूरसेन के राजा अवन्तिपुत्र को बुद्ध के शिष्य के रूप में वर्णित करती है।
असाका (अश्मक/ अश्वका)	पोटाना/पोदन या पोटली	• राज्य उत्तर पश्चिम में स्थित था। हालाँकि बौद्ध ग्रंथों का असाका गोदावरी नदी पर स्थित है। • गोदावरी ने असाका को मुलका या अलका के पड़ोसी राज्य से अलग कर दिया, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान (आधुनिक पैठण के साथ पहचानी गई) थी। • दक्षिणापथ में एकमात्र महाजनपद था और विंध्य रेंज के दक्षिण में स्थित था।

अवंती	माहिष्मती और उज्जयिनी	• विंध्य द्वारा उत्तरी और दक्षिणी भाग में विभाजित किया गया था। • इस साम्राज्य के दो महत्वपूर्ण शहर महिष्मती (आधुनिक महेश्वर के साथ पहचाने गए) और उज्जयिनी (आधुनिक उज्जैन के पास) थे, दोनों का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में इसकी राजधानी के रूप में किया गया है। • ये दो शहर व्यापार मार्गों पर महत्वपूर्ण बिंदु थे जो उत्तर भारत को दक्कन और पश्चिमी तट पर बंदरगाहों के साथ जोड़ते थे। • प्रद्योत अवंती के एक प्रसिद्ध राजा थे जिनके समय में यह राज्य वत्स, मगध और कोशल के साथ संघर्ष में शामिल था।
गांधार	तक्षशिला	• इसमें पाकिस्तान के आधुनिक पेशावर और रावलपिंडी जिले और कश्मीर घाटी शामिल थे। • तक्षशिला व्यापार और शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था। • राजा पुक्कुसती या पुष्करसरीन ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य में गांधार पर शासन किया था। • मगध के साथ उनके मधुर संबंध थे और उन्होंने अवंती के खिलाफ एक सफल युद्ध किया।
कम्बोज	पुंछ	• कम्बोज में राजौरी के आसपास का क्षेत्र शामिल था। इसमें पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत का हजारा जिला भी शामिल था। • छठी शताब्दी ईसा पूर्व में कम्बोज राजशाही व्यवस्था प्रधान थी, लेकिन अर्थशास्त्र उन्हें संघ के रूप में संदर्भित करता है। • कंबोज, जो उत्तरपथ या उत्तर-पश्चिम में स्थित थे, प्राचीन काल में अपनी बेहतर घोड़ों की नस्ल और उत्कृष्ट घुड़सवार होने के लिए प्रसिद्ध थे।
कुरु	इंद्रप्रस्थ	• महाभारत, एक महाकाव्य, सत्तारूढ़ कुरु वंश की दो शाखाओं के बीच युद्ध का वर्णन करती है।
मल्ल	कुशीनारा और पावा	• मल्ल रियासत वज्जियों के पश्चिम में स्थित थी और इसमें नौ कुलों का एक संघ शामिल था। • कुशीनारा और पावा में दो राजनीतिक केंद्र थे। कुशीनारा की पहचान छोटी गंडक पर कसिया से की गई है। • मल्ल मूल रूप से राजशाही थे। • इस तथ्य के कारण कि बुद्ध ने अपना अंतिम भोजन वहीं किया, वहीं बीमार पड़े और वहीं महापरिनिर्वाण में प्रवेश किया। कुशीनारा और पावा बौद्ध धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान हैं।
अंग	चंपा (जिसे कभी मालिनी के नाम से जाना जाता था)	• अंग मोटे तौर पर बिहार के वर्तमान भागलपुर और मुंगेर जिलों से मेल खाता है। • गंगा ने इसे उत्तर में सीमाबद्ध किया। • चंपा नदी (जिसे शायद चंदन से पहचाना जा सकता है) मगध के साथ इसकी सीमा थी। • चंपा उस समय के व्यापारिक मार्गों पर भी एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। व्यापारियों को यहां से विदेशों में सुवर्णभूमि (शायद दक्षिण पूर्व एशिया में) के लिए नौकायन के रूप में वर्णित किया गया है।

- जैन लेखों में भी सोलह राज्यों की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है।
- छोटे, कमजोर राज्य अंततः या तो बड़े राजाओं के अधीन हो गए या धीरे-धीरे उनका सफाया हो गया।
- अंत में सिर्फ चार राज्य-वत्स, अवंती, कोशल और मगध-छठी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य तक बने रहे।

महाजनपदों की मूलभूत विशेषताएं

- गंगा के मैदानी इलाकों के महाजनपदों में मुख्यतः सभी सम्राट थे। इन राज्यों में वैदिक रूढ़िवाद एक सुस्थापित प्रथा थी।
- राजशाही विरासत में मिली थी और ज्येष्ठाधिकार का कानून आमतौर पर यह निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जाता था कि कौन सफल होगा।
- परिषद और सभा परिषदें राजा के साथ काम करती थीं। परिषदों ने सलाहकार निकायों के रूप में कार्य किया।
- कुछ अन्य करों के अलावा, राजा कृषि अधिशेष की प्राप्ति के लिए भू-राजस्व का उपयोग करता था।
  - बलि एक कर था जो कृषि योग्य भूमि के आकार के अनुसार लगाया जाता था।
  - भाग को फसल के एक हिस्से के रूप में अधिग्रहित किया गया था। इस दौरान एकत्र किए गए अन्य करों में कर और शुल्क शामिल थे।
- अधिक समृद्ध भू-स्वामियों को गृहपति के रूप में जाना जाता था।
  - इन जमींदारों ने श्रमिकों को काम पर रखा था जिन्हें वे दास या कर्मकार कहते थे।
  - कसाक या कृषक छोटे जमींदारों के नाम थे।
- वर्ण के आधार पर समाज को वर्गों में बांटा गया था।
- सामाजिक संरचना में शूद्रों के नीचे अछूत नामक एक नए सामाजिक वर्ग का गठन किया गया था।
- उन्हें गाँवों के बाहर रहने के लिए मजबूर किया गया था, जहाँ वे शिकार करते थे और जीवित रहने के लिए भोजन की तलाश करते थे।
  - जैसे-जैसे शहरीकरण बढ़ा, उन्हें एक तरफ कर दिया गया और उन्हें कम रोजगार दिया गया।
  - वे एक अनोखी भाषा बोलते थे जो इंडो-आर्यों से अलग थी।

गण या संघ

- भारतीय लेखन के अनुसार राज्यों और गणों या संघों की अलग-अलग राजनीतिक संरचनाएं और संचालन के तरीके हैं।
- वज्जि और मल्ल संघ थे जिससे दो महाजनपद बने।
- कपिलवस्तु के शाक्य, देवदहा और रामग्राम के कोलिय, अलकप्पा के बुलिस, केसापुत्त के कलाम, पिप्पलिवन के मोरिया और भग्गस (भार्गस), जिनकी राजधानी सुसुमार पहाड़ी पर थी, सभी का उल्लेख बौद्ध लेखन में मिलता है।
- कुलों को गणसंघ के रूप में जाना जाने वाले कुलीनतंत्र में शक्ति का केंद्र था।
- सबसे प्रसिद्ध गण-संघों में से एक वृज्जी था और मिथिला क्षेत्र में वैशाली उनकी राजधानी थी।
- एक ही राजा की एकमात्र शक्ति के अधीन होने के बजाय इन राज्यों में निर्णय लेने के लिए कई कुलों के प्रमुख सामूहिक रूप से मिले। सरकार की प्रणाली में कबीलाई संगठन की अधिक विशेषताएं शामिल थीं।
  - मुख्य पद, जिसे गणपति या गणराज के नाम से भी जाना जाता है, विरासत में नहीं मिला था।
- गणों का सबसे मूल्यवान गुण चर्चा आधारित शासन था। यह उनका सबसे बड़ा दोष भी था।
  - वे आंतरिक कलह से ग्रस्त थे। खासकर तब, जब शत्रुतापूर्ण राजतंत्र भी गण में मौजूद होते थे।
- इस प्रकार प्राचीन भारत में गणों का इतिहास यदि अधिक नहीं तो कम से कम एक हजार वर्ष पुराना है।
- राजशाही शक्तियों के हाथों उनकी सैन्य असफलताओं की व्याख्या उनकी सरकार की प्रणाली और सैन्य संगठन साम्राज्य निर्माण की मांगों को उठाने में विफल होने के परिणामस्वरूप संभव है।
- यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि प्रमुख राज्य गंगा घाटी के उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में स्थित थे। अधिकांश गण, विशेष रूप से राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण गण, पूर्वी भारत में हिमालय की तलहटी में या उसके करीब स्थित थे।

❖ ❖ ❖

7 बौद्ध और जैन धर्म

महाजनपद की शहरी संपन्नता, वर्ग और जाति के भेदों से चिह्नित समुदायों का युग सन्यासियों का भी युग था जो सभी भौतिक और सामाजिक संबंधों से मोह को छोड़ने की वकालत करते थे।

सन्यासियों को विभिन्न आधारों पर संदर्भित किया गया था जिनमें निम्न शामिल हैं:

1. परिब्बजका (संस्कृत-परिव्राजक, 'पथिक')
2. समाना (संस्कृत-श्रमण, 'वह जो प्रयास करता है' या सत्य का आभास करता है)
3. भिक्खु (संस्कृत-भिक्षु, 'भिक्षा माँगकर जीवन यापन करने वाला')।

बड़ी संख्या में नास्तिक बुद्धिजीवियों द्वारा प्रमुख दर्शन की आलोचनाओं ने इस जागृति को जन्म दिया।

- अपने समय की सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रतिबिंबित करने के लिए गोशाल, गौतम बुद्ध, महावीर, अजित केशकंबलिन और इनके जैसे अन्य बुद्धिजीवियों ने सब कुछ त्याग गंगा के मैदानों में चले गए।
- इन तपस्वियों की शिक्षाओं ने एक ऐसे समाज की माँगों को पूरा किया जो तेजी से विकसित हो रहा था तथा जिसमें नई राजनीति, शहरी केंद्र, शिल्प का विकास और लंबी दूरी के व्यापार में विस्तार शामिल था।
- इन बुद्धिजीवियों ने आत्मा, मन और शरीर की वैदिक धारणाओं को चुनौती दी, जिससे नए धार्मिक संप्रदायों के उद्भव का मार्ग प्रशस्त हुआ।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. परिव्राजक-त्यागी और पथिक
2. श्रमण-उच्च स्थिति वाला पुजारी
3. उपासक-बौद्ध धर्म के अनुयायी

उपर्युक्त युग्मों में से कौन से जोड़े सही सुमेलित हैं?

(*a*) 1 और 2 केवल **(*b*) केवल 1 और 3**
(*c*) 2 और 3 केवल (*d*) 1, 2 और 3

जागरण के कारण

- **वैदिक धर्म की कठोरता:** विचार और कर्म की स्वतंत्रता राज्य गठन और वैदिक धर्म की कठोरता द्वारा प्रतिबंधित थी।
  - नास्तिक संप्रदायों में हठधर्मिता को सत्य के रूप में स्वीकार करने की प्रथा के खिलाफ एक विद्रोह व्यक्त किया गया था।
- **सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन:** क्षेत्रीय पहचान के निर्माण से सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया में तेजी आई।
  - मौजूदा व्यवस्था से मोहभंग होने पर, कुलीन वर्ग ने मगध या मध्य गंगा के मैदानों में फल-फूल रहे सुखवादी विश्वासों के विरोध में कार्य करना शुरू कर दिया।
- लोगों को नव विकसित धार्मिक संप्रदायों का पालन करने में कठिनाई नहीं हुई क्योंकि वैदिक धर्म अभी तक समाज में स्थापित नहीं हुआ था।
- व्यापारियों के नए वर्ग और सेठ जैसे बैंकरों ने शहरीकरण और व्यापार के उदय के परिणामस्वरूप अपनी आर्थिक स्थिति के अनुरूप उच्च सामाजिक स्थिति की मांग की।
- क्षत्रिय परेशान थे क्योंकि वैदिक लेखन ने केवल ब्राह्मणों को एक अच्छा जीवन जीने की अनुमति दी थी, जो कि वे भी चाहते थे।

हेटेरोडॉक्स संप्रदाय

- भटकते तपस्वियों और प्रशिक्षकों ने अनुयायियों को इकट्ठा किया और कई संप्रदायों की स्थापना की।
- उनके विचारों में भौतिकवाद, निर्धारणवाद, और विधिमुक्तिवाद (यह विचार कि दैवीय अनुग्रह नैतिक कानून का पालन करने की आवश्यकता को हटा देता है) के पहलू शामिल थे।
- इनमें से कई नास्तिक संप्रदाय जो पारंपरिक वैदिक धर्म के साथ प्रतिस्पर्धा करते थे, इस समय उभरे।
- उन्हें लंबे समय तक 'बेघर पथिक' (चिरा-पब्बजितो), संप्रदाय के संस्थापक (तीथाकारो) और उनके आदेशों के प्रमुख (गणचारियो) के रूप में जाना जाता है। ये समूह बौद्ध धर्म के मुख्य विरोधी थे।

आजीवक

- आजीवक संप्रदाय के सबसे महत्वपूर्ण नेता मक्खली गोशाल ने अपने पूर्ववर्तियों का उल्लेख किया है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि समूह लंबे समय से अस्तित्व में है।
- बौद्ध परंपरा आजीवक सिद्धांतों को गोशाल के अलावा पूरन कस्सप और पाकुध कच्चायन से भी जोड़ती है।
- जैन भगवती सूत्र हमें बताता है कि गोशाल के पिता मनखली नाम के एक मन्खा (शायद धार्मिक चित्रों के प्रदर्शक और धार्मिक गीतों के गायक) थे।
  - उनकी मां भद्रा थीं (कई पौराणिक जैन कथाओं में माताओं को दिया गया एक नाम)।
  - कहा जाता है कि उनके माता-पिता ने उनका नाम गोशाल रखा था क्योंकि उनका जन्म सरवाना गांव की एक गौशाला में हुआ था।
  - गोशाल पहली बार नालंदा में महावीर से मिले और दोनों छह साल तक साथी रहे।
  - धार्मिक असहमति के कारण वे अलग हो गए।
- गोशाल ने फिर श्रावस्ती की यात्रा की जहाँ उनका स्वागत एक धनी कुम्हार हलाहला ने किया।
- उन्होंने पुनर्जीवन की धारणा का समर्थन किया और वैदिक तपस्वियों द्वारा की जाने वाली कठोर तपस्या का उपहास किया।
- बौद्ध और जैन दोनों अलग-अलग संप्रदाय होने के बावजूद गोशाल को एक क्रूर स्वभाव के व्यक्ति के रूप में दर्शाते हैं।
- आजीवक संप्रदाय का मुख्यालय श्रावस्ती में था। आजीवक नंगे सीने वाले सन्यासी थे।
- गोशाल की मृत्यु के बाद दो अतिरिक्त प्रचारक, पूरन कस्सप और पकुधा कच्चायन, आजीवकों में शामिल हो गए और इसे नई जीवन शक्ति दी।

आजीवक संप्रदाय का दर्शन

- नियति या भाग्य, आजीविकों का मौलिक विचार था। उनके अनुसार इस दुनिया में कुछ भी नहीं बदला जा सकता क्योंकि यह सब पूर्व निर्धारित था।
- दर्द को समाप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कई प्रकार के देहान्तरण से गुजरना पड़ता है।
- आजीवकों का मानना था कि जीवन के छह अपरिहार्य पहलू हैं जिनमें लाभ और हानि, सुख और दुख और जीवन और मृत्यु शामिल हैं।
- पूरन कस्सप का मत था कि कर्मों का कोई गुण या दोष नहीं होता।
  - दूसरों को यातना देने, चोट पहुँचाने और मारने से कोई बुराई नहीं होती। इसी प्रकार उदारता, संयम और सत्य वाणी से कोई पुण्य प्राप्त नहीं होता।

आजीवकों का प्रसार और समकालीन नास्तिक विचारकों के साथ संघर्ष

- आजीविकों के नियमित रूप से सभा स्थल होते थे (जिन्हें सभा कहा जाता था) जहां प्रमुख संस्कार आयोजित किए जाते थे और बैठकें आयोजित की जाती थीं।
- यह इंगित करता है कि उनके पास एक कॉर्पोरेट संरचना हो सकती है।
- बौद्ध और जैन साहित्य दोनों में उनके विहित धर्मग्रंथों के उद्धरण हैं।
  - हालाँकि बौद्धों ने आजीवकों पर छिपकर खाने का आरोप लगाया, लेकिन वे अक्सर बड़ी तपस्या करते थे और बहुत कम भोजन करते थे।
- चूंकि भगवती सूत्र इंगित करता है कि उन्हें मांस खाने की अनुमति थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अहिंसा का पालन किया। हालांकि आजीवक संप्रदाय द्वारा जैनों के समान अहिंसा का पालन नहीं किया है।
- वे पूरी नग्नता में लगे रहे।
  - शुद्धता का अभ्यास न करने के लिए जैन साहित्य में उनकी आलोचना की जाती है।
- आजीवक संप्रदाय जाति या वर्ग के आधार पर भेदभाव का अभ्यास नहीं करता था और इसके तपस्वी और आम लोग समाज के विभिन्न वर्गों से आते थे।
- बाद के वर्षों में भी आजीवक संप्रदाय ने अपनी शक्ति बनाए रखी।
  - महावंश के अनुसार इसका प्रभाव दक्षिण में श्रीलंका तक पहुँच गया था। यह जानकारी मिलती है कि चोलों ने आजीवकों पर कर लगाया था।
- बराबर पहाड़ियों में शिलालेखों के अनुसार आजीवक तपस्वियों को अशोक द्वारा समर्पित कुछ गुफाएँ मिलीं हैं।
- पड़ोसी नागार्जुनी पहाड़ियों के शिलालेखों में उल्लेख है कि अशोक के उत्तराधिकारी दशरथ ने उन्हें तीन गुफाएँ समर्पित की थीं।
- अशोक का सातवाँ स्तंभ शिलालेख धम्म-महामात्र या प्रशासनिक अधिकारियों को आजीवकों जैसे संप्रदायों में शामिल होने का आदेश देता है।

अन्य नास्तिक मत

लोकायत या चार्वाक : "लोकायत" भौतिकवादी दर्शन को संदर्भित करता है। ऐसा कहा जाता है कि चार्वाक और अजित केशकंबलिन

ने औपचारिक दार्शनिक ढांचे के रूप में भारतीय भौतिकवाद को जन्म दिया।

- चार्वाक अनुभव द्वारा ज्ञान की खोज के समर्थक थे और उन्होंने संशयवाद के विचार को स्थापित किया।
- उन्होंने वेदों की वैधता का विरोध किया।

जैन धर्म

जैन का अर्थ: एक व्यक्ति जिसने अनंत ज्ञान प्राप्त किया है और दूसरों को मोक्ष (पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति) प्राप्त करने के तरीके पर निर्देश देता है- जैन नाम से जाना जाता है, जिसका संस्कृत अर्थ "एक विजेता के अनुयायी" है।

- जैन सिद्धांत की सही उम्र का पता लगाना मुश्किल है लेकिन यह बौद्ध सिद्धांत से काफी पुराना है।

क्योंकि बुद्ध और महावीर एक ही समय में रहते थे इसलिए उनकी शिक्षाओं में कुछ समानताएँ हैं। जैसे:

1. वैदिक सत्ता की अस्वीकृति
2. अनीश्वरवादी सिद्धांत
3. मानव प्रयास पर जोर
4. पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए एक मठवासी व्यवस्था की स्थापना।

हालाँकि उनके बीच कई दार्शनिक असहमति भी हैं।

भगवान महावीर से पहले जैन धर्म

- जिन का दूसरा नाम "फोर्ड बिल्डर" या "तीर्थंकर" है जो लोगों को दुख के सागर से ऊपर उठने में मदद करने के लिए सेतु बनाता है।
- समय के बारे में जैन विचार में अर्ध-चक्रों की एक अंतहीन श्रृंखला शामिल है जिन्हें आगे छह चरणों में विभाजित किया गया है, जिन्हें काल के रूप में जाना जाता है और उन्हें उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी (आनंद की डिग्री के संदर्भ में क्रमशः प्रगतिशील और प्रतिगामी) कहा जाता है।
- समय के प्रत्येक आधे चक्र में 24 तीर्थंकरों का अस्तित्व है।
- हमारे वर्तमान अर्ध-चक्र में पहला तीर्थंकर, जो एक अवसर्पिणी है या प्रतिगामी आनंद का समय है, ऋषभदेव थे।
- यजुर्वेद में तीन तीर्थंकरों - ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि का उल्लेख है।
- सभी तीर्थंकरों की ऐतिहासिक सत्यता का निर्धारण करना कठिन है।
    - 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ, गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र से थे।
    - बनारस के रहने वाले पार्श्वनाथ 23वें तीर्थंकर थे।
    - 24वें तीर्थंकर, वर्धमान ने बाद में महावीर (महान नायक) की उपाधि अर्जित की। कहा जाता है कि एक ही सिद्धांत सभी जिनों द्वारा प्रदान किया गया था।

भगवान महावीर का प्रारंभिक जीवन

- 599 ईसा पूर्व के आसपास वर्धमान यानी महावीर-का जन्म विदेह साम्राज्य की राजधानी वैशाली के करीब एक शहर कुंडग्राम में हुआ था।
    - महावीर बुद्ध की तरह ही एक क्षत्रिय कुलीन परिवार से आए थे।
- उनकी माता त्रिशला विदेह शासक की बहन थीं जबकि उनके पिता सिद्धार्थ ज्ञानात्री/ज्ञातृक वंश/कुल के प्रमुख थे।
    - आचारंगसूत्र के अनुसार वर्धमान के माता-पिता, जिन पार्श्वनाथ के भक्त थे।



Jain Painting Portraying Mahavira's Birth

- श्वेतांबर परंपरा के अनुसार वर्धमान ने गृहस्थ अवस्था तक पहुँचने के लिए यशोदा से विवाह किया और उनकी एक बेटी थी जिसका नाम प्रियदर्शना/अन्नुज्जा था।
    - दिगंबर परंपरा के अनुसार उन्होंने कभी शादी नहीं की।
- कहा जाता है कि वर्धमान ने तीस वर्ष की आयु में संसार त्याग दिया था।
- उन्होंने सत्य की खोज में एक भिक्षुक के रूप में यात्रा करते हुए 12 साल बिताए।
    - उन्होंने अपने वस्त्रों का त्याग कर दिया और कठोर तपस्या में लीन हो गए। वर्धमान ने अपनी तपस्या के 12वें वर्ष में निर्वाण या आत्मज्ञान या केवलीन (अनंत ज्ञान, सर्वज्ञता) प्राप्त किया। इस समय उनकी उम्र 42 वर्ष थी।



Mahavira

- उसके बाद, उन्होंने तीर्थंकर का दर्जा प्राप्त किया और जिन या महावीर (महान विजेता) नामों को अपनाया।
- उन्हें अपने 30 साल के प्रचार काल में धनी और प्रमुख लोगों का संरक्षण प्राप्त था।
- उनका निधन 72 वर्ष की आयु में लगभग 468 ईसा पूर्व राजगृह के निकट पावापुरी में हुआ था।
- उनकी मृत्यु या अंतिम मुक्ति जैनियों के लिए एक खुशी की घटना थी।

जैन धर्म का प्रसार

- महावीर के पास एक विशाल समर्थक आधार था। शुरुआत में उनके शिष्यों को विभिन्न सामाजिक समूहों से भर्ती किया गया था। हालाँकि जैन धर्म पूरे समय व्यापार और साहूकार समुदाय तक ही सीमित रहा।
- अहिंसा पर जैन धर्म की एकाग्रता कृषि सहित अन्य गतिविधियों पर रोक लगाती है क्योंकि यह जानबूझकर या अनजाने में हत्या को मना करती है।
- जैन संघ सभी वर्णों और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों के लिए खुला था।
  - उत्तरध्यान सूत्र हरिकेशीय, एक श्वपाक (चांडाल) परिवार के एक साधु के बारे में बताता है।
- जैन ग्रंथ महिलाओं को भिक्षुओं के ब्रह्मचर्य के लिए खतरे के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसी समय जैन धर्म ने महिलाओं के लिए एक मठवासी व्यवस्था की स्थापना की।
- जैन धर्म के तेजी से विस्तार के लिए संघ के सदस्यों का समर्पित कार्य जिम्मेदार था। यह तेजी से पूरे पश्चिमी भारत और कर्नाटक में फैल गया। जैन धर्म को चंद्रगुप्त मौर्य, कलिंग के खारवेल और गंगा, कदंब, चालुक्य और राष्ट्रकूट जैसे दक्षिण भारतीय शाही राजवंशों का समर्थन प्राप्त था।

जैन धर्म के सिद्धांत

- अहिंसा जैन धर्म का एक प्रमुख सिद्धांत है।
  - कोई अन्य धर्म अहिंसा पर उतना जोर नहीं देता जितना जैन धर्म। जैन धर्म में ईश्वर को स्वीकार नहीं किया गया है।
- जैन धर्म अपने शुरुआती दिनों में देवत्व की पूजा नहीं करता था।
- जैन धर्म इस बात पर जोर देता है कि पूजा या बलिदान से मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
  - इसमें कहा गया है कि दुख से बचने का एकमात्र तरीका तपस्या करना है।
- महावीर वैदिक सत्ता के विरोधी थे। परिणामस्वरूप जैन धर्म एक अपरंपरागत धर्म है।
- जैन धर्म के अनुसार संसार का कोई आदि या अंत नहीं है।
- एक चिरस्थायी नियम के अनुसार, यह उन्नति और क्षय के चक्र से गुजरता है। जैन धर्म के अनुसार दुनिया अमर आत्माओं (जीव) और पदार्थ (अजीव) से बनी है।
  - कर्म से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति को कठोर तपस्या और आत्म-वैराग्य में संलग्न होना चाहिए।
- परिणामस्वरूप जैन धर्म में केवल भिक्षु ही जन्म और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।
- जैन सिद्धांत अस्तित्व के चार मुख्य रूपों को पहचानता है - देवताओं (देव), मनुष्यों (मनुष्य), नरक प्राणियों (नारकी) और जानवरों और पौधों (तिर्यंच)।



- पशु और पौधों की श्रेणी को उनकी इंद्रियों के आधार पर छोटी उप-श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।
- सबसे निचली श्रेणी में एकल-इन्द्रिय निकाय (एकेंद्रिय) शामिल हैं।
  - इनमें से सबसे निम्न निगोड़ा हैं। छोटे जीव जिनके पास केवल एक इंद्रिय है, वह है स्पर्श।
- जैन दर्शन के अनुसार सार्वभौम कानून दुनिया को बनाए रखता है।
  - जैन धर्म एक देवता में विश्वास करने का विरोध करता है। जैन शिक्षा के अनुसार, ब्रह्मांड और उसके घटक (आत्मा, पदार्थ, स्थान, समय और गति) हमेशा अस्तित्व में रहे हैं।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. जैन दर्शन के अनुसार, दुनिया का निर्माण और रखरखाव निम्न में से किसके द्वारा किया जाता है?

(a) सार्वभौमिक कानून (b) सार्वभौमिक सत्य
(c) सार्वभौमिक आस्था (d) सार्वभौमिक आत्मा

जैन धर्म के त्रिरत्न

जैनियों को त्रिरत्न नामक तीन सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक है।



1. सही विश्वास (सम्यक-दर्शन)
2. सही ज्ञान (सम्यक-ज्ञान)
3. सही आचरण (सम्यक चरित्र)

पांच महाव्रत

1. **अहिंसा:** भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए - किसी जीवित प्राणी को घायल नहीं करना।
2. **सत्य/सुनृता:** असत्य न बोलना।
3. **ब्रह्मचर्य:** ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करना। (भगवान महावीर द्वारा जोड़ा गया)
4. **अपरिग्रह:** अपरिग्रह अर्थात धन इकट्ठा नहीं करना।
5. **अस्तेय:** चोरी न करना।

- अनुयायी और भिक्षु दोनों ही पाँच प्रतिज्ञाओं के एक ही समूह से बंधे हैं। अनुयायियों की तुलना में भिक्षुओं द्वारा प्रतिज्ञाओं को अधिक कड़ाई से पालन किया जाना था।
- जैन धर्म ने अहिंसा पर एक मजबूत ध्यान केंद्रित किया इसलिए अनुयायी जो धर्म का सख्ती से पालन करते हैं, छोटे कीड़ों को अनजाने में सांस लेने से बचने के लिए अपने मुंह और नाक को मलमल से ढकते हैं।
- जीवित प्राणियों को चोट पहुँचाने को दो दृष्टिकोणों से हानिकारक के रूप में देखा जाता है - इससे पीड़ित को पीड़ा होती है और यह चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति को नुकसान पहुँचाता है।
  - यह केवल कार्य नहीं है बल्कि कार्यों के पीछे की भावनाएँ और इरादे हैं जो मायने रखते हैं।
- जैन मुनियों ने चींटियों और अन्य कीड़ों पर पैर रखने से रोकने के लिए चलने से पहले अपने पंखों से मार्ग की सफाई की।
- जैनियों को कृषि या अन्य शिल्प में संलग्न होने की अनुमति नहीं थी जिसमें जीवित प्राणियों की हत्या या घायल करना शामिल था।
  - परिणामस्वरूप उन्होंने व्यापार और धन उधार देने में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। नतीजतन वे शहरीकरण के साथ अटूट रूप से जुड़े हुए थे।
- जैन धर्म समतावादी है। यह जन्म आधारित असमानता को स्वीकार नहीं करता है।
  - किसी की सामाजिक प्रतिष्ठा उसके कर्मों से निर्धारित होती है जन्म से नहीं। जैन धर्म के अनुसार "अपने कर्म से व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र बनता है।"
  - जन्म-आधारित अभिमान को पाप के रूप में देखा जाता है।
- जैन दर्शन जीवों की अनंत संख्या की कल्पना करता है। जीव का अपना कोई रूप नहीं है।



विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन जैन सिद्धांत पर लागू होता है/हैं?

1. कर्म विनाश का निश्चित तरीका तपस्या करना है।
2. प्रत्येक वस्तु यहाँ तक कि छोटे से छोटे कण में भी आत्मा होती है।
3. कर्म आत्मा का अभिशाप है और इसे समाप्त किया जाना चाहिए।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(*a*) केवल 1 (*b*) 2 और 3 केवल
(*c*) केवल 1 और 3 **(*d*) 1, 2 और 3**

अनेकांतवाद और स्यादवाद के सिद्धांत

- जैन धर्मशास्त्र के अनुसार वास्तविकता बहुआयामी (अनेकांत) है।
- हर चीज जो अस्तित्वान है (अर्थात, है) के तीन पहलू हैं: पदार्थ (द्रव्य), गुण, और प्रकार (पर्याय)।
- जैन सिद्धांत के अनुसार अनेकांतवाद (वास्तविकता के विविध चरित्र का सिद्धांत) वास्तविकता में अत्यंत जटिल है और इसके कई पहलू हैं।

- अनेकांतवाद और स्यादवाद (शायद की अवधारणा) द्वारा सभी ज्ञान की सापेक्षता पर बल दिया जाता है।
- स्यादवाद के अनुसार हम जो भी निर्णय लेते हैं, वह उस चीज की बारीकियों पर निर्भर करता है जिसे हम देख रहे हैं और साथ ही जिस परिप्रेक्ष्य से हम इसे देखना चाहते हैं।
  - योग्यता के बिना कोई निष्कर्ष सही नहीं है।
- स्यादवाद और अनेकांतवाद की मूल विचारधारा यह है कि वास्तविकता को पूरी तरह से और जटिल रूप से नहीं समझा जा सकता है।

जैन परिषद

- गंगा घाटी में ईसा पूर्व चौथी सदी के अंत तक भीषण अकाल पड़ा था। कई जैन मुनियों ने भद्रबाहु और चंद्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में कर्नाटक के श्रवणबेलगोला की यात्रा की।
- स्थूलबाहु, एक साधु जिसने भिक्षुओं की आचार संहिता को संशोधित किया तथा उत्तर भारत में रहने वालों भिक्षुओं का नेतृत्व किया।
  - परिणामस्वरूप जैन धर्म श्वेतांबर (श्वेत-वस्त्र) और दिगंबर संप्रदाय (आकाश-पहने या नग्न) में विभाजित हो गया।
- दिगंबर नेता स्थुलबाहु ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में पाटलिपुत्र में पहली जैन परिषद बुलाई। पांचवीं शताब्दी ईस्वी में दूसरी जैन परिषद वल्लभी में आयोजित की गई थी।
  - बारह अंग और 12 उपांग के रूप में जाना जाने वाला जैन साहित्य का अंतिम संग्रह किया गया।

जैन धर्म के विभिन्न संप्रदाय

मत	विशेषताएं

दिगंबर	• अपने शाब्दिक अर्थ में "आकाश पहने हुए।"
	• दिगंबर के अनुसार नग्नता का अभ्यास एक भिक्षुक के मार्ग का अनुसरण करने और मोचन प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक शर्त है।
	• दिगंबर संप्रदाय हाल की शताब्दियों में निम्नलिखित उप-संप्रदायों में विभाजित किया गया है:
	• प्रमुख उप संप्रदाय:
	  ○ बिसापंथ
	  ○ तेरापंथ
	  ○ तारणपंथा या समायपंथ

श्वेतांबर	• शाब्दिक अनुवाद "सफेद कपड़े पहने" है। श्वेतांबर के अनुसार मुक्ति प्राप्त करने के लिए पूर्ण नग्नता का अभ्यास करना आवश्यक नहीं है।
	• दिगंबर संप्रदाय की तरह श्वेतांबर संप्रदाय को भी तीन मुख्य उप-संप्रदायों में विभाजित किया गया है:
	  ○ मूर्तिपुजक,
	  ○ स्थानकवासी, व
	  ○ तेरापंथी

मूला संघ	• एक पुराना मठवासी समुदाय। "मुला" शब्द "जड़" या "मूल" का प्रतीक है।
स्थानकवासी	• स्थानकवासी श्वेतांबर जैन धर्म का एक संप्रदाय है जिसकी स्थापना लवाजी नाम के एक व्यापारी ने लगभग 1653 में की थी। स्थानकवासी यह मानते हैं कि आत्मा निराकार है और इसलिए किसी भी मूर्ति की प्रार्थना नहीं करते हैं।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. भारत में धार्मिक प्रथाओं के संदर्भ में, "स्थानकवासी" संप्रदाय का संबंध है?

(*a*) बुद्ध धर्म (*b*) **जैन धर्म**
(*c*) वैष्णव (*d*) शैव

भारत में जैन धर्म का पतन

- **शाही संरक्षण का अभाव:** बिंबिसार, अजातशत्रु, उदयन और खारवेल द्वारा जैन धर्म के शाही संरक्षण की प्रारंभिक गति को बाद के समय के राजाओं और राजकुमारों द्वारा नहीं रखा गया था।
  - बल्कि बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अशोक, कनिष्क और हर्ष के उत्साह और संकल्प ने जैन धर्म पर ग्रहण लगा दिया।
- जैन धर्म की गंभीरता इसके पतन के लिए इसके खिलाफ उल्टी हो गई।
  - बौद्ध धर्म के 'मध्यम मार्ग' के विपरीत जैन धर्म घोर तपस्या, ध्यान, उपवास और संयम आदि के लिए खड़ा था।
  - ये सब सहन करने के लिए बहुत गंभीर थे। लोगों का जल्द ही इससे मोहभंग हो गया। समय के साथ, जैन धर्म जो बहुत ही पसंदीदा था, लोगों से अलग हो गया।

- **प्रयासों में कमी:** जैन भिक्षुओं के मिशनरी उत्साह और ईमानदारी में भी गिरावट आई थी।
  - वे गाँवों और कस्बों में जैन धर्म के प्रसार के लिए विशेष रूप से प्रयास नहीं कर रहे थे।
  - व्यापारी और व्यवसायी अभी भी जैन धर्म के प्रति वफादार रहे। लेकिन उनके पास जैन धर्म के प्रसार के लिए कुछ भी करने का समय नहीं था।
- **अबोधगम्य दर्शन:** जैन दर्शन का अधिकांश भाग जनता के लिए अबोधगम्य था। जीव, अजीव, पुद्गल, स्याद्वाद आदि की अवधारणाएँ लोगों को ठीक से समझ में नहीं आ रही थीं।
  - बहुत से लोग इस विचार को स्वीकार नहीं कर सके कि पत्थर, पानी, पेड़ या धरती की अपनी आत्मा होती है।
- **जैन धर्म में गुटबाजी:** महावीर की मृत्यु के बाद जैनों में गुटबाजी जैन धर्म के पतन का पाँचवाँ कारण था।
  - कुछ महावीर की शिक्षाओं का शाब्दिक रूप से पालन करने की वकालत करते थे जबकि अन्य जैन धर्म की गंभीरता को कम करना चाहते थे।
  - परिणामस्वरूप 'दिगंबर' और 'श्वेतांबर' समूहों में विभाजित हो गए थे।
  - भद्रबाहु के नेतृत्व में पहले वाले ने वस्त्र त्याग दिए, आत्म-शुद्धि के लिए घोर तपस्या की और सांसारिक जीवन के प्रति उदासीन हो गए।
  - स्थूलभद्र के नेतृत्व में 'श्वेतांबर' समूह ने सफेद पोशाक पहनी थी। विभाजन ने जैन धर्म को कमजोर कर दिया और इस तरह इसका प्रसार कम हो गया।
- **बौद्ध धर्म का प्रसार**- बौद्ध धर्म, जैन धर्म के प्रसार के मार्ग में एक बड़ी बाधा के रूप में आया। बौद्ध सरल और बोध गम्य थे। उसमें गंभीरता नहीं थी। गृहस्थ भी इसका पालन कर सकता था।
- **हिंदू प्रचारकों की भूमिका:** हिंदू धर्म ने जैन धर्म के लिए खतरा पैदा कर दिया। निम्बार्क, रामानुज, शंकराचार्य आदि हिन्दू धर्म की नींव को और अधिक ठोस और मजबूत बनाने आए।
  - वैष्णववाद, शैववाद और शक्तिवाद के उदय ने जैन धर्म को तुलनात्मक महत्वहीन बना दिया।

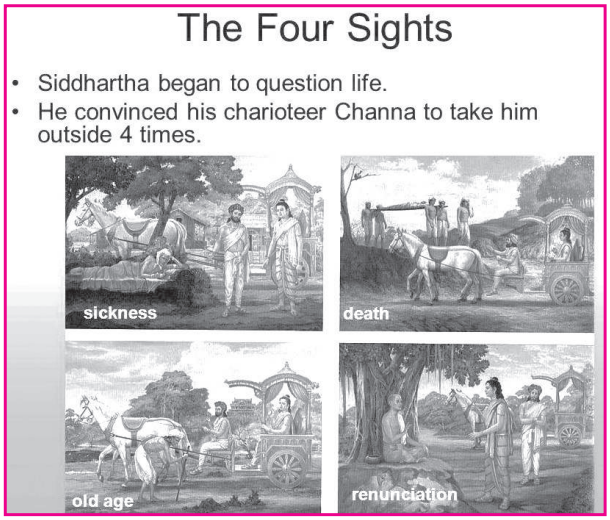
इस प्रकार, जैन धर्म का पतन अपरिहार्य और अटल हो गया। इस प्रकार, बौद्ध धर्म के प्रसार के बाद जैन धर्म, जिसने गति प्राप्त की, पतन की अवस्था में आ गया। हिन्दू धर्म प्रचारकों ने भी जैन धर्म के प्रसार के मार्ग में निरन्तर बाधाएँ डालीं इसलिए भी इसका पतन सुनिश्चित हुआ।

बौद्ध धर्म

- सभी संप्रदायों में सबसे आम बौद्ध धर्म था। यह तब एक मजबूत धर्म के रूप में विकसित हुआ जिसे कई राजाओं ने पसंद किया था।
- इसका इतना मजबूत प्रभाव था कि अशोक ने इसके सिद्धांतों को राज्य की नीति के रूप में अपनाया।
  - यद्यपि यह व्यावहारिक रूप से लगभग एक हजार वर्षों के लिए भारत से गायब हो गया। यह दुनिया भर में फैल गया और अभी भी दक्षिण-पूर्व और पूर्वी एशियाई देशों में आमतौर पर प्रचलित है।

महात्मा बुद्ध का प्रारंभिक जीवन

- कपिलवस्तु से शासन करने वाले शाक्य कबीले के नेता शुद्धोधन, सिद्धार्थ यानी बुद्ध के पिता थे।
- अपने माता-पिता से मिलने के लिए यात्रा करते समय, उनकी मां माया ने उन्हें लुम्बिनी के पास एक उपवन में जन्म दिया। बाद में कुछ देर बाद ही उनका निधन हो गया।



- किंवदंती के अनुसार कुछ ब्राह्मणों ने कथित तौर पर उनके जन्म के कुछ समय बाद ही उनके शरीर पर एक महापुरुष के 32 निशान देखे।
- बौद्ध परंपरा के अनुसार एक महापुरुष दो चीजों में से एक हो सकता है। एक वैश्विक विजेता या एक विश्व त्यागी।
- इसलिए शुद्धोधन ने उसे उसकी विपत्तियों से बचाने के लिए बहुत कुछ किया। उन्हे बहुत ही कृत्रिम वातावरण में तथा विलासिता और सुखद चीजों के बीच बड़ा किया।
  - राहुल, सिद्धार्थ और यशोधरा के पुत्र का नाम था।
- 29 साल की उम्र में एक दिन जब वे अपने सारथी चन्ना के साथ रथ पर सवार होकर महल के बाहर जा रहे थे तो उन्होंने

चार चीजें देखीं: **एक बूढ़ा आदमी, एक बीमार आदमी, एक लाश और एक सन्यासी।**

- इन चार बातों ने उसकी शांति भंग कर दी।
- उन्हें पहले तीन कृत्यों में वृद्धावस्था, बीमारी और मृत्यु की कठोर वास्तविकताओं और अनिवार्यताओं से अवगत कराया जबकि चौथे दृश्य ने उनसे मुकाबला करने की रणनीति का सुझाव दिया था।

- उन्होंने अपने रथ में घर से बहुत दूर की यात्रा की जिसे उनके पसंदीदा घोड़े कंथक द्वारा खींचा गया था और चन्ना द्वारा संचालित किया गया था।
  - उन्होंने अपने बाल कटवाए और अपने कुछ पुराने कपड़ों और गहनों के साथ अपने पिता को भेज दिए।
- वह इधर-उधर घूमते रहे और अलार कलाम का भक्त बन गये।
- उन्होंने संन्यासी उद्दक रामपुत्त से भी सलाह मांगी।
- सिद्दार्थ उनके कार्यों से असंतुष्ट थे और अत्यधिक तपस्या में लग गए, जिस कारण उनका शरीर अत्यंत कमजोर हो गया था।
- उन्होंने एक दिन बोधगया में दूध में उबाले गए चावल (खीर) खाने के बाद ध्यान करना शुरू किया और जिसे सुजाता नामक एक ग्वालिन द्वारा उन्हें दिया गया।
- 35 वर्ष की आयु में उन्हें 49 दिनों के ध्यान के बाद ज्ञान की प्राप्ति हुई। उसके बाद उन्होंने मोनिकर बुद्ध या प्रबुद्ध अर्जित किया।
  - फिर वाराणसी के निकट सारनाथ में हिरण पार्क में उन्होंने अपना उद्घाटन भाषण दिया। इस अवसर का नाम धर्मचक्रप्रवर्तन, या "महान कानून का पहिया" है।
- उनके पहले पांच शिष्यों ने जल्द ही सच्चाई को जान लिया और अर्हत बन गए।
- बुद्ध चार दशकों से अधिक समय तक अपने सिद्धांत की शिक्षा देने के लिए भटकते रहे।
  - उन्होंने भिक्षुओं और भिक्षुणियों के एक संघ की स्थापना की जिसे संघ के नाम से जाना जाता है। 80 वर्ष की आयु में कुशीनारा (आधुनिक कसिया के साथ पहचाना गया) में उनकी मृत्यु हो गई। इसे परिनिर्वाण कहते हैं।
  - सारिपुत्त, महा मोगलगना और आनंद बुद्ध के सबसे प्रसिद्ध शिष्यों में से तीन थे। राजा और आम लोग दोनों बुद्ध के प्रमुख प्रशंसक थे।
- बौद्ध संघ बुद्ध के सिद्धांत के प्रसार में एक प्रमुख संस्था और एक प्रमुख कारक बन गया।
- बुद्ध के अनुयायियों के पास एक विकल्प था - संघ में शामिल होना या इसके बाहर रहना।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित में से कौन से साम्राज्य बुद्ध के जीवन से जुड़े थे? (2015)

1. अवंती
2. गांधार
3. कोशल
4. मगध

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(*a*) 1, 2 और 3 (*b*) 2 और 3 केवल
(*c*) 1, 3 और 4 (*d*) केवल 3 और 4

2. निम्नलिखित में से कौन से राज्य बुद्ध के जीवन से जुड़े थे? (2014)

1. अवंती
2. गांधार
3. कोशल
4. मगध

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(*a*) 1, 2 और 3 (*b*) 2 और 4
(*c*) केवल 3 और 4 (*d*) **1, 3 और 4**

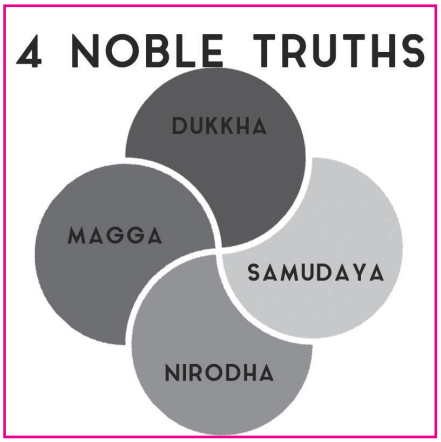
बुद्ध की शिक्षाएँ

बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं को मठवासी व्यवस्था के साथ-साथ लोकधर्मियों को संबोधित किया।

उनके सिद्धांत का मूल है:

1. दुख है (दुख)
2. इसका एक कारण (समुदाय) है
3. इसे हटाया जा सकता है (निरोध) और
4. इसे हटाने का तरीका अष्टांग मार्ग है: - अत्यधिक भोग और चरम तपस्या के बीच का मार्ग।
   (*a*) ज्ञान, आचरण और ध्यान संबंधी अभ्यासों से जुड़ी, कई परस्पर जुड़ी हुई गतिविधियाँ शामिल हैं।

- दु:ख और इसका विलुप्त होना बुद्ध के सिद्धांत के केंद्र में हैं। बुद्ध का कहना है कि संसार में दु:ख है (सब्बम दुक्खम)।
- इसे या तो अत्यंत निराशावादी या अत्यंत यथार्थवादी शिक्षण के रूप में देखा जा सकता है।
- पीड़ा न केवल एक व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए वास्तविक दर्द और दुख को संदर्भित करता है बल्कि इन चीजों को अनुभव करने की क्षमता का भी विकास करता है।
- सुख या आनंद की अवस्थाएं अस्थिर और अस्थायी होती हैं क्योंकि वे कुछ वस्तुओं या अनुभवों के माध्यम से इंद्रियों की संतुष्टि पर निर्भर होती हैं।



- दुख के कारणों में इच्छा, आसक्ति, लोभ, अभिमान, द्वेष और अज्ञान जैसी मानवीय प्रवृत्तियाँ शामिल हैं। इच्छा (तृष्णा) कारण और दुख को दूर करने के लिए केंद्रीय तत्व है।
- यह सब अस्तित्व के एक अन्य पहलू से जुड़ा है जिस पर बुद्ध की शिक्षा अनित्यता (अनिच्च) पर बल दिया गया है।
- बुद्ध की शिक्षाओं का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू पात्च-समुप्पद था- प्रतीत्य समुत्पाद का नियम है।
- इस कानून के तत्वों को एक चक्र के रूप में प्रस्तुत किया गया था जिसमें 12 निदान शामिल थे। इसमें से एक अगले की ओर जाता है: अज्ञान (अविज्ज), गठन (संखरा), चेतना (विन्नाना), मन और शरीर (नाम-रूपा), छह इंद्रियां (सलयतना), इंद्रिय संपर्क (फसा), भावना (वेदना), तृष्णा (तन्हा), आसक्ति (उपादान), बनना (भाव), जन्म (जाति), और बुढ़ापा और मृत्यु (जरा-मरन)।
- बुद्ध की शिक्षाओं का अंतिम लक्ष्य निर्वाण की प्राप्ति था। यह एक जगह नहीं बल्कि एक अनुभव था और इसे इसी जीवन में प्राप्त किया जा सकता था।
  - माना जाता है कि बुद्ध ने निर्वाण का अनुभव किया था, जैसा कि उनके कुछ शिष्यों ने किया था।
  - निर्वाण का शाब्दिक अर्थ है - मरना या विलुप्त होना - इच्छा, आसक्ति, लोभ, घृणा, अज्ञानता, और मैं-पन की भावना का मरना या विलुप्त होना।
  - कभी-कभी विमोख, विमुत्ति और अरहत्त जैसे अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।
- बुद्ध की शिक्षाएं स्थानांतरगमन (संसार) के विचार को स्वीकार करती हैं लेकिन आत्मा के विचार को खारिज कर देता है।
- बौद्ध ब्रह्मांड में कई दुनिया और कई अलग-अलग प्रकार के जीव हैं और उनमें से किसी एक के रूप में जन्म लिया जा सकता है।
  - विभिन्न जीवन के बीच संबंध कर्म द्वारा स्थापित होता है।
- बुद्ध की शिक्षाओं में कर्म का अर्थ उन इरादों से है जो शरीर, वाणी या मन के कार्यों की ओर ले जाते हैं।
- पुनर्जन्म किसी विशेष जीवन के कर्म के संचयी परिणामों द्वारा नियंत्रित होता है।
- बुद्ध ने मठवासी आदेश और लोकधर्मियों दोनों के लिए एक नैतिक आचार संहिता निर्धारित की।
- **भिक्षुओं और भिक्षुणियों को निम्नलिखित से सख्ती से बचना चाहिए:**
  - जीवन का विनाश जो नहीं दिया है उसे लेना (चोरी),
  - यौन गतिविधि, झूठ बोलना,
  - असावधानी का कारण बनने वाले मादक द्रव्यों का सेवन,
  - मध्याह्न के बाद भोजन करना, मनोरंजन में भाग लेना,
  - इत्र और आभूषणों का प्रयोग,
  - शानदार बिस्तरों का उपयोग करना, और
  - सोने और चांदी को संभालना (धन सहित)।
- बौद्ध अहिंसा पर जोर देते थे तथा इसमें ब्राह्मणवादी पशु बलि की आलोचना शामिल थी।
- भिक्षुओं और भिक्षुणियों को जानवरों की हत्या नहीं करनी थी।
  - उन्हें वह पानी नहीं पीना था जिसमें छोटे-छोटे जीव रहते थे।
  - हालांकि अहिंसा पर जोर देने के लिए शाकाहार आवश्यक नहीं था और भिक्षुओं को मांस खाने से मना नहीं किया गया था।
- भिक्षुओं को उनके भिक्षाटन पर जो कुछ भी दिया जाता था उसे स्वीकार करना पड़ता था।
- इसलिए अगर पेशकश की जाती है तो मांस को स्वीकार किया जाना चाहिए। बशर्ते कि जानवर को विशेष रूप से उन्हें खिलाने के लिए नहीं मारा गया हो।
  - हालांकि कुछ अपवाद हैं-कुछ प्रकार के मांस को कभी स्वीकार नहीं किया जाता था-मनुष्यों, हाथियों, सांपों, कुत्तों और घोड़ों का।
- बौद्ध धर्म में देवताओं और स्वर्ग का अस्तित्व है। ब्रह्मा और सक्का (इंद्र) विभिन्न जंक्शनों पर दिखाई देते हैं जो बुद्ध के प्रति हमेशा श्रद्धा रखते हैं। लेकिन देवता मनुष्यों को निर्वाण प्राप्त करने में मदद नहीं कर सकते।
- बुद्ध द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने से ही इस लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।

बुद्ध को पांच रूपों में दर्शाया गया है:

1. कमल और बैल - जन्म
2. अश्व - त्याग

3. बोधि वृक्ष – महाबोधि
4. धम्मचक्र प्रवर्तन – प्रथम उपदेश
5. पदचिन्ह – निर्वाण

अष्टांगिक मार्ग

सम्यक् दृष्टि:

सबसे पहले हमारा दृष्टिकोण ठीक हो। जैसा दृष्टिकोण होगा, वैसा ही हमारा काम होगा, तदनुरूप उसका परिणाम होगा।

सम्यक् संकल्प:

हमारे संकल्प ठीक हो। गलत काम करने का हम निश्चय न करें। हमारे विचार पवित्र व शुद्ध हों।

सम्यक वाक्य:

हमारे वचन सही हो। बोलचाल ठीक नहीं रहने पर मनुष्य स्वयं तो दुखी रहता है, दूसरो को भी दु:ख देता है।

सम्यक कर्म:

हमारे कार्य सम्यक् या सही हो। गलत काम करके हम मधुफल की आशा नहीं कर सकते।

सम्यक् आजीविका:

आजीविका के साधन ठीक हों। कोई अनैतिक आजीविका नहीं अपनाएँ।

सम्यक् चेष्टा:

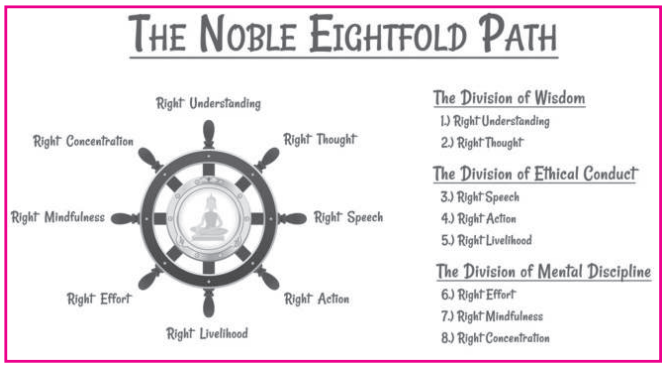
हमारी चेष्टाएँ सही हों। कोई लाभ के लिए गलत काम नहीं करें।

सम्यक् स्मृति:

हमारी स्मृति सही हो। स्मृति गलत रहने से हमारे विचार प्रभावित हो जाते हैं।

सम्यक् समाधि:

हमारा ध्यान सही हो। आध्यात्मिक चेतना सही हो।



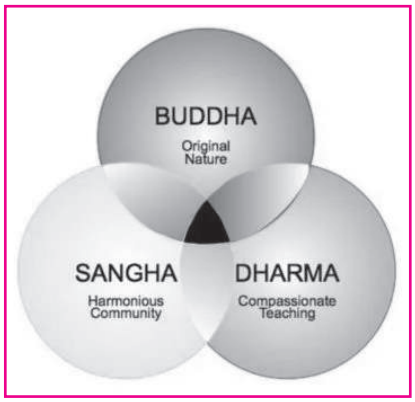
प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन बौद्ध धर्म में निर्वाण की अवधारणा का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) इच्छा की लौ का विलुप्त होना
(b) स्वयं का पूर्ण विनाश
(c) आनंद और विश्राम की स्थिति
(d) सभी समझ से परे एक मानसिक अवस्था

बौद्ध धर्म के 3 रत्न

त्रिरत्न, ("थ्री ज्वेल्स") पाली- ति-रत्न, जिसे थ्रीफोल्ड रिफ्यूज भी कहा जाता है। बौद्ध धर्म के त्रिरत्न में बुद्ध, धर्म (सिद्धांत या शिक्षण) और संघ (मठवासी आदेश, या समुदाय) शामिल हैं।



- बुद्ध न केवल ऐतिहासिक शख्सियत शाक्यमुनि हैं जिन्हें बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान का बोध हुआ था बल्कि असंख्य बुद्ध भी हैं जो हमें बताते हैं कि शिक्षाएँ उनके सामने आई और उनके साथ-साथ बुद्धों और बोधिसत्वों के देवता हैं जिसे पृथ्वी पर और अन्य क्षेत्रों में प्रबुद्ध शिक्षकों के रूप में देखा जाता है।
- धर्म शब्द के कई अर्थ हैं लेकिन यहाँ यह ऐतिहासिक बुद्ध की शिक्षाओं और कुछ परंपराओं में सभी प्रबुद्ध प्राणियों की शिक्षाओं को संदर्भित करता है।
- संघ बौद्ध समुदाय है। परंपरागत रूप से इसे अभिषिक्त भिक्षुओं और भिक्षुणियों के समुदाय के लिए संदर्भित किया जाता था लेकिन आज संघ में सभी बौद्ध धर्म को मानने वाले शामिल हैं।

बौद्ध धर्म में तीन दोष

- अपनी प्रारंभिक शिक्षाओं में बुद्ध ने तीन नकारात्मक गुणों की पहचान की जो हमारी अधिकांश समस्याओं का कारण बनते हैं और दुनिया की भी अधिकांश समस्याओं का कारण बनते हैं।
- **तीन दोष हैं:** लालच (राग, जिसे वासना के रूप में भी अनुवादित किया गया है), घृणा (द्वेष या क्रोध) और भ्रम (मोह या अज्ञानता)।
- मुक्ति के लिए आवश्यक तीन संपूर्ण या सकारात्मक दृष्टिकोणों द्वारा तीन दोष का विरोध किया जाता है। उदारता (दान), प्रेममयता (मैत्री, पाली: मेटा) और ज्ञान (प्रज्ञा)।

- बौद्ध अभ्यास इन सद्गुणों की साधना और दोषों को कम करने या नष्ट करने की ओर निर्देशित है।

बौद्ध साहित्य

- आमतौर पर बौद्ध ग्रंथों की रचना के लिए पाली का प्रयोग किया जाता था।
- त्रिपिटक पाली कैनन (तीन टोकरियाँ) को दिया गया नाम है।
- ये तीन विनयपिटक, सुत्तपिटक और अभिधम्मपिटक हैं।
  - विनयपिटक नैतिक संहिताओं और मठवासी (संघ) नियमों की चर्चा करता है। सुत्तपिटक बुद्ध की शिक्षाओं और प्रवचनों पर केंद्रित है।
  - विनय पिटक के दो मुख्य खंड हैं- सुत्त विभंग और खंडक- और एक परिशिष्ट जिसे परिवार के रूप में जाना जाता है।
  - विनय पिटक व्यक्तिगत भिक्षुओं और भिक्षुणियों के जीवन में सभी प्रकार के विवरणों से निपटते हैं - उन्हें क्या और कैसे खाना चाहिए, चलना चाहिए, बात करनी चाहिए, उन्हें क्या पहनना चाहिए और उन्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए आदि।
  - इन नियमों को एक साथ लिया गया। इन नियमों का उद्देश्य एक भिक्षु/भिक्षुणियों के आचरण को विनियमित करना, संघ की एकता और अखंडता को एक निकाय के रूप में संरक्षित करना और संघ और आम लोगों के बीच संबंधों को परिभाषित करना था।
- अभिधम्मपिटक बौद्ध सिद्धांत की व्याख्या करता है।
  - सारांशों, प्रश्नों और उत्तरों, सूचियों और अन्य तकनीकों के माध्यम से, इस पुस्तक में सुत्त पिटक की शिक्षाओं की पूरी तरह से जाँच की गई है और उन्हें व्यवस्थित किया गया है।
- बुद्ध की शिक्षाएं सुत्त पिटक में समाहित हैं, जो पाँच खंडों या निकायों में विभाजित है।
  - इन पुस्तकों को 'बुद्धवाचन' या 'बुद्ध के शब्द' के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि बुद्ध ने स्वयं जो कहा था, उसमें वे शामिल हैं।
- कुछ महत्वपूर्ण गैर-प्रामाणिक ग्रंथों में बुद्धघोष द्वारा लिखित विशुद्धिमग्ग (शुद्धता का मार्ग) शामिल है जो अनुशासित शुद्धता से निबन्ना/ज्ञानोदय तक की प्रगति पर चर्चा करता है।
- निदानकथा (बुद्ध की पहली जुड़ी हुई जीवन कहानी) और
  - मिलिंदपन्हो (पाली में लिखित है इसमें भिक्षु नागसेन और इंडो-ग्रीक राजा मिलिंद/मिनांडर के बीच विभिन्न दार्शनिक मुद्दों पर एक संवाद शामिल है)।
- संस्कृत और प्राकृत के मिश्रण में लिखे गए महावास्तु में बुद्ध की पवित्र जीवनी शामिल है।
- दीपवंश और महावंश दोनों पाली में लिखे गए हैं। इन ग्रंथों में बुद्ध के जीवन, बौद्ध परिषदों, अशोक और श्रीलंका में बौद्ध धर्म की शुरुआत के ऐतिहासिक और पौराणिक विवरण शामिल हैं।
- **जातक कथाएँ:** जातक कथाएँ बौद्ध नैतिकता की कहानियों का एक बड़ा संग्रह है जिसमें बुद्ध अपने पिछले कुछ जीवनों को आत्मज्ञान के लिए अपने लंबे रास्ते पर याद करते हैं।
  - उदाहरण के लिए एक कहानी में दर्शाया गया है कि कैसे बुद्ध इस भौतिक संसार की बुराई को समाप्त करने के लिए मैत्रेय के रूप में पुनर्जन्म लेंगे।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में, निम्नलिखित में से कौन भविष्य का बुद्ध है, जो अभी तक दुनिया को बचाने के लिए नहीं आया है?

(*a*) अवलोकितेश्वर (*b*) लोकेश्वर
(*c*) **मैत्रेय** (*d*) पद्मपाणि

बुद्ध की शिक्षाओं के सामाजिक निहितार्थ

- बुद्ध को अक्सर एक समाज सुधारक के रूप में पेश किया गया है। यहां तक कि एक क्रांतिकारी के रूप में भी, जो सामाजिक भेदभाव के खिलाफ खड़े थे और सभी के लिए समानता के पक्षधर थे।
- पालि ग्रंथों को ध्यान से पढ़ने से एक अलग, अधिक जटिल तस्वीर सामने आती है। ब्राह्मणवादी परंपरा की तुलना में बुद्ध का सिद्धांत निश्चित रूप से अधिक सामाजिक रूप से समावेशी था। लेकिन इसका उद्देश्य सामाजिक मतभेदों को खत्म करना नहीं था।
- संघ/मठवासी व्यवस्था के निर्माण में सामाजिक व्यवस्था छोड़ने वालों के लिए आश्रय प्रदान करके महान सामाजिक उथल-पुथल पैदा करने की क्षमता थी।
  - हालाँकि, बौद्ध परंपरा यथास्थिति बनाए रखने की इच्छा को दर्शाती है और प्रवेश के लिए कई शर्तों को निर्दिष्ट करती है।
  - उदाहरण के लिए, राजा की अनुमति के बिना सैनिक शामिल नहीं हो सकते थे। दास तब तक शामिल नहीं हो सकते थे जब तक कि उनके स्वामी उन्हें मुक्त नहीं कर देते थे और ऋणदार तब तक शामिल नहीं हो सकते थे जब तक कि वे अपने ऋण का भुगतान नहीं कर देते थे।

- बौद्ध परंपरा वर्ण को एक मानव निर्मित व्यवस्था मानती है जबकि ब्राह्मणवादी परंपरा द्वारा इसे प्रदत्त दैवीय स्वीकृति माना गया है।
- संघ के आकांक्षियों के लिए वर्ण और जाति को अप्रासंगिक माना जाता था।
  - हालाँकि, इसकी वास्तविक संरचना पर एक करीबी नजर उच्च वर्ग के सदस्यों के महत्वपूर्ण अनुपात को इंगित करती है। भिक्षुओं का एक बड़ा वर्ग ब्राह्मण या क्षत्रिय था।
- प्रमुख क्षत्रिय भिक्षुओं में स्वयं बुद्ध और अन्य आनंद और अनिरुद्ध शामिल थे। दूसरी ओर, प्रतिष्ठित साधु उपाली मूल रूप से शाक्यों के नाई थे।
- भिक्षु वर्ग या जाति की परवाह किए बिना सभी से भोजन स्वीकार करने वाले थे। वर्तमान सामाजिक प्रथाओं के लिए एक अवहेलना का सुझाव देते हैं।
  - बुद्ध ने स्वयं भोजन ग्रहण करने पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया।
  - उन्होंने धनी और सेठियों के आतिथ्य का आनंद लिया, लेकिन उन्होंने सामाजिक पदानुक्रम में निम्न लोगों के साथ भोजन भी किया।
  - वास्तव में, उनका अंतिम भोजन चुंद नामक एक लोहार के घर माना जाता है।
- **बौद्ध धर्म और महिलाएं:** बौद्ध परंपरा से पता चलता है कि बुद्ध शुरू में एक भिक्खुनी संघ स्थापित करने के इच्छुक नहीं थे। लेकिन अंततः अपने शिष्य आनंद और उनकी चाची और पालक-मां महाप्रजापति गोतमी के लगातार दबाव के आगे झुक गए।
  - संघ गर्भवती महिलाओं, अविवाहित बच्चों की माताओं, विद्रोही महिलाओं के लिए खुला नहीं था, जो युवा पुरुषों से जुड़ी थीं और जिनके पास अपने माता-पिता या पति की अनुमति शामिल होने के लिए नहीं थी।
  - भिक्षुणियों के लिए नियम मूल रूप से भिक्षुओं के लिए समान थे।
  - थेरीगाथा (व्यस्क भिक्षुणियों के छंद) 522 छंदों वाली 73 कविताओं का संग्रह है। माना जाता है कि इसे 72 भिक्षुणियों द्वारा रचा गया था जो आध्यात्मिक उपलब्धि के उच्च स्तर पर पहुंच गई थीं।

बौद्ध धर्म की लोकप्रियता और प्रसार के कारण

- **बुद्ध की उदारवादी छवि:** सामान्य व्यक्ति बौद्ध धर्म की ओर इसलिए आकर्षित हुआ क्योंकि वह ब्राह्मणवाद की तुलना में अधिक उदार और लोकतांत्रिक था। विशेष रूप से, गरीब वर्गों ने इसका समर्थन किया क्योंकि इसने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया था।
  - सभी जातियों का स्वागत किया गया और महिलाओं को संघ में शामिल होने की अनुमति दी गई।
- **औचित्यपूर्ण सिद्धांत :** बौद्ध धर्म की अपील को बुद्ध के चरित्र और उनके तार्किक सिद्धांत से बहुत मदद मिली। उन्होंने अपने विरोधियों को मात देने और उनके बारे में सोचने का प्रयास किया, जबकि वे दबाव में भी शांत और स्थिर बने रहे।
- **पाली भाषा में शिक्षण :** ब्राह्मणवाद के विपरीत, जिसकी पुस्तकें संस्कृत में थीं और इस प्रकार ब्राह्मणों के एक चुनिंदा समूह के लिए विशेष रूप से उपलब्ध थीं। बुद्ध ने पाली भाषा में शिक्षा दी, जो आम लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा थी, ने बौद्ध धर्म के विस्तार में योगदान दिया।
- **सामाजिक कारणों और समस्याओं पर चोट करना :** छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान बौद्ध धर्म सबसे अच्छा प्रसार करने में सक्षम था, उस समय लोग अंधविश्वासों, जटिल अनुष्ठानों और अंध विश्वासों से थक चुके थे।
  - बुद्ध का संदेश उन लोगों के लिए स्वागत था जो पहले से ही ब्राह्मणवाद के दमघोंटू बोझ से छटपटा रहे थे।
  - बौद्ध धर्म की सादगी और अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता के कारण वे शीघ्र ही उसकी ओर खिंचे चले आए।
- **राजशाही से पक्षपात:** मगध, कोशल, कौशाम्बी और कई अन्य गण-संघों और उनके नागरिकों के राजाओं के संरक्षण से इसकी निरंतर लोकप्रियता को सहायता मिली।
- **विश्वविद्यालयों की भूमिका:** बौद्ध धर्म के प्रसार में नालंदा, तक्षशिला, पुष्पगिरि और विक्रमशिला के विश्वविद्यालयों की भी प्रमुख भूमिका थी।
  - इन विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले भारत के विभिन्न हिस्सों और भारत के बाहर के छात्र बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने इसे अपना लिया। उन्होंने खुद को बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए भी समर्पित कर दिया।
- **प्रतिद्वंद्वियों की अनुपस्थिति :** छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म की शुरुआत से ही, बौद्ध धर्म का कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था जिसके साथ मुकाबला किया जा सके। हालांकि जैन धर्म लोकप्रिय हो गया, लेकिन इसके धार्मिक विधि की गंभीरता ने लोगों को इससे दूर कर दिया। समकालीन हिंदू धर्म में बौद्ध धर्म का मिशनरी उत्साह स्पष्ट रूप से अनुपस्थित था।

बौद्ध परिषद (संगीति)

बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध भिक्षु द्वारा बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और अन्य घटकों पर विचार-विमर्श किया गया। समय के साथ चार बौद्ध परिषदें हुईं।

सभा	अध्यक्ष	परिणाम
प्रथम बौद्ध संगीति राजगृह में आयोजित की गई थी। 483 ईसा पूर्व	महाकसप्प	• अजात शत्रु के संरक्षण में। • उपालि के निर्देशन में बुद्ध के विनय (मठवासी अनुशासन) के नियमों और शिष्य आनंद के निर्देशन में सूत्र (शिक्षाप्रद सूत्र) का संकलन किया गया।
दूसरी संगीति, 383 ई.पू. वैशाली में।	सब्बाकामी	• कलाशोक के संरक्षण में। • इसे वैशाली के भिक्षुओं द्वारा पालन किए जाने वाले अनुशासन के शिथिल नियमों के विवाद को निपटाने के लिए बुलाया गया था। • यहाँ दो समूह जो बाद में थेरवाद और महायान में विकसित हुए, उनका पहला महत्वपूर्ण अलगाव हुआ। • प्रारंभिक समूह को थेरा (पाली में अर्थ एल्डर) के रूप में जाना जाता था। ○ वे बुद्ध की शिक्षाओं की मूल भावना को बनाए रखना चाहते थे। • दूसरा गुट, जिसे महासंघिका (महान समुदाय) के रूप में जाना जाता है, ने बुद्ध की शिक्षाओं को अधिक खुले विचारों वाली व्याख्या दी।
तीसरी परिषद लगभग 247 ईसा पूर्व पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी।	मोगलीपुत्ततिस	• अशोक के संरक्षण में। • प्राथमिक लक्ष्य बौद्ध धर्म को छायादार संगठनों और संघ भ्रष्टाचार से छुटकारा दिलाना था। • यहाँ अभिधम्मपिटक लिखा गया था जो समकालीन पाली त्रिपिटक को वस्तुतः पूर्णता तक पहुँचाता है। • विदेशी राष्ट्रों ने बौद्ध मिशनरियों को प्राप्त किया। • अशोक महान ने हीनयान बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया था।
चतुर्थ बौद्ध संगीति कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर में हुई थी।	वसुमित्र और अश्वघोष	• यहाँ अभिधम्म के ग्रंथों का प्राकृत से संस्कृत में अनुवाद किया गया था। • इस परिषद के परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म महायान (बड़ा वाहन) और हीनयान संप्रदाय (छोटा वाहन) में विभाजित हो गया। • महायान संप्रदाय कर्मकांडों, बोधिसत्वों और मूर्ति पूजा को महत्व देता था। ○ बुद्ध उनके द्वारा भगवान के रूप में पूजनीय थे। • बुद्ध की शिक्षाओं और प्रथाओं को हीनयान के माध्यम से आगे बढ़ाया गया। ○ जबकि महायान भी संस्कृत ग्रंथों का उपयोग करते हैं, वे पाली भाषा के शास्त्रों से चिपके रहते हैं।

बर्मा में

- पाँचवीं और छठी बौद्ध संगीति हुई, हालाँकि वे बर्मा के बाहर मान्यता प्राप्त नहीं हैं, जहाँ वे हुई थीं।

5 वीं	1871 में मांडले, बर्मा में थेरवाद भिक्षु।	• इसका लक्ष्य बुद्ध की सभी शिक्षाओं का पाठ करना था और ऐसी किसी भी शिक्षा की तलाश करना था जिसे अनदेखा किया गया हो, गलत समझा गया हो या बदल दिया गया हो। • आदरणीय महाथेरा जगरभिवामसा, आदरणीय नरिंदभिधजा और आदरणीय महाथेरा सुमंगला सामी, तीन बुजुर्गों ने सभा की अध्यक्षता की, जिसमें 2400 भिक्षु उपस्थित थे।

6ठी	1954 में यांगून (पूर्व में रंगून)	• यह वर्मा सरकार द्वारा समर्थित था, जिसका नेतृत्व उस समय माननीय प्रधान मंत्री यूनू ने किया था। • उन्होंने कृत्रिम गुफा के निर्माण के लिए हरी झंडी दे दी, जिसे महापासाना गुहा के नाम से जाना जाता है, जिसे "बड़ी गुफा" के रूप में भी जाना जाता है, जो भारत की पहली बौद्ध परिषद की साइट सट्टापनी गुफा के समान है। परिषद की बैठक 17 मई 1954 को एक बार समाप्त होने के बाद बुलाई गई थी। • इसका प्राथमिक लक्ष्य, पिछली परिषदों की तरह, सच्चे धम्म और विनय की पुष्टि और समर्थन करना था।

बौद्ध धर्म की शाखाए

- महासांघिक, स्थविरवादिन और सर्वास्तिवादिन अंतत: बौद्ध धर्म की तीन मुख्य शाखाएँ बन गए।
- महासंघिकों ने नए सिद्धांतों को विकसित करना शुरू किया।
- परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म के बड़ा वाहन और छोटा वाहन, महायान और हीनयान अस्तित्व में आए।
  - भारत में, महायान या महान वाहन, ने लोकप्रियता और बोलबाला प्राप्त किया।
- पालों ने बौद्ध शिक्षा के एक महत्वपूर्ण केंद्र नालंदा विश्वविद्यालय का समर्थन किया।
- जापान और चीन दोनों ने महायान को अपनाया।
- श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड और अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में, हीनयान, जिसे छोटा वाहन के रूप में भी जाना जाता है, ने लोकप्रियता हासिल की।
- वज्र का वाहन, जिसे वज्रयान के नाम से भी जाना जाता है, गुप्त युग के अंत के आसपास विकसित हुआ। बंगाल और बिहार में इसे खूब पसंद किया गया।
  - ग्यारहवीं शताब्दी में, यह तिब्बत में स्थानांतरित हो गया।
  - बिहार का विक्रमशिला विश्वविद्यालय एक महत्वपूर्ण वज्रयान बौद्ध केंद्र था।
- भक्ति आंदोलन का उदय भारत में बौद्ध धर्म के पतन के साथ हुआ।
- हिंदू रीति-रिवाजों ने धीरे-धीरे बौद्ध धर्म को प्रभावित करना शुरू कर दिया। इसके तुरंत बाद बौद्ध धर्म हिंदू धर्म में समाहित हो गया और कुछ परंपराओं में, बुद्ध को विष्णु के अवतार के रूप में देखा जाने लगा।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. स्थाविरवादिन महायान बौद्ध धर्म से संबंधित हैं
2. लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासांघिक संप्रदाय की एक शाखा थी
3. महासांघिकों द्वारा बुद्ध को देवता के रूप में प्रतिष्ठित करने से महायान बौद्ध धर्म को बढ़ावा मिला

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(*a*) 1 और 2 केवल **(*b*) 2 और 3 केवल**
(*c*) केवल 3 (*d*) 1, 2 और 3

2. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

1. बुद्ध का अवतरण
2. बोधिसत्व के पथ पर चलना
3. छवि पूजा और अनुष्ठान

उपर्युक्त में कौन-सा/से महायान बौद्ध धर्म की विशेषताएं/विशेषताएं हैं/हैं?

(*a*) केवल 1 (*b*) 1 और 2 केवल
(*c*) 2 और 3 केवल **(*d*) 1, 2 और 3**

3. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बोधिसत्व की अवधारणा बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय के केंद्र में है
2. बोधिसत्व आत्मज्ञान के रास्ते पर एक दयालु व्यक्ति हैं
3. बोधिसत्व सभी सत्वों को उनके मार्ग पर चलने में मदद करने के लिए अपने स्वयं के उद्धार को प्राप्त करने में देरी करते हैं

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(*a*) केवल 1 **(*b*) 2 और 3 केवल**
(*c*) केवल 2 (*d*) 1, 2 और 3

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

- **बार-बार विभाजन :** बौद्ध धर्म में विभाजन का बारंबार हुआ। "हीनयान," "महायान," "वज्रयान," "तंत्रयान," और "सहजयान" सहित कई समूहों में विभाजन के परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म ने अपनी मौलिकता खो दी।

- **बौद्ध संघों में भ्रष्टाचार:** भिक्षु और अनुयायी अंततः विलासिता और आनंद के प्रति आकर्षित हो गए।
  - सोना-चाँदी जैसे बेशकीमती उपहारों को प्राप्त करने और संग्रह करने के परिणामस्वरूप वे भौतिकवादी और लालची हो गए।
- **संस्कृत भाषा का प्रयोग:** अधिकांश भारतीय पाली और प्राकृत बोलते हैं, जो बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए वाहन के रूप में कार्य करते थे।
  - हालाँकि, चौथी बौद्ध संगीति में, जो कनिष्क के शासन में हुई थी, संस्कृत ने उनका स्थान ले लिया। संस्कृत एक कठिन भाषा थी जिसे समझने में अधिकांश लोगों को परेशानी होती थी।
- **राजकीय संरक्षण की कमी:** समय के साथ-साथ बौद्ध धर्म ने राजकीय संरक्षण खो दिया। अशोक, कनिष्क और हर्षवर्धन के बाद कोई भी उल्लेखनीय राजा बौद्ध धर्म को प्रायोजित करने के लिए आगे नहीं आया।
  - बौद्ध धर्म के लिए ऐसे किसी भी संरक्षण के अभाव ने अंत में इसके पतन का मार्ग प्रशस्त किया।
- **ब्राह्मणवाद का संरक्षण:** समय के साथ-साथ ब्राह्मणवादी आस्था एक बार फिर से लोकप्रिय हो गई। अंतिम मौर्य राजा, वृहद्रथ, एक ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा मारे गए थे, जिन्होंने बाद में इसकी जगह लेने के लिए शुंग वंश की स्थापना की।
- **हिंदू प्रचारकों की भूमिका :** ब्राह्मणों को कन्नौज धार्मिक परिषद से हर्षवर्धन द्वारा निष्कासित कर दिया गया था।
  - ये ब्राह्मण कुमारिल भट्ट के अधीन दक्कन भाग गए। भट्ट प्रभारी थे जब ब्राह्मणवाद ने वापसी की।
  - इसके अतिरिक्त, आदि शंकराचार्य ने हिंदू धर्म को मजबूत किया। पूरे भारत की अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने विभिन्न स्थानों पर आयोजित धार्मिक बहसों में बौद्ध विशेषज्ञों को पराजित किया।
- **हिंदू धर्म में सुधार:** बौद्ध धर्म से ब्राह्मणवादी आस्था को गहरा आघात लगा है। इसके अंत के साथ हिंदू धर्म में सुधार शुरू हुआ।
  - वर्तमान में संस्कारों और कर्मकांडों की जटिल प्रणाली को त्याग कर हिंदू धर्म को सरल बनाने और इसे और अधिक आकर्षक बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।
  - **यहाँ तक कि अंततः** हिंदू भी बुद्ध को एक हिंदू अवतार और अहिंसा के सिद्धांत के रूप में अपनाने लगे।
- **बौद्ध व्यवस्था में दरार:** बौद्ध संगठन में आंतरिक दरारों और असहमति के कारण उत्थान कठिन था। आनंद, सारिपुत्त और मौद्गल्यायन के पहले के उदाहरण अब अत्यंत दुर्लभ हैं। बौद्ध धर्म का मिशनरी उत्साह स्थायी रूप से खो गया था।
- **बुद्ध पूजा:** महायान बौद्धों ने बौद्ध धर्म में मूर्ति पूजा की शुरुआत की।
  - पूजा की इस शैली द्वारा जटिल अनुष्ठानों और ब्राह्मणवादी भक्ति के अनुष्ठानों को खारिज करने के बौद्ध सिद्धांत का उल्लंघन हुआ। लोग इस विरोधाभास से भ्रमित थे कि बौद्ध धर्म हिंदू धर्म के करीब आ रहा है।
- **हूण आक्रमण:** हूणों के आक्रमण ने बौद्ध धर्म को हिलाकर रख दिया। तोरमाण और मिहिरकुल जैसे हूण सरदार अहिंसा के घोर विरोधी थे।
  - उन्होंने भारत के उत्तर पश्चिम में रहने वाले बौद्धों की हत्या कर दी। स्थानीय बौद्ध इससे इतने भयभीत थे कि उन्होंने या तो बौद्ध धर्म छोड़ दिया या छिप गए।
- **राजपूतों की उत्पत्ति:** मामले को बदतर बनाने के लिए, राजपूत शासक जो अहिंसा की बौद्ध अवधारणा के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर सके और वैदिक धर्म के उत्साही अधिवक्ताओं ने बौद्धों को सताना शुरू कर दिया।
- **मुस्लिम आक्रमण:** बौद्ध धर्म विलुप्त होने के कगार पर था जब मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण किया। 712 ईस्वी के बाद से, उन्होंने नियमित रूप से और बार-बार भारत पर आक्रमण किया।
  - बौद्ध भिक्षुओं को इस तरह के आक्रमणों से मजबूर होकर नेपाल और तिब्बत में शरण लेनी पड़ी। अंत में बौद्ध धर्म भारत में समाप्त हो गया, जिस देश में इसकी उत्पत्ति हुई थी।

बौद्ध वास्तुकला

- इसमें भिक्षुओं के लिए स्तूप, मंदिरों और आवास शामिल हैं।
- चैत्य शब्द का अर्थ एक पवित्र स्थान है लेकिन बौद्ध मंदिरों को संदर्भित करने के लिए अधिक विशेष रूप से उपयोग किया जाता है।
- भारत में विहारों का निर्माण मूल रूप से बरसात के मौसम में भिक्षुओं को आश्रय देने के लिए किया गया था, जब उनके लिए घुमक्कड़ जीवन जीना मुश्किल हो गया था।
- प्रारंभिक बौद्ध गुफा मंदिरों में पूजा की वस्तु के रूप में एक स्तूप था, जल्द ही स्तूप बौद्ध मठों का एक अभिन्न अंग बन गए।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. कुछ बौद्ध रॉक-कट गुफाओं को चैत्य कहा जाता है, जबकि अन्य को विहार कहा जाता है। दोनों के बीच क्या अंतर है?

(*a*) विहार पूजा का स्थान है, जबकि चैत्य भिक्षुओं का निवास स्थान है

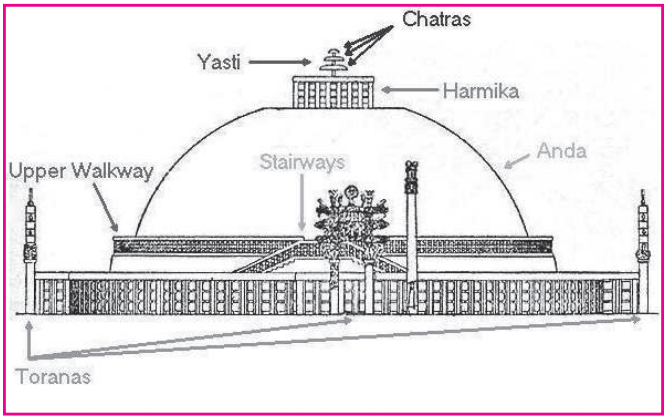
(*b*) चैत्य पूजा की जगह है, जबकि विहार भिक्षुओं का निवास स्थान है

(*c*) चैत्य गुफा से दूर अंत में स्थित स्तूप है, जबकि विहार इसके अक्षीय हॉल है

(*d*) दोनों के बीच कोई भौतिक अंतर नहीं है

बौद्ध स्तूप

- स्तूप संस्कृत भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है ''ढेर''
- बौद्ध धर्म में आज अगर किसी प्रतीक चिन्ह् का सबसे ज्यादा महत्व है तो वह स्तूप है।
- स्तूप बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिये आस्था का वह प्रतीक है जिसे वह सीधे तौर पर बुद्ध के बाद स्थान देते है।
- उनका मानना है कि आज भी बुद्ध स्तूप में निवास करते हैं और उन्हे मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं।
- इन स्तूपों में सबसे प्रमुख और प्रसिद्ध साँची, सारनाथ और अमरावती के स्तूप है।
- कुछ समय बाद बुद्ध ने यह उत्तर दिया कि मेरे शरीर के अवशेषों पर एक संरचना का निर्माण करवाना जिसे मेरी मृत्यु के बाद एक प्रतीक के रूप में देखा जाए।
- अशोक ने बुद्ध धर्म का प्रचार प्रसार सबसे ज्यादा कराया, उन्होंने गौतम बुद्ध के अवशेषों को सुदूर क्षेत्रें में भी पहुँचाया, जहाँ कुछ और बौद्ध स्तूप बनाये गये।
- ये स्तूप आज सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि कई अन्य देशों में भी पाये जाते हैं। फिर चाहे वह तक्षशिला का धर्मराजिका स्तूप हो या या श्रीलंका का जेतवानारम्या स्तूप या फिर इंडोनेशिया में स्थित बोरूबदूर इन सभी स्तूपों का अपना अपना महत्व है।
- बौद्ध भिक्षु इन स्तूपों को बुद्ध का प्रतीक मानकर न सिर्फ इनकी परिक्रमा करते हैं बल्कि यहाँ बैठकर ध्यान भी केन्द्रित करते हैं।
- यह स्तूप दूर से देखने पर एक अण्डाकार आकृति या अर्धगोलाकार आकृति में दिखते हैं और इन्हें कई चरणों में बाँटा जाता है जिनके अलग-2 नाम होते हैं।
- अगर मध्य प्रदेश में स्थित साँची के स्तूप की बात की जाए तो इसे भी कई भागों में बाँटा गया है।
- मुख्य भाग जिसके नीचे अवशेषों को दबाया गया है उसे अण्ड कहते हैं। यह अण्डे की आकृति का एक 'ठोस आधार' होता है।
- अण्ड के ठीक ऊपर एक चौकोर संरचना बनाई जाती है जिसे हर्मिका कहा जाता है।
- हर्मिका के ऊपर यष्ठी का निर्माण किया जाता है और यह मान्यता है कि यष्ठी में भगवान बुद्ध विराजमान होते हैं जिनके ऊपर छत्र का निर्माण किया जाता है।
- बाह्य दुनिया से अलग करने के लिये स्तूप को एक बाउंड्री वॉल के द्वारा बंद कर दिया जाता है जिसे वेदिका कहा जाता है। जिसमें प्रवेश के लिये कुछ दरवाजे भी बनाये जाते हैं। इन दरवाजों को तोरण द्वार कहा जाता है।
- अगर सांची के स्तूप को देखें तो इसके तोरण द्वारों में सुन्दर नक्काशी का प्रयोग भी किया गया है।
- सांची को UNESO ने 1989 में World Heritage Site में भी शामिल किया है।
- वैसे तो सांची में कई सारे स्तूप है पर उनमें सबसे प्रमुख है ग्रेट स्तूप जो कि सबसे प्राचीन माना जाता है।
- साँची का स्तूप जो कि पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुका था उसको अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय पुरातत्व विभाग की मदद से फिर से सुधारा गया और आज यह पर्यटन का एक प्रमुख केन्द्र है।
- प्रारंभ में, बुद्ध के अवशेष स्तूपों के ठोस कोर में स्थापित किए गए थे जो पूजा और तीर्थस्थल बन गए।
- जल्द ही, बुद्ध के शिष्यों और प्रसिद्ध भिक्षुओं के अवशेष समान रूप से प्रतिष्ठापित किए गए।
  - पूजा और पूजा को अवशेषों से स्तूप में ही स्थानांतरित कर दिया गया था, चाहे उसमें अवशेष हों या नहीं।



- **स्तूप बौद्ध परंपरा में कई चीजों का प्रतिनिधित्व करता था।**
  - यह धुरी मुंडी (ब्रह्मांड का केंद्र) के लिए खड़ा था।
  - यह बुद्ध के परिनिर्वाण का प्रतीक है।
  - यह बुद्ध और अन्य भिक्षुओं के अवशेषों का भंडार था।
  - यह भिक्षुओं और आम लोगों के लिए पूजा, पूजा और तीर्थ यात्रा का स्थान था।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

1. प्रारंभिक बौद्ध स्तूप-कला, लोक रूपांकनों और आख्यानों का चित्रण करते हुए बौद्ध आदर्शों की सफलता की व्याख्या करता है। स्पष्ट करें। (2016)

जैन धर्म और बौद्ध धर्म की तुलना

बौद्ध धर्म और जैन धर्म के सिद्धांत कुछ हद तक अतिव्यापी थे।

- उदाहरण के लिए दोनों ने वेदों की वैधता की अवहेलना की, प्रायश्चित के साधन के रूप में त्याग और मानव प्रयास पर जोर दिया और एक संघ/मठवासी व्यवस्था की स्थापना की जो पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए खुली थी।
- बौद्ध धर्म के समान जैन धर्म मुख्य रूप से नास्तिक है। यह देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार करता है लेकिन चीजों की बड़ी योजना में उन्हें प्रमुखता देने से इनकार करता है और यह देवताओं को जिन (विजेता) के पीछे रखता है।
- जैन साहित्य, बौद्ध ग्रंथों की तरह, ब्राह्मणों की, पशु बलि की उनकी प्रथा की, और इस तथ्य की आलोचना करता है कि अनुष्ठान अधिकारियों द्वारा ब्राह्मणों को वरीयता दी जाती है।
- क्षत्रिय वर्ण को जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों में ब्राह्मणों सहित अन्य सभी वर्णों से श्रेष्ठ माना जाता है।
- उन दोनों ने "ब्राह्मण" शब्द के अर्थ को बदलने का प्रयास किया, जिसमें एक प्रतिष्ठा के बजाय अच्छे कर्मों द्वारा अर्जित स्थिति पर जोर दिया गया।
- वे एक बुद्धिमान व्यक्ति को एक "ब्राह्मण" के रूप में संदर्भित करते हैं जिसके पास प्रामाणिक ज्ञान है और नैतिक रूप से ईमानदार जीवन व्यतीत करता है।
- विभिन्न जातियों और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों को बौद्ध धर्म की तरह ही जैन धर्म मठ व्यवस्था में स्वीकार किया गया था।

बौद्ध धर्म और जैन धर्म के बीच प्रमुख अंतर

बौद्ध धर्म	जैन धर्म
बौद्धों का मानना है कि ध्यान और कुछ सिद्धांतों के अनुसार से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।	जैन भी मानते हैं कि ध्यान के माध्यम से आत्मज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन अन्य जीवित प्राणियों को नुकसान पहुंचाने से बचने और उनके साथ दया का व्यवहार करने से भी।
बौद्ध धर्म में, कर्म एक तटस्थ शक्ति है जिसका उपयोग अच्छे या बुरे के लिए किया जा सकता है।	जैन धर्म में कर्म को एक नकारात्मक शक्ति के रूप में देखा जाता है जिससे हर कीमत पर बचना चाहिए।
बौद्ध धर्म में पाप कोई अवधारणा नहीं है।	पाप को दूसरों को नुकसान पहुँचाने के रूप में परिभाषित किया गया है।
बौद्ध धर्म के दो प्रमुख संप्रदाय हैं - महायान ("महान वाहन") और हीनयान ("लघु वाहन")। वे मुख्य रूप से इस बात में भिन्न हैं कि वे बुद्ध की शिक्षाओं को कैसे समझते हैं।	इसके अनुयायी दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित हैं: श्वेतांबर ("श्वेत वस्त्र पहने") और दिगंबर ("आकाश पहने")।
बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों में से एक पुनर्जन्म है। ऐसा माना जाता है कि निर्वाण (ज्ञानोदय) प्राप्त करना ही जन्म और पुनर्जन्म के कभी न खत्म होने वाले चक्र को समाप्त करने का एकमात्र तरीका है।	जैन धर्म के अनुसार, पुनर्जन्म और मृत्यु का चक्र अच्छा या बुरा गतिविधियों की परवाह किए बिना चलता रहेगा। जब तक मुक्ति प्राप्त नहीं होती
त्रिपिटक, अनुशासन, प्रवचन और टीकाओं में विभाजित शास्त्रों में से एक है।	जैन धर्म से संबंधित ग्रंथों को आगम के रूप में जाना जाता है।
बौद्ध धर्म का केंद्रीय दर्शन यह है कि दु:ख अस्तित्व का एक तथ्य है और दु:ख (इच्छा की जड़) से बचने के लिए, व्यक्ति को चार आर्य सत्यों को महसूस करके और अष्टांगिक मार्ग का पालन करके अज्ञानता को खत्म करना चाहिए।	जैन धर्म के अनुसार सभी जीवित चीजों का सम्मान किया जाना चाहिए। पाँच प्रतिज्ञाएँ करके और तीन रत्नों के सिद्धांतों का पालन करके, व्यक्ति को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त किया जा सकता है।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों में समान था/थे?

1. तप और भोग की पराकाष्ठा से बचना
2. वेदों के अधिकार के प्रति उदासीनता
3. अनुष्ठानों की प्रभावकारिता का खंडन

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(*a*) केवल 1 **(*b*) केवल 2 और 3**

(*c*) केवल 1 और 3 (*d*) 1, 2 और 3

❖ ❖ ❖

8 पूर्व मौर्य काल का भारत

छठी और तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच उत्तर भारत में प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन हुए। बौद्ध धर्म और जैन धर्म भारी संख्या में अनुयायियों के साथ प्रसिद्ध धर्म बन गए।

इस समय, छोटे गणराज्यों और कबीलों के संघों ने एक साम्राज्य बनाने के लिए विजय के माध्यम से संयुक्त हुए, जिसके परिणामस्वरूप एक सम्राट या एक सर्वोच्चशासक के नेतृत्व में एक बड़े राज्य का निर्माण हुआ, जिसे एकराट या चक्रवर्ती कहा जाता था।

- आधुनिक बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के गंगा के मैदानी इलाकों में एक केंद्रीकृत साम्राज्य का उदय हुआ, जिसने क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और सरकारी ढांचे को बदल दिया।
- 16 महाजनपदों में से एक काशी कभी मजबूत थी।
- हालाँकि, अंततः कोसल ने नियंत्रण कर लिया। मगध, कोशल, वृज्जी और अवंती में सत्ता संघर्ष हुआ।
- पहला भारतीय साम्राज्य अंततः मगध द्वारा स्थापित किया गया, जो सत्तारूढ़ महाजनपद बन गया।

मगध महाजनपद के विकास के कारण

- **मगध सभी उत्तर भारतीय राज्यों में सबसे शक्तिशाली और समृद्ध के रूप में विकसित हुआ**। यह उत्तर भारत में राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बिंदु बन गया।
- भूगोल **और रणनीति के संदर्भ में मगध को कई प्राकृतिक लाभ थे।**
  - **साम्राज्यवादी सत्ता में उसका उत्थान इन्हीं के द्वारा हुआ।**
  - **गंगा की घाटी के ऊपरी और निचले हिस्सों के बीच उसकी लाभप्रद स्थिति** बहुत मददगार थी। इसकी मिट्टी उपजाऊ थी।
  - **पुरानी राजधानी राजगृह पाँच संरक्षित पहाड़ियों की परिधि से घिरा हुआ था** और नई राजधानी **पाटलिपुत्र गंगा और सोन के जंक्शन पर स्थित होने के कारण संरक्षित था।**
  - **इसके अलावा, गंगा और उसकी सहायक नदियाँ**- दक्षिण में सोन और उत्तर में गंडक और घाघरा - **इस राज्य को महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों से जोड़ती थी।**
  - **इसके प्राकृतिक संसाधनों में राजगीर के आसपास की पहाड़ियों में लौह अयस्क और गया के करीब तांबे और लोहे के भंडार मौजूद थे।**
  - उनकी संपत्ति **उन दिनों प्रमुख वाणिज्यिक मार्गों के केंद्र में उनकी स्थिति से प्रभावित थी।**

हर्यंक वंश

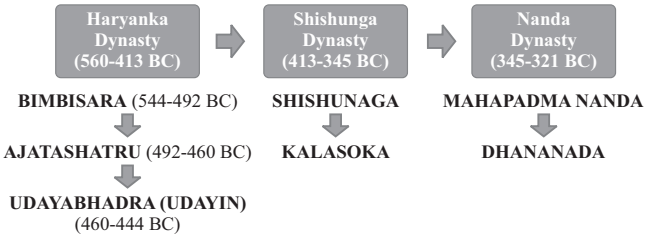
बिंबिसार (546-494 ईसा पूर्व)

- **उन्होंने विवाह-आधारित संबंधों के माध्यम से अपनी स्थिति को मजबूत किया**। उनकी पहली शादी कोशल वंश में हुई थी।
  - **उन्हें दहेज के रूप में काशी क्षेत्र प्राप्त हुआ**, जिससे बहुत सारा धन प्राप्त हुआ।
- **वैशाली के लिच्छवी कुल की राजकुमारी चेल्लाना बिंबिसार की पत्नी थीं।**
  - इस वैवाहिक संघ द्वारा उन्हें उत्तरी सीमा की सुरक्षा की गारंटी प्राप्त हुई।
  - इसके अतिरिक्त, इससे मगध के लिए उत्तर में नेपाल सीमा तक पहुँचना आसान हो गया। अंग पर कब्जा करने के लिए बल प्रयोग करते हुए उसने अवंती के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखा।
- **बिम्बिसार द्वारा अपने चिकित्सक जीवक को अवंती के राजा प्रद्योत के पास बीमारी के समय में भेजने की एक कहानी दोनों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों का सुझाव देती है।**
- **बिंबिसार गौतम बुद्ध और वर्धमान महावीर के समकालीन थे।**
  - हालाँकि, उन्हें दोनों धर्मों के समर्थक और अनुयायी के रूप में श्रेय दिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने बौद्ध संघ को अनगिनत उपहार दिए हैं।

- बौद्ध परंपरा के अनुसार, बुद्ध के दुष्ट चचेरे भाई देवदत्त के कहने पर बिंबिसार को उनके बेटे कुणिक, जिसे अजातशत्रु के नाम से भी जाना जाता है, ने मार डाला था।

अजातशत्रु

- अजातशत्रु के शासन में सैन्य विजय उल्लेखनीय थी।
- **उसने कोसल और वैशाली के साथ युद्ध किया**। वैशाली के लिच्छवियों के नेतृत्व वाले एक शक्तिशाली गठबंधन पर उनकी जीत एक बड़ी जीत थी।
  - **परिणामस्वरूप उनके प्रभाव और प्रतिष्ठा** में वृद्धि हुई।
- (भविष्य के पाटलिपुत्र) **पाटलिग्राम की छोटी बस्ती के सामरिक महत्व को महसूस किया।**
  - वैशाली से सुरक्षित करने के लिए, उन्होंने इसकी किलेबंदी की।
- **बौद्ध और जैन दोनों का दावा है कि अजातशत्रु उनके धर्मों से थे**। हालाँकि, यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि बौद्ध धर्म में परिवर्तित होने से पहले उन्होंने शुरू में जैन धर्म का पालन किया था।
- **उन्होंने गौतम बुद्ध से भी मुलाकात की**। भारहुत की मूर्तियों में भी यह दृश्य उनके विषय के रूप में है।
- **महावंश के अनुसार, उन्हें राजगृह के आसपास कई अवशेष स्तूपों के निर्माण और शहर में और उसके आसपास कई मठों की मरम्मत करने का श्रेय दिया जाता है।**
- बुद्ध के परिनिर्वाण के तुरंत बाद **प्रथम बौद्ध संगीति को राजगृह** में बुलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



उदयन

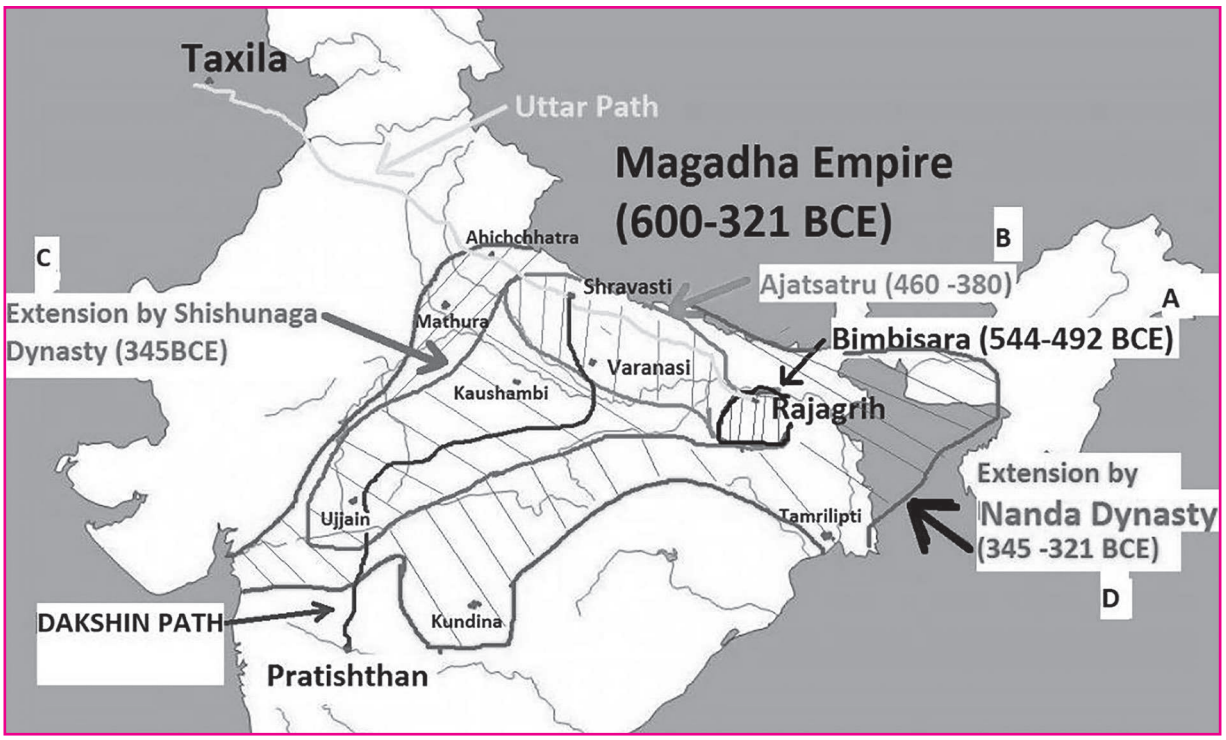
- उदयन ने अजातशत्रु के तत्काल उत्तराधिकारी के रूप में पदभार संभाला। पाटलिपुत्र में, जहाँ गंगा और सोन नदियाँ मिलती हैं, **उन्होंने नई राजधानी की आधारशिला रखी**।
  - बाद में, यह मौर्यों की शाही राजधानी के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
- क्योंकि उदयन के उत्तराधिकारी अप्रभावी नेता थे, शिशुनाग वंश मगध पर नियंत्रण करने में सक्षम हुए।
- **परिणामस्वरूप, शिशुनाग वंश सत्ता** में आया और हर्यक वंश को उखाड़ फेंका।

शिशुनाग वंश

- बनारस के एक वायसराय शिशुनाग ने अंतिम हर्यक राजा को अपदस्थ कर सिंहासन पर बैठा।
- अवंती के राजा, जो मगध साम्राज्य का एक प्रांत बन गया था, शिशुनाग द्वारा उखाड़ फेंका गया था। शिशुनाग के बाद शक्तिशाली साम्राज्य चरमराने लगा।
  - ऐसा प्रतीत होता है कि शिशुनाग की वैशाली में दूसरी राजधानी थी।
- **काकवर्मन या कालाशोक उसका उत्तराधिकारी बना।**
- द्वितीय बौद्ध संगीति उसके शासन काल में वैशाली में आयोजित की गई थी। नंद वंश के संस्थापक ने कालशोक का वध किया।
- महापद्म नंद द्वारा राजगद्दी हड़पने से पहले शिशुनागों ने पचास वर्षों तक शासन किया।

नंद वंश (362 ईसा पूर्व)

- नंद वंश के तहत, मगध की प्रसिद्धि अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुंच गई। गंगा के बेसिन की सीमाओं से परे, उन्होंने उत्तर भारत में अपने लिए एक विशाल और एकजुट साम्राज्य बना लिया।
- **महापद्म नंद नंद वंश के सर्वोच्च नेता थे, जबकि बौद्ध परंपरा उन्हें उग्रसेन कहती है।**
  - ग्रीक लेखक कर्टियस के अनुसार वह एक नाई थे जो एक रानी का प्रेमी बन गया और राजा को उसकी शह पर मार डाला।
  - पुराणों में महापद्म को एक शूद्र महिला द्वारा शिशुनाग वंश के राजा के पुत्र के रूप में वर्णित किया गया है।
- **उन्होंने उत्तर भारतीय क्षत्रिय राजवंश से अलग एकराट नाम अपनाया।**
- **पुराणों में महापद्म की जबरदस्त विजयों का उल्लेख है।**
- **हाथीगुम्फा शिलालेख में नंदों द्वारा कलिंग विजय का उल्लेख है।**
- कई इतिहासकारों के अनुसार, नंद दक्खन के एक बड़े क्षेत्र के प्रभारी भी थे।
  - इसलिए महापद्म नंद को एक महान साम्राज्य निर्माता के रूप में देखा जा सकता है।



- **धनानंद अंतिम नंद सम्राट थे।**
  - ग्रीक लेखों में उन्हें एग्रैम्स या एक्सांद्रामेस कहा जाता है।
- उसके पास एक मजबूत सेना, विशाल धन के अलावा उसने मगध राज्य को बनाए रखा था।
- कई स्रोत नंदों की अविश्वसनीय संपत्ति पर भी प्रकाश डालते हैं।
  - **कवि मामुलानार भी अपनी तमिल संगम रचना अहनानुरू में नंदों की विशाल संपत्ति का उल्लेख करते हैं।**
  - लोगों ने घना नंद के कर संग्रह के दमनकारी तरीकों को नापसंद किया।
  - चंद्रगुप्त मौर्य और कौटिल्य ने नंद वंश के खिलाफ एक विद्रोह शुरू करने के लिए इसका फायदा उठाया। **इसी काल में सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया।**
- तीन सौ साल पहले राजा नंद द्वारा निर्मित एक्वाडक्ट का उल्लेख उड़ीसा के भुवनेश्वर के पास उदयगिरि के एक शिलालेख में किया गया है, जिसे हाथीगुम्फा (हाथी गुफा) के रूप में जाना जाता है। यह नंद साम्राज्य की भौगोलिक पहुंच को भी प्रदर्शित करता है।

❖ ❖ ❖

9 मौर्य साम्राज्य

फारसी आक्रमण

साइरस (558 - 530 ईसा पूर्व)

- महान साइरस द्वारा एकेमेनिड (हखमनी) साम्राज्य को सबसे अच्छी तरह से जीत लिया गया था। वह एक अभियान का नेतृत्व करते हुए भारत में प्रवेश करने वाले पहले विजेता थे।
- गांधार क्षेत्र उसके द्वारा जीत लिया गया था।
- सिंधु नदी के पश्चिम में, सभी भारतीय जनजातियों ने उसके सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।

डेरियस (522 - 486 ईसा पूर्व)

- 518 ईसा पूर्व में, साइरस के पोते डेरियस प्रथम, ने सिंधु घाटी पर आक्रमण किया और सिंध और पंजाब को जीत लिया।
- इस क्षेत्र को उनके साम्राज्य की 20वीं क्षत्रप के रूप में नामित किया गया था। यह एकेमेनिड (हखमनी) साम्राज्य का सबसे अधिक आबादी वाला उत्पादक प्रांत था।
- सिंधु की खोज के लिए, डेरियस ने स्काईलास के नेतृत्व में एक नौसैनिक अभियान चलाया।

जेरक्सस (465-456 ईसा पूर्व)

- जेरक्सस ने अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए भारत में अपने प्रांत का उपयोग किया।
- उसने यूनानियों पर आक्रमण करने के लिए भारत से घुड़सवार और सैनिक भेजे। हालाँकि, जब ग्रीस में जेरक्सस को हार का सामना करना पड़ा, तो वे पीछे हट गए।
- एकेमेनियन इस आपदा के बाद भारत में आगे की रणनीति बनाने में असमर्थ थे।
  - हालाँकि, वे अभी भी भारतीय प्रांत के प्रभारी थे।
- 330 ईसा पूर्व में, डेरियस III ने सिकंदर से युद्ध करने के लिए भारतीय योद्धाओं की भर्ती की। यह स्पष्ट है कि सिकंदर के भारत पर आक्रमण करने से ठीक पहले फारसी नियंत्रण कमजोर हो गया था।

भारत पर फारसी आक्रमण का प्रभाव

जब छठी शताब्दी के मध्य में फारसी साम्राज्य ने भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर शासन करना शुरू किया, तो यह क्षेत्र फारसी और भारतीय संस्कृति के मिश्रण के केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

- **भारत-ईरानी व्यापार के विस्तार को फारसी आक्रमण से बढ़ावा मिला।**
  - **इसके अतिरिक्त, इसने सिकंदर के आक्रमण के लिए मंच तैयार किया।**
- **अशोक के कुछ आदेश खरोष्ठी लिपि में लिखे गए थे, जो एक ईरानी लेखन शैली** थी जिसने उत्तर पश्चिम भारत में लोकप्रियता हासिल की।
  - **खरोष्ठी को अरामिक(अरामाईक) की तरह ही दाएं से बाएं लिखा जाता था।**
- एक **क्षेत्रीय प्रति फारसी सिग्लोई (चाँदी का सिक्का) है**।
  - महाजनपदों को भारत में सबसे पुराना सिक्का बनाने का श्रेय दिया जाता है। कर्षपण(कार्षापण, भारत में सिक्के के लिए **फारसी मूल का** शब्द, है।
  - फारसी के सिक्कों ने टंकण के लिए प्रेरणा का काम किया होगा। उस समय के सिक्के फारस और भारत के बीच संभावित व्यावसायिक संबंधों का संकेत देते हैं।
- **अशोक के एकाश्म स्तंभ और उन पर मिली मूर्तियां** मौर्यों की कला पर फारसी कला के प्रभाव को दर्शाती हैं।
- ईरानी प्रभाव को अशोक द्वारा आदेश देने की अवधारणा और उपयोग किए जाने वाले वाक्यांश दोनों में देखा जा सकता है।
- **स्तंभों की शीर्ष, विशेष रूप से सारनाथ स्तंभ की सिंह शीर्ष और रामपुरवा स्तंभ की घंटी शीर्ष, घंटी के आकार की हैं और एकेमेनिड (हखमनी) राजवंश के स्तंभों में पाए गए डिजाइनों से मिलती जुलती हैं।**
- एकेमेनिड (हखमनी) साम्राज्य की राजधानी में स्तंभों वाला हॉल पाटलिपुत्र में महल के स्तंभित अवशेषों के समान है।

सिकंदर का भारत पर आक्रमण (327-325 ई.पू.)

मैसेडोनिया के सिकंदर ने फारसी आक्रमण के दो सदियों बाद भारत पर विजय प्राप्त की। उसके आक्रमण के समय उत्तर पश्चिम भारत में कई छोटे राज्य थे।

- **तक्षशिला के अम्बी**, अभिसार के राजा, और पोरस, जो झेलम और चिनाब नदियों के बीच के क्षेत्र पर हावी थे, प्रमुख राजा थे।
- **न्यासा की तरह, कई गणतांत्रिक राज्य थे। संक्षेप में, राजा एक दूसरे के साथ युद्ध में थे और भारत देश का उत्तर पश्चिम क्षेत्र सबसे विभाजित बना रहा।**
- **वे एक आम दुश्मन के खिलाफ कभी एकजुट नहीं होते थे।**



Emperor Alexander

आक्रमण के कारण

- 334 ईसा पूर्व में अपने पिता फिलिप के निधन के बाद, सिकंदर मैसेडोनिया के सिंहासन पर बैठा।
- 330 ईसा पूर्व में अर्बेला की लड़ाई में डेरियस III को हराकर, उसने संपूर्ण फारस पर अधिकार कर लिया।
- उसने भारत के फारसी क्षत्रप को पुनः प्राप्त करने का भी इरादा किया था, जो खो गया था, और पूर्व की ओर अपनी विजय का विस्तार किया।
- सिकंदर भारत की अविश्वसनीय संपत्ति के बारे में हेरोडोटस जैसे यूनानी लेखकों के लेखन के प्रति आकर्षित था।
- इसके अतिरिक्त, वह प्राकृतिक इतिहास के प्रति अपने प्रेम और भूगोल में अपनी रुचि से भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित हुआ।
- उस समय की भूगोल की उनकी समझ के अनुसार, उन्होंने सोचा कि भारत के पूर्वी हिस्से में समुद्र है।

हाइडेस्पीज की लड़ाई

- सिकंदर ने 327 ईसा पूर्व में हिंदुकुश पर्वत की यात्रा की और दस महीने से अधिक समय तक जनजातियों को युद्ध में उलझाए रखा। फरवरी 326 ई.पू. में उसने सिन्धु नदी को पार किया।
- तक्षशिला के नेता अम्भी ने खुले हाथों से उनका स्वागत किया। सिकंदर ने तब पोरस से समर्पण करने का अनुरोध किया।
- हालाँकि, पोरस ने विरोध किया और सिकंदर का सामना करने का निर्णय लिया। इसके बाद सिकंदर तक्षशिला से हाइडस्पेस नदी (झेलम) के किनारे चला गया।
  - **यह एक संघर्षपूर्ण लड़ाई रही।**
- बड़ी सेना होने के बावजूद पोरस की हार हुई।
- इस भारतीय राजकुमार की बहादुरी और वीरता ने सिकंदर का ध्यान आकर्षित किया, और उसने प्यार से उसके साथ व्यवहार किया और उसे उसका राज्य वापस कर दिया।

सिकंदर की वापसी

- स्थानीय कबीलों के प्रतिरोध का सामना करने के बाद, सिकंदर ने ब्यास नदी तक अपनी यात्रा जारी रखी।
- गंगा की घाटी तक, वह और भी पूर्व की ओर यात्रा करना चाहता था। लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ था क्योंकि उसके सैनिकों ने युद्ध में शामिल नहीं होने का फैसला किया।
- वे लंबे संघर्ष से थक चुके थे और घर जाना चाहते थे। सिकंदर ने वापस जाने का फैसला किया क्योंकि वह उन्हें समझाने में असमर्थ था।
- **उसने अपने कब्जे वाले भारतीय क्षेत्र का प्रबंधन करने की योजना विकसित की।**
  - सिंधु से ब्यास तक, उसने पूरे क्षेत्र को तीन प्रांतों में विभाजित किया और प्रत्येक प्रांत में शासक नियुक्त किया।
- **अक्टूबर 326 ई.पू. में उनकी वापसी शुरू हुई, और वापसी भी चुनौतीपूर्ण रही।**
- गणतंत्र के कई कबीलों ने उनकी सेना पर हमला किया, वह सिंधु पर विजय प्राप्त करने में सफल रहा।
- **रास्ते में वह बेबीलोन पहुंचा जहां वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और 323 ईसा पूर्व में उसकी मृत्यु हो गई।**

सिकंदर के आक्रमण का प्रभाव

- सिकंदर के आक्रमण ने मौर्यों के अधीन **उत्तर भारत के राजनीतिक एकीकरण** को इसके पहले मूर्त परिणाम के रूप में समर्थन दिया।
  - **यह छोटे संप्रभु राज्यों की व्यवस्था का अंत था।**
- इसके अतिरिक्त, सिकंदर के आक्रमण ने यूनान और भारत के बीच सीधे संचार का द्वार खोल दिया था।
- उनके द्वारा खोले गए मार्ग और उनकी नौसैनिक खोजों के परिणामस्वरूप **भारत और पश्चिम एशिया के बीच व्यापार की सुविधाओं में सुधार हुआ है।**

मौर्य काल

- **मौर्यों ने (324-187 ईसा पूर्व) ने एक साम्राज्य की स्थापना की जो लगभग पूरे उपमहाद्वीप और यहां तक कि उत्तर-पश्चिम में इसके आगे तक फैला हुआ था।**
- उस समय के ग्रीक इतिहासकारों की कहानियों के अनुसार, चंद्रगुप्त तक्षशिला में रहने वाला एक बच्चा था, जब सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया था।
- उनका नाम ग्रीक ऐतिहासिक अभिलेखों में "सैंड्राकोट्टस" या "सैंड्राकोप्टस" के रूप में सूचीबद्ध है।
- चंद्रगुप्त ने सालों बाद सिकंदर से प्रेरित होकर नंदों के खिलाफ विद्रोह किया और उन्हें उखाड़ फेंका।
- **वहा के लोगों ने** एक अलोकप्रिय शासक को हटाने में उनकी सहायता की और, चंद्रगुप्त इसे पूरा करने में सक्षम थे।
- **321 ईसा पूर्व में, चंद्रगुप्त ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की और इसके पहले सम्राट बने।**
- जूनागढ़ शिलालेख से यह स्पष्ट है कि चंद्रगुप्त ने पश्चिम में गुजरात तक अपनी शक्ति का विस्तार किया।
  - उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक ग्रीक प्रधानों के खिलाफ उनका सैन्य अभियान था।
- **ग्रीक प्रधान सैन्य अधिकारी थे जिन्हें सिकंदर ने पीछे छोड़ दिया था, चंद्रगुप्त** ने उन्हें नष्ट कर दिया, जिससे प्रांतों के विस्तार की अपनी भव्य योजना को पूरा करने का रास्ता साफ हो गया।

मौर्य इतिहास के स्रोत

- **मौर्य काल के स्रोत पूर्व काल की तुलना में अधिक विविध हैं। पुराणों में राजा-सूचियों में मौर्यों का उल्लेख है, लेकिन विस्तार में विसंगतियां हैं।**
- **जैन कृतियां जैसे हेमचंद्र का परिशिष्टपर्वन जैन धर्म के साथ चंद्रगुप्त के संबंधों का संकेत देती हैं**
- **विशाखदत्त द्वारा लिखित 5वीं शताब्दी के ऐतिहासिक नाटक, मुद्राराक्षस का कथानक** पूर्व नंद राजा के एक मंत्री राक्षस के खिलाफ चंद्रगुप्त के एक मंत्री चाणक्य की चतुर चाल के इर्द-गिर्द घूमता है।
- **चाणक्य-चंद्रगुप्त कथा के बौद्ध संस्करणों को** महावंश और इसकी 10वीं शताब्दी की टिप्पणी, वामसत्थापकसिनी में संरक्षित किया गया है।
- **चंद्रगुप्त के बारे में कुछ जानकारी मिलिंदपन्हों और महाभाष्य में भी उपलब्ध है।**
- तमिल कवि मामुलानार की एक कविता में मौर्यों के दक्षिण की ओर विस्तार का उल्लेख है।
- मौर्यों के इतिहास और उनके काल के पाठ्य स्रोतों में कौटिल्य के अर्थशास्त्र और मेगस्थनीज के इंडिका का विशेष महत्व है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

- अर्थशास्त्र बहुत स्पष्ट रूप से कहता है कि अर्थ, धर्म (आध्यात्मिक कल्याण) और काम (कामुक आनंद) से श्रेष्ठ है, क्योंकि बाद वाले इस पर निर्भर हैं। यह अर्थ को पुरुषों के भरण-पोषण या आजीविका के रूप में समझाता है, जिसका स्रोत लोगों द्वारा बसाई गयी पृथ्वी है।
- **कौटिल्य को 'भारतीय मैकियावेली' के नाम से भी जाना जाता था।** 1904 में आर. शामा शास्त्री ने सबसे पहले अर्थशास्त्र पांडुलिपि की खोज की।
- **अर्थशास्त्र को तीन खंडों में बांटा गया है:** पहला राजा और उसकी परिषद के साथ-साथ प्रशासन के मंत्रालयों से संबंधित है; दूसरा सिविल और आपराधिक कानून; और तीसरा कूटनीति और युद्ध से संबंधित है।

मेगस्थनीज की इंडिका

- मेगस्थनीज **चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी दूत था।** उनकी कृति इंडिका के कुछ ही अंश शेष हैं।
- **रोमन ग्रंथो में राजा सैंड्रोकोटस (चंद्रगुप्त) और अमित्रोचेट्स** (अमित्रघात, यानी बिंदुसार) और **उनकी राजधानी पालिम्बोथरा** (पाटलिपुत्र) का उल्लेख है।
- उनकी रिपोर्ट में मौर्य प्रशासन, विशेष रूप से पाटलिपुत्र की सरकार, राजधानी शहर, साथ ही सैन्य संगठन के बारे में जानकारी शामिल है।
- मेगस्थनीज की इंडिका ने देश, उसके आकार, नदियों, मिट्टी, जलवायु, पौधों, जानवरों, उपज, प्रशासन, समाज और किंवदंतियों का वर्णन किया।

पुरातत्व स्रोत

अशोक के समकालीन शिलालेख

- **जेम्स प्रिंसेप 1837 में अशोक शिलालेखों को समझने वाले पहले व्यक्ति थे।**
- वे पाली में लिखे गए हैं, जबकि कुछ स्थानों पर प्राकृत भाषा में थे।
- **अधिकांश शिलालेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में हैं।**
- मनशेहरा और शाहबाजगढ़ी लेख प्राकृत भाषा और खरोष्ठी लिपि में हैं।
- **ग्रीक और अरामाईक में भी कुछ शिलालेख हैं।**
- दक्षिण-पूर्व अफगानिस्तान में **कंधार के पास शार-ए-कुना में एक द्विभाषी ग्रीक-अरामाईक शिलालेख पाया गया।**

- **लगमन (पूर्वी अफगानिस्तान में) में दो और तक्षशिला में एक शिलालेख पाया गया।**
  - **एक द्विभाषी प्राकृत- अरामाईक** शिलालेख **लम्पक में** और दूसरा कंधार में पाया गया।
- **उनमें से अधिकांश अशोक को दो उपाधियों के रूप में संदर्भित करते हैं- देवानामप्रिय** (देवताओं के प्रिय) और **प्रियदर्शी** (वह जो शुभ को देखता है)।
- **खरोष्टी लिपि में लिखे अशोक के शिलालेख उत्तर पश्चिम भारत में खोजे गए हैं।**
- **अशोक के शिलालेखों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है।**
  - दो मुख्य श्रेणियां 14 प्रमुख शिलालेख और 6 (एक मामले में 7) स्तंभ शिलालेख हैं।
  - **कई छोटे शिलालेख, लघु स्तंभ शिलालेख** और **गुफा शिलालेख भी** हैं।
- लघु शिलालेखों को सबसे पुराने शिलालेखों में माना जाता है, प्रमुख शिलालेखों को उनके बाद के शिलालेखों में और स्तंभ शिलालेखों को सबसे बाद में माना जाता है।
- शिला और स्तंभ शिलालेख,शिलालेखों के समूह हैं जो विभिन्न स्थानों में मामूली बदलाव के साथ पाए जाते हैं।
- कलिंग के साथ उसके संघर्ष का विवरण XIII शिलालेख में पाया जा सकता है।
- स्तंभ शिलालेख VII अपने पूरे क्षेत्र में धम्म को आगे बढ़ाने के लिए उनकी पहल का एक सिंहावलोकन प्रदान करता है।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित में से किसने सम्राट अशोक के शिलालेखों को सबसे पहले पढ़ा था?

(*a*) जॉर्ज बुहलर

(*b*) जेम्स प्रिंसेप

(*c*) मैक्स मुलर

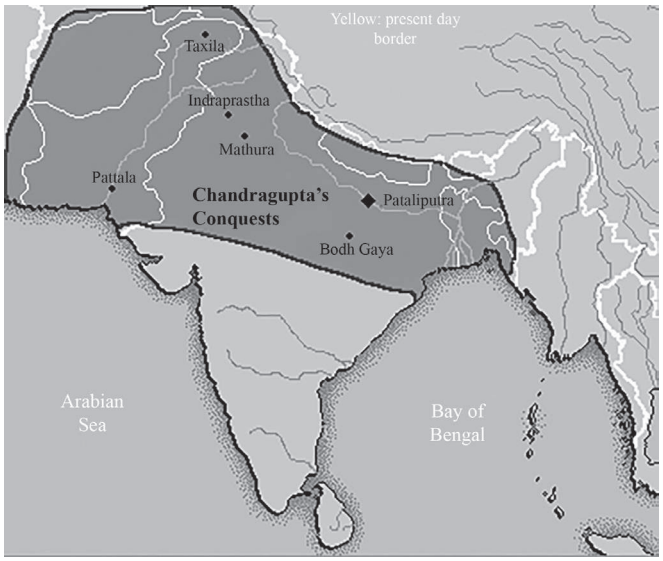
(*d*) विलियम जोन्स

मौर्यों का राजनीतिक इतिहास

- मौर्य साम्राज्य नंदों द्वारा रखी गई नींव पर बनाया गया था। राजवंश के पहले तीन शासक चंद्रगुप्त (324/321-297 ईसा पूर्व), बिंदुसार (297-273 ईसा पूर्व) और अशोक (268-232 ईसा पूर्व) थे। बाद के मौर्यों का शासन 187 ईसा पूर्व तक जारी रहा।

चंद्रगुप्त मौर्य

- **मौर्यों की उत्पत्ति से संबंधित साक्ष्य:** दीघा निकाय, महावंश और दिव्यवदान जैसे बौद्ध ग्रंथों में, मौर्यों को मोरिया नामक क्षत्रिय वंश से संबंधित बताया गया है, जिन्होंने पिप्पलिवन पर शासन किया था।
  - दूसरी ओर, परिष्टपर्वन, चंद्रगुप्त को मोर टैमर्स (मयुर-पोशाक) के एक गाँव के मुखिया की बेटी के बेटे के रूप में वर्णित करता है।
  - मुद्राराक्षस चंद्रगुप्त को निम्न सामाजिक मूल के होने के रूप में संदर्भित करता है।
- चंद्रगुप्त ने पहले खुद को पंजाब में स्थापित किया होगा और फिर मगध क्षेत्र पर नियंत्रण हासिल करने तक पूर्व की ओर चले गए।



- उन्होंने 25 वर्ष की छोटी उम्र में, नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद से पाटलिपुत्र पर कब्जा कर लिया।
- उसने उत्तर-पश्चिम की ओर कूच किया और गंगा की घाटी में दृढ़ता से अपना प्रभुत्व स्थापित करने के बाद सिंधु तक के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।
- बाद में, वह मध्य भारत गया और नर्मदा नदी के उत्तर के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- उन्होंने 305 ईसा पूर्व में भारत के उत्तर-पश्चिम में सिकंदर के सामान्य प्रभारी सेलुकस निकेटर पर हमला किया था, उन्हें चंद्रगुप्त मौर्य ने हरा दिया था और एक संधि हुई थी।
  - इस समझौते पर हस्ताक्षर करके, सेलुकस निकेटर ने मौर्य साम्राज्य को आरिया, अराकोसिया और गेड्रोसिया के ट्रांस-सिंधु क्षेत्रों पर नियंत्रण दिया।

- इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपनी बेटी की शादी मौर्य के राजकुमार से की।

- **चंद्रगुप्त का एकमात्र निश्चित अभिलेखीय संदर्भ** रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख में है, जो चंद्रगुप्त के शासनकाल के लिए सुदर्शन झील के रूप में जाने जाने वाले जल जलाशय के निर्माण की शुरुआत का श्रेय देता है।
  - **काम उसके द्वारा शुरू किया गया था और अशोक द्वारा पूरा किया गया था।**
- **कुछ बाद के शिलालेख और जैन ग्रंथ चंद्रगुप्त, जैन धर्म और कर्नाटक के बीच संबंध का सुझाव देते हैं।**
- जैन परंपरा चंद्रगुप्त और जैन संत भद्रबाहु के बीच संबंधों की बात करती है।
- **कहा जाता है कि मौर्य राजा भद्रबाहु के साथ कर्नाटक, श्रावण बेलगोला** पहाड़ियों में 12 साल के अकाल के आसन्न प्रकोप हेतु संत की भविष्यवाणी के मद्देनजर गए थे।
  - राजा को सल्लेखना (भुखमरी से मृत्यु) करने के रूप में भी वर्णित किया गया है।

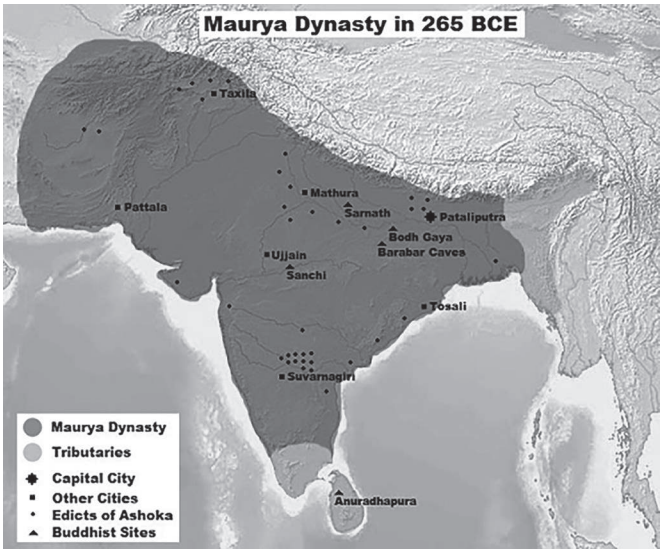
बिन्दुसार

- चंद्रगुप्त का उत्तराधिकारी उनके पुत्र बिन्दुसार बना, जिन्होंने 297 और 273 ईसा पूर्व के बीच शासन किया।
- यूनानियों ने बिन्दुसार को "अमित्रघात" के रूप में संदर्भित किया, जो "दुश्मनों के संहारक" के रूप में प्रयोग होने वाला ग्रीक शब्द है। मैसूर तक दक्कन उसके नियंत्रण में होने का दावा किया जाता है।
- एक तिब्बती भिक्षु, तारानाथ के अनुसार बिंदुसार ने 16 राष्ट्रों पर विजय प्राप्त की, जो "दो समुद्रों के बीच का क्षेत्र" बना।
- सुदूर दक्षिण के मौर्य आक्रमण का भी संगम तमिल साहित्य द्वारा समर्थन किया जाता है। इसलिए, यह तर्क दिया जा सकता है कि बिन्दुसार का मौर्य साम्राज्य मैसूर तक फैला था।
- बिन्दुसार पर बौद्ध स्रोत अपेक्षाकृत मौन हैं। एक आजीवक ज्योतिषी की कहानी है जो अपने बेटे अशोक के भविष्य की महानता की भविष्यवाणी कर रहा था, जो यह सुझाव दे सकता है कि राजा अजीविकों का पक्षधर था।
- प्लिनी ने उल्लेख किया है कि मिस्र के शासक टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फोस ने डायोनिसियस नामक एक राजदूत को भेजा था।
- एंटिओकस प्रथम को लिखे एक पत्र में, बिंदुसार ने एक परिचारक, मीठी शराब और सूखे अंजीर का अनुरोध किया। बाद वाले ने सब कुछ भेजा लेकिन एक सोफिस्ट नहीं भेजा क्योंकि ऐसा करना ग्रीक कानून के खिलाफ था।
- बिन्दुसार के पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल बनाया गया।

अशोक महान (273-232 ईसा पूर्व)

273 ईसा पूर्व में बिन्दुसार की मृत्यु के बाद चार साल तक उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।

- दिव्यावदान के अनुसार, बिन्दुसार चाहता था कि उसका पुत्र सुसीम उसका उत्तराधिकारी बने, लेकिन अशोक को उसके पिता के मंत्रियों का समर्थन प्राप्त था।
- अशोक के शिलालेखों के वितरण से मौर्य साम्राज्य की सीमा का पता चलता है।
  - उत्तर-पश्चिम में, यह अफगानिस्तान में कंधार तक फैला हुआ था, जिसके पश्चिम में सीरिया के एंटिओकस II का राज्य था।
  - इसकी पूर्वी सीमा उड़ीसा तक फैली हुई है। इसमें दक्षिणी भागों को छोड़कर लगभग पूरा उपमहाद्वीप शामिल था।

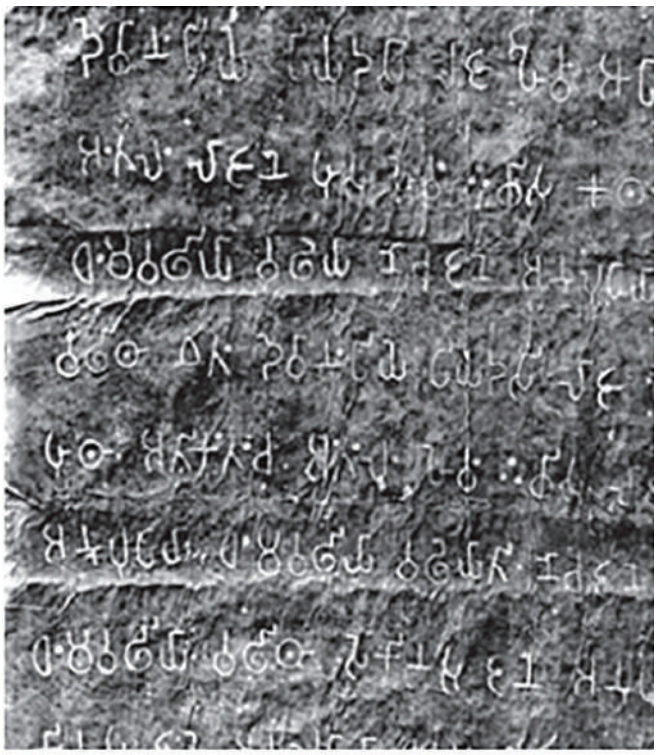


- **अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग के खिलाफ निर्णायक लड़ाई जीती थी।** यह उनके शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी।
- संघर्ष के प्रभावों को स्वयं अशोक ने शिलालेख **XIII** में दर्ज किया था: "एक लाख पचास हजार मारे गए और कई घायल हुए" लड़ाई के बाद उन्होंने कलिंग को मौर्य साम्राज्य में जोड़ा।
- **हालाँकि, युद्ध की उत्पत्ति और प्रगति के संबंध में कोई जानकारी नहीं है।**
- **कलिंग युद्ध का एक अन्य महत्वपूर्ण परिणाम अशोक का बौद्ध धर्म में रूपांतरण था, जो बौद्ध भिक्षु उपगुप्त से प्रभावित था।**
- उनके कई उपनाम हैं, जिनमें बुद्धशाक्य और अशोक (मस्की के शिलालेख में), धर्मसोक (सारनाथ शिलालेख)है

अशोक और बौद्ध धर्म

- कुछ शिक्षाविदों का दावा है कि उनका बौद्ध धर्म में परिवर्तन अचानक नहीं हुआ था; बल्कि यह धीरे-धीरे हुआ।
- शाक्य उपासक (शिष्य) बनने के बाद, अशोक ढाई साल बाद (भिक्षु) बन गया।
- बाद में, उन्होंने शिकार करना बंद कर दिया, बोधगया की यात्रा की और मिशन की योजना बनाई।
- धम्म का प्रसार करने के लिए, उन्होंने धर्म महामात्रों की नियुक्ति की।
- उन्होंने 241 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी की यात्रा की, जहां बुद्ध का जन्म हुआ था
- कुशीनगर, सारनाथ और श्रावस्ती के साथ-साथ वे अन्य बौद्ध पवित्र स्थलों पर भी गए।
- उनकी बेटी संघमित्रा और बेटे महेंद्र ने श्रीलंका की यात्रा की, जहां उन्होंने मूल बोधि वृक्ष की एक शाखा लगाई।
- संघ को मजबूत बनाने में मदद करने के लिए तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन अशोक ने 240 ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में किया।

अशोक का धम्म



Inscription on Delhi-Topra Pillar

अशोक के अधिकांश शिलालेख धम्म (धर्म का प्राकृत रूप) के बारे में हैं।

- **अहिंसा (गैर-चोट) का विषय अशोक के धम्म का एक महत्वपूर्ण पहलू है** और इसका अक्सर उल्लेख किया जाता है।
  - शिलालेख 1 जानवरों की बलि और कुछ प्रकार के उत्सव समारोहों पर प्रतिबंध की घोषणा करता है जिसमें संभवत: जानवरों की हत्या शामिल है, और शाही रसोई में भोजन के लिए जानवरों की हत्या में कमी की भी बात करता है।
- **अच्छा आचरण और सामाजिक उत्तरदायित्व जो धम्म का हिस्सा** थे, कुछ प्रमुख संबंधों से जुड़े थे।
- **एक सरकार जो दोषियों और नौकरों के साथ दया का व्यवहार करती है।**
- **दासों और नौकरों के प्रति उचित शिष्टाचार, बड़ों के प्रति आदरपूर्ण व्यवहार**, सभी प्राणियों के साथ व्यवहार में संयम, **और श्रमणों और ब्राह्मणों के प्रति उदारता।**
  - शिलालेख 11 धम्म के उपहार को सभी उपहारों में सर्वश्रेष्ठ होने का उल्लेख करता है।
- **धम्मयात्राओं की एक प्रणाली जो** समाज कल्याण के लक्ष्य में प्रशासन को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करती है और जनता के साथ चल रहे संचार को बनाए रखती है।
- **अपने माता-पिता की सेवा, अहिंसा का अभ्यास, सत्य** के प्रति प्रेम, शिक्षकों के प्रति सम्मान और परिवार के सदस्यों के प्रति दया।
- **समूहों के बीच सहिष्णुता।**
- **हिंसा के बिना विजय**

धम्म और बौद्ध धर्म

- बुद्ध की शिक्षाएँ अहिंसा के दर्शन और अशोक के धम्म में पाई जाने वाली अन्य संबंधित अवधारणाओं के समान हैं।
- **अशोक के शिलालेखों में बुद्ध की शिक्षाओं से जुड़े कुछ प्रमुख विचार शामिल नहीं हैं**, जैसे कि दु:ख की व्याख्या, अष्टांग मार्ग, नश्वरता का सिद्धांत, या निर्वाण का लक्ष्य।
  - हालाँकि, उन्होंने धम्म को बौद्ध सिद्धांत से नहीं जोड़ा। उनकी व्यक्तिगत मान्यता अभी भी बौद्ध धर्म है।
- अशोक के अपने धम्म और एक राजा के धम्म के विचार के सबसे उल्लेखनीय और अभिनव पहलुओं में से एक उसका युद्ध का त्याग और धार्मिक विजय की उसकी पुन: परिभाषा थी।
- अपने साम्राज्य के पितामह के रूप में, अशोक ने खुद को धम्म समानता के उद्घोषक और शिक्षक के रूप में पेश किया।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित में से किस शासक ने एक शिलालेख के माध्यम से अपनी प्रजा को सलाह दी? "जो कोई भी अपने धार्मिक संप्रदाय की प्रशंसा करता है या अपने संप्रदाय की अत्यधिक भक्ति के कारण अन्य संप्रदायों को दोष देता है, अपने स्वयं के संप्रदाय को महिमामंडित करने की दृष्टि से, वह अपने ही संप्रदाय को बहुत गंभीर रूप से घायल करता है।"

(a) अशोक (b) समुद्रगुप्त
(c) हर्षवर्धन (d) कृष्णदेव राय

उत्तर मौर्य

अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ।

- **232 ईसा पूर्व में अशोक का निधन हुआ** जिसके बाद मौर्य साम्राज्य पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों में विभाजित हो गया।
- अशोक के पुत्र कुणाल ने पश्चिमी क्षेत्र पर शासन किया, जबकि अशोक के पोते दशरथ ने पूर्वी क्षेत्र पर शासन किया।
  - बैक्ट्रियन आक्रमणों के कारण साम्राज्य का पश्चिमी भाग ध्वस्त हो गया।
  - दशरथ के उत्तराधिकारी संप्रति के अधीन, पूर्वी भाग अपरिवर्तित था।
- **मौर्य साम्राज्य के अंतिम राजा बृहदथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग ने की थी।**

मौर्य प्रशासन

केंद्रीय प्रशासन

मौर्यों के पास एक बड़ा और अत्यधिक केंद्रीकृत नौकरशाही प्रशासन था, जिसमें राजा सभी शक्ति का स्रोत था; हालांकि यह तर्क दिया जाता है कि मौर्य राजाओं (विशेष रूप से अशोक) ने दैवीय शासन के बजाय पैतृक निरंकुशता को जन्म दिया।

- अशोक का साम्राज्य प्रांतों में विभाजित था, प्रत्येक में एक वायसराय होता था।
- **कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सप्तांग राज्य की अवधारणा हैं**, जिसके अनुसार शासन के सात अंग होते हैं:

सप्तांग राज्य का तत्व	विशेषताएं
स्वामिन (राजा)	• कौटिल्य ने कहा कि राजा सामाजिक पदानुक्रम का धर्मप्रवर्तक था। • भले ही उसके पास अपने दैनिक कार्यों में मदद करने के लिए एक मंत्रिपरिषद थी, फिर भी सम्राट अंततः करों, कानून और व्यवस्था, युद्ध और अन्य प्रशासनिक मुद्दों को प्रभावित करने वाले सभी निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार था। • उनसे उम्मीद की जाती थी कि वे हमेशा फुर्तीले और अपने अधिकारियों के पहुंच में हो।
अमात्य (सभी उच्चाधिकारी)	• राजा को दैनिक प्रशासन में सहायता करने के लिए, राजा ने मंत्रिपरिषद की स्थापना की। • मंत्रिपरिषद सभा में महामंत्रियों या शीर्ष मंत्रियों **द्वारा भी भाग लिया जाता था**। • महत्वपूर्ण विभागों के प्रभारी अन्य लोग थे। ○ इन अधिकारियों को अमात्य, **महामातृ और अध्यक्ष** (जो सर्वोच्च प्रशासनिक और न्यायिक पदों पर आसीन थे) के रूप में जाना जाता था।
जनपद (क्षेत्र और जनसंख्या)	• मौर्य साम्राज्य को चार अलग-अलग प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिसमें राजधानियाँ थीं ○ तक्षशिला (उत्तर पश्चिमी भारत) ○ सुवर्णगिरी (दक्षिणी भारत) ○ तोसली (पूर्वी भारत), और ○ उज्जैन, मगध से अलग, जिसकी सीट पाटलिपुत्र (पश्चिमी भारत) में थी। ○ अशोक के शासन के दौरान पांचवां कलिंग प्रांत जोड़ा गया था।
दुर्ग (किला)	• कौटिल्य ने राजधानी शहर में मुख्य किले के निर्माण के लिए निर्देश दिए। • वह किले के प्रवेश द्वार पर सैनिकों को रखने और किले की दीवारों को घेरने के लिए कमल और मगरमच्छ से भरे एक नहीं, बल्कि तीन खंदकों का निर्माण करने का सुझाव दिया। • इसके अतिरिक्त, किले में कई गुप्त भागने के मार्ग और घेराबंदी के माध्यम से पर्याप्त सुविधा मौजूद होनी चाहिए। • **अंत-महामातृ कहे जाने वाले उच्च अधिकारी सीमावर्ती किलों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार थे।**

कोष (कोषागार)	• कृषि इस समय की आर्थिक रीढ़ के रूप में कार्य करती थी, व्यापार और पशुपालन अन्य महत्वपूर्ण उद्योगों के रूप में सेवा करते थे। • भूमि राजस्व आय के प्राथमिक स्रोत थे। • इस अवधि के दौरान, **क्षेत्र की निजी संपत्ति की अवधारणा आकार लेने लगी**। • **क्षेत्रिका (भूमि-स्वामी) को उपसव (किरायेदार)** से अलग किया गया था।
दंड/बल (न्याय या बल)	सर्वोच्च अधिकारी राजा था। उन्होंने उन मामलों को तय किया जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुत किए गए थे। • हालांकि अशोक के शिलालेखों में शहर महामत्त का उल्लेख है जिन्हें न्यायिक शक्तियाँ भी सौंपी गई थीं, न्यायाधीशों को धर्मस्थ कहा जाता था। • **कौटिल्य ने दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के न्यायालयों का उल्लेख किया है।** ○ धर्माथिकारिन राजधानी में सर्वोच्च न्यायालय के शीर्ष न्यायधीश मौजूद थे। ○ अमात्यों के अधीन, प्रांतीय राजधानियों और जिलों में अन्य निम्न न्यायालय थे। • स्थानीय अदालतें, गाँव से लेकर प्रांत तक, दीवानी और फौजदारी दोनों तरह की कार्यवाही करती थीं। • सभी प्रमुख शहरों में एक पुलिस मुख्यालय था, और बंधननगर को एक वास्तविक जेल कहा जाता था, जबकि चरक ने पुलिस होल्डिंग सेल को निरूपित किया। • **अपराधी और शिकायतकर्ता की गंभीरता, स्वभाव, परिस्थितियाँ और वर्ण सभी का सजा पर प्रभाव पड़ा।** • हालांकि अशोक स्तंभ शिलालेख 4 में कहता है कि उसने न्यायिक प्रक्रियाओं में समता (निष्पक्षता) की स्थापना की, आम तौर पर बोलते हुए, द्विज/उच्च वर्णों को निचले लोगों की तुलना में हल्का दंड प्राप्त हुआ।
मित्र (सहयोगी)	• कौटिल्य अंतरराज्यीय राजनीति को विजिगीषु (संभावित विजेता) के दृष्टिकोण से संबोधित करते हैं और सभी संभावित स्थितियों को ध्यान में रखते हैं। • वह षड-गुण (छह नियमों) की गणना करता है जिसका राजा को इन स्थितियों में पालन करना चाहिए: ○ संधि की नीति (शांति संधि) ○ विग्रह की नीति (शत्रुता) ○ आसन की नीति ○ याना की नीति (एक सैन्य अभियान पर मार्च करना) ○ संश्रय की नीति (दूसरे राजा के साथ शरण लेना) ○ द्वैधिभाव की दोहरी नीति (एक राजा के साथ संधि और दूसरे के साथ विग्रह)। • कई हेलेनिस्टिक साम्राज्यों और यहां तक कि दक्षिण एशियाई देशों के साथ, मौर्यों ने उत्कृष्ट राजनयिक संबंध स्थापित किया। • इसके लिए उनके पास विदेशी संबंधों का एक पूरा विभाग था। • अर्थशास्त्र में विशिष्ट राजनयिक पदों का उल्लेख है, जिनमें शामिल हैं: ○ **निश्रीहर्थदूत** (पूर्ण राजदूत) ○ **परिमितार्थदूता** (बातचीत में निर्देश से आगे नहीं जा सका) ○ **सासनहरदुत** (विशेष संदेशवाहक)।

राजस्व और कृषि

- **किसानों ने भाग, या अपनी फसल का छठा हिस्सा**, और बली, या अतिरिक्त कर का भुगतान किया।
- **आय का प्राथमिक स्रोत बली (भूमि कर) था, जिसे उपज के छठे हिस्से की दर** से निर्धारित किया जाता था।
- **पिंडाकर कर** के अलावा, जो गांवों के समूहों पर एकत्र किया जाता है, **हिरण्य, जिसे नकद में भुगतान किया जाना चाहिए,** और **कड़ा (फलों और फूलों के बागानों पर लगाया जाता है)।**
- कर वस्तु और नकद दोनों रूपों में वसूल किए जाते थे।

- आय भूमि, सिंचाई, सीमा शुल्क, दुकान कर, नौका शुल्क, खानों, चरागाहों, और कारीगरों से लाइसेंस शुल्क के साथ-साथ कानूनी कार्यवाही के माध्यम से एकत्र किए गए।
- **अग्रनोमोई नामक एक आधिकारिक वर्ग भूमि कर एकत्र करने का प्रभारी था।**
- किसानों को सिंचित भूमि पर उच्च कर का भुगतान करना पड़ता था, जिसे उदकभाग (पानी की दर) के रूप में जाना जाता था, जिसे अक्सर उत्पादन के पांचवें से एक-तिहाई तक आंका जाता था, क्योंकि सिंचाई की आवश्यकता व्यापक रूप से समझी जाती थी।
- **सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति समाहर्ता (राजस्व का मुख्य संग्रहकर्ता) था**, जिसका कार्य खातों को रखना और सभी संभावित स्रोतों से कर एकत्र करना था।
- **इसके अतिरिक्त, दौवारिक** (महल परिचारकों के प्रमुख), **अक्षपटला**, शाही सामानों के प्रभारी और खजांची थे।

शिल्प और सामान

- **माल की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करने वाले कई शिल्पों के साथ अर्थव्यवस्था समृद्ध हुई।**
- **उत्पादों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: भव्य और सजावटी और उपयोगी या उपयोगितावादी।**
- **सबसे आम गैर-कृषि व्यवसाय कताई और बुनाई थे**, विशेष रूप से सूती कपड़े क्योंकि कपास हमेशा भारत में उपलब्ध थी।
- **लोहा, तांबा और अन्य धातुओं का उपयोग** औजार, उपकरण, बर्तन और अन्य व्यावहारिक वस्तुओं को बनाने के लिए किया जाता था।
  - आयरन स्मेल्टिंग कई वर्षों से किया जा रहा था, लेकिन 500 ईसा पूर्व से, तकनीकी प्रगति ने भट्टियों में अत्यधिक उच्च तापमान पर लोहे को पिघलाना संभव बना दिया।
- **शेष अर्थव्यवस्था लौह प्रौद्योगिकी के प्रगति के कारण महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित हुई।**
  - कुल्हाड़ियों जैसे बेहतर उपकरणों की बदौलत जंगलों को अधिक व्यापक रूप से साफ किया गया।
  - **बेहतर हल खेती के तरीकों को आगे बढ़ाने में सहायक हुए।**
- **एक अन्य प्रमुख शिल्प लकड़ी का काम था**, जिसका उपयोग घरों, गाड़ियों, रथों और जहाजों को बनाने के लिए किया जाता था। पत्थरों को तराशने और चमकाने की कला एक अत्यधिक कुशल व्यापार के रूप में विकसित हुई।
- **आभूषण, नक्काशीदार हाथी दांत, सोने और चांदी की वस्तुओं** और इत्र सहित कई प्रकार के भव्य उत्पाद बनाए जाते थे।
  - इस बात के प्रमाण हैं कि मौर्य साम्राज्य ने अन्य सामानों की एक विस्तृत श्रृंखला का निर्माण किया, जिनमें गोंद, मिट्टी के बरतन, रंग और दवाएं शामिल हैं।
- **प्रत्येक शिल्प को एक श्रेणी (श्रेणी का अर्थ; एक गिल्ड) में संगठित किया गया था** और एक **प्रमुख को पामुखा** (प्रमुख या नेता) और **एक जेठा (ज्येष्ठ या बड़े) के रूप में जाना जाता था**, ताकि शिल्प के उत्पादन में संस्थागत पहचान की अपेक्षा व्यक्तिगत पहचान को प्राथमिकता दी जा सके।
- एक **महासेठी** शहरों में शिल्प उत्पादन अच्छी तरह से चलाने हेतु जिम्मेदार था।

व्यापार

- गंगा के मैदानों में, नदियाँ माल परिवहन के महत्वपूर्ण तरीकों के रूप में कार्य करती थीं। सड़क परिवहन का उपयोग सामानों को आगे पश्चिम की ओर ले जाने के लिए किया जाता था।
- **सड़कें देश के उत्तर से विदिशा और उज्जैन जैसे शहरों से** होकर दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम में शहरों और बाजारों तक जाती थीं।
- **साम्राज्य उत्तर-पश्चिम मार्ग से मध्य और पश्चिमी एशिया से जुड़ा था।**
  - इसके अतिरिक्त, समुद्री व्यापार का ज्ञान था, और व्यापारियों ने जो लंबी यात्राएँ कीं, उनका उल्लेख बौद्ध जातक कथाओं में मिलता है।
- **व्यापार श्रीलंका, मलय द्वीपसमूह और बर्मा के साथ समुद्र के माध्यम से किया जाता था।**
  - हालाँकि, जहाज संभवत: अपेक्षाकृत छोटे थे।
- **महा-सार्थवाह के रूप में जाना जाने वाला एक नेता** आम तौर पर लंबी दूरी के थलचर व्यापार का संचालन करते समय सुरक्षा के लिए एक साथ यात्रा करने वाले व्यापारी समूहों को आदेश देता है।
- **टोल और चुंगी का भुगतान किया जाता था।**

- धोखाधड़ी को रोकने के लिए, शहरी बाजारों और शिल्पकारों पर विशेष रूप से कड़ी निगरानी रखी जाती थी और उन पर नियंत्रण किया जाता था।

वाणिज्य और उद्योग विभाग

- अध्यक्ष के रूप में जाने जाने वाले अपने कर्मचारियों के माध्यम से, इस विभाग ने अपने खुदरा और थोक मूल्य निर्धारण को नियंत्रित करते हुए सामानों की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करने का प्रयास किया।
- इसके अतिरिक्त, यह वजन और माप प्रबंधित करता है, और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का निरीक्षण करता है।

सिक्के और मुद्रा



Mauryan coin withArched hill symbol on reverse

- पूर्व-आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में, वाणिज्य के प्राथमिक साधन के रूप में मान्यता प्राप्त धन पर वस्तु विनिमय का प्रभुत्व था।
- **पूरे मौर्य साम्राज्य में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाले चांदी के सिक्के थे जिन्हें पण के नाम से जाना जाता था।**
- हालाँकि इनमें से कुछ सिक्के पिछले समय के हो सकते हैं, उत्तर भारत के कई स्थानों पर आहत सिक्के मौजूद है।

सेना

- कुशल मौर्य सेना पर सेनापति का पूर्ण अधिकार था। **वेतन का भुगतान करने के लिए नकद का उपयोग किया गया था।**
- कौटिल्य ने विभिन्न सैन्य अधिकारी पदों के वेतन का उल्लेख किया है।
- यूनानी लेखक प्लिनी के अनुसार मौर्य सेना में 60,000 पैदल सेना, 30,000 अश्वारोही, 9,000 हाथी और 8,000 रथ थे।
  - **इन चार विंगों में नौसेना और परिवहन और आपूर्ति विंग भी मौजूद थे।**
- **अध्यक्ष, जिन्हें अधीक्षक के रूप में भी जाना जाता है, का प्रत्येक विंग पर अधिकार था।**

जनगणना

- **मौर्य युग के दौरान, जनगणना अक्सर की जाती थी।**
- निवासियों को उनकी जाति और रोजगार के बारे में जानकारी के साथ स्थानीय प्रशासन द्वारा गिना जाना था।
  - इसके अतिरिक्त, प्रत्येक घर की पशु आबादी को गिना जाना था।
- **नगरपालिका के अधिकारियों ने देशी और अप्रवासी आबादी दोनों के प्रवासन की निगरानी के लिए प्रत्येक नगरपालिका में एक जनगणना की।**
- **एकत्र जानकारी को दोबारा जाँचा जाता था।** ऐसा लगता है कि जनगणना हमेशा के लिए मौर्यकालीन सरकारी संस्था रही है।

प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन

अधिकांश शाही परिवार के सदस्यों को प्रांतीय गवर्नर के पद के लिए चुना गया।

- साम्राज्य के लिए, वे कानून और व्यवस्था बनाए रखने और कर एकत्र करने के प्रभारी थे।
- **राजुक, जिनकी रैंक और जिम्मेदारियां समकालीन कलेक्टरों के बराबर हैं**, जिला प्रशासन के प्रभारी थे।
  - **उसे युक्ता या अधीनस्थ अधिकारियों से सहायता प्राप्त होती थी।**
- **ग्रामानी ग्राम प्रशासन के प्रभारी थे, और गोप**, उनके सीधे वरिष्ठ, दस या पंद्रह गाँवों के प्रभारी थे।
- **मेगस्थनीज और कौटिल्य दोनों ने नगरपालिका सरकार की प्रणाली की बात कही है।**
- अर्थशास्त्र पुस्तक में नागरिका या नगर प्रबंधक की नौकरी के लिए समर्पित एक पूरा अध्याय है। कानून व्यवस्था बनाए रखना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी।
- **मेगस्थनीज द्वारा उल्लिखित छह समितियों में** पाटलिपुत्र की सरकार की देखरेख के लिए प्रत्येक में पांच सदस्य शामिल हैं। **इन समितियों में शामिल थी:**
  - उद्योग
  - विदेशी
  - जन्म और मृत्यु का पंजीकरण
  - व्यापार
  - माल का निर्माण और बिक्री
  - बिक्री कर का संग्रह।
- राजा को दिन-प्रतिदिन की घटनाओं के बारे में सूचित करने के लिए **गुप्तचर होते थे।**
  - **संस्थान स्थिर गुप्तचर होते हैं जबकि संचारी गुप्तचर घुमक्कड़ होते हैं।**

भौतिक संस्कृति

- गंगा के मैदानों में मौर्य काल में भौतिक संस्कृति का तेजी से विकास हुआ।
- निर्माण में पक्की ईंटों और लकड़ी का उपयोग, लोहे के उपकरणों का उपयोग, लेखन का प्रचलन, पंच-मार्क सिक्के, एनबीपीडब्ल्यू सिरेमिक वस्तुएं, और रिंग कुएं गंगा बेसिन की नई भौतिक संस्कृति के विकास में योगदान दिया। .

मौर्यकाल में कला और वास्तुकला

मौर्यकाल की कला 'कला के लिए कला' नहीं है, बल्कि राजनीतिक विचारधारा और धार्मिक अभ्यास से जुड़ी कला है। यह कलात्मक गतिविधि के रूप और संरक्षण दोनों में स्पष्ट है।

- अशोक के शासनकाल से पहले, अधिकांश स्मारक लकड़ी के बने थे और नष्ट हो गए। अशोक के शासन काल से ही पत्थर का प्रयोग होने लगा।
  - अशोक के अनगिनत स्मारकों में से कुछ ही अब भी खड़े हैं। उनके महल और मठों सहित उनके अधिकांश स्तूप लुप्त हो गए हैं।
- **कला और स्थापत्य कला के बचे हुए अवशेषों में से कई मौर्य राजाओं**, विशेष रूप से अशोक के संरक्षण का प्रत्यक्ष परिणाम थे, और 'दरबारी कला' की श्रेणी में आते हैं।
  - हालांकि, यहां पत्थर की मूर्तियां और टेराकोटा मूर्तियां, अंगूठी के पत्थर और डिस्क पत्थर भी हैं, जो कि '**लोकप्रिय कला**' कहलाते हैं, जो आम लोगों के जीवन, गतिविधियों और संरक्षण से जुड़ा हुआ है।


Sarnath Capital

- **स्मारकीय पत्थर की मूर्तियां और इमारतें भी मौर्य सत्ता की महिमा को प्रदर्शित करती हैं**। रॉक-कट और स्तूप वास्तुकला ने महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की।

खंभे

- अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भ मौर्यकालीन कला का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। अशोक के शिलालेख दिल्ली, इलाहाबाद, रुम्मिंदई, सांची और सारनाथ सहित कई शहरों में खोजे गए हैं।
- शीर्ष सजावट के रूप में शेर, हाथी और बैल के सिर का प्रयोग किया गया था। सबसे प्रभावशाली सारनाथ स्तंभ है, जिसमें चार शेर अगल-बगल खड़े हैं।
- **स्तंभों के पीछे दर्शन:** राजसी मुक्त-खड़े अशोक के स्तंभ दुनिया की धुरी (धुरी मुंडी) का प्रतीक हो सकते हैं जो स्वर्ग और पृथ्वी को अलग करती है।

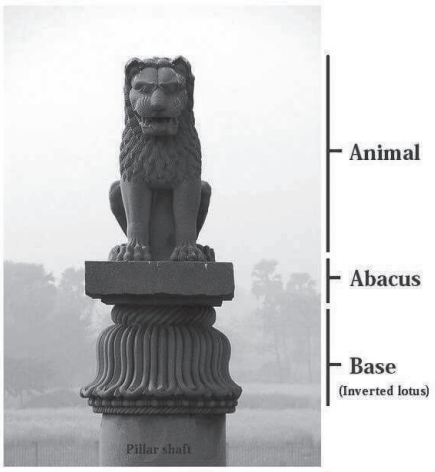


Figure: Representation of the capital above the pillar shaft

- **अशोक के स्तंभ और आकार में एक दूसरे से काफी मिलते-जुलते हैं।**
  - वे चुनार में उत्खनित बलुआ पत्थर से बने हैं। उन्हें **मोनोलिथ** कहा जाता है, यानी पत्थर के एक ही टुकड़े को तराश कर बनाया जाता है।
- स्तंभों में एक चमकदार, पॉलिश की गई सतह होती थी।
- एक बेलनाकार बोल्ट शाफ्ट के शीर्ष को 'निचले भाग' से जोड़ता है - एक उल्टे कमल के आकार में उकेरा गया एक पत्थर (जिसे अक्सर 'बेल कैपिटल' कहा जाता है)।
- इसके शीर्ष पर अबेकस (मंच) होता है जो मुकुट वाले जानवर या जानवरों को सहारा देता है।
  - **अबेकस पहले के स्तंभों में वर्गाकार और समतल है, और बाद के स्तंभों में गोलाकार और नक्काशीदार है।**
- अशोक के स्तंभों से जुड़े रूपांकनों में कई अलग-अलग भारतीय धार्मिक परंपराओं प्रतीक मौजूद है।
  - कमल और हनीसकल/पामेट जैसे पुष्प डिजाइनों के अलावा, राजधानियों में अन्य, ज्यादातर पशु, रूपांकन हैं।
- **सांची और सारनाथ ऊपर एक तीली वाला पहिया था।**
  - सांची स्तंभ के गणक में चोंच मारने वाले बत्तख हैं, जबकि सारनाथ स्तंभ के गणक में एक बैल, हाथी, घोड़ा और शेर हैं, जिन्हें पहियों द्वारा अलग किया गया है।
  - भारतीय राष्ट्र-राज्य का प्रतीक सारनाथ की राजधानी पर आधारित है।

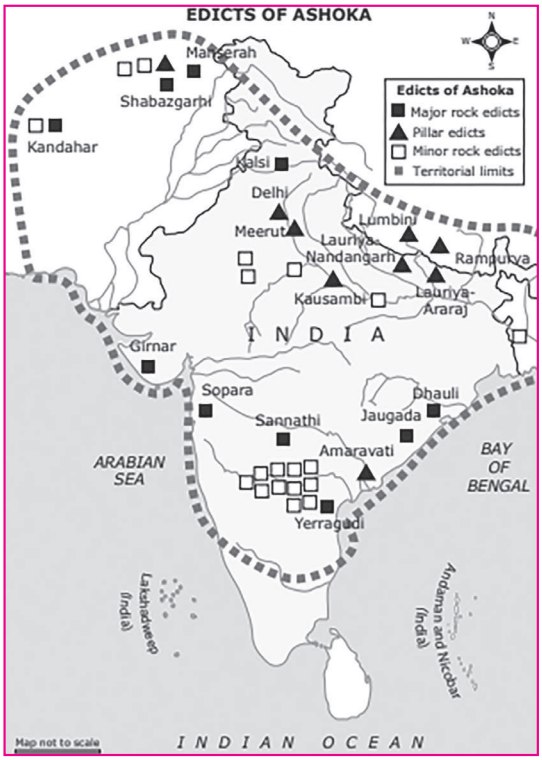
मौर्य वास्तुकला पर एकेमेनिड/फारसी वास्तुकला का प्रभाव

- चूँकि अशोक के स्तंभ शिलालेख फारसी सम्राट डेरियस के शिलालेखों के समान हैं, ऐसा माना जाता है कि एकेमेनिड / फारसी कला का भी मौर्य कला पर प्रभाव था।

- अशोक और डेरियस **दोनों के अभिलेखों में लिपी और दीपी शब्द भी पाए जाते हैं, और दोनों राजाओं के शिलालेख पहले पर स्विच करने से पहले तीसरे व्यक्ति में शुरू होते हैं।**
- **अशोक के स्तंभों और पॉलिश की गई सतहों के बीच एक और समानता उनकी पशु शीर्ष है।**

शिलालेख

- मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी का सबसे बड़ा ठोस स्रोत अशोक के शिलालेख हैं।
- कुल 33 अभिलेख हैं, जिनमें 14 प्रमुख शिलालेख हैं, जिनमें से दो को कलिंग शिलालेख, सात स्तंभ शिलालेख, कुछ छोटे शिलालेख और स्तंभ शिलालेख हैं।
- प्रमुख शिलालेख एक बड़े क्षेत्र को कवर करते हैं जो अफगानिस्तान में कंधार, उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान में शाहबाजगढ़ी और मनसेहरा से उत्तर में उत्तराखंड जिले तक, पूर्व में गुजरात और महाराष्ट्र, ओडिशा, और दक्षिण में कर्नाटक और कुरनूल जिले तक फैला हुआ है।



  - अशोक ने जिस बड़े साम्राज्य पर शासन किया, वह मूल रूप से उसके आदेशों के भौगोलिक वितरण द्वारा परिभाषित किया गया है।
- शिलालेख अशोक की न्याय, धार्मिकता और शांति के प्रति प्रतिबद्धता के साथ-साथ अपनी प्रजा के कल्याण के लिए उसकी देखभाल को दर्शाते हैं।

विगत वर्षों के प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. अशोक के प्रमुख शिलालेखों का स्थल राज्य में स्थान

धौली	ओडिशा
एरागुडी	आंध्र प्रदेश
जौगड़ा	मध्य प्रदेश
कलसी	कर्नाटक

ऊपर दिए गए कितने युग्म सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक जोड़ी (b) केवल दो जोड़े
(c) केवल तीन जोड़े (d) चारों जोड़े

2. निम्नलिखित में से किस उभारदार मूर्तिशिल्प (रिलीफ स्कल्प्चर)शिलालेख में अशोक के पत्थर के चित्र के साथ 'रण्यो अशोक' (राजा अशोक) का उल्लेख है?

(a) कंगनाहल्ली (b) सांची
(c) शाहबाजगढ़ी (d) सोहगौरा

स्तूप

- ग्रंथो के अनुसार, अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्सों को भूमि के प्रत्येक महत्वपूर्ण शहर में फिर से वितरित किया और उन पर स्तूपों के निर्माण का आदेश दिया।
- अशोक के शासनकाल ने बौद्ध स्तूप वास्तुकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - वैशाली और पिपरहवा में खुदाई से स्पष्ट है कि पुराने मिट्टी के स्तूपों का पुनर्निर्माण ईंटों से किया गया था।
- सांची एक महत्वपूर्ण स्तूप स्थल है जो निश्चित रूप से अशोक के समय का है।

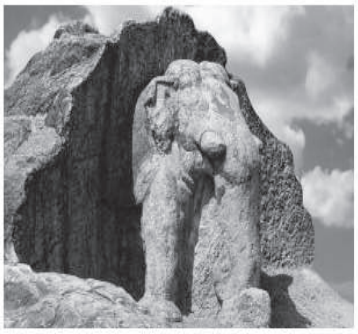
गुफा वास्तुकला

मौर्य काल में रॉक-कट वास्तुकला की शुरुआत हुई।

- बोधगया के उत्तर में बाराबर और नागार्जुनी पहाड़ियों में कई गुफाएँ हैं जो प्राचीन काल में तपस्वियों द्वारा बसाई गई थीं।
- **बाराबर पहाड़ियों में तीन गुफाओं में** अशोक के समर्पित शिलालेख हैं, **और नागार्जुनी पहाड़ियों में तीन में** उनके पुत्र दशरथ के शिलालेख हैं।



- **गुफाओं की योजना सरल है, सादे लेकिन अत्यधिक पॉलिश आंतरिक सज्जा के साथ।**
- गुफा का लंबा हिस्सा चट्टान के समानांतर है।
- **एकमात्र मूर्तिकला अलंकरण लोमश ऋषि गुफा के रूप में जानी जाने वाली गुफा के द्वार पर नक्काशी है।** द्वार लकड़ी से बनाया गया है।
  - प्रवेश द्वार के ऊपर, जिसे कला इतिहासकार एक नक्काशीदार कलश के साथ चौत्य या गवक्ष मेहराब कहते हैं।
  - ऊपरी हिस्से में एक जालीदार डिजाइन है; निचले हिस्से में हाथियों को स्तूपों की ओर बढ़ते हुए एक बारीक नक्काशीदार चित्र से दिखाया गया है।


Rock Edict of Ashoka, Dhauli, Odisha

  - लोमश ऋषि गुफा के आंतरिक भाग में दो जुड़े हुए कक्ष हैं।
- **धौली रॉक कट गुफा: धौली** में रॉक-कट हाथी ओडिशा की पहली बौद्ध मूर्तिकला है, जिसे अशोक ने 272-231 ईसा पूर्व में बनाया था, जिसमें एक नक्काशीदार हाथी पूर्व की ओर था।

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

1. भारत के कला और पुरातात्विक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से सबसे पहले किसका निर्माण किया गया था?

(*a*) भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर
(*b*) धौली में रॉक-कट हाथी
(*c*) महाबलीपुरम में रॉक-कट स्मारक
(*d*) उदयगिरि में वराह छवि

मूर्तियां

- पटना, मथुरा और अन्य स्थानों के आसपास विभिन्न स्थलों पर मानव आकृतियों की तरह दिखने वाली कई बड़ी पत्थर की मूर्तियां मिली हैं।
  - उनमें से कई यक्ष और यक्षिणी का प्रतिनिधित्व करते हैं। देवताओं की पूजा उपमहाद्वीप के कई हिस्सों में शुरुआती समय से लेकर वर्तमान तक लोकप्रिय धर्म का हिस्सा थी।
  - इनमें से अधिकांश छवियों पर शिलालेख नहीं हैं।
- पत्थर की मूर्तियों के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरणों में पटना के लोहानीपुर में पाया गया एक नग्न पुरुष का धड़ है।
  - इसे चुनार बलुआ पत्थर से उकेरा गया है और इसकी सतह पॉलिश की हुई है।
- दीदारगंज यक्षी पटना के दीदारगंज गांव में मिली थी। यह आकृति वास्तव में परिचारक प्रतीत होती है न कि यक्षी।

टेरा कोटा

- शहरी केंद्रों के विस्तार के साथ टेराकोटा कला का विकास हुआ।
- इस अवधि के टेराकोटा विषय, शैली और संभावित महत्व के मामले में काफी भिन्न हैं, लेकिन वे लोकप्रिय प्रथाओं, विश्वासों और सौंदर्यशास्त्र में एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।
- इनमें नर और मादा मूर्तियाँ, जानवर और गाड़ियाँ शामिल हैं। उनमें से कुछ खिलौने हो सकते हैं, लेकिन अन्य, विशेष रूप से कुछ महिला मूर्तियाँ, धार्मिक प्रतीकों का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं

मौर्य साम्राज्य का पतन

- **कमजोर शासक:** पहले तीन मौर्य शासकों के लंबे शासनकाल के बाद कई कमजोर शासकों ने छोटे शासन काल का अनुसरण किया। बाद के मौर्यों में से केवल एक - दशरथ - को शिलालेख जारी करने के लिए जाना जाता है।
- **साम्राज्य की विशालता:** मौर्य साम्राज्य अत्यधिक विशाल था। इसमें भारतीय उपमहाद्वीप के अलावा भारत की भौगोलिक सीमाओं से परे के क्षेत्र शामिल हैं।
  - **संचार की कमी के कारण**, इसका आकार वास्तव में ताकत के बजाय भेद्यता का स्रोत था।
  - **दूरियों के कारण, साम्राज्य** राजनीतिक एकीकरण को बनाए रखने में असमर्थ था।
- **मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए अशोक की शांतिवादी नीति को भी जिम्मेदार माना गया है।**
- जब अशोक के उत्तराधिकारी अप्रभावी और कमजोर साबित हुए, **अत्यधिक केंद्रीकृत राजशाही को नियंत्रित करना असंभव हो गया।**
  - और व्यापक संचार अंतराल के परिणामस्वरूप स्वतंत्र साम्राज्यों का उदय हुआ।
- **विदेशी आक्रमण:** अशोक की मृत्यु के बाद, राज्य आधे में विभाजित हो गया साथ ही उत्तर पश्चिमी आक्रमण हुए।
  - इंडो-यूनानी, शक और कुषाण महत्वपूर्ण जनजातियाँ थीं जिन्होंने सैन्य अभियान चलाए और भारत में शासन स्थापित किया।
- **आंतरिक विद्रोह:** अशोक की मृत्यु के बाद पहले पचास वर्षों के भीतर, मौर्य नियंत्रण हुआ और अंततः आंतरिक विद्रोह ने जन्म लिया।
  - मौर्य सेना के सेनापति पुष्यमित्र ने इस विद्रोह को लगभग 185 या 186 ईसा पूर्व में शुरू किया था, जब मगध मौर्य राजा बृहद्रथ द्वारा नियंत्रित था।

❖ ❖ ❖

10 आक्रमण युग: मध्य एशिया से संपर्क

विदेशी आक्रमणकारी

- **इंडो-ग्रीक या बैक्ट्रियन यूनानी, यूनानियों** का एक समूह, भारत पर आक्रमण करने वाला पहला समूह था। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत के दौरान उत्तर-पश्चिम भारत के एक बड़े हिस्से पर इंडो-यूनानियों का नियंत्रण था।
- **यूनानियों के बाद शक आए**। शकों की पाँच वंशावलियाँ थीं, और उनका अफगानिस्तान और भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर अधिकार था।

इंडो- यूनानी आक्रमणकारी

- बैक्ट्रिया ओक्सस नदी के दक्षिण और हिंदू कुश पहाड़ों के उत्तर-पश्चिम में स्थित क्षेत्र का प्राचीन नाम है, और आधुनिक अफगानिस्तान का उत्तरी भाग माना जाता है। बैक्ट्रिया के यूनानी मूल रूप से पश्चिम एशिया के सेल्यूसिड साम्राज्य के क्षत्रप (अधीनस्थ शासक) थे। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के मध्य में, डायोडोटस प्रथम ने सेल्यूसिडों के खिलाफ विद्रोह कर दिया और एक स्वतंत्र बैक्ट्रियन यूनानी साम्राज्य की स्थापना की।



Demetrius II

- 145 ईसा पूर्व, उन्होंने बैक्ट्रिया पर अपना अधिपत्य खो दिया, लेकिन कुछ दशकों तक उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में शासन किया।
- दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और पहली शताब्दी सीई के बीच उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ हिस्सों पर शासन करने वाले बैक्ट्रियन यूनानियों को इंडो-ग्रीक या इंडो-बैक्ट्रिया के रूप में जाना जाता है।
  - अनेक इंडो -यूनानी शासकों के नाम उनके सिक्कों से जाने जाते हैं।

मेनेंडर (165/145-130 ई.पू.)

- **मेनेंडर सबसे महत्वपूर्ण इंडो-ग्रीक शासकों में से एक थे, जिन्हें राजा मिलिंद के रूप में पहचाना जाता है, जिन्होंने** बौद्ध ग्रंथ मिलिंदपन्हो में भिक्षु नागसेन से कई प्रश्न किए हैं। मेनेंडर का शासन बैक्ट्रिया और उत्तर-पश्चिमी भारत के दोनों हिस्सों में फैला हुआ था।
- उनके सिक्के काबुल और सिंधु नदी की घाटियों से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक पाए गए हैं।
- **उसके बारे में कहा जाता है कि उसने पांचाल और मथुरा के शासकों के साथ मिलकर गंगा के क्षेत्र को बरबाद कर दिया था।**
  - हाथीगुंफा शिलालेख में वर्णित कलिंग के राजा खारवेल, उसे रोकने में समर्थ नहीं थे। मेनेंडर ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया लेकिन अपनी विजय पूरी होने से पहले भाग गया।

इंडो-यूनानियों का पतन

- हर्मियस की पार्थियन में हुई हार ने बैक्ट्रिया और हिंदू कुश के दक्षिण क्षेत्र में यूनानी शासन के अंत की शुरूआत कर दी।
  - हालाँकि, उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में इंडो-यूनानी शासन जारी रहा।
  - इस चरण के शासकों में रानी अगाथोकलिया और उसका बेटा स्ट्रैटो शामिल थे, जिनके द्वारा जारी संयुक्त सिक्के पाए गए हैं।
- शकों के साथ संघर्ष के कारण गांधार क्षेत्र पर इंडो- यूनानी शासन समाप्त हो गया।
- झेलम के पूर्वी क्षेत्र पर उनका नियंत्रण पहली शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में या पहली शताब्दी की शुरुआत में क्षत्रप शासक राजुवला के हाथों उनकी हार के साथ समाप्त हो गया।

इंडो- यूनानी शासन का प्रभाव

- सांस्कृतिक स्तर पर इंडो- यूनानी शासन का एक महत्वपूर्ण प्रभाव कला के गांधार स्कूल का जन्म था।

- **उन्होंने हेलेनिस्टिक कला और साहित्य के नए घटकों की** शुरुआत की, जैसे कि भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमांत में गांधार कला, जो पूरी तरह से यूनानी नहीं थी, बल्कि भारतीय और मध्य एशियाई दोनों के परस्पर आदान-प्रदान और प्रभाव का परिणाम थी।
  - बेसनगर स्तंभ पर हेलियोडोरस का शिलालेख इस संपर्क का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।
- **इंडो**- यूनानी सम्राटों ने **भारत में** सबसे पहले **सिक्कों** (**सोने, चांदी, तांबे और निकल**) का उत्पादन शुरू किया,जिसे किसी भी राजवंश के इतिहास से पता लगाया जा सकता है, और वे भारत में सोने के सिक्के बनाने वाले सबसे पहले शासक भी थे (जिनका प्रचलन कुषाण काल के दौरान बढ़ गया था)।
  - आश्चर्यजनक रूप से, शक, पार्थियन और क्षत्रपों द्वारा जारी सिक्कों में भारत-ग्रीक मुद्रा के मूल लक्षणों को जारी रखा गया, जैसे कि बहुभाषी और द्वि-लिपि छाप।
- इंडो-यूनानियों ने सैन्य शासन भी स्थापित किया (गवर्नरों को रणनीतिकार / क्षत्रप के रूप में जाना जाता था)।

शक या सिथो -पार्थियन

- तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में, सम्राट किन शि हुआंग द्वारा चीनी साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण ने मध्य एशिया में जनजातीय विस्थापन की एक श्रृंखला को जन्म दिया।
- दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान, महान यू ची जनजाति ने शकों को भगा दिया, जो दक्षिण की ओर अफगानिस्तान और फिर उत्तर-पश्चिमी भारत की ओर चले गए।
- सिथो- पार्थियन शासन का इतिहास मुख्यत: शिलालेखों और सिक्कों के माध्यम से मिलता है।
- तक्षशिला में मिले एक शिलालेख में मोगा नाम के एक शक राजा और उनके क्षत्रप (राज्यपाल) पटिका का उल्लेख है।
- मोगा की पहचान माउज या मोआ से की जाती है, जिसका नाम कई तांबे और चांदी के सिक्कों पर दिखाई देता है, जो कि इंडो- यूनानियों द्वारा जारी किए गए सिक्कों के समान हैं।
- **शकों को भारत में हिंदू समाज में शामिल किया गया था।**
  - उन्होंने हिंदू नामों और धार्मिक विचारों को इस हद तक अपनाना शुरू किया कि उनके सिक्कों में एक तरफ हिंदू देवताओं के चित्र होते थे।
- अपने क्षेत्रों का प्रशासन करने के लिए शकों ने क्षत्रपों या क्षत्रपों को प्रांतीय शासकों के रूप में नियुक्त किया। कई क्षत्रपों के पास महाक्षत्रप की उपाधि थी और वे प्रभावशाली स्वतंत्र राजा थे।
- रुद्रदामन सबसे प्रसिद्ध शक क्षत्रपों (130-150 ई.) में से एक थे।
  - उनकी उपलब्धियों का उल्लेख प्रसिद्ध जूनागढ़ शिलालेख (गुजरात में) में मिलता है। इस अभिलेख के अनुसार उसने सातवाहनों को युद्ध में भी पराजित किया था।
  - उनके नाम से पता चलता है कि उस समय भारतीय समाज ने उनको पूरी तरह से समावेशित कर लिया था।

कुषाण

- शकों को पार्थियन **गॉन्डोफर्नीज** द्वारा खदेड़ दिया गया था, जिन्होंने पहले काबुल (लगभग 43 ई.) पर कब्जा कर लिया था। कुषाणों ने उनसे काबुल घाटी जीत ली, लेकिन उन्होंने भारत में शकों को हरा दिया।
- शकों ने पार्थियनों के खिलाफ अपनी लड़ाई में कुषाणों (यूह-ची) से सहायता मांगी। कुजुल कडफिसेस अफगानिस्तान को जीतने वाला पहला कुषाण शासक था, उसके बाद विम कडफिसेस था।
  - दोनों राजाओं ने कुषाण साम्राज्य का विस्तार पंजाब में गांधार तक और पूर्व में उत्तर प्रदेश में गंगा-यमुना दोआब मथुरा तक किया।
- यूह-चि (चंद्र जनजाति) या टोचरियन के नाम से भी जाना जाता है, वे यू-ची जनजाति के पाँच कुलों (क्यूई-शांग) में से एक थे।
  - वे एक खानाबदोश आदिवासी लोग थे जो मूल रूप से उत्तर मध्य एशियाई मैदानों के रहने वाले थे।
- कुषाणों का प्रभाव पश्चिमी और मध्य भारत में भी हुआ, जहाँ शक क्षत्रपों ने अपने कुषाण अधिपतियों का आधिपत्य स्वीकार किया।
- कुषाण काल के सिक्कों का बंगाल और उड़ीसा में पाया जाना इस बात का संकेत नहीं है कि उनका राजनीतिक नियंत्रण पूर्व में इतनी दूर तक विस्तारित था।

कनिष्क

- कुषाण वंश कनिष्क के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था।
- माना जाता है कि उनका शासनकाल 78 और 144 ई. के बीच शुरू हुआ था। कनिष्क एक कट्टर बौद्ध थे जिन्होंने चौथे बौद्ध महासंघ या परिषद की मेजबानी की थी।
  - इस समय तक, महायान बौद्ध धर्म ने खुद को प्रमुख संप्रदाय के रूप में स्थापित कर लिया था, और कनिष्क ने बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए चीन भेजे गए अभियानों का समर्थन किया।

- कनिष्क ने अश्वघोष और वसुमित्र जैसे बौद्ध विद्वानों को संरक्षण दिया था।
  - **अश्वघोष:** एक बौद्ध विद्वान जिसने **बुद्धचरित** (बुद्ध की पवित्र जीवनी) लिखा और **सौंदर्यानन्द** (संस्कृत काव्य) की रचना की।
  - **वसुमित्र:** एक प्रख्यात दार्शनिक जिन्होंने **महाविभास** नामक बौद्ध दर्शन विश्वकोश लिखा।
  - **नागार्जुन:** उन्हें अक्सर भारतीय आइंस्टीन के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने अपने जीवनकाल के दौरान सापेक्षता के सिद्धांत को एक सूत्र, प्रज्ञा परमिता सूत्र के रूप में प्रतिपादित किया।
  - वह महायान विचारधारा और मध्यमिक (जिसे शून्यतावाद भी कहा जाता है) के प्रबल समर्थक थे, जो शून्यता (शून्यता) पर केंद्रित है।
  - **एजेसिलॉस:** एक यूनानी इंजीनियर, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसने पुरुषपुर के विशाल स्तूप के निर्माण की देखरेख की थी।
  - **मथारा:** वह अपनी असाधारण बुद्धिमत्ता के लिए जाने जाने वाले मंत्री थे।
  - **चरक:** आयुर्वेद के पिता के रूप में जाने जाते हैं, उन्होंने चिकित्सा पर एक पुस्तक चरकसंहिता लिखी।
- **दूसरी ओर, इस राजा के सिक्के (हुविष्का जैसे) भारतीय, यूनानी और पश्चिम एशियाई धार्मिक परंपराओं की एक महान विविधता से तैयार किए गए प्रतीकों को दर्शाते हैं।**
  - बुद्ध और शिव के अलावा, उनमें फारसी देवताओं जैसे अताश (एक अग्नि देवता) और मिथ्रा (एक सूर्य देवता), और **यूनानी** देवताओं जैसे हेलियोस (एक सूर्य देवता) और सेलेन (एक चंद्र देवी) शामिल है।



Kanishka



Kanishka Coin

- इस तरह के धार्मिक **प्रतीकों** को आमतौर पर राजा के व्यक्तिगत धार्मिक उदारवाद या धार्मिक 'सहिष्णुता' के उनके दृष्टिकोण को दर्शाने के रूप में लिया जाता है।
- **कनिष्क की दो राजधानियाँ थीं: पुरुषपुर** (वर्तमान पेशावर), जहाँ उसने बुद्ध के अवशेषों को संग्रहीत करने के लिए एक विशाल स्तूप का निर्माण किया। जब चीनी तीर्थयात्री फा-ह्यान ने बाद में पांचवीं शताब्दी ई. में इस क्षेत्र का दौरा किया, तो इमारत पूरी तरह से वहां मौजूद थी।
  - **दूसरी राजधानी मथुरा थी।**

कनिष्क ने मूर्तिकला के गांधार और मथुरा स्कूलों का भी समर्थन किया। मथुरा में एक योद्धा के रूप में कनिष्क की बिना सिर वाली मूर्ति पाई गई थी। उन्होंने मध्य एशिया में प्रसिद्ध रेशम मार्ग पर शासन किया।

अन्य राजा

- कनिष्क के उत्तराधिकारी वशिष्ठ, हुविष्क, कनिष्क द्वितीय और वासुदेव प्रथम थे।
- साम्राज्य का पतन वासुदेव प्रथम के समय से शुरू हुआ, लगभग दूसरी शताब्दी के मध्य में, और वासुदेव द्वितीय अंतिम कुषाण सम्राट थे।
- उत्तर-पश्चिमी भारत में कुषाण शासन ने तीसरी शताब्दी सीई की दूसरी चतुर्थक में ससानियों के लिए रास्ता बनाया।
  - हालांकि, ऐसा लगता है कि इस क्षेत्र में कुछ अवशेष चौथी शताब्दी तक बने रहे।
- कुषाणों के पतन के परिणामस्वरूप उत्तर भारत के विभिन्न भागों में कई राजाओं और गण राजतंत्रों का फिर से उदय हुआ।

मध्य एशिया के साथ संपर्कों का प्रभाव और योगदान

- व्यावहारिक रूप से सामाजिक जीवन के हर पहलू में मध्य एशियाई प्रभाव महसूस किया जा सकता है।
- **मिट्टी के बर्तन और वास्तुकला:** उन्होंने फर्श और छत के लिए टाइलों के साथ-साथ फर्श के लिए पकी हुई ईंटों का उपयोग शुरू किया।
  - लाल मिट्टी के बर्तनों की तकनीक, जो मध्य एशिया में लोकप्रिय थी, का उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप में भी किया जाता था।
  - इस काल के मिट्टी के बर्तन लाल मिट्टी के थे, सादे और पॉलिश दोनों, मध्यम से महीन चित्रकारी के साथ।
- **व्यापार और कृषि:** मध्य एशिया और भारत के बीच व्यापार दोनों क्षेत्रों के बीच व्यक्तिगत संबंधों के निर्माण के परिणामस्वरूप बढ़ा।
  - कुषाणों की आय रेशम मार्ग पर उनके व्यापक नियंत्रण के परिणामस्वरूप व्यापारियों से लिए गए करों से बढ़ गई थी।

- **सिक्का निर्माण:** इंडो -ग्रीक ने भारत में सोने के सिक्के आरंभ किए, कुषाण ही भारत में इतने बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी करने वाले पहले शासक थे।
  - तांबे के सर्वाधिक सिक्के कुषाणों द्वारा जारी किए गए थे।
- **तकनीक:** इस अवधि के दौरान कांच उत्पादन का कार्य विशेष रूप से विदेशी प्रथाओं से प्रभावित था और प्राचीन भारत में किसी भी अन्य काल में कांच उत्पादन में इतनी प्रगति नहीं हुई जितनी कि इस अवधि के दौरान हुई।
- **सैन्य ज्ञान:** शक और कुषाण, दोनों उत्कृष्ट घुड़सवार, उन्नत अश्वारोही थे और उन्होंने बड़े पैमाने पर घुड़सवारी को लोकप्रिय बनाया।
  - उन्होंने रस्सी की लगाम, काठी, और अंगूठे वाली -रकाब के उपयोग को लोकप्रिय बनाया, जिसने सवार की गति को सहायता प्रदान की। उन्होंने योद्धा की टोपी, हेलमेट और जूते भी आरंभ किए।
- **शक और कुषाणों ने** पगड़ी, अंगरखा, पतलून, भारी लंबे कोट और लंबे जूते जैसे **कपड़ों की नई डिजाइनों को लोकप्रिय बनाया, जिसे न केवल योद्धा वर्गों बल्कि समाज के विभिन्न अन्य वर्गों ने भी अपनाया।**
  - इसी दौरान भारत में चमड़े के जूते बनाने की परंपरा का उदय हुआ।
- **प्रशासनिक संगठन:** मध्य एशियाई विजेताओं ने नई प्रशासनिक शैलियों की शुरुआत की।
  - उदाहरण के लिए, इंडो-यूनानियों ने सैन्य गवर्नरों को रणनीतिकारों के रूप में नियुक्त करके सैन्य शासन की प्रथा की स्थापना की, लेकिन कुषाणों ने सरकार की 'क्षत्रप' प्रणाली की स्थापना की, जिसमें साम्राज्य को कई क्षत्रपों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक पर एक क्षत्रप का शासन था।
  - इन प्रणालियों के परिणामस्वरूप एक सामंती संगठन का निर्माण हुआ जिसमें इन मध्य एशियाई विजेताओं ने कई छोटे शासकों पर अपना नियंत्रण बनाए रखा जो उन्हें नियमित उपहार देते थे।
- **दैवीय राजत्व:** शकों और कुषाणों ने राजत्व की दैवीय उत्पत्ति में विश्वास को मजबूत किया।
- **समाज पर प्रभाव:** मध्य एशियाई आक्रमणकारियों का सबसे उल्लेखनीय पहलू यह था कि वे न केवल भारतीय सभ्यता में घुलमिल गए, बल्कि उन्होंने भारतीय संस्कृति में नए घटक भी जोड़े, इसे बहुत समृद्ध किया।
  - उन्होंने खुद को पूरी तरह से भारतीय संस्कृति से जोड़ लिया।
  - उन्होंने इन सांस्कृतिक घटकों को भारत से अपनाया क्योंकि उनकी अपनी लिपि, लिखित भाषा या संगठित धर्म नहीं था।
  - प्राचीन इतिहास के **किसी अन्य काल में विदेशी इतने बड़े पैमाने पर भारतीय समाज में समाहित नहीं हुए थे, जितने कि उत्तर** मौर्य काल में थे।
  - **क्योंकि उनमें से अधिकांश विजेता के रूप में आए, और उन्हें क्षत्रियों के रूप में आत्मसात कर लिया गया।**
- **कला और साहित्य:** स्तूपों का निर्माण और मूर्तिकला के क्षेत्रीय स्कूलों का विकास इस काल की कला और वास्तुकला के सबसे प्रमुख दो पहलू हैं।
  - **पहली बार, बुद्ध की मूर्तियों को इस समय अवधि के दौरान उकेरा गया था।** मध्य एशियाई सम्राट भारतीय कला और साहित्य के महान संरक्षक थे, और उन्होंने नए कला स्कूलों की स्थापना के लिए कड़ी मेहनत की।
  - इस समय अवधि के दौरान, मूर्तिकला के तीन महत्वपूर्ण स्कूल उभरे। ये थे: **गांधार कला** स्कूल, **मथुरा कला** स्कूल, और **अमरावती कला** स्कूल।

विशेषताएं	गांधार स्कूल	मथुरा स्कूल	अमरावती स्कूल
प्रभाव	हेलिनिस्टिक और यूनानी	स्वदेशी	स्वदेशी
उपयोग की गई सामग्री	बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियों को बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पत्थर मुख्य रूप से **नीले-भूरे रंग का** शिस्ट पत्थर था।	धब्बेदार लाल बलुआ पत्थर।	सफेद संगमरमर
विषयवस्तु	मूर्तियों का विषयवस्तु मुख्य रूप से बौद्ध है लेकिन उनकी शैली यूनानी है।	बौद्ध धर्म, जैन धर्म और हिंदू धर्म के चित्र	जातक कथाओं के रूप में मुख्यत: बौद्ध धर्म।

मानवीय तत्व	शरीर की विशिष्ट मांसपेशियों के साथ मानव आकृतियों का सुंदर चित्रण।	बिना दाढ़ी- मूंछ के और मर्दाना शरीर के साथ	
मुद्रा	बुद्ध को ग्रीकोरोमन फैशन में लिपटी एक पोशाक और बहुत घुंघराले बालों के साथ चित्रित किया गया है। आंखें आधी खुली हैं और कान बड़े हैं	इनमें से अधिकांश बैठे हुए हैं। आंखें पूरी तरह से खुली हुई हैं और कान छोटे हैं।	
बुद्ध की प्रकृति	मोटे तौर पर घुंघराले बालों के साथ आध्यात्मिक, दुबला-पतला शरीर।	प्रसन्न मुद्रा में बुद्ध प्रकृति में आध्यात्मिक नहीं	
संरक्षण	कुषाण	कुषाण	सातवाहन

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. गांधार कला में मध्य एशियाई और ग्रीको-बैक्ट्रियन तत्वों पर प्रकाश डालिए। (2019)
2. गांधार मूर्तिकला का जितना श्रेय रोमनों को है उतना ही यूनानियों को भी। व्याख्या कीजिए (2012)

- **मध्य एशियाई राजाओं ने भी संस्कृत साहित्य के विस्तार का समर्थन और सहायता की। रुद्रदामन प्रथम का जूनागढ़ शिलालेख शुद्ध संस्कृत में काव्य शैली का पहला उदाहरण है।**
  - कुषाणों ने अश्वघोष जैसे कुछ महानतम रचनात्मक लेखकों का संरक्षण किया।
  - महावास्तु और दिव्यावदान सहित कुछ सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथों की रचना हुई।
  - महायान बौद्ध धर्म के विकास के परिणामस्वरूप कई अवदान लिखे गए, जो बौद्ध संकर संस्कृत में लिखे गए और महायान संप्रदाय को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया गया।
- यवनिका के नाम से जाने जाने **वाले पर्दे की शुरुआत करके भारतीय रंगमंच के विकास में मदद की।**
  - **वात्स्यायन ने इस समय अवधि के दौरान कामसूत्र लिखा**, जो काम और प्रेम पर शुरुआती कामुक ग्रंथों में से **एक है, और यह इस अवधि के धर्मनिरपेक्ष लेखन के सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है।**

पश्चिमी भारत के शक क्षत्रप

- सिथो - पार्थियन अपने क्षत्रपों (वायसराय या अधीनस्थ शासकों) के माध्यम से शासन करते थे।
- उनमें से कुछ का कुषाण काल में पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों पर अधिकार रहा।
- पश्चिमी भारत की एक प्रारंभिक क्षत्रप शाखा का प्रतिनिधित्व मेम्बरस द्वारा किया गया था, जिसका उल्लेख पेरिप्लस में किया गया है।
- प्रारंभिक शताब्दियों ई. में, क्षत्रप शासकों की दो महत्वपूर्ण शाखाएं थीं- क्षहरात और कर्दमक।।

क्षहरात राजवंश

- क्षहरात वंश में भूमक और नहपान जैसे शासक शामिल थे। ऐसा प्रतीत होता है कि भूमक मूल रूप से कनिष्क के प्रति निष्ठावान था।
- खरोष्ठी में बनी आकृतियों के साथ उनके सिक्के, तटीय गुजरात में पाए गए हैं; कुछ मालवा और अजमेर क्षेत्र में भी पाए गए हैं।

नहपान (119-224/225 ई.)

- अपने पहले के शिलालेखों में, नहपान की उपाधि क्षत्रप है, और उसके बाद के शिलालेखों में महाक्षत्रप और राजन हैं। अपने सोने और चांदी के सिक्कों पर, वह केवल राजन की शैली में है।
- जैसा कि उनके किसी भी शिलालेख में किसी अधिपति का उल्लेख नहीं है, ऐसा लगता है कि वे कमोबेश स्वतंत्र रूप से शासन करते थे।
- नहपान के सिक्के राजस्थान के अजमेर क्षेत्र तथा महाराष्ट्र के नासिक क्षेत्र पाए गए हैं।
- अमात्य का आर्यमन नामक शिलालेख पुणे जिले के जुन्नार में पाया गया है।



Coin of Nahapana

- अपने चरमोत्कर्ष पर, इनके राज्य में मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र, उत्तरी महाराष्ट्र, और राजस्थान के कुछ हिस्से और निचली सिंधु घाटी शामिल थे।
- राजधानी मिननगरा शायद, उज्जैन और भरूच के बीच स्थित थी।
- हालांकि, 224/225 ई. में या उसके तुरंत बाद, सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सतकर्णी ने नहपान को मार डाला एवं क्षहरात साम्राज्य के दक्षिणी प्रदेशों को जीत लिया।

कर्दमक

- इस वंश के संस्थापक चष्टन थे। उसे अपने पहले के सिक्कों पर क्षत्रप और बाद के सिक्कों पर महाक्षत्रप उपाधि दी गई है, राजन की अतिरिक्त उपाधि जीवन भर बनी रही।
- चष्टन ने मूल रूप से कुषाणों के अधीनस्थ के रूप में सिंध क्षेत्र में शासन किया।
- कर्दमकों में वरिष्ठ और कनिष्ठ शासकों की प्रथा थी, जिनके पास क्रमशः महाक्षत्रप और क्षत्रप की उपाधियाँ थीं।
- 130-31 ई. के कुछ समय बाद रुद्रदामन प्रथम द्वारा चष्टन को महाक्षत्रप के रूप में उत्तराधिकारी बनाया गया।
- ये दोनों शासक नहपान से गौतमीपुत्र सातकर्णी द्वारा जीते गए कुछ क्षेत्रों को वापस जीतने में सफल रहे।
- कर्दमक शासक रुद्रदामन प्रथम को उसके सिक्कों से जाना जाता है, लेकिन उससे अधिक उसके शक वर्ष 72, यानी 150-51 ई. में दिनांकित जूनागढ़ शिलालेख से।
- यह शिलालेख मालवा, सौराष्ट्र, गुजरात, उत्तरी कोंकण और नर्मदा पर महेश्वर क्षेत्र सहित क्षेत्रों पर उसकी व्यापक विजय को दर्शाता है।
- इसमें कहा गया है कि उसने दो बार दक्षिणापथ के सतकर्णी को हराया, लेकिन उसे नष्ट नहीं किया क्योंकि वह एक करीबी संबंधी था।
- अंतिम क्षत्रप शासक विश्वसेन थे, जो निश्चित रूप से चष्टन वंश से संबंधित थे, जिन्होंने तीसरी शताब्दी ई. के अंत में शासन किया था।

❖ ❖ ❖

11 मौर्यों के बाद का भारत

- 200 से 300 ईस्वी का समय काल कई दृष्टिकोणों से ऐतिहासिक रहा। उत्तर भारत में, उत्तर-पश्चिम से कई आक्रमणों के कारण मगध क्षेत्र से दूर राजनीतिक शक्ति का ध्यान पश्चिम की ओर चला गया। दक्कन और सुदूर दक्षिण ने भी राज्य की राजनीति और समाज में परिवर्तन का अनुभव किया।

शुंग

- हर्षचरित के अनुसार, मौर्य सेना के कमांडर-इन-चीफ पुष्यमित्र ने मौर्य राजा बृहद्रथ की हत्या कर दी। इस तख्तापलट ने 187 ईसा पूर्व में मौर्य शासन का अंत कर दिया।
- कालिदास के मालविकाग्निमित्र ने पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र का वर्णन बैंबिका कुल (परिवार/वंश) और कश्यप गोत्र के रूप में किया है।
- **पुष्यमित्र का साम्राज्य पूर्ववर्ती मौर्य साम्राज्य के केवल एक हिस्से तक फैला हुआ था।**
  - इसमें पाटलिपुत्र (जो अभी भी राजधानी थी), अयोध्या और विदिशा शामिल थे।
  - दिव्यावदान और तारानाथ के विवरण के अनुसार, इसमें पंजाब में जालंधर और शाकल भी शामिल थे।



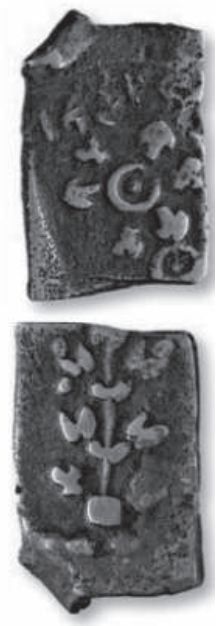
- पुष्यमित्र ने अपने साम्राज्य के कम से कम कुछ हिस्सों में वाइसराय नियुक्त किए। मालविकाग्निमित्र में, अग्निमित्र विदिशा में वाइसराय हैं।
- **पुष्यमित्र शुंग प्रख्यात वैयाकरण पतंजलि के समकालीन थे,** जिन्होंने महाभाष्य लिखा था।
- शुंगों का बैक्ट्रियन यूनानियों से भी संघर्ष हुआ।
- **यूनानी सेना पाटलिपुत्र तक बढ़ी और कुछ समय के लिए उस पर कब्जा कर लिया।**
  - फिर भी पुष्यमित्र खोए हुए क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने में सक्षम था। इसके अलावा, उसने कलिंग के खारवेल के साथ युद्ध किया, जिसने उत्तरी भारत पर कब्जा कर लिया था।
- पुष्यमित्र ने उत्साह के साथ ब्राह्मणवाद को अपनाया।
- **उनके द्वारा दो अश्वमेघ यज्ञ किए गए थे।**
  - उन्हें बौद्ध साहित्य में बौद्ध उत्पीड़क के रूप में जाना जाता है।
- हालाँकि, यह निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं कि पुष्यमित्र ने बौद्ध कला का समर्थन किया था।
- भरहुत और सांची में बौद्ध स्मारकों को उनके शासन के दौरान अद्यतन और पर्याप्त रूप से उन्नत किया गया था।
- **जब पुष्यमित्र की मृत्यु हुई तो उसका पुत्र अग्निमित्र शासक बना।**
- **अंतिम शुंग सम्राट देवभूति की हत्या** कण्व वंश के शासक वासुदेव कण्व ने की थी, जो उनके मंत्री भी थे।
- **कण्व वंश ने 45 वर्षों तक शासन किया।** गुप्त वंश की स्थापना से पहले कण्वों के पतन के बाद मगध का इतिहास पूरी तरह से कोरा हो गया था।

शुंगों का योगदान

- शुंगों का शासन महत्वपूर्ण था क्योंकि उन्होंने बाहरी आक्रमणों से गंगा घाटी की रक्षा की थी।
- शुंगों ने संस्कृति की दृष्टि से अश्वबलि और ब्राह्मणवाद को पुनर्जीवित किया।
- इसके अतिरिक्त, उन्होंने वैष्णववाद और संस्कृत के विस्तार का समर्थन किया।
- कुछ शिक्षाविदों के अनुसार, अंतिम कण्व सम्राट सुशर्मन को सिमुक के सातवाहन वंश के उत्तराधिकारी द्वारा अपदस्थ किया गया था। उसी समय, लगभग 200 ईसा पूर्व, मध्य एशिया और पश्चिमी चीन के लोगों के कई समूहों ने आक्रमण किया।

दक्कन में सातवाहन साम्राज्य

- उत्तर में शुंगों और कण्वों ने मौर्यों का स्थान लिया।
- हालाँकि, लगभग 100 वर्षों के बाद, सातवाहनों ने मौर्यों को पूरे दक्कन और मध्य भारत में विस्थापित कर दिया।
- सातवाहनों को पुराणों के 'आंध्र' भी कहा गया है।
- **हालाँकि, सातवाहन शिलालेखों में न तो आंध्र शब्द और न ही सातवाहन मौजूद हैं, और न ही पुराणों में सातवाहनों का उल्लेख है।**
- औरंगाबाद क्षेत्र में गोदावरी पर प्रतिष्ठान (आधुनिक पैठण) में अपनी राजधानी के साथ, कुछ पुराणों के अनुसार, आंध्र ने 300 वर्षों तक शासन किया।
- सबसे पहला सातवाहन शिलालेख पहली शताब्दी ईसा पूर्व का है, जब उन्होंने कण्वों से युद्ध किया और मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया।



Copper coins of Satakarni I

- सातवाहनों ने ब्राह्मण वंश का दावा किया और कृष्ण और वासुदेव जैसे देवताओं की पूजा की, जैसा कि नागनिका (पहली शताब्दी ईसा पूर्व) के नाना घाट गुफा शिलालेख से स्पष्ट है, जिसमें सतकर्णी प्रथम द्वारा किए गए अपार बलिदानों का उल्लेख है।
- इस वंश के राजाओं की एक और उल्लेखनीय विशेषता गौतमीपुत्र और वशिष्ठिपुत्र जैसे मातृभाषाओं का उपयोग था। इस तथ्य के बावजूद कि वे किसी भी तरह से मातृवंशीय या मातृसत्तात्मक नहीं थे।
  - सातवाहनों ने दक्षिणपथपति (दक्षिणापथ के भगवान) की उपाधि का प्रयोग किया।
- सातवाहनों को ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को भूमि के शाही अनुदान देने की प्रथा को आगे बढ़ाने का श्रेय दिया जाता है, विशेष रूप से वे जो कर छूट से संबंधित हैं।

सातवाहनों का राजनीतिक इतिहास

- सिमुक ने सातवाहन वंश की स्थापना की। कृष्ण ने उनकी जगह ली और पश्चिम में नासिक तक राज्य का विस्तार किया।
- श्री सातकर्णी तीसरे राजा थे। उसने पश्चिमी मालवा और बरार पर अधिकार कर लिया। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ भी कराये।

- हाल सातवाहन वंश का सोलहवाँ राजा था।
  - वह पांच साल तक सत्ता में रहे।
  - यह अपने उपन्यास गाथासप्तसती के लिए प्रसिद्ध हुए, जिसे सत्तसई भी कहा जाता है। प्राकृत भाषा में इसमें 700 श्लोक हैं।
- सातवाहन साम्राज्य अंततः आधुनिक आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र तक फैला; कभी-कभी इसमें उत्तरी कर्नाटक, पूर्वी और दक्षिणी मध्य प्रदेश और सौराष्ट्र भी शामिल थे।

गौतमीपुत्र सातकर्णी

- गौतमीपुत्र सातकर्णी सातवाहन वंश के सबसे शक्तिशाली सम्राट थे।



Image of Satavahana King Gautami Putra Satakami

- **उन्होंने 106 से 130 ईस्वी तक 24 वर्षों तक शासन किया।**
- उनकी मां, गौतमी बालाश्री ने नासिक शिलालेख में उनकी उपलब्धियों का वर्णन किया।
- **गौतमीपुत्र सातकर्णी ने पूरे दक्खन को जीत लिया** और अपने प्रभुत्व का विस्तार किया।
- **मालवा के नरेश नागपण पर उसकी विजय शानदार थी।**
- वह कार्ले में बौद्ध भिक्षुओं, महासांघिकों को दान देता है।
- उन्होंने राजराजा और महाराजा की उपाधि धारण की।
- नासिक शिलालेख में, उन्हें एकब्राह्मण (एक अद्वितीय ब्राह्मण) और खटिया-दापमनमदा (क्षत्रियों के अहंकार और गर्व को ध्वस्त करने वाला) के रूप में भी जाना जाता है।

वशिष्ठिपुत्र पुलुमावी (130-154 ई)

- वशिष्ठपुत्र पुलुमावी ने अपने पिता गौतमीपुत्र सातकर्णी का उत्तराधिकारी बना।
- उसने सातवाहन शक्ति का विस्तार कृष्णा नदी के मुहाने तक फैला दिया।
- उसने जहाजों की छवि वाले सिक्के जारी किए।
- वे सातवाहन के नौसैनिक वर्चस्व और समुद्री व्यापार को प्रकट करते हैं।
- यज्ञश्री सातकर्णी सातवाहनों के अंतिम महान सम्राट थे।

प्रशासन

- सातवाहन राजा को धर्म के रक्षक के रूप में चित्रित किया गया था, जो धर्मशास्त्रों में उल्लिखित शाही आदर्शों के लिए प्रयासरत रहा था।
- अधिकांश शासकों को राम, अर्जुन, भीम आदि जैसे पौराणिक नायकों की अलौकिक शक्तियों और विशेषताओं के रूप में वर्णित किया गया था, ताकि राजत्व को देवत्व से जोड़ा जा सके।
- राज्य को अहार या राष्ट्र में विभाजित किया गया था, जिसका अर्थ था जिला।
- अमात्य/महामात्र भी थे, जो संभवतः राजा के मंत्री या सलाहकार थे।
- हालाँकि, मौर्य काल के विपरीत, सातवाहन सरकार में महत्वपूर्ण सैन्य और सामंती विशेषताओं का पता लगाया जा सकता है।
  - उदाहरण के लिए, सेनापति को प्रांत का गवर्नर नामित किया गया था।
- एक ग्राम (गाँव) शासन का सबसे निचला स्तर था, और इसका नेतृत्व एक गौल्मिका (गाँव का मुखिया) करता था।

आय

- **राजस्व नकद और वस्तु दोनों रूपों में एकत्र किया जाता था।**
- धार्मिक योग्यता हासिल करने के लिए बौद्धों और ब्राह्मणों को कर-मुक्त भूमि अनुदान देने वाले भारतीय इतिहास में सातवाहन राजा पहले थे।
- यह प्रथा बाद के काल में और अधिक प्रमुख हो गई।

वास्तुकला

- सातवाहन काल के दौरान उत्तर-पश्चिमी डेक्कन या महाराष्ट्र में ठोस चट्टान से कई चैत्य (पवित्र मंदिर) और विहार (मठ) अद्भुत सटीकता और शिल्प कौशल के साथ गढ़े गए थे।
- इस युग का प्रतिनिधित्व पश्चिमी दक्कन में कार्ल चैत्य द्वारा किया जाता है।
- इस अवधि का एक और उल्लेखनीय वास्तुशिल्प मील का पत्थर नहपान और गौतमीपुत्र सातकर्णी के नासिक शिलालेख हैं, जो तीन विहारों की दीवारों पर हैं।

- **सातवाहनों की राजभाषा प्राकृत थी,** लेकिन लिपि ब्राह्मी थी।



आर्थिक स्थिति

- कुषाणों के सोने के सिक्कों के विपरीत, उन्होंने बड़े पैमाने पर तांबे और कांस्य के सिक्कों के साथ सीसे के सिक्के (जो वे निस्संदेह रोमनों से आयात किए थे) जारी किए।
- **दक्कन ने एक अत्यधिक विकसित ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकसित की।**
- लोग धान की रोपाई से अच्छी तरह वाकिफ थे, और कृष्णा और गोदावरी नदियों के संगम पर भूमि का एक विशाल चावल क्षेत्र बनाया।
- कई जगह यह **कपास उत्पादक क्षेत्र के लिए भी प्रसिद्ध था।**
- बढ़ते व्यापार और वाणिज्य के परिणामस्वरूप **व्यापारियों और कारीगरों ने एक महत्वपूर्ण सामाजिक स्तर विकसित किया।**
- **व्यापारियों का नाम आमतौर पर उन समुदायों के नाम पर रखा गया जिनसे वे संबंधित थे।** कारीगरों और व्यापारियों दोनों ने बौद्ध धर्म के लिए उदारता से योगदान दिया।

तीसरी शताब्दी के मध्य में सातवाहन वंश का अंत हो गया और कई शक्तियों ने उनकी जगह ले ली: दक्कन में वाकाटक, मैसूर में कदंब, महाराष्ट्र में अभीर और आंध्र में इक्ष्वाकु प्रमुख शासकों के रूप में उभरे।

❖ ❖ ❖

12 दक्षिण भारत का प्रारंभिक इतिहास

दक्षिण भारत में प्रारंभिक ऐतिहासिक काल का आगमन आमतौर पर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ है। तमिल के शुरुआती राज्य- तिरुपति पहाड़ियों (वेंगदम) और प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर के बीच समृद्ध कृषि क्षमता से युक्त चावल उगाने वाले क्षेत्रों के रूप में पहचाने गए।

- **निचली कावेरी घाटी में चोलों की रियासत** मोटे तौर पर आधुनिक तंजौर और त्रिचिनोपोली जिलों के बीच थी। इसकी राजधानी उरैयूर थी।
  - **प्रमुख चोल बंदरगाह पुहार था** (जिसे कावेरीपुमपट्टिनम के नाम से भी जाना जाता है), प्रमुख पांड्या बंदरगाह कोरकाई था, जबकि टोंडी और मुचिरी चेर साम्राज्य में महत्वपूर्ण बंदरगाह थे।
- ताम्रपर्णी और वैगई की घाटियों में **पांड्यों का राज्य मोटे तौर पर आधुनिक तिरुनेलवेली, मदुरै, रामनाद जिलों और दक्षिण त्रावणकोर के बीच में फैली थी। मदुरै इसकी राजधानी थी।**
- **केरल तट पर चेरों की राजधानी करुवुर थी,** जिसे वंजी के नाम से भी जाना जाता है।
  - इन सभी क्षेत्रों ने उस समय के फलते-फूलते व्यापार में भाग लिया।
- **चेर, चोल और पांड्य राजा वेंडर (ताज पहनाए गए राजा) थे।**
  - इन महान राजाओं के पास राजसत्ता का अपना विशेष प्रतीक चिन्ह था जैसे डंडा, ढोल और छत्र।
  - **उनके पास शक्ति के विशिष्ट प्रतीक भी थे- बाघ, धनुष और मछली** क्रमशः चोलों, चेरों और पांड्यों के प्रतीक थे।

उस समय के राजनीतिक इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्रोत प्रशंसनीय कविताएँ हैं, जो अक्सर शासकों की उपलब्धियों और गुणों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करती हैं। तमिल-ब्राह्मी शिलालेख ग्रंथों में वर्णित कुछ शासकों की ऐतिहासिकता और समय काल की पुष्टि करते हैं।

राजनीतिक इतिहास

- संगम काल के दौरान, चेर, चोल और पांड्या साम्राज्यों ने तमिल राष्ट्र पर शासन किया।

चेर

- **समकालीन केरल के कुछ हिस्सों पर चेरों का शासन था। उनके प्रमुख बंदरगाह टोंडी और मुसिरी थे, जबकि वंजी उनकी राजधानी थी।**
  - वे ताड़ के फूलों की बनी माला पहनते थे।
- **पुगलुर शिलालेख में चेर राजाओं** की तीन पीढ़ियों का उल्लेख है
  - **पदिररुपट्टु में चेर राजाओं के बारे में भी विवरण मिलता है।**
- **उदयनजेरल पहले ज्ञात चेर राजा हैं।**
- **उसका पुत्र नेदुन्जेरल अदन था,** जिसका वर्णन सात मुकुटधारी राजाओं को पराजित करने और अधिराज के पद को धारण करने के रूप में किया गया था।
  - **काव्यात्मक अतिशयोक्ति उन्हें हिमालय के पहाड़ों तक अपनी विजय का विस्तार करने** और उन पर चेर धनुष प्रतीक को उकेरने का श्रेय देती है।
- **माना जाता है कि नेदुनजेरल अदन के छोटे भाई कुटटुवन ने कोंग** यू पर विजय प्राप्त की और चेरों की शक्ति को पूर्वी और पश्चिमी महासागरों तक बढ़ाया।
- **अदन के पुत्रों में से एक को अधिराज के रूप में वर्णित किया गया है जिसने सात मुकुटों की माला पहनी थी।**
  - उन्होंने तगादुर के सरदार अंजी के खिलाफ सैन्य सफलता हासिल की, और नन्नन नामक एक शासक के खिलाफ एक अभियान का नेतृत्व किया।
- **चेरन सेनगुत्तुवन अदन के पुत्र थे।**
  - उसने मोकुर सरदार के विरुद्ध युद्ध जीता।
  - **शिलप्पादिकारम के अनुसार इसने नन्नन** की भूमि में वियालुर पर हमला किया और कोंगु देश में कोडुकुर किले पर कब्जा कर लिया।

- दूसरी शताब्दी ईस्वी जब चेरन सेनगुत्तुवन थे।
  - **शिलप्पादिकारम के लेखक, एलंगो आदिगल, उनके छोटे भाई थे।**
  - तमिलनाडु में, सेनगटटुवन ने आदर्श पत्नी के रूप में कन्नगी की पूजा को लोकप्रिय बनाया।
  - हिमालय यात्रा के दौरान, वह कन्नगी की मूर्ति के लिए वहां से पत्थर लाया।
- **संगम कविताओं में वर्णित अंतिम चेर राजाओं में से एक कुडाक्को इलंजेरल इरुम्पोराय हैं।** कहा जाता है कि उन्होंने चोलों और पांड्यों के खिलाफ युद्ध लड़े और विजयी हुए।
- **समुद्री डकैती को समाप्त करने के अलावा,** चेंगुत्तुवन को कई सरदारों को हराने और महत्वपूर्ण बंदरगाह मुसिरी की सुरक्षा सुनिश्चित करने का श्रेय दिया जाता है।



- हालाँकि, महान चेंगुत्तुवन जिसका उल्लेख सिलपादिकारम में है, का उल्लेख संगम कविताओं में नहीं है।
- **अन्य उल्लेखनीय चेर शासकों में से कुछ चेंगुत्तुवन और इमायावरम्बन नेदुंचेरलथन थे।**
- कुछ चेरों ने रोमन सिक्के के समान तमिल-ब्राह्मी किंवदंतियों के साथ सीसे और तांबे के सिक्कों का निर्माण किया।
- धनुष और बाण के प्रतीक चिन्ह के साथ कई अन्य चेर सिक्के हैं लेकिन शिलालेख का अभाव नहीं है।

चोल

- वर्तमान के तिरुचि जिले से लेकर दक्षिणी आंध्र प्रदेश तक, संगम काल का चोल राज्य फैला हुआ था।
  - उनके शासन का मुख्य क्षेत्र कावेरी डेल्टा था, जिसे बाद में चोलमंडलम के नाम से जाना गया।
- पुहार **जाने से पहले उनकी राजधानी कभी उरैयूर में स्थित थी।**
- **एक प्रसिद्ध संगम चोल शासक करिकाल था।**
- **पटटुपट्टू की एक कविता में बताया गया है** कि कैसे उसे अपने शासनकाल के आरंभ में अपदस्थ कर दिया गया और कैद कर लिया गया, लेकिन वह भागने और खुद को राजा के रूप में फिर से स्थापित करने में सफल रहा।
- **लड़ाई में पांड्यों, चेरों** और उनके सहयोगियों **सहित एक संघ को पराजित करने का श्रेय दिया जाता है।**
  - कारिकाल को वैहैपरंदलाई में एक और बड़ी जीत का श्रेय दिया जाता है।
- **उसके शासन काल में व्यापार और वाणिज्य फल-फूल रहा था।**
- वह वन भूमि को पुनः प्राप्त करने, उन्हें खेती के लायक बनाने और आबादी में समृद्धि लाने के रूप में जाने गए।
  - उन्होंने कल्लानाई के अलावा अतिरिक्त सिंचाई टैंक भी बनवाए, जो कावेरी नदी तक फैले हुए हैं।

तोंडाइमान इलैंडिरैयन

- **कविताओं में उल्लिखित एक अन्य महत्वपूर्ण चोल शासक तोंडाइमान इलैंडिरैयन हैं।**
- उन्होंने एक स्वतंत्र शासक के रूप में या करिकाल के अधीनस्थ के रूप में कांची से शासन किया।
  - **वह एक कवि थे। उनके चार गीतों में से** एक इस बात पर जोर देता है कि एक राजा का व्यक्तिगत चरित्र उसके लिए अच्छे शासन के लिए महत्वपूर्ण था।

बाद के समय में, चोल साम्राज्य को सिंहासन के लिए दो दावेदारों- नालनगिल्ली और नेदुंगिल्ली के बीच एक लंबे और कड़वे युद्ध ने झकझोर कर रख दिया।

पांड्य

- आधुनिक समय का दक्षिणी तमिलनाडु पांड्य प्रभुत्व के अधीन था।
  - मदुरै ने उनकी राजधानी के रूप में कार्य किया।
- **उनके सिक्कों में एक तरफ मछली और दूसरी तरफ हाथी होता है।**
  - उन्होंने दक्षिणी केरल में कब्जा कर **कोट्टायम के करीब स्थित नेलकिंडा बंदरगाह पर अपना आधिपत्य स्थापित किया।**
- **उन्होंने तमिल संगमों का समर्थन किया और संगम कविताओं को संकलित करने में मदद की।**
- नेदियॉन, पल्यागसलाई मुदुकुडुमी पेरुवलुधि, और मुदथिरुमारन प्रसिद्ध पांड्य राजा थे।

- **दो नेदुनचेलियन थे।**
- **पहले को आर्यप्पादई कदंथा नेदुनचेलियन,** या "आर्य सेना को हराने वाले" के रूप में संदर्भित किया गया था।
  - वह कोवलन के वध का प्रभारी था, जिसके लिए कन्नगी ने मदुरै में आग लगा दी थी।
  - **दूसरा नेदुनचेलियन था, जिसे तलैयालंगनट्टू चेरुवेनरा** (वह जिसने तलैयालंगानम की लड़ाई जीती थी) के नाम से भी जाना जाता था।
- पांड्य साम्राज्य की सामाजिक आर्थिक स्थिति, विशेष रूप से कोरकई के संपन्न बंदरगाह, मंगुडी मारुथनार के काम मदुरैक्कांजी में वर्णित है।
- **उग्गीरा पेरुवलुधि अंतिम प्रसिद्ध पांड्य राजा थे।**
- कालभ्रा आक्रमण के कारण, पांड्य शासन का पतन शुरू हो गया था।

छोटे सरदार

- संगम काल में छोटे सरदार महत्वपूर्ण थे। उनके परोपकार और तमिल कवियों के समर्थन के लिए, उनमें से, परी, कारी, ओरी, नल्ली, पेगन, अय और आदियमन ने प्रसिद्धि हासिल की।
- परिणामस्वरूप उन्हें कदई येलु वल्लालगल के नाम से जाना जाने लगा।
  - चेर, चोल और पांड्य राजाओं के अधिकार में होने के बावजूद, वे अपने-अपने क्षेत्र में मजबूत और लोकप्रिय थे।

संगम साहित्य

- **ये संगम युग साहित्य की प्रशंसनीय कविताएँ हैं, जिन्हें प्रारंभिक शास्त्रीय तमिल साहित्य के रूप में भी जाना जाता है, इस युग के राजनीतिक इतिहास पर प्राथमिक जानकारी के भी स्रोत हैं।**
  - संगम युग दक्षिण भारत के प्रारंभिक इतिहास में उस समय को संदर्भित करता है जब कई कवियों ने भारी मात्रा में तमिल कविताएँ लिखीं।
  - तमिल कवियों की एक सभा या "एक साथ आने" को संगम कहा जाता है।
- **परंपरा के अनुसार, मदुरै के पांड्य राजाओं ने** विभिन्न स्थानों पर एक के बाद एक तीन संगमों या सभाओं के आयोजन का समर्थन किया।
- **संगम कविता एक तमिल प्रणाली की सामान्य जानकारी उपलब्ध कराने में प्रमुख भूमिका अदा करती है।**
  - संगम साहित्य आम तौर पर धर्मनिरपेक्ष था और इसमें विषयों और लेखकों की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद है ।
- **संगम कोष में पटटुपट्टू (दस गाने) के दस पट्टों (गीतों) में से नौ और एटटुटोकाई (आठ संग्रह) से कविता के आठ संकलनों में से छह शामिल हैं।**
  - कविताओं की साहित्यिक शैली और कुछ ऐतिहासिक संकेतों का अर्थ है कि यह साहित्य तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व और तीसरी शताब्दी के बीच लिखा गया था।
- **आठवीं शताब्दी के मध्य उन्हें संकलनों में जोड़ा गया था,** और फिर उन्हें एट्टुटोकई और पटटुपट्टू में संकलित किया गया था, जो कि सुपरंथोलॉजी (संग्रहों के संकलन) हैं।
- **इस संग्रह में कुल 2381 कविताएँ हैं, जिसके लिए 473 लेखकों के योगदान को स्थान मिला है। इनमें से 30 महिला कवियित्री थीं,** यह बेहद महत्त्वपूर्ण है।
  - **महिला कवियों ने 150 से अधिक कविताओं की रचना की।** इनमें से सबसे प्रमुख और प्रतिभाशाली अव्वयार था।
  - अन्य में अल्लुर ननमुल्लैयार, काक्किपदिनियार, कवारपेंदु, नलवेलियार, ओक्कुर मसाथियार और पारिमकलिर शामिल हैं।

संगम का युग

संगम	अध्यक्ष	स्थान	विशेषता
पहला	अगस्त्य	मदुरै	अस्तित्व नहीं बचा
दूसरा	अगस्त्य	कपाटपुरम	केवल तोल्कापियार द्वारा रचित तोल्काप्पियम (तमिल व्याकरण) का अस्तित्व बचा है।
तीसरा	नक्कीरार	मदुरै	संगम साहित्य की संपूर्णता जो वर्तमान में अस्तित्व में है।

- **इन कविताओं के अलावा, तोल्काप्पियम के पहले दो खंड-तमिल व्याकरण और काव्यशास्त्र में तोल्कापियार की एक रचना**-संगम साहित्य के कोष में शामिल हैं।
  - तमिल व्याकरण पर पहली ज्ञात कृति अगत्तियम का भी उल्लेख किया गया है।
  - इसे अगथियार द्वारा लिखा गया था।
  - **हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, ऋषि अगथियार ने तमिल भाषा और इसके व्याकरण को भगवान शिव से तमिल लोगों को सौंपा।**
  - तोल्काप्पियम के लेखक तोल्कापियार अगथियार के शिष्य माने जाते हैं।

- **अकम (प्रेम) और पुरम** (ज्यादातर लड़ाई पर आधारित लेकिन सार्वजनिक कविता जैसे अच्छे और बुरे, समाज और साम्राज्य पर कविताएं) के दो व्यापक विषय संगम साहित्य में कविताओं के विषय थे।
  - **तमिल के आधुनिक समाज और संस्कृति का यथार्थवादी चित्रण, साथ ही उत्तरी (आर्यन) सभ्यता के साथ इसके शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण संबंध, संगम साहित्य का एक आकर्षक पहलू है।**
- **संगम साहित्य की कथात्मक और उपदेशात्मक कृतियों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।**
  - **मेलकनक्कू** (18 प्रमुख कृतियाँ) के रूप में जानी जाने वाली कथात्मक रचनाएँ वीर काव्य हैं जिनमें नायकों का उत्थान किया जाता है और निरंतर युद्धों और पशुधन छापे को अक्सर संदर्भित किया जाता है।
  - **वे आठ संकलनों और दस मुहावरों में विभाजित हैं।**
  - निर्देशात्मक अंशों का शीर्षक किलकानक्कू (18 माइनर वर्क्स) है।
- **कई तमिल उपदेशात्मक कार्य, जैसे कि तिरुवल्लुवर द्वारा तिरुक्कुरल, जो नैतिकता, दर्शन, राजनीति और प्रेम की चर्चा के लिए प्रसिद्ध है को तमिलनाडु का पाँचवाँ वेद माना जाता है।**
- **तमिल महाकाव्य जैसे सिलप्पादिकारम,** जिसे प्रारंभिक तमिल साहित्य का सबसे अच्छा उदाहरण माना जाता है और कोवलन की कहानी कहता है , जो कावेरीपट्टनम की माधवी नाम की एक वेश्या को अपनी कुलीन विवाहित पत्नी के लिए पसंद करता है।

संगम काल का प्रशासन

- **संगम काल में शासन का स्वरूप वंशानुगत राजतंत्र था।**
- सम्राट ने शाही दरबार, या अवाई, उनके मंत्री और दरबारी कवि की सलाह पर भी ध्यान दिया था।
- चोल राजाओं के नाम सन्नी, वलवन और किल्ली थे, पांड्य राजाओं के नाम थेन्नावर थे, और चेरा राजाओं के नाम वनवरम्बन, वनवन, कुट्टुवन, इरुम्पोराय और विलावर थे।
  - पांड्यों के लिए मछली, चोलों के लिए बाघ और चेरों के लिए धनुष संगम राजवंशों में उनके संबंधित शाही प्रतीक के रूप में काम करते थे।
  - कई प्रमुखों और सरकार के प्रतिनिधियों ने शाही दरबार, या अवाई का दौरा किया।
- पाँच परिषदों में संगठित अधिकारियों के एक बड़े समूह ने राजा की सहायता की।
- वे दूत (थुथर), मंत्री (अमाइचर), पुजारी (अंथनार), सैन्य नेता (सेनापति), और जासूस (ओरार) थे।
  - संगम युग के दौरान, सैन्य प्रशासन समान रूप से सुव्यवस्थित था। प्रत्येक राजा या रानी की एक नियमित सेना और एक कोडीमारम (संरक्षक वृक्ष) होता था।
- **शासकों के तीन स्तर हैं : किजर, वेलिर और वेंडर।**
  - गाँवों या नाडु के नाम से जाने जाने वाले एक छोटे से क्षेत्र के नेताओं को किजर के नाम से जाना जाता था।
- **वे आदिवासी समूहों पर शासन करते थे जो विशेष क्षेत्रों में बस गए थे।** वेंडर वे शासक थे जो विशाल, उत्पादक भूमि पर शासन करते थे।

समाज

- संगम युग के दौरान के संघर्षों में शत्रु के क्षेत्रों पर कब्जा करना शामिल था ताकि भौगोलिक पकड़ को बढ़ाया जा सके।
- **तोलकापियम के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्रों के पांच गुना विभाजन में कुरिंजी** (पहाड़ी ट्रेल्स), **मुलई (देहाती), मरुदम (कृषि), नेदाल (तटीय)**, और पलाई (रेगिस्तान) शामिल हैं।
- लोगों के इन पाँच समूहों में से प्रत्येक का अपना मुख्य कार्य और पूजा करने के लिए देवता थे।

कुरिंजी	मुख्य देवता मुरुगन थे – मुख्य व्यवसाय, शिकार और शहद संग्रह।
मरुदम	मुख्य देवता इंद्र – मुख्य व्यवसाय, कृषि।
मुलई	मुख्य देवता मायन (विष्णु) – मुख्य व्यवसाय, पशु-पालन और डेयरी उत्पादों से निपटना।
नेदाल	मुख्य देवता वरुण – मुख्य व्यवसाय मछली पकड़ना और नमक बनाना।
पलाई	मुख्य देवता कोर्रवई – मुख्य व्यवसाय डकैती।

- **चार जातियों अरासर, अंथानार, वनिगर और वेल्लर को तोलकापियम भी कहा जाता है।**
- अरसर शासक वर्ग थे।
- संगम राजनीति और धर्म अंथानारों से काफी प्रभावित थे।
- वनिगर व्यापारी थे और वेल्लाल भूमि के काश्तकार थे।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. प्राचीन दक्षिण भारत में संगम साहित्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

   (*a*) संगम कविताएं भौतिक संस्कृति के किसी भी संदर्भ से रहित हैं।

   (*b*) वर्ण का सामाजिक वर्गीकरण संगम कवियों के लिए जाना जाता था।

   (*c*) संगम कविताओं में योद्धा नैतिकता का कोई संदर्भ नहीं है।

   (*d*) संगम साहित्य जादुई ताकतों को तर्कहीन रूप में संदर्भित करता है।

अर्थव्यवस्था

- **मदुरैकांची ने दिन और रात दोनों बाजारों का उल्लेख किया है जो विभिन्न प्रकार के सामान बेचते थे।**
  - विभिन्न वस्तुओं और गहनों को बनाने के लिए हमेशा कच्चे संसाधन उपलब्ध नहीं थे।
- **पत्थर जो मूल्यवान और अर्ध-कीमती थे, उन्हें इकट्ठा किया गया** और अन्य सामानों के लिए व्यापार किया गया।
  - **तमिल राष्ट्र में दूर-दूर के व्यापारी आते थे।**
- **"मणिमेगलाई" शब्द तमिल शिल्पकारों को संदर्भित करता है जो मगध कारीगरों,** मराठा यांत्रिकी, मालवा लोहार और यवन बढ़ई के साथ सहयोग करते हैं।
- **तमिल-ब्राह्मी शिलालेखों में वणिकन, चट्टन और निगम जैसे व्यापार से संबंधित शब्द हैं।**
- **सिक्कों का भी इस्तेमाल किया जाता था, व्यापार में वस्तु विनिमय प्रणाली काफी लोकप्रिय थी।**
- रोमन बुलियन सिक्के प्रचलन में थे। कई पुरातात्विक स्थलों में रोमन साम्राज्य और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच लंबी दूरी के व्यापार और संबंधों के प्रमाण मिलते हैं।
  - तट से इसकी निकटता और पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाले समुद्री व्यापार मार्ग पर स्थिति के कारण, भारत का दक्षिणी क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय संबंधों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण था।
  - महत्वपूर्ण प्रारंभिक ऐतिहासिक बंदरगाहों में पाए जाने वाले रोमन एम्फोरा, कांच के बने समान और अन्य कलाकृतियाँ महत्वपूर्ण समुद्री गतिविधि के प्रमाण हैं।
- **राज्य की अधिकांश आय भूमि करों से आती थी, हालांकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सीमा शुल्क भी लगाया जाता था।**
- पुहार बंदरगाह में काम करने वाले सीमा शुल्क अधिकारियों को पट्टिनप्पलाई कहा जाता है।
- शाही खजाने के लिए युद्ध लूट राजस्व का एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत था।
- डकैती और तस्करी को रोकने के लिए सड़कों और राजमार्गों को अच्छी तरह से बनाए रखा गया और रात-दिन पहरा दिया गया।

विचारधारा और धर्म



Amaravathi Stupa

- **अशोक काल, जब बौद्ध धर्म दक्षिण भारत और श्रीलंका में फैला,** तब संगठित धार्मिक गतिविधि के शुरुआती संकेत दिखाई देते हैं।
  - ऐसा कहा जाता है कि अशोक की बेटी श्रीलंका में एक बोधि वृक्ष का पौधा लगाई थी।
- एक कथा के अनुसार, अशोक के शासनकाल से पहले, चंद्रगुप्त मौर्य ने कर्नाटक प्रांत की यात्रा की थी।
  - संगम राजाओं, इक्ष्वाकुओं और सातवाहन सभी ने वैदिक यज्ञों को अपनाया।
- संगम लेखन में इस बात के प्रमाण हैं कि ब्राह्मण इधर-उधर घूमते थे और वैदिक अनुष्ठान गतिविधियों में लगे रहते थे।
- तमिल क्षेत्र में जैन धर्म का अधिक प्रभाव था।
- **सियॉन या मुरुगन, तमिल देवता के रूप में पूजनीय थे।**
- भगवान मुरुगन के त्योहारों का वर्णन संगम साहित्य में वर्णित है, और उनकी पूजा का एक लंबा इतिहास है।
- उनके सम्मान में अरूपदाई विदु, छह निवास स्थान बनाए गए। संगम युग के दौरान, लोगों ने मेयोन (विष्णु), वेंदन (इंदिरन), वरुणन और कोरावई की भी पूजा की।
- संगम युग में, हीरो स्टोन या नाडु काल पूजा महत्वपूर्ण थी। हीरो स्टोन को युद्ध में योद्धा की वीरता के स्मारक के रूप में बनाया गया था।

महिलाओं की स्थिति

- संगम युग के दौरान महिलाओं की स्थिति का पता लगाने के लिए संगम साहित्य में साक्ष्य का खजाना है।
- इस समय, अव्वयार, नच्चेलैयार, और कक्कईपादिनियार जैसी महिला कवियों ने प्रसिद्धि हासिल की। उन्होंने तमिल में महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान दिया।
- अनेक कवियों ने भी नारी शौर्य की प्रशंसा की है।
- **सर्वोच्च महिला गुण को कर्पू, या पवित्र जीवन जीना माना जाता था।**
  - प्रेम विवाह काफी लोकप्रिय थे। महिलाएं अपना मनचाहा जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र थीं।
- हालाँकि, विधवाओं का जीवन दयनीय था। समाज के ऊपरी क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से सती प्रथा थी।

कला

- संगम युग की विशेषता कविता, संगीत और नृत्य की व्यापक लोकप्रियता थी। राजाओं, सरदारों और कुलीनों ने कवियों को उदारतापूर्वक उपहार दिए।
- संगम साहित्य में अनेक प्रकार के यज्ह और ढोल का उल्लेख मिलता है।
- लोगों के **मनोरंजन का पसंदीदा साधन कूथू था।**
- संगम युग ने धीरे-धीरे तीसरी शताब्दी ईस्वी के अंत तक अपने अंत को देखा, तमिल राष्ट्र के इतिहास की लगभग 2.5 शताब्दियां कालभ्रा शासन के तहत व्यतीत हुई। कालभ्रा शासन के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। इस काल में बौद्ध और जैन धर्म ने लोकप्रियता प्राप्त की।
- उत्तरी तमिलनाडु में पल्लवों और दक्षिणी तमिलनाडु में पांड्यों ने कालभ्रा को अपदस्थ कर इस क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

❖ ❖ ❖

13 गुप्त साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, उत्तर में कुषाण और दक्षिण में सातवाहन, दो प्रमुख राजनीतिक शक्तियों के रूप में उभरे। उन्होंने न केवल इन क्षेत्रों में आर्थिक समृद्धि और राजनीतिक एकता स्थापित की, बल्कि वह एक सशक्त स्थिर कारक के रूप में भी थे। 230 ई. के आसपास, उत्तरी भारत में कुषाणों का शासन समाप्त हो गया, और उनके साम्राज्य का एक बड़ा हिस्सा मुरुंडों के आधिपत्य में आ गया। मुरुंडों ने लगभग 30 वर्षों की संक्षिप्त अवधि के लिए शासन किया। तीसरी शताब्दी के अंतिम दशकों के आसपास, कुषाण साम्राज्य के ध्वंशावशेषों पर एक नया साम्राज्य विकसित हुआ और पूर्व कुषाण और सातवाहन प्रभुत्व के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण स्थापित किया।

- इस समय के दौरान, भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े हिस्से में राजनीतिक एकता स्थापित करते हुए, गुप्तवंश एक महान शक्ति के रूप में प्रमुखता से उभरा।
- इसका एक मजबूत केंद्रीय प्रशासन था जिसने कई राज्यों को अपने शासन के अंतर्गत लाया। इस समय, एक संस्था के रूप में सामंतवाद जड़ जमाने लगा।
- गुप्तों को कुषाणों का सामंत माना जाता था।





BRAHMI SCRIPT, ALLAHABAD *PRASHASTI*

गुप्त काल के स्रोत

- 300–600 ई. के राजनीतिक इतिहास को बड़े पैमाने पर अभिलेखों और सिक्कों के आधार पर पुनर्निर्मित किया गया है।
- गुप्तों की उत्पत्ति या सामाजिक पृष्ठभूमि के बारे में कोई विशेष विवरण नहीं है।
- यह दावा कि वे वैश्य थे व 'गुप्त' नाम इस वर्ण के सदस्यों के लिए उपयुक्त था, मनुस्मृति और विष्णु पुराण जैसे ग्रंथों की निष्पत्तियों पर आधारित है।
- पुराणों ने गुप्त राजाओं के शाही राजवंश पर अंतर्दृष्टि डाली।
- समकालीन साहित्यिक कृतियाँ, जैसे कि **विशाखदत्त** की देवीचंद्रगुप्तम और मुद्राराक्षसम, गुप्तों के उत्थान के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।

- चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत का भ्रमण करने वाले एक चीनी यात्री फाह्यान ने गुप्त साम्राज्य की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक प्रस्थितियों का बहुमूल्य विवरण प्रदान किया।
- महरौली लौहस्तंभ अभिलेख और इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख जैसे अभिलेख हैं।

गुप्तवंश की उत्पत्ति एवं प्रमुख शासक

- गुप्त राजाओं का उत्कर्ष साधारण पृष्ठभूमि से हुआ प्रतीत होता है।
- श्रीगुप्त (240-280 ई.) ने गुप्त साम्राज्य की स्थापना की, जिसके उत्तराधिकारी उनके पुत्र घटोत्कच (280-319 ई.) थे।
- अभिलेखों में श्रीगुप्त और घटोत्कच दोनों का महाराजा के रूप में वर्णन है। 319 से 335 ई. तक घटोत्कच के पुत्र चंद्रगुप्त प्रथम ने गुप्त साम्राज्य के पहले महान सम्राट के रूप में शासन किया।

चन्द्रगुप्त प्रथम

- चंद्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया। विवाह का उनके उत्तराधिकारियों के इतिहास में गर्व से उल्लेख किया गया है, यह दर्शाता है कि शाही संबंध ने गुप्तों के विकास में सहायता की होगी।
- चंद्रगुप्त प्रथम पहला शासक था जिसे महाराजाधिराज (राजाओं का महान राजा) कहा जाता था।
- यह उपाधि उसकी कई विजयों की प्रतीक है।
- महरौली लौह स्तंभ अभिलेख में उनकी बड़ी विजयों का उल्लेख है।
- चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त वंश का संस्थापक माना जाता है, जिसका प्रारम्भ 320 ई. में उसके राज्यारोहण के साथ हुआ।

समुद्रगुप्त

- समुद्रगुप्त को उसकी इलाहाबाद प्रशस्ति में लिच्छवि-दौहित्र (लिच्छवियों का पौत्र) कहा गया है।
- युद्ध और विजय के एक अभियान के बाद, उसने अपने दायरे का व्यापक विस्तार किया।
- **इलाहाबाद स्तंभ (प्रयाग प्रशस्ति) पर अंकित एक वृहद अभिलेख में उनकी उपलब्धियों (एक स्तवन) का स्मरण किया जाता है,** जिसकी सतह पर अशोक और बाद में मुगल शासक जहाँगीर के अभिलेख भी हैं।
  - अशोक के अभिलेख के विपरीत, जो शांति और अहिंसा पर जोर देता है, **समुद्रगुप्त का अभिलेख उनके कार्यों और गुणों का जयघोष करता है, आक्रामकता और सैन्य विजय पर जोर देता है, और उनकी कई विजयों का विवरण प्रदान करता है।**
- उनका शासन विस्तारवादी था, जिसकी शुरुआत उनके निकटवर्ती पड़ोसियों पर विजय से हुई और पूर्व और दक्षिण में अभियानों के साथ जारी रही, जहां सरदारों और राज्यों को अधीन कर लिया गया और उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।
- इस दृष्टिकोण के कारण, इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने उन्हें भारत का 'नेपोलियन' की संज्ञा दी।
- इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख में उल्लेख है कि समुद्रगुप्त ने अपने दक्षिण भारतीय अभियान में बारह शासकों को हराया था।
- दक्षिण भारत में समुद्रगुप्त की नीति अलग थी।
- उसने उन राज्यों का विनाश और विलय नहीं किया। इसके बजाय, उसने शासकों को हराया लेकिन उनके राज्य उन्हें वापस कर दिए। उसने सिर्फ यह मांग की कि वे उसका आधिपत्य स्वीकार करें।
- इलाहाबाद प्रशस्ति की 19वीं और 20वीं पंक्ति में समुद्रगुप्त द्वारा कई दक्षिणी राजाओं पर कब्जा करने और फिर मुक्त करने का उल्लेख है।
- **समुद्रगुप्त के अभियान का अंतिम चरण अपने शेष विरोधियों को उत्तर भारत से मिटाना था।**
  - उसने नौ राजाओं के खिलाफ लड़ाई लड़ी, उन्हें बुरी तरह पराजित किया और उनके राज्यों पर कब्जा कर लिया।
- इन सैन्य विजयों के बाद, समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया।
- उसने सोने और चांदी के सिक्के ढलवाए, जिन पर अश्वमेध के पुनर्स्थापक की कथा अंकित थी।
- सीलोन के शासक ने बोधगया में सिंहली भिक्षुओं हेतु विशेषाधिकार प्राप्त करने के लिए एक दूत भेजा।
- अभिलेख के अनुसार, समुद्रगुप्त को कई दक्षिण-पूर्व एशियाई राज्यों से सम्मान प्राप्त हुआ।
- **समुद्रगुप्त ने हरिसेन जैसे विद्वानों और कवियों का समर्थन किया, जिससे संस्कृत साहित्य को प्रोत्साहन मिला।**
- एक समर्पित वैष्णव के रूप में उन्होंने प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक वसुबंधु का भी समर्थन किया।
- **उन्हें कविता और संगीत के प्रति उनके प्रेम के लिए "कविराज" की उपाधि दी गई थी।**
- **समुद्रगुप्त के सिक्के विभिन्न मुद्राओं में उनका प्रतिनिधित्व करते हैं जो उनके पराक्रम और मार्शल कला का संकेत देते हैं** - एक तीरंदाज के रूप में उनके बाएं हाथ में धनुष और उनके दाहिने हाथ में एक तीर है; अपने बाएं हाथ में एक युद्धकुल्हाड़ी लेकर खड़ा है और एक बौना उसकी ओर देख रहा है; या बाघ को रौंद कर मार डाला जा रहा है।

- समुद्रगुप्त के सिक्कों पर किंवदंतियों में पराक्रमः (वीरता), अप्रतिरथः (अजेय), अश्वमेध-पराक्रमः (अश्वमेध करने के लिए सशक्त), और व्याघ्र-पराक्रमः (व्याघ्र सदृश शक्तिशाली) जैसी संज्ञा शामिल हैं।
- उसके सिक्कों पर वीणा बजाते हुए उसका एक चित्र शामिल है।



Samudragupta playing the *vina*

- उसके शासनकाल के अंत में, समुद्रगुप्त के साम्राज्य में कश्मीर, पश्चिमी पंजाब, राजस्थान, सिंध और गुजरात को छोडकर, उत्तरी भारत का अधिकांश भाग शामिल प्रतीत होता है।
- इसमें जबलपुर, छत्तीसगढ़, उड़ीसा के पूर्व में मध्य भारत के उच्चभूमि और कम से कम चिंगलेपुट तक पूर्वी तटीय क्षेत्र शामिल थे।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. आप इस विचार को कैसे सही ठहराते हैं कि उत्तरवर्ती काल में गुप्त मुद्राशास्त्रीय कला की उत्कृष्टता का स्तर बिल्कुल भी उल्लेखनीय नहीं रहा? (2017)



चंद्रगुप्त द्वितीय (380-415 ई.)

- समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य था। हालांकि, अन्य शिक्षाविदों का मानना है कि रामगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय के बड़े भाई, समुद्रगुप्त के स्वाभाविक उत्तराधिकारी थे। हालाँकि, इस दावे का समर्थन करने के लिए बहुत कम ऐतिहासिक प्रमाण हैं।
- चंद्रगुप्त द्वितीय को अपने पिता की सैन्य शक्ति विरासत में मिली और उसने अपनी विजयों के माध्यम से गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया।
- उन्होंने इसे कूटनीति और युद्धकौशल के कुशल संयोजन के साथ पूरा किया। उन्होंने विवाह संबंधों के माध्यम से अपने राजनीतिक प्रभाव को मजबूत किया।
- उन्होंने अपनी बेटी प्रभावती का विवाह एक वाकाटक शासक से कर दिया, जिसने दक्कन के प्रमुख क्षेत्रों पर शासन किया था।
    - यह गठबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ जब उसने पश्चिमी भारत के शक शासकों के खिलाफ चढ़ाई की।
    - चंद्रगुप्त द्वितीय ने लगभग चार शताब्दियों तक इस क्षेत्र पर शासन करने वाले शक राजाओं को अपदस्थ करके पश्चिमी मालवा और गुजरात पर विजय प्राप्त की।
- पश्चिमी भारत की विजय के परिणामस्वरूप, साम्राज्य की पश्चिमी सीमा अरब सागर तक पहुंच गई, जिससे भड़ौच, सोपारा, कैम्बे और अन्य समुद्री बंदरगाहों तक पहुंच की अनुमति मिली।
    - इसने गुप्त साम्राज्य को पश्चिमी देशों के साथ व्यापार पर नियंत्रण प्रदान किया।
    - उज्जैन एक वाणिज्यिक केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण हो गया और जल्द ही गुप्तों की वैकल्पिक राजधानी बन गया।
    - पश्चिमी व्यापारियों ने भारतीय वस्तुओं के बदले रोमन सोना भारत पहुंचाया।
    - चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा चलाए गए सोने के सिक्कों की विविधता ने गुप्त साम्राज्य की अकूत संपत्ति को प्रदर्शित किया।
- उदयगिरि गुफा अभिलेख में उनके दिग्विजय, अर्थात पूरे विश्व पर उनकी विजय का उल्लेख है।
- उसके शासनकाल के दौरान, प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान/फैक्सियन ने भारत का भ्रमण किया।
- उज्जैन में उनका दरबार नवरत्नों ('नौ रत्न,' नौ प्रतिष्ठित विद्वान') द्वारा सुशोभित था।

नाम	विवरण
कालिदास	भारत के लब्धप्रतिष्ठ शास्त्रीय संस्कृत कवि, नाटककार और एक अद्वितीय प्रतिभा
अमरसिंह	संस्कृत कोशकार और कवि, और उनका 'अमरकोश' संस्कृत मूल, समनामों और पर्यायवाची शब्दों की एक शब्दावली है। इसे त्रिकंद भी कहा जाता है, क्योंकि इसके तीन भाग हैं जिनमें लगभग दस हजार शब्द हैं।
वराहमिहिर	प्रसिद्ध गणितज्ञ और ज्योतिष।
धन्वंतरि	चिकित्सक, जिन्हें आयुर्वेद का जनक माना जाता है।
घटकर्पर	मूर्तिकला और स्थापत्य के विशेषज्ञ।
शंकु	एक वास्तुकार जिसने शिल्पशास्त्र की रचना की थी।
क्षपणक	एक ज्योतिषी जिसने ज्योतिष शास्त्र की रचना की थी।
वररुचि	व्याकरणविद, संस्कृत विद्वान और प्राकृत प्रकाश के लेखक, जो प्राकृत भाषा का पहला व्याकरण है।
वेताल भट्ट	एक जादूगर जिसने मंत्रशास्त्र लिखा था।

कुमारगुप्त

- कुमारगुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय के पुत्र और उत्तराधिकारी थे। उनके शासनकाल में सामान्यतः शांति और समृद्धि थी।
    - उसने प्रचुर मात्रा में सिक्के ढाले और उसके अभिलेख पूरे गुप्त साम्राज्य में देखे जा सकते हैं।
- उन्होंने एक अश्वमेध यज्ञ भी किया।
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की, जो एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान के रूप में विकसित हुआ।
- उसके शासनकाल के अंत में, गुप्त सेना को एक शक्तिशाली प्रभुत्वसम्पन्न जनजाति द्वारा पराजित किया गया जिसे 'पुष्यमित्र' के रूप में जाना जाता था।
- हूणों की एक मध्य एशियाई शाखा ने हिंदुकुश पर्वत को पार करने और भारत में प्रवेश करने का प्रयास किया।
- वह चांदी के सिक्के जारी करने वाला प्रथम शासक था। उसने तांबे के सिक्के भी जारी किए और उसके सिक्कों पर चंद्र के रूप में उल्लेख किया गया है। उसने दिनार नामक सोने के सिक्के भी जारी किए।

परवर्ती शासक

- हालांकि, उनके उत्तराधिकारी स्कंदगुप्त ने हूणों के आक्रमण का सामना किया।
  - उसने हूणों से सफलतापूर्वक युद्ध किया और साम्राज्य को सुरक्षित रखा।
  - इस संघर्ष के कारण सरकार के संसाधनों की काफी क्षति हुई थी।
    - स्कंदगुप्त के कई उत्तराधिकारी, जिनमें पुरुगुप्त, नरसिंहगुप्त, बुद्धगुप्त और बालादित्य शामिल हैं, उनकी मृत्यु के बाद हूणों से गुप्त साम्राज्य की रक्षा करने में असमर्थ थे।
  - हूणों के आक्रमण और बाद में मालवा में यशोधर्मन के कारण गुप्त शक्ति अंततः लुप्त हो गई।
- विष्णु गुप्त, जिन्होंने 540 ई. से 550 ई. तक शासन किया, गुप्त वंश के अंतिम मान्यता प्राप्त शासक थे।

गुप्त साम्राज्य का प्रशासन तंत्र

राजा की स्थिति

- गुप्त काल के दौरान राजनीतिक पदानुक्रम प्रयुक्त उपाधियों द्वारा निर्धारित किया जा सकता है। राजाओं को महाराजाधिराज, परम-भट्टारक और परमेश्वर जैसी उपाधियाँ दी जाती थीं।
- वे परम-दैवत (देवताओं के अनन्य उपासक) और परमभागवत (वासुदेव कृष्ण के अनन्य उपासक) जैसे विशेषणों द्वारा भी देवताओं से सम्बद्ध थे।
  - कुछ इतिहासकारों का मानना है कि गुप्त राजाओं ने दैवीय प्रस्थिति का दावा किया था।
- उदाहरणार्थ, इलाहाबाद अभिलेख में, समुद्रगुप्त की तुलना पुरुष (परम सत्ता) से की गई है।
- इन स्थितियों की व्याख्या राजा द्वारा दैवीय प्रस्थिति का दावा करने के प्रयास के रूप में की जा सकती है।

मंत्री और अन्य पदाधिकारी

- मौर्य काल के विपरीत, जब राजनीतिक शक्ति राजा के हाथों में केंद्रित थी, गुप्त सरकार विकेंद्रीकृत थी, जिसमें कई सामंत जैसे स्थानीय राजा और छोटे मुखिया अपने राज्य के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर शासन करते थे।
  - इन छोटे शासकों को राजा और महाराजा जैसी उपाधियाँ दी जाती थीं।
  - राजसिंहासन सामान्यतः वंशानुगत था, हालांकि ज्येष्ठाधिकार की कोई प्रथा नहीं थी (अर्थात, राजसिंहासन हमेशा ज्येष्ठ पुत्र को मिलता था)।
- मौर्यों की तुलना में गुप्त नौकरशाही कम विस्तृत थी।
- गुप्तों के सबसे प्रमुख अधिकारी कुमारमात्य के रूप में जाने जाते थे, और उनका अपना कार्यालय था जिसे अधिकारना कहा जाता था।
  - वे राजा द्वारा नियुक्त किए गए थे और संभवतः उन्हें नकद भुगतान किया जाता था।
  - इस संवर्ग का उपयोग मंत्री और सेनापति जैसे सभी महत्वपूर्ण अधिकारियों को नियुक्त करने के लिए किया जाता था।
- **प्रशासनिक पद न केवल विरासत में मिले थे, बल्कि प्रायः कई कार्यालय एक ही व्यक्ति को बार-बार सौंपे गए थे।**
  - उदाहरण के लिए, समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के लेखक हरिषेण महादंडनायक (शीर्ष न्यायिक अधिकारी) और महासंधिविग्राहिका (युद्ध और शांति मंत्री) दोनों थे।
- गुप्त राजा की सहायता मंत्रिपरिषद (मंत्रियों) द्वारा की जाती थी।
  - इलाहाबाद प्रशस्ति संभवतः मंत्रियों की एक विधानसभा या परिषद को संदर्भित करती है - जिसे सभा के रूप में जाना जाता है।
- विभिन्न उच्च-श्रेणी के पदाधिकारियों में संधिविग्रहिका या महासंधिविग्रहिका (शांति और युद्ध मंत्री) शामिल थे, जो युद्ध शुरू करने, गठबंधनों और संधियों को समाप्त करने सहित अन्य राज्यों के साथ संबंधों के निर्धारण के प्रभारी उच्च पदस्थ अधिकारी प्रतीत होते हैं।

प्रांतीय प्रशासन

- **गुप्त साम्राज्य को देशों या भुक्तियों के रूप में जाने जाने वाले प्रांतों में विभाजित किया गया था, जो राज्यपालों द्वारा प्रशासित थे जिन्हें प्रायः उपरिक के रूप में नामित किया जाता था।**
  - उपरिक को सीधे राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था और बदले में, प्रायः जिला प्रशासन और जिला नगर बोर्ड का प्रमुख नियुक्त किया जाता था।
- कभी-कभी युवराजों को प्रांतों का वाइसराय भी बनाया जाता था।
- **प्रांतों को कई जिलों में विभाजित किया गया था जिन्हें प्रदेश या विषय के रूप में जाना जाता था, जिन्हें एक विषयपति को सौंपा गया था।**
  - पूर्वी भारत में विषयों को वीथियों में विभाजित किया गया था, जिन्हें इसके उपरांत गांवों में उपविभाजित किया गया था।

- **जिला स्तर से नीचे की प्रशासनिक इकाइयों में वीथि, भूमि, पाथक और पेटा के रूप में जाने जाने वाली बस्तियों के समूह शामिल थे।**
  - आयुक्तों और विथि-महत्तरों के रूप में जाने जाने वाले अधिकारियों के संदर्भ हैं।
- **ग्राम प्रधान, जिसे ग्रामाध्यक्ष/ग्रामिका के रूप में जाना जाता है, स्थानीय वयोवृद्धों की सहायता से गाँव की गतिविधियों का निरीक्षण करता था।**
  - गुप्तकाल में ग्राम प्रधान का दर्जा बढ़ा हुआ था क्योंकि उसकी स्वीकृति के बिना भूमि का कोई भी लेन-देन नहीं हो सकता था।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के समय के सांची अभिलेख में पंच-मंडली का उल्लेख है, जो शायद एक सामूहिक ग्राम निकाय रहा होगा।
- संगठित पेशेवर संस्थाओं को शहरी सरकार में शामिल करना एक विशेषता थी।
  - समुदाय के प्रतिष्ठित सदस्यों से बनी एक कॉर्पोरेट परिषद ने उपरिका को उसके प्रशासनिक कार्यों में सहायता प्रदान की - एक अधिष्ठान अधिकारना (पांच सदस्यों का एक बोर्ड)।
  - ये थे उपरिका, नगर-श्रेष्ठी (मुख्य व्यापारी), सार्थवाह (मुख्य कारवां व्यापारी), प्रथम-कुलिका (मुख्य कारीगर या व्यापारी), और प्रथम-कायस्थ (राजस्व संग्रह के प्रमुख प्रभारी)।

न्यायिक संरचना

- **गुप्तों के अधीन न्यायिक प्रणाली पहले की तुलना में काफी अधिक विकसित थी।**
  - **दीवानी और फौजदारी कानूनों को पहली बार स्पष्ट रूप से पृथक किया गया।**
  - चोरी और व्यभिचार को दंडनीय अपराध माना जाता था। नागरिक कानून का निकाय विभिन्न प्रकार की संपत्ति पर विवादों के दृष्टिगत स्थापित किया गया था।
  - **व्यापक उत्तराधिकार कानून अधिनियमित किए गए।**
  - कानून, पूर्व काल की तरह, वर्ण पदानुक्रम पर स्थापित किए गए थे।
  - राजा के पास सर्वोच्च न्यायिक शक्ति थी, और वह ब्राह्मण पुरोहितों की सहायता से मामलों की सुनवाई करता था।
- वहां महादंडनायक का कार्यालय था, जो संभवतः मुख्य न्यायाधीश था।
- न्यायिक कार्य उपरिकों और विषयपतियों द्वारा उनके विभिन्न क्षेत्रीय न्यायाधिकारों में किया जाता था।

सेना

- **बलाधिकृत और महाबलाधिकृत** (पैदल सेना और घुड़सवार सेना के सेनापति) जैसी सैन्य उपाधियों का उल्लेख मुहरों और अभिलेखों पर मिलता है।
  - गुप्त अभिलेखों में "सेनापति" शब्द का उल्लेख नहीं है।
- **महाप्रतिहार (महल के पहरेदारों के प्रमुख) और खाद्यातपकिता दो अधिकारी थे जो मुख्य रूप से शाही संस्था (शाही रसोई के अधीक्षक) से जुड़े थे।**
- एक वैशाली मुहर एक व्यक्ति को महाप्रतिहार और तारावरा दोनों के रूप में संदर्भित करती है।
- प्रशासनिक ढांचे के शीर्ष स्तर में अमात्य और सचिव भी शामिल थे, जो विभिन्न विभागों के प्रभारी कार्यकारी अधिकारी थे।
- **गुप्तचर, जिन्हें दुतक कहा जाता है, गुप्तचर प्रणाली का हिस्सा थे।**
- महत्वपूर्ण अधिकारियों की सूची
  1. महादन्डनायक - न्याय प्रदान करना
  2. महाप्रतिहार - पहरेदारों के प्रमुख
  3. ग्रामाध्यक्ष/ग्रामिका - ग्राम प्रधान
  4. दुतक- उपहार और अनुदान से जुड़े
  5. संधि-विग्रहिका- शांति और युद्ध मंत्री
  6. पीलूपति - गज (हाथियों) का अधिकारी
  7. अश्वपति - अश्वों का अधिकारी
  8. संधिविग्रह - संभवतः विदेश मामलों के मंत्री।
  9. नगर श्रेष्ठी - नगर प्रशासन को देखने वाले अधिकारी
  10. नरपति- पैदल सैनिकों के अधिकारी
  11. रणभंडाग्रिका- भंडार के प्रभारी
  12. अक्षपातालधिकृत- अभिलेख एवं लेखा अधीक्षक।

अर्थव्यवस्था

- सिंचाई तंत्र के निर्माण के परिणामस्वरूप गुप्त वंश के दौरान कृषि समृद्ध हुई।
- राज्य और व्यक्तिगत कृषकों के अलावा, ब्राह्मणों, बौद्धों और जैन संघों ने बंजर भूमि पर खेती की, जब उन्हें यह पवित्र दान के रूप में दिया गया था।
- काश्तकारों को अपनी फसलों को नुकसान से बचाने के लिए कहा गया, और जिन्होंने फसलों को नुकसान पहुंचाया उन्हें दंडित किया गया।

- धान, गेहूँ, जौ, मटर, मसूर, दालें, गन्ना, और तिलहन गुप्त काल के दौरान उगाई जाने वाली फसलों में से थे।
  - कालिदास के अनुसार दक्षिण, काली मिर्च और इलायची के लिए प्रसिद्ध था।
  - वराहमिहिर फलों के वृक्ष लगाने पर विस्तृत निर्देश प्रदान करते हैं।
- पहाड़पुर ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार, राजा क्षेत्र का एकमात्र स्वामी था।
  - जब उसने जमीन दी, तब भी उसने उस पर अपना अधिकार सुरक्षित रखा।
  - क्षेत्र का रिकॉर्ड रखने वाले और महत्वपूर्ण लोगों ने अलग-अलग भूखंडों के स्थान और सीमाओं को निर्धारित किया और माप किया।
- **पहाड़पुर प्लेट के अनुसार, उस्तापाल के नाम से जाना जाने वाला एक अधिकारी जिले में सभी भूमि लेनदेन का रिकॉर्ड रखता था,** जबकि स्थानीय लेखाकार गांव में भूमि का रिकॉर्ड रखता था।
- गुप्त काल में भूमि को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया था:

भूमि का प्रकार	विशेषता
क्षेत्र	क्षेत्र शब्द का प्रयोग एक क्षेत्र के लिए किया जाता है, विशेष रूप से खेती वाले क्षेत्र के लिए।
खील	खीला का अर्थ है बंजर भूमि या कृषि योग्य बंजर भूमि।
अप्रहत	अप्रहत का भी अर्थ खेती योग्य बंजर भूमि है।
गपता सरहा	चरागाह भूमि
वास्तु	निवास भूमि थी।

  - अमरकोश में 12 प्रकार की भूमि की सूची है- उर्वरा (उपजाऊ), ऊसर (बंजर), मारू (रेगिस्तान), अप्रहत (परती), शादवला (घास), पंकिल (कीचड़), जलाप्रयामानुपम (गीला), कच्चा (जल के निकट), शर्करा (कंकड़ और चूना पत्थर के टुकड़ों से भरा हुआ), शार्कवती (बलुआ), नदीमातृका (एक नदी द्वारा सींचा गया) और देवमातृका (बारिश से सींचा गया)।
  - भूमि माप: ग्रंथों और अभिलेखों में विभिन्न भूमि माप शर्तों का उल्लेख है।
- अंगुल (शायद 3/4 इंच) सबसे छोटा माप था।
- हस्त (हाथ) कोहनी की नोक और मध्यमा उंगली (18 इंच) के बीच की मानकीकृत दूरी थी।
- माप की बड़ी इकाइयों में धनु/डंडा और नाला शामिल थे।
- **पूर्वी भारत में उपयोग किए जाने वाले भूमि उपायों में अधवपा (3/8–1/2 एकड़), द्रोणवापा** (1½–2 **एकड़), और कुल्यवापा (12–16 एकड़) शामिल थे।**
- ये क्रमशः एक अधक, द्रोण और कुल्य अनाज बोने के लिए आवश्यक क्षेत्र थे।
  - पटका एक अन्य भूमि माप था, और संभवतः यह 60-80 एकड़ के बराबर था।

    अन्य शब्दों में प्रवर्तवाप (यह कुल्यवप से बहुत छोटा था), पदवर्त (1 फीट से अधिक) और भूमि शामिल थे।
- बड़ी संख्या में भूमि माप शब्द संकेत करते हैं कि माप का कोई एकल मानक सेट नहीं था और विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग माप प्रचलित थे।
- **खाइयों या खंभों का उपयोग करके या पेड़ों, टैंकों और बांबी जैसी प्राकृतिक विशेषताओं के संदर्भ में सीमाओं का सीमांकन किया गया।**

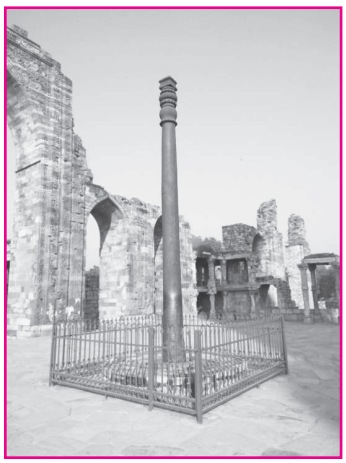
सिंचाई सुविधा

नारद स्मृति के अनुसार, बांध दो प्रकार के होते थे: बर्ध्या, जो भूमि को बाढ़ से बचाता था, और खारा, जो सिंचाई प्रणाली के रूप में काम करता था।

- **अमरसिंह ने बाढ़ को रोकने के लिए जलनिर्गम (नालियों) के निर्माण का उल्लेख किया है।**
- नहरों का निर्माण न केवल नदियों से हुआ, बल्कि तालाबों और झीलों से भी हुआ।

उद्योग का विकास

- **पूरे गुप्त काल में खनन और धातु विज्ञान दो सबसे समृद्ध क्षेत्र थे।**
- अमरसिंह, वराहमिहिर और कालिदास द्वारा प्रायः खानों का उल्लेख किया जाता है।
  - इस समय के दौरान, बिहार से लौह अयस्क और राजस्थान से तांबे के महत्वपूर्ण भंडार का व्यापक रूप से खनन किया गया था।
- दिल्ली में कुतुब मीनार परिसर में चंद्रगुप्त द्वितीय का महरौली लौह स्तंभ, धातु विज्ञान में उच्च स्तर की उन्नति का सबसे महत्वपूर्ण और स्पष्ट प्रमाण है।
  - **यह अखंड लौह स्तंभ पीढ़ियों से जंग रहित बना हुआ है। यह गुप्तकालीन लौह शिल्पकारों के उल्लेखनीय कौशल का प्रमाण है।**



व्यापार एवं वाणिज्य

- **व्यापारियों की दो श्रेणियाँ थीं जिन्हें श्रेष्ठी और सार्थवाह कहा जाता था।**
  - **श्रेष्ठी आमतौर पर एक विशिष्ट स्थान पर स्थित था** और अपने धन और वाणिज्यिक जीवन एवं स्थल के प्रशासन में प्रभाव के कारण एक प्रमुख स्थान रखता था।
  - **सार्थवाह एक कारवाँ व्यापारी था** जो लाभदायक बिक्री के लिए अपने उत्पादों को विभिन्न स्थानों पर पहुँचाता था।
- व्यापारिक वस्तुएं दैनिक जरूरतों से लेकर महंगी और विलासितापूर्ण वस्तुओं तक थीं।
  - काली मिर्च, चंदन, हाथी दांत, हाथी, घोड़े, सोना, तांबा, लोहा और अभ्रक उनमें से थे।
  - कारीगरों, व्यापारियों, और गिल्डों को संदर्भित करने वाले कई अभिलेख और मुहरें बस्टलिंग शिल्प और व्यापार को प्रमाणित करती हैं।
- **कारीगरों, व्यापारियों और व्यावसायिक श्रेणी समूहों के कई संदर्भ हैं।**
- उत्पादों के उत्पादन और व्यवसाय में संघ प्रमुख संस्था बने रहे।
- उन्होंने अधिकांशतः स्वायत्त आंतरिक संरचना बनाए रखी, और सरकार उनके कानूनों का पालन करती थी।
  - प्रत्येक श्रेणी एक बड़े संगठन का सदस्य था जिसे गिल्ड्स के निगम के रूप में जाना जाता था, जिसने इन नियामकों को बनाया था।
- **श्रेणी की संरचना और संचालन का वर्णन नारद और बृहस्पति स्मृतियों में किया गया है।**
  - वे श्रेणी के लिए एक प्रमुख, दो, तीन या पांच कार्यकारी अधिकारियों को निर्दिष्ट करते हैं।
- **कथित तौर पर श्रेणी, कानूनों की रूपरेखा वाले लिखित दस्तावेज थे।**
  - बृहस्पति स्मृति के अनुसार, संघों को आम तौर पर अपने सदस्यों के लिए उचित निर्णय लेने से पहले राजा की स्वीकृति लेनी चाहिए।
- श्रेणी के धर्मार्थ प्रयासों का भी उल्लेख है, जैसे यात्रियों की मेजबानी करना और सभा भवनों, मंदिरों और उद्यानों का निर्माण करना।
  - अभिलेख में जिला-स्तरीय प्रशासनिक निकायों में श्रेणी प्रमुख की महत्वपूर्ण भागीदारी का भी उल्लेख है।
  - **श्रेणियों ने बैंकों के रूप में भी काम किया।**
  - गुप्त काल के दौरान, सूदखोरी, या अत्यधिक ब्याज दर पर धन उधार देना, प्रायः सामान्य था।
- **भारत के पश्चिमी तट पर कई बंदरगाह, जिनमें कॉलियाना (कल्याण),** चौल, और मालाबार तट पर मबार (मालाबार), मैंगरौथ (मैंगलोर), सलोपटाना, नालोपताना और पांडोपटाना के बाजार शामिल हैं, ने वाणिज्यिक हब के रूप में काम किया।
- **फाह्यान, बंगाल में ताम्रलिप्ति को पूर्वी तट पर एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र के रूप में वर्णित करता है।**
  - ये बंदरगाह और शहर श्रीलंका, चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ-साथ फारस, अरब और बीजान्टियम के बंदरगाहों से जुड़े हुए थे।
- भारत से भेजे जाने वाले उत्पादों में दुर्लभ रत्न, मोती, उच्च कोटि के कपड़े और इत्र शामिल थे। भारतीयों द्वारा रेशम और अन्य वस्तुओं का आयात चीन से किया जाता था।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. देश की अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्राचीन भारत के गिल्ड (श्रेणी) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(1) प्रत्येक श्रेणी राज्य के केंद्रीय प्राधिकरण के साथ पंजीकृत थी और राजा उन पर मुख्य प्रशासनिक प्राधिकारी था।

(2) श्रेणी द्वारा मजदूरी, काम के नियम, मानक और मूल्य तय किए गए थे।

(3) श्रेणी के पास अपने सदस्यों पर न्यायिक अधिकार थे।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(*a*) केवल 1 और 2 (*b*) केवल 3

(*c*) केवल 2 और 3 **(*d*) 1, 2 और 3**

राज्य के राजस्व के स्रोत

- **नारद स्मृति में दावा किया गया है कि प्रजा को राजा द्वारा प्रदत्त सुरक्षा के बदले राजस्व देना होता है।**

- **नीतिसार, इसके पूर्ववर्ती अर्थशास्त्र की भांति, शाही खजाने के महत्व पर जोर देता है और राजस्व के विभिन्न स्रोतों का उल्लेख करता है।**
- **समुद्रगुप्त जैसे राजाओं के कई महत्वाकांक्षी सैन्य अभियानों को राजस्व अधिशेष के माध्यम से वित्तपोषित किया गया होगा।**
- गुप्त अभिलेखों से राजस्व विभाग के बारे में कुछ जानकारी मिलती है।
  - **अक्षपातालधिकृत शाही अभिलेखों का रक्षक था।**
- **कई पुस्तपाल या रिकॉर्ड कीपर-भूमि हस्तांतरण के रिकॉर्ड रखते थे।**
  - गुप्त अभिलेखों में कर, बली, उद्रंगा, उपरिकर और हिरण्य जैसे राजकोषीय शब्दों का उल्लेख है।
- **राज्य की आय के स्रोतों में खजाने, जमा, खानों और नमक के भंडार पर शाही एकाधिकार शामिल थे।**
- ग्रामीणों को दौरे पर रहने वाले शाही अधिकारियों को पशुओं के लिए घास, बैठने के लिए खाल, और खाना पकाने के लिए लकड़ी का कोयला उपलब्ध कराना अनिवार्य था।
- अग्रहार बने गांवों को ऐसे दायित्वों से छूट दी गई थी।

कर का प्रकार	विवरण
भाग	उपज का राजा का प्रथा अनुसार हिस्सा आमतौर पर किसानों द्वारा भुगतान की गई उपज का छठा हिस्सा होता है।
भोग	फल, जलावन लकड़ी, फूल आदि की आवधिक आपूर्ति, जो गाँव द्वारा राजा को प्रदान की जानी थी।
कर	ग्रामीणों पर लगाया जाने वाला आवधिक कर (वार्षिक भूमि कर का हिस्सा नहीं)
बलि	राजा को लोगों द्वारा स्वैच्छिक भेंट, लेकिन बाद में अनिवार्य हो गई। यह एक दमनकारी कर था।
उड़ियांग	या तो थानों के रखरखाव के लिए एक प्रकार का पुलिस कर या जल कर। इस प्रकार यह एक अतिरिक्त कर भी था।
वात-भूत	वायु (वात) और आत्माओं (भूत) के संस्कारों के रखरखाव के लिए विभिन्न प्रकार के उपकर।
हलविकार	शाब्दिक रूप से, इसका अर्थ सोने के सिक्कों पर देय कर है, लेकिन व्यवहार में, यह संभवत: कुछ फसलों का राजा का हिस्सा था जो कि वस्तु के रूप में भुगतान किया जाता था।
शुल्क	व्यापारियों द्वारा एक शहर या बंदरगाह में लाया गया माल का एक शाही हिस्सा। इसलिए इसे सीमा शुल्क और टोल के बराबर माना जा सकता है।
क्लिप्त और उपक्लिप्त	भूमि के क्रय-विक्रय के संबंध में।
उपरिकर	एक अतिरिक्त कर भी।

शाही भूमि अनुदान

- चौथी शताब्दी से अनुदान में वृद्धि हुई।
- 5वीं/6वीं शताब्दी से, लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के राजा ऐसे उपहार दे रहे थे, जिनका विवरण आम तौर पर तांबे की प्लेटों पर अंकित किया जाता था।
- **ब्राह्मणों को दिए गए गांवों को अग्रहार, ब्रह्मदेय या शासन कहा जाता था।**
  - एक ब्राह्मण ग्राम के लिए एक अधिक तटस्थ शब्द, जो यह इंगित नहीं करता है कि यह एक शाही बंदोबस्त का परिणाम था या नहीं, भट्ट-ग्राम है।
- हालांकि बौद्ध और जैन मठों, वैष्णव और शैव मंदिरों सहित अन्य प्रकार के लाभार्थियों को शाही अनुदान के रिकॉर्ड हैं, और बहुत कम संख्या में 'धर्मनिरपेक्ष अनुदान' हैं, लगभग 10वीं शताब्दी ई. तक, अधिकांश शाही भूमि अनुदान ब्राह्मणों को किया गया।
- **एक गुप्त राजा द्वारा दिए गए भूमि अनुदान को रिकॉर्ड करने वाला केवल एक प्रामाणिक अभिलेख है।**
  - यह स्कंदगुप्त का भीतरी पाषाण स्तंभ अभिलेख है, जो एक विष्णु मंदिर हेतु एक गाँव के उपहार को दर्शाता है।

- **ग्रामीणों को आदेशित किया गया कि वे दानकर्ताओं की बात मानें और उन्हें हिरण्य जैसे सभी कर दें।**
- अभिलेखों में यह भी कहा गया है कि अब से, कर चुकाने वाले काश्तकारों और अन्य गांवों के कारीगरों को इस अग्रहार में प्रवेश नहीं करना चाहिए।

समाज

- **सम्पूर्ण गुप्त वंश में जाति संरचना कठोर हो गई।**
  - समाज के शीर्ष स्तर पर ब्राह्मणों का स्थान था। सम्राटों और अन्य धनाढ्यों ने उन्हें उपहारों से सम्मानित किया।
- सम्पूर्ण गुप्त काल में भी महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई है।
  - पुराणों जैसी धार्मिक पुस्तकों को पढ़ना उनके लिए वर्जित था।
  - पुरुषों हेतु महिलाओं की दासता को सशक्त रूप से संस्थागत बना दिया गया था।
  - लेकिन इस बात पर जोर दिया गया कि पुरुषों को उनकी देखभाल करनी चाहिए और उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।
  - स्वयंवर अनुष्ठानों को बंद कर दिया गया, और मनुस्मृति ने महिलाओं के शीघ्र विवाह का पक्ष लिया।
  - महिलाओं के पास संपत्ति के अधिकार नहीं थे।
- स्त्रीधन पर उनका पूर्ण अधिकार था, समाज में पर्दा प्रथा नहीं थी।
- **भानुगुप्त के एरण अभिलेख से सती प्रथा और बाल विवाह का भी पहला प्रमाण मिलता है।**
  - हालाँकि, वैवाहिक गठबंधन उस समय की राजनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे।
  - इसका संकेत गुप्त अभिलेखों जैसे समुद्रगुप्त के इलाहाबाद प्रशस्ति और स्कंदगुप्त के भितरी स्तंभ अभिलेख में रानियों के उल्लेख से मिलता है।
  - गैर-शाही संभ्रांत वर्गों के बीच बहुविवाह भी प्रचलित था।
- समाज स्पष्ट रूप से सामंतवादी हो गया, ब्राह्मणों (ब्रह्मदीय और अग्रहार) और सामंती मुखियाओं को भूमि अनुदान प्राप्त हुआ।
- इस अवधि में बलात श्रम (विष्टि) पहले की तुलना में अधिक सामान्य हो गया।
  - तथ्य यह है कि भूमि अनुदान अभिलेखों में करों के साथ इसका उल्लेख किया गया है, यह दर्शाता है कि एक प्रकार का कर जो लोगों द्वारा भुगतान किया जाता था, राज्य के लिए आय का एक स्रोत माना जाता था।
- **दासों का उल्लेख सामान्यतः घरेलू नौकर या निजी परिचारक के रूप में किया जाता है।**
- स्वामी के घर में दासी से उत्पन्न होने वाले बच्चे को भी उसका दास माना जाता था।
- **इस दौरान शूद्रों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में प्रगति हुई।**
  - **रामायण, महाभारत और पुराण अब उनके द्वारा सुने जा सकते थे।**
  - वे अब बिल्कुल नए देवता कृष्ण की पूजा कर सकते हैं, साथ ही वे कई घरेलू अनुष्ठान भी कर सकते हैं जो पहले उनके लिए वर्जित थे।
  - **उन्हें प्रायः 7वीं शताब्दी से शुरू होने वाले किसानों** के रूप में चित्रित किया गया था।
- **शूद्रों और अछूतों को अब अलग कर दिया गया था,** अछूतों को शूद्रों की तुलना में कम सम्मान दिया गया था।
  - अस्पृश्यता का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा था, विशेष रूप से चांडालों के लिए घृणा भी।
- **समाज से चांडालों के अलगाव का उल्लेख फाह्यान द्वारा किया गया है।** चीनी यात्री ने उनकी दयनीय स्थिति का विस्तार से वर्णन किया।

धार्मिक विकास के प्रतिरूप

- 300-600 ई. अवधि को अक्सर 'ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान' या ब्राह्मणवादी विचारधारा के समेकन के चरण के रूप में देखा जाता है।
  - **यह शाही अभिलेखों की भाषा के रूप में संस्कृत की दृढ़ स्थापना** और मंदिर-आधारित सांप्रदायिक पंथों की बढ़ती लोकप्रियता में परिलक्षित होता है।
- हिंदू धार्मिक विचारों और प्रथाओं के विकास को पुराणों, धार्मिक मूर्तिकला और स्थापत्य, और अभिलेखों के माध्यम से पता लगाया जा सकता है।
  - पुराण धार्मिक अनुष्ठानों के भाग के रूप में विभिन्न संस्कारों, व्रतों (प्रतिज्ञा), और तीर्थों (तीर्थयात्रा) का उल्लेख करते हैं। मुहरों पर सांप्रदायिक प्रतीक दिखाई दिए।
  - उदाहरण के लिए, भीटा मुहरों में कई शैव और वैष्णव आलेख हैं, और लिंग, त्रिशूल, बैल, गज-लक्ष्मी, शंख और चक्र जैसे प्रतीक हैं।

- शाही प्रशस्तियां, सिक्के, और मुहरें राजाओं के सांप्रदायिक संबद्धता की घोषणा करती थीं।
- कुछ गुप्त राजाओं ने स्वयं को भागवत, अर्थात वासुदेव कृष्ण के उपासक के रूप में घोषित किया।

- **साहित्यिक और पुरातात्विक साक्ष्य कर्नाटक जैसे क्षेत्रों में जैन प्रतिष्ठानों के विकास का साक्ष्य देते हैं, जबकि उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में बौद्ध मठ केंद्रों की पहचान की जा सकती है।**
- शाही और गैर-शाही दान अभिलेख उन सामाजिक समूहों का एक विचार प्रदान करते हैं जो धार्मिक प्रतिष्ठानों को संरक्षण दे रहे थे।

तंत्रवाद का प्रसार

- इस समय के दौरान, क्षेत्रीय पंथों, विचारधाराओं और रीति-रिवाजों की व्यापक विविधता उभरी। नेपाल, असम, बंगाल, उड़ीसा, मध्य भारत और दक्कन के आदिवासी क्षेत्रों में, ब्राह्मणों को भूमि मिलनी शुरू हो गई थी।
  - परिणामस्वरूप, जनजातियों और ब्राह्मणों की संस्कृतियों में परस्पर अन्तर्क्रिया हुई।
- आदिवासी, ब्राह्मणवादी तंत्र में शामिल होने के बाद शूद्र बन गए, और साथ ही, **आदिवासी, ब्राह्मणवादी समाज के साथ घुलने-मिलने लगे।**
  - ब्राह्मणों ने उनके कर्मकांडों, देवी-देवताओं को भी अपनाया।
  - तंत्रवाद का जन्म आदिवासी रीति-रिवाजों और ब्राह्मणवादी धर्म के सम्मिश्रण के परिणामस्वरूप हुआ था।
- तंत्रवाद को कर्मकांडों, योगाभ्यासों, डरावने देवताओं, यौन संस्कारों और "शक्ति" पर जोर देने की विशेषता है, जिसे स्त्रैण ऊर्जा माना जाता था।

कला और स्थापत्य

- 200 ईसा पूर्व-300 ई. के दौरान धार्मिक गतिविधियों के बढ़ते संस्थागतकरण और समाज के विभिन्न वर्गों से संरक्षण प्राप्त करने की इसकी क्षमता ने अधिक स्थायी और विस्तृत धार्मिक संरचना के परंपराओं की शुरुआत की। इन शताब्दियों की अधिकांश अवशिष्ट मूर्तिकला और स्थापत्य वास्तव में धार्मिक प्रकृति की है।

प्रारंभिक हिंदू मंदिर और मूर्तिकला

तीर्थ में एक आंतरिक दीर्घवृत्त (8.10 × 3 मीटर) होता है जो बाहरी दीर्घवृत्त से 2.5 मीटर के अंतर से अलग होता है।

- मंदिर में एक ईंट का चबूतरा था; इसकी अधिरचना लकड़ी, छप्पर और मिट्टी से बनी होगी।
- बाढ़ से क्षतिग्रस्त होने के बाद इसे मिट्टी के चबूतरे पर ऊंचा किया गया था।



- **संरचनात्मक मंदिरों की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:**
  1. सपाट छतों वाले वर्गाकार मंदिर;
  2. विमान (दूसरी मंजिल) के साथ सपाट छत वाले वर्गाकार मंदिर;
  3. वर्गाकार मंदिर जिसके ऊपर एक घुमावदार मीनार (शिकारा) है;
  4. आयताकार मंदिर; और
  5. वृत्ताकार मंदिर।

इलाहाबाद के पास गढ़वा में मंदिर और झांसी के पास देवगढ़ में मंदिर की मूर्तियां गुप्त कला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

बौद्ध स्थापत्य और मूर्तिकला



Nalanda University

- **कई स्तूपों का निर्माण भी किया गया था, लेकिन सबसे बड़ा उत्तर प्रदेश (सिंध) में मीरपुर खास, रत्नागिरी और सामत में देखा जा सकता है।**
- **नालंदा एक प्रमुख महायान बौद्ध शैक्षणिक केंद्र बन गया।**
- इसके अतिरिक्त, विभिन्न देशों के छात्र इस विश्वविद्यालय में अध्ययन करने आते थे।

- ह्वेन त्सांग ने दावा किया कि यह एक सौ गांवों की आय प्राप्त करता था।
- यह स्थल, जो पटना से लगभग 95 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में बिहारशरीफ शहर के निकट है, पाँचवीं शताब्दी ई. से लगभग 1200 ई. तक एक प्रमुख शैक्षणिक केंद्र था। यह एक यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल है।
- लगभग 1200 ई., बख्तियार खलजी के नेतृत्व में दिल्ली सल्तनत के मामलुक राजवंश की एक सेना ने नालंदा को लूट लिया और नष्ट कर दिया।
- आज, नालंदा एक सुप्रसिद्ध पर्यटन स्थल है और बौद्ध पर्यटन सर्किट का एक पड़ाव है। हाल ही में, इस विश्वविद्यालय को अन्य दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के सहयोग से भारत सरकार द्वारा पुनर्जीवित किया गया है।

पत्थर की मूर्ति

- सुप्रसिद्ध सारनाथ का ऊर्ध्व बुद्ध, पत्थर की मूर्तिकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **उदयगिरि की एक गुफा के प्रवेश द्वार पर बड़ा वराह संभवतः पौराणिक चित्रों में सबसे आश्चर्यजनक है।**

गुफा स्थापत्य

- **कुछ उल्लेखनीय अपवादों के साथ,** जैसे कि विदिशा के पास उदयगिरी की गुफाएं, जिसमें नृ-वराह (वराह के सिर वाला एक व्यक्ति) के रूप में जल से पृथ्वी को बचाने वाले विष्णु का प्रसिद्ध राहत चित्रण है और एलीफेंटा गुफाएं, शिव को समर्पित सबसे बड़ी गुफा है। इस समय की गुफा स्थापत्य लगभग पूरी तरह से बौद्ध है।



चित्रकला

- इस काल के भित्ति चित्र **अजंता, बाघ, बादामी और अन्य स्थानों में** खोजे जा सकते हैं।
- तकनीकी दृष्टिकोण से, इन चित्रों की सतहों को काफी सरल तरीके से बनाया गया होगा।
- चूंकि भित्तिचित्रों को तब चित्रित किया जाता है जब प्लास्टर गीला होता है, अजंता के भित्ति चित्र प्लास्टर के सूख जाने के बाद बनाए गए थे, जिससे वे आभासी भित्तिचित्र बन गए।
- **अजंता** और **बाघ** में मध्यदेश स्कूल चित्रकला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण देखा जा सकता है।

साहित्य

- प्राचीन भारत में, गुप्त काल को कला और साहित्य का स्वर्ण काल माना जाता है। संस्कृत इस समय लेखन की प्राथमिक भाषा थी।
- **इस समय के दौरान, बड़ी मात्रा में धार्मिक और लौकिक दोनों प्रकार के लेखन का प्रारम्भ हुआ।**
  - चौथी शताब्दी ई. में दो महान महाकाव्य, रामायण और महाभारत पूर्ण हुए।
- **यह पुराणों की रचना की शुरुआत को भी दर्शाता है।**
  - विष्णु पुराण, वायु पुराण, और मत्स्य पुराण इस समय के दौरान निर्मित तीन प्रमुख पुराण हैं।
  - वराह पुराण, वामन पुराण, और नरसिम्हा पुराण, भगवान विष्णु के कई अवतारों की महिमा करते हैं जबकि शिव पुराण शिव की पूजा के लिए लिखा गया था।
- **गुप्त काल में कुछ स्मृतियाँ या नियम-कानून संबन्धित रचनाएँ भी लिखी गई।**
  - इनमें से एक नारद स्मृति, उस समय के समग्र सामाजिक और आर्थिक मानदंडों पर अंतर्दृष्टि डालती है।
  - इस समय के दौरान, याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन और बृहस्पति स्मृतियों सहित कई धर्मशास्त्र लिखे गए।
    - इसी अवधि में कामंदक का नीतिसार, राजकौशल संबन्धित है, जैसा कि कामसूत्र, कामुक आनंद से संबन्धित एक ग्रंथ है।
- व्याकरण के क्षेत्र में, भर्तृहरि (5वीं शताब्दी) ने पतंजलि के महाभाष्य पर एक टीका की रचना की।
- गुप्त काल के प्रख्यात लेखक

लेखक	कार्य/विवरण
कालिदास	इस दौर के सबसे उत्कृष्ट नाटककारों में गिने जाते हैं **उनके नाटक- अभिज्ञानशाकुंतलम, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और** • उनकी गीतात्मक कविताएँ-रघुवंश, कुमारसंभव, और मेघदूत-संस्कृत साहित्य की उत्कृष्ट कृतियाँ मानी जाती हैं। • अन्य बातों के अतिरिक्त, प्रेम के सुंदर काव्यात्मक वर्णन के लिए विख्यात हैं, उनकी रचनाएँ कुछ स्थानों पर हास्य के तत्व को भी प्रदर्शित करती हैं।
भास	• मध्यमव्ययोग, दत्त-घटोत्कच, दूतवाक्य, बालचरित और चारुदत्त के लेखक।
भारवि	• किरातार्जुनीयम
शूद्रक	• मृच्छकटिकम
भट्टी	• **रावणवध** (7वीं शताब्दी) में राम के जीवन की कहानी बताते हुए व्याकरण के नियमों का वर्णन किया गया है।
भर्तृमेंठ	• हयग्रीववध नामक कृति के लेखक को परवर्ती लेखकों और साहित्यिक आलोचकों के लेखन में संदर्भों और उद्धरणों के माध्यम से जाना जाता है।
दण्डी	• काव्यादर्शन और दशकुमारचरित
अमरसिंह	• संस्कृत शब्दकोश अमरकोश के लेखक।
विष्णुशर्मा	• पंचतंत्र। • यह एक परिष्कृत गद्य शैली में लिखा गया है जिसमें विनोदपूर्ण गीत डाले गए हैं। • इसमें प्रमुख पशु पात्रों के साथ व्यंग्यात्मक कहानियाँ हैं जो संभवत: वाकाटक साम्राज्य के शासनकाल के दौरान लिखी गई थीं।
माघ	• शिशुपाल-वध
विशाखादत्त	• मुद्राराक्षस और देवीचंद्रगुप्तम
श्री हर्ष	• नैषधीयचरितम्

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. प्राचीन भारत के विद्वानों/साहित्यकारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पाणिनि का संबंध पुष्यमित्र शुंग से है।
2. अमरसिंह का संबंध हर्षवर्धन से है।
3. कालिदास का संबंध चंद्रगुप्त-द्वितीय से है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(*a*) केवल 1 और 2

(*b*) केवल 2 और 3

(*c*) केवल 3

(*d*) 1, 2 और 3

2. प्राचीन भारत की निम्नलिखित में से किस पुस्तक में शुंग वंश के संस्थापक के पुत्र की प्रेम कहानी है?

(*a*) स्वप्नवासवदत्त

(*b*) मालविकाग्निमित्रम्

(*c*) मेघदूत

(*d*) रत्नावली

विज्ञान और गणित

इस काल के विचारकों को शून्य के सिद्धांत को विकसित करने और बाद में दशमलव प्रणाली के विकास के लिए जाना जाता है।

प्रमुख व्यक्तित्व	कार्य और विवरण
आर्यभट्ट	• बीजगणित के जनक और भारत में सबसे पहले ज्ञात खगोलशास्त्री। • आर्यभट्ट ने दो खगोलीय ग्रंथ लिखे, आर्यभटीय, (जिसमें खगोल विज्ञान और गणित शामिल हैं) और आर्यभटसिद्धांत। • वह संभवत: पाटलिपुत्र में रहते थे। • वर्ग और घन मूल को खोजने के लिए उनका दृष्टिकोण मानता है कि पूर्णांक का एक दशमलव स्थान मान होता है, यह साबित करता है कि भारतीय गणितज्ञ, अरब और यूरोपीय लोगों से बहुत आगे थे, जिन्होंने केवल अरबों से सीखने के बाद 12वीं शताब्दी में दशमलव स्थान मान का उपयोग करना शुरू किया था। • उन्होंने सूर्य ग्रहण के असली कारण की जांच की।

	• किसी ग्रह की कक्षा की गणना के लिए सही समीकरण विकसित करने और एक वर्ष की अवधि 365.2586805 दिनों तक का एक अविश्वसनीय रूप से सटीक अनुमान प्रदान करने के अतिरिक्त, वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। • उन्होंने ज्या फंक्शन की खोज की, उन्हें खगोल विज्ञान में लागू किया, और त्रिकोणमिति के सिद्धांतों की स्थापना की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 0 से 90 डिग्री तक के कोणों के लिए ज्या त्रिकोणमितीय अनुपात के लिए तालिकाएँ बनाई। • उन्होंने एक वृत्त की विभिन्न विशेषताओं पर चर्चा की और 3.1416 से 4 दशमलव स्थानों तक पाई का अत्यधिक सटीक मान प्रदान किया। • उन्होंने पूर्णांकों और अनिश्चित समीकरणों से संबंधित समस्याओं को हल करने की तकनीक भी विकसित की।
वराहमिहिर (चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्नों में से एक)	• **बृहत् संहिता** की रचना की थी। • उनकी प्रसिद्धि की रचना पंचसिद्धांतिका, जिसमें पांच खगोलीय विद्यालयों की गणना की गई। • बृहत्संहिता एक विश्वकोश ग्रंथ है जिसमें विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसमें तलवारों को धारदार करना, पौधों में बिना मौसम फल कैसे उगाना है, और मूल्यवान धातुओं और पत्थरों के मूल्य का निर्धारण कैसे करना शामिल है।
भास्कर।	• आर्यभटीय पर एक टीका लिखी, आर्यभटीय को अश्मक-तंत्र और अश्मकीय कहा, और आर्यभट्ट के अनुयायियों को अश्मकीय कहा।
ब्रह्मगुप्त	• ज्यामिति में महत्वपूर्ण सुधार किए। • उन्होंने एक चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल, एक त्रिभुज की परिधि और एक चक्रीय चतुर्भुज के विकर्णों की भुजाओं के संदर्भ में गणना करने के लिए सूत्र विकसित किए। • तर्कसंगत पक्षों के साथ चक्रीय चतुर्भुज बनाने की तकनीक का पता लगाने वाले वे पहले गणितज्ञ थे। • उन्होंने खंडखद्यक (665 ई.) भी लिखा, जिसमें ग्रहों के देशांतर, दैनिक, और ब्रह्मस्पुटसिद्धांत (628 ई.) जैसे विषयों को शामिल किया गया, जिसमें गुरुत्वाकर्षण के नियम का संदर्भ दिया गया।

चिकित्सा विज्ञान

रसायन विज्ञान में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जैसा कि चिकित्सा प्रयोजनों के लिए धातु के मिश्रण के उपयोग और वराहमिहिर और अन्य लोगों द्वारा लोहे व पारे के उपयोग के संदर्भों से प्रमाणित है।

व्यक्तित्व	कार्य
पलकाप्य	• हस्त्यायुर्वेद या पलकाप्य द्वारा लिखित पशु चिकित्सा विज्ञान।
धनवंतरी	• आयुर्वेद पर एक पुस्तक की रचना की थी।
कश्यप	• एक चिकित्सक, जिसने अपनी आयुर्वेदिक विशेषज्ञता को सातवीं शताब्दी में महिलाओं और बच्चों की बीमारियों को संबोधित करने वाली पुस्तक के रूप में प्रदर्शित की।
वाग्भट	• एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक चिकित्सक और चरक छात्र जो लगभग 600 ई. में रहते थे। • उन्होंने अष्टांगसंग्रह (शाब्दिक रूप से, 'चिकित्सा पर पुस्तक') और अष्टांगहृदय (शाब्दिक रूप से, 'हृदय का औषधि') की रचना की।
सुश्रुत	• शल्य चिकित्सा पर आधारित सुश्रुत संहिता के प्रसिद्ध लेखक। • साहित्य से प्लास्टिक सर्जरी का भी संदर्भ मिलता है, जिसमें राइनोप्लास्टी की विस्तृत व्याख्या शामिल है, जिसमें कटी हुई नाक को पुनर्निर्मित करने के लिए त्वचा के एक फ्लैप को लगाया जाता है, और फटे कान के लोब को फिर से बनाया जाता है। • यह शव विच्छेदन के माध्यम से मानव शरीर रचना का अध्ययन करने के संदर्भ में भी है।

गुप्तों का पतन

- **हूण आक्रमण:** स्कंदगुप्त के कमजोर उत्तराधिकारी, 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सत्ता में हूणों के उदय को रोकने में असमर्थ थे और हूण राजा तोरमाण पश्चिमी भारत के एक बड़े हिस्से पर कब्जा करने में सक्षम थे, जो मध्य भारत में भोपाल के पास एरण तक फैला हुआ था।
- **आर्थिक समृद्धि में ह्रास:** बाद के गुप्त राजाओं के सोने के सिक्के, जिनमें सोना कम और मिश्र धातु अधिक है, साम्राज्य के शनैः-शनैः आर्थिक पतन का संकेत हैं।
  - उत्तर-गुप्त काल में सिक्के भी धीरे-धीरे लुप्त होते प्रतीत होते हैं।
  - परिणामस्वरूप, राजाओं ने भुगतान के रूप में भूमि के लिए पैसे का आदान-प्रदान करना शुरू कर दिया।
  - इसने साम्राज्य के सामंती झुकाव को और भी बदतर बना दिया और दर्शाया कि केंद्रीय सरकार का नियंत्रण कम था।
  - गुप्तों को पश्चिमी भारत की क्षति से और अधिक समस्या हुई क्योंकि विदेशी व्यापार और वाणिज्य से समृद्ध लाभ भी घट गया।
- **सामंतों का उदय:** सामंतों के उदय ने गुप्तों के प्रभाव को गंभीर रूप से क्षीण कर दिया।
- मिहिरकुल पर विजय प्राप्त करने के बाद, सामंतवादी औलिकरा वंश के सदस्य, मालवा के यशोधर्मन ने गुप्तों के शासन का सफलतापूर्वक मुकाबला किया और लगभग पूरे उत्तर भारत पर विजय प्राप्त करने के प्रतीक के रूप में विजय के 532 स्तंभों का निर्माण किया।
- **इस तथ्य के बावजूद कि यशोधर्मन का शासनकाल संक्षिप्त था, इसने गुप्त साम्राज्य की प्रतिष्ठा और छवि को अत्यधिक क्षति पहुँचाई।**
- इस योजना के आधार पर, अन्य सामंतों ने भी गुप्तों के खिलाफ विद्रोह किया और धीरे-धीरे अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की।

वाकाटक

- एक स्थानीय शक्ति वाकाटक, जिसने 250 से अधिक वर्षों के लिए दक्कन के राजनीतिक प्रतियोगिता में प्रभावी रूप से भाग लिया। उन्होने प्रायद्वीपीय भारत में सातवाहनों को पदस्थापित किया, विशेष रूप से उत्तरी महाराष्ट्र और विदर्भ में।
  - **उत्तरी भारत में गुप्त और दक्कन में वाकाटक समकालीन थे।**
  - पुराणों में राजवंश को विंध्यक के रूप में जाना जाता है।
- **वाकाटक, जो विष्णुवृद्ध गोत्र से संबंधित थे और स्वयं ब्राह्मण थे,** ब्राह्मणवादी धर्म के उत्साही अनुयायी थे और उन्होंने अनगिनत वैदिक यज्ञ किए।
- ब्राह्मणों को दिए गए असंख्य ताम्रपत्र भूमि अनुदान लाइसेंसों के आधार पर उनके इतिहास को एक साथ सम्बद्ध किया जा सकता है।
- हालाँकि उन्होंने ब्राह्मणवाद का समर्थन किया, लेकिन अपनी उदार मानसिकता के कारण उन्होंने बौद्ध धर्म को भी संरक्षण दिया।
- शाही गुप्तों, पद्मावती के नागों, कर्नाटक के कदंबों और आंध्र के विष्णुकुंडिनों के वाकाटकों के साथ वैवाहिक संबंध थे।
- वाकाटक साम्राज्य संस्कृति के मामले में महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने पूरे दक्षिण भारत में ब्राह्मणवादी संस्कृति के प्रसार के वाहक के रूप में कार्य किया।
- वाकाटक साहित्य, कला और स्थापत्य का समर्थन करने के लिए जाने जाते हैं।
- उनके काल के सार्वजनिक कार्यों और स्मारकों ने भारतीय संस्कृति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।
- वाकाटक राजा हरिषेण के निर्देशन में, अजंता की गुफाओं (एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल) के बौद्ध रॉक-कट विहार और चौत्य बनाए गए थे।
- तिगवा और नचना-कुठार में कुछ मंदिरों के निर्माण का श्रेय भी उन्हीं को दिया जाता है। चित्रकला के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।
- महाभिनिष्क्रमण और अजंता गुफा संख्या XVI, XVII, और XIX दर्शाती चित्रकला का, चित्रकला के क्षेत्र में वाकाटक उत्कृष्टता का उदाहरण हैं।
- केवल वाकाटक सम्राटों ने ही नहीं, बल्कि हस्तिभोज और वराहदेव जैसे उनके मंत्रियों या राज्यपालों ने भी अजंता की गुफा के कलाकारों को अपना संरक्षण दिया।
- सर्वसेन और प्रवरसेन II सदृश राजा, सेतुबंधकव्य और हरिविजय के प्रसिद्ध लेखक, प्रसिद्ध प्राकृत कवि भी थे।

राजनीतिक इतिहास

विंध्यशक्ति प्रथम (लगभग 250-270 ई.)

- वाकाटक राजवंश के संस्थापक, जो संभवतः पुरिका से शासन करते थे।
- उन्हें कई वैदिक बलिदानों को पूरा करने का श्रेय दिया जाता है, जिससे ब्राह्मणवादी परंपराओं को पुनर्स्थापना होती है जो परवर्ती सातवाहनों के समय क्षीण हो गई थी।

- उन्हें एक द्विज के रूप में संदर्भित किया गया है और हरिसेन-काल के अजंता अभिलेखों में उनकी सैन्य शक्ति के लिए सराहना की गई है।

प्रवरसेन (270-330 ई.)

- **विंध्यशक्ति के पुत्र और उत्तराधिकारी**, जिन्हें वाकाटकों की सच्ची महिमा और शक्ति का प्रवर्तक माना जाता है।
- **कंचनक में अपनी राजधानी के साथ**, उसने दक्षिण की ओर विदर्भ और आसपास के दक्कन क्षेत्रों (आधुनिक नचना) में साम्राज्य का विस्तार किया।
- उसने उत्तर में बुंदेलखंड से दक्षिण में हैदराबाद तक सैन्य कौशल और विवाह संबंधों के माध्यम से अपने प्रभुत्व का विस्तार किया।
- अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए, उन्होंने एक अश्वमेध यज्ञ और वाजपेय यज्ञ किया।
- वह 'सम्राट' की सर्वसाधारण उपाधि का उपयोग करने वाले एकमात्र वाकाटक राजा थे, जबकि अन्य सभी राजा "महाराजा" का प्रयोग करते थे।
- प्रवरसेन के चार पुत्रों ने उनकी मृत्यु के बाद साम्राज्य को विभाजित कर दिया और विभिन्न जिलों में स्वायत्त संप्रभुता स्थापित की।
- वाकाटकों को 340 ई. तक दो शाखाओं में विभाजित कर दिया गया था, जिसमें एक शाखा पर नंदिवर्धन और दूसरी पर वत्सगुल्मा का शासन था।

नंदीवर्धन शाखा

रुद्रसेन प्रथम (340 - 365 ई.)

- वह वाकाटक नंदीवर्धन शाखा के संस्थापक थे, जिसे नंदीवर्धन (नागपुर के निकट) से शासित किया गया था।
- उसके शासनकाल के दौरान घटी घटनाओं के बारे में बहुत कम जानकारी है क्योंकि उस काल का कोई अभिलेख नहीं मिला है।

पृथ्वीसेन प्रथम (365-390 ई.)

- ऐसा प्रतीत होता है कि पद्मपुरा उस समय एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र था।
- अपना अधिकांश समय अपना राज्य स्थापित करने में व्यतीत किया। चंद्रगुप्त द्वितीय के साथ उनका राजनीतिक गठबंधन, जिसके द्वारा उन्होंने मालवा और काठियावाड़ के शक क्षत्रपों को उखाड़ फेंका, उनके शासनकाल का उल्लेखनीय पक्ष था।

रुद्रसेन॥ (390-395 ई.)

- अप्रत्याशित मृत्यु से पहले मात्र पांच वर्षों तक शासन किया। दिवाकरसेन, दामोदरसेन और प्रवरसेन नामक तीन पुत्र थे।

प्रवरसेन-॥ (395-440 ई.)

- अधिकांश वाकाटक अभिलेखों के दौरान वह सत्ता में था।
- इस तथ्य के बावजूद कि प्रभावतीगुप्त ने अपने अधिकार में अभिलेख प्रकाशित करना जारी रखा और अपने पुत्र के शासनकाल के अंत में उसकी मृत्यु हो गई, उसके एक दर्जन ताम्रपत्र पूरे विदर्भ में विभिन्न स्थानों में पाए गए।
- उन्हें एक नया शहर, प्रवरपुर बनाने का श्रेय दिया जाता है, जिसे वर्तमान वर्धा जिले में पौनार के नाम से जाना जाता है।
- शिव के अनुयायी होने के बावजूद, उन्होंने सेतुबंध/रावणवाह, एक प्राकृत काव्य लिखा, जो राम की गुणगान करता है और राम की लंका यात्रा और रावण पर विजय की गाथा बताता है।

नरेंद्रसेन (440 - 460 ई.)

- प्रवरसेन द्वितीय की मृत्यु के पश्चात, अनुमानत: सत्ता के लिए संघर्ष हुआ जिसमें नरेंद्रसेन की जीत हुई।
- अपने शासनकाल के प्रारंभ और अंत दोनों में, उसे नल राजा भवदत्तवर्मन के आक्रमण का सामना करना पड़ा।

पृथ्वीसेन-॥ (460 - 480 ई.)

- वाकाटक राजवंश की नंदीवर्धन शाखा के अंतिम ज्ञात राजा को वाकाटकों के सुषुप्त भाग्य को जागृत करने का श्रेय दिया जाता है।

वत्सगुल्मा शाखा

- दूसरी सबसे बड़ी वाकाटक शाखा की वत्सगुलमा शाखा की राजधानी, वत्सगुल्मा (महाराष्ट्र के अकोला जिले में आधुनिक वाशिम) में थी।
- प्रवरसेन प्रथम के पुत्र सर्वसेन ने वाकाटकों के पूर्वजों की वत्सगुल्मा शाखा की स्थापना की।

सर्वसेन (330-355 ई.)

- धर्म-महाराजा की उपाधि धारण की।
- उन्हें एक प्रसिद्ध प्राकृत कवि माना जाता था, और बाद के लेखकों ने उनके लुप्त हो चुकी रचना, हरविजय की प्रशंसा की। उनकी कविताओं को कुछ स्थानों पर गाथासत्तसई में शामिल किया गया था।

विंध्यशक्ति II/विंध्यसेना (355 - 400ई.)

- उनके साम्राज्य में मराठवाड़ा क्षेत्र शामिल प्रतीत होता है, जिसमें विदर्भ का दक्षिणी भाग, हैदराबाद राज्य का उत्तरी भाग और कुछ अन्य निकटवर्ती प्रांत शामिल हैं।
- उसने लगभग चार दशकों तक शासन किया।
- ऐसा माना जाता है कि उन्होंने कुंतला के शासकों, बनवासी (उत्तर कर्नाटक) के कदंबों को उखाड़ फेंका था।

हरिषेण (475-500 ई.)

- वत्सगुलमा वंश के अंतिम राजा ने दो वाकाटक शाखाओं को एकजुट किया और कुंतल, अवंती, कलिंग, कोसल, कोंकण और आंध्र पर नियंत्रण कर अपने क्षेत्र का विस्तार किया।
- उसके शासन के दौरान, अजंता की गुफाओं को नष्ट कर दिया गया था।
- उनके मंत्री वराहदेव का उल्लेख गुफा XVI और घटोत्कच गुफा में एक अभिलेख में मिलता है।
- वाकाटक के सरकारी ढांचे के बारे में कम जानकारी उपलब्ध है। लेकिन इसमें गुप्तों के साथ बहुत समानता है।
- इसके अतिरिक्त, उनका साम्राज्य राज्यों या राष्ट्रों में विभाजित था जो, राज्याधिकारियों या राज्य के राज्यपालों द्वारा शासित थे।
- विषय, जिन्हें आगे आहार और भोग/भुक्तियों में विभाजित किया गया था, प्रांतों से बनाए गए थे।
- माना जाता है कि सर्वाध्यक्ष, एक अधिकारी है जो कुलपुत्रों या अधीनस्थ अधिकारियों को नियुक्त और प्रबंधित करता है।
- हरिसेन द्वितीय की मृत्यु के साथ वाकाटकों का उत्कर्ष समाप्त हो गया, और मालवा के नालों, कदंबों, कलचुरियों और यशोधर्मन ने अपना अधिकार कर लिया।

❖ ❖ ❖

14 हर्ष का उदय

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत

- गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद, उत्तर भारत कई जंगी राज्यों में विभाजित हो गया। कई छोटे गणराज्यों की स्थापना के साथ, हूणों (आधुनिक पंजाब, राजस्थान और मालवा) पर विजय प्राप्त करने वाले क्षेत्रों के अपवाद के साथ, क्षेत्रीय पहचान अधिक स्पष्ट हुई।
- सौराष्ट्र (गुजरात) में, मैत्रकों ने अपनी राजधानी के रूप में वल्लभी के साथ अपना साम्राज्य स्थापित किया।
- **मौखरियों ने आगरा और अवध को एक अलग, स्वायत्त राष्ट्र के रूप में संगठित किया।**
- पश्चिमी दक्कन में, वाकाटकों ने अपने प्रभुत्व की स्थिति को पुनः प्राप्त कर लिया।
- पुष्यभूतियों ने थानेश्वर को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित किया।
- यह दिल्ली के उत्तर में सतलुज और यमुना नदियों के बीच स्थित था।
- यह हर्ष के काल में प्रसिद्ध हुआ। 606 से 647 ईसवी तक, हर्ष ने शासन किया।

मैत्रक

- मैत्रक गुप्तों के प्रमुख सहायक थे जिन्होंने गुजरात में सौराष्ट्र पर शासन करते हुए पश्चिमी भारत में एक अलग राज्य की स्थापना की।
- ध्रुवसेन द्वितीय मैत्रकों का सबसे शक्तिशाली सम्राट था और हर्षवर्धन का समकालीन था, जिसने अपनी बेटी से शादी की थी।
- ह्वेन त्सांग के अनुसार, ध्रुवसेन द्वितीय ने प्रयाग (इलाहाबाद) में हर्ष की सभा में भाग लिया था।
- मैत्रकों ने वल्लभी को अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया, जो शिक्षा के एक प्रमुख केंद्र के रूप में भी प्रसिद्ध थी।
- यह संपन्न व्यापार और वाणिज्य के साथ एक बंदरगाह शहर भी था।
- मैत्रकों ने आठवीं शताब्दी के मध्य तक शासन किया, अरब आक्रमणों ने उनकी स्थिति को कमजोर कर दिया।



मौखरी

- मौखरी भी गुप्त जागीरदार शासक थे जो सामंत उपाधि का प्रयोग करते थे।
- पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक शहर कन्नौज पर शासन किया, जिसने उत्तर भारत के राजनीतिक केंद्र के रूप में उत्तरोत्तर पाटलिपुत्र को विस्थापित किया।
- हर्षवर्धन के विजय अभियान ने कन्नौज के राज्य को पुष्यभूतियों के साथ जोड़ दिया, और हर्ष ने अपनी राजधानी को थानेसर (कुरुक्षेत्र) से कन्नौज में स्थानांतरित कर दिया।
- पतंजलि की पुस्तक में मौखरियों का भी उल्लेख है।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. गुप्तों के पतन से लेकर सातवीं शताब्दी की शुरुआत में हर्षवर्धन के उदय तक, उत्तर भारत में निम्नलिखित में से कौन सा राज्य सत्ता पर काबिज था?

1. मगध के गुप्त वंश
2. मालवा के परमार

3. थानेसर के पुष्यभूति
4. कन्नौज के मौखरी
5. देवगिरी के यादव
6. वल्लभी के मैत्रक

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए

(*a*) 1, 2 और 5
(b) 1, 3, 4 और 6
(*c*) 2, 3 और 4
(*d*) 5 और 6

पुष्यभूति

- पुष्यभूति, जिन्होंने थानेश्वर से शासन किया, वर्धन वंश के संस्थापक थे। वह गुप्त साम्राज्य में एक सैन्य नेता था और गुप्तों के बाद शक्तिशाली हो गया।
- **पुष्यभूति वंश के बारे में जानकारी के दो प्रमुख स्रोत** राजा हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा लिखित एक गद्य हर्षचरित और चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग का विवरण है।
  - **किसी राजा की पहली आधिकारिक जीवनी बाण की हर्षचरित थी**। भारत में, इसने एक नई साहित्यिक शैली की शुरुआत की।
- प्रभाकर वर्धन (580-605 ई.) के सत्ता में आने के बाद पुष्यभूति परिवार शक्तिशाली हो गया।
- गुर्जरों और हूणों से लड़ते हुए प्रभाकर वर्धन ने गुजरात और मालवा तक अपना शासन स्थापित किया।

राजवर्धन (605–606 ई.)

- प्रभाकर के निधन के बाद उनके सबसे बड़े बेटे राजवर्धन (605-606 ई.) ने राज्य ग्रहण किया। बंगाल के गौड़ नरेश शशांक ने उसे धोखे से मार डाला।
- परिणामस्वरूप, उनके छोटे भाई हर्षवर्धन को थानेसर के राजा के पद पर आसीन किया गया।

हर्षवर्धन

- हर्ष ने अपने साम्राज्य में शामिल करने के लिए अपने पड़ोसियों पर विजय प्राप्त की क्योंकि उसने छोटे राज्यों के संग्रह की भेद्यता को पहचाना था।
- **हर्ष द्वारा** राजधानी **थानेसर को कन्नौज में स्थानांतरित किया** गया क्योंकि **थानेसर** उत्तर पश्चिम से आने वाले **खतरों के बहुत करीब था। कन्नौज गंगा के मैदान के पश्चिमी उपजाऊ कृषि क्षेत्र में स्थित था**।
- **हर्ष की सैन्य विजय:** हर्ष का शासन कई सैन्य विजयों से चिह्नित था।
  - हर्ष ने शशांक को हरा कर उड़ीसा में कोंगोडा के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण स्थापित किया।
  - वह उत्तर-पश्चिम में सिंध के शासक और पश्चिम में वल्लभी के खिलाफ विजयी हुआ था।
  - उसने कश्मीर पर अपनी शक्ति का प्रभाव डाला।
  - उसे चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के हाथों करारी हार का सामना करना पड़ा।
- नर्मदा उसके साम्राज्य की दक्षिणी सीमा थी। पूर्व में, भास्करवर्मन (कामरूप के राजा) और ध्रुवभट्ट ने उनकी अधीनता स्वीकार की।
  - विंध्य के वन प्रमुखों ने भी उसके आधिपत्य को स्वीकार किया।



हर्ष का प्रशासन

अपनी सरकार के अधिक सामंती और विकेंद्रीकृत होने के अपवाद के साथ, **हर्ष ने अपने साम्राज्य पर इस तरह से शासन किया जो गुप्तों के समान था।**

- कामरूप के भास्करवर्मन, वल्लभी के ध्रुवभट्ट, मगध के पूर्णवर्मन और जालंधर की उदिता हर्ष के प्रमुख सामंत थे।
- उन्हें एक बड़ी सेना का समर्थन प्राप्त था, जिसे जरूरत के समय में सामंतों की सेना के योगदान से और मजबूत किया गया।

- पैदल सेना, अश्वारोही, रथ और हाथी सेना शामिल थे।

- **आम तौर पर अधिकारियों को उनके वेतन के बदले भूमि को पुरस्कार में देने की प्रथा संभवतः हर्ष के समय शुरू हुई।**
- पुरोहितों को भूमि दान में दी जाने लगी।

ह्वेनसांग के अभिलेखों के अनुसार, हर्ष ने व्यक्तिगत रूप से प्रशासन का निरीक्षण किया और अपने दिन को तीन खंडों में विभाजित किया, जिसमें पहला प्रशासनिक कार्यों के लिए और दूसरा दो धार्मिक गतिविधियों के लिए समर्पित था।

- वह अक्सर अपने क्षेत्र का निरीक्षण दौरा करता रहता था।
  - ह्वेन त्सांग, के यात्रा विवरणों से पता चलता है कि उसे भी लूट लिया गया था, ऐसे में कानून व्यवस्था की लचर स्थिति का पता चलता है।
- भूमि के नियम सख्त थे, और डकैती को आमतौर पर राजद्रोह के बाद दूसरे स्थान पर रखा गया था। डाकू को सजा के रूप में दाहिना हाथ काट दिया जाता था।
- हालाँकि, ऐसा लगता है कि बाद में, बौद्ध धर्म के प्रभाव में, दंड की गंभीरता को कम कर दिया गया और अपराधियों को आजीवन कारावास की सजा दी जाने लगी।

प्रमुख अधिकारी	विवरण
अवंती	• विदेश संबंध और युद्ध मंत्री
सिंहनाद	• प्रमुख कमांडर
कुंतल	• मुख्य घुड़सवार सेना अधिकारी
स्कन्दगुप्त	• हाथी सेना के मुख्य कमांडेंट
दीर्घध्वज	• रॉयल संदेशवाहक
बानो	• अभिलेखों का रखवाला
महाप्रतिहार	• पैलेस गार्ड के प्रमुख
सर्वगत	• गुप्त सेवा विभाग

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. चीनी यात्री युआन च्वांग (ह्वेन त्सांग) ने जिस समय भारत की सामान्य परिस्थितियों और संस्कृति को देखा और वर्णन किया। इस संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

1. सड़कें और नदी-मार्ग लूटपाट से पूरी तरह सुरक्षित थे।
2. जहां तक अपराधों के लिए दंड का संबंध है। आग, पानी और जहर की अग्निपरीक्षा किसी व्यक्ति की निर्दोषता या अपराध को निर्धारित करने के साधन थे।
3. व्यापारियों को फेरी और बैरियर स्टेशनों पर शुल्क देना पड़ता था।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

(*a*) केवल 1 **(*b*) केवल 2 और 3**

(*c*) केवल 1 और 3 (*d*) 1, 2 और 3

प्रांतीय प्रशासन

इनके साम्राज्य में विभिन्न प्रांत थे। कितने प्रांत थे जानकारी का अभाव है।

- प्रांत के लिए भुक्ति शब्द प्रयोग किया जाता था।
- प्रत्येक भुक्ति को अनेक विषयों में विभाजित किया गया। वे जिलों से मिलते जुलते थे।

कर लगाना

- **हर्ष के शासन के दौरान, तीन अलग-अलग प्रकार के कर लगाए गए थे: भाग, हिरण्य और बली।**
- भाग भूमि कर का एक रूप था। भू-राजस्व उत्पादक की कुल आय का छठा भाग होता था।
- किसानों और व्यापार मालिकों ने लेवी का भुगतान किया, जिसे हिरण्य(नकद में) के रूप में जाना जाता है।

ह्वेन त्सांग के अनुसार, कर न्यूनतम थे और आय को निम्नलिखित चार श्रेणियों में बांटा जाता था:

1. एक भाग राजा के लिए रखा गया
2. दूसरा भाग विद्वानों के लिए आरक्षित
3. अधिकारियों और लोक सेवकों की बंदोबस्ती के लिए तीसरा भाग
4. धार्मिक उद्देश्यों के लिए चौथा भाग।

समाज

- **शूद्र मुख्य रूप से किसान थे,** और उनकी स्थिति पहले की तुलना में बेहतर थी।
- **वे पहले विशेष रूप से** अन्य तीन वर्णों का समर्थन करने के लिए अभिप्रेत थे, लेकिन आज वे अपने दम पर कृषि करने के लिए स्वतंत्र थे।
  - **चांडाल जैसे अस्पृश्य दयनीय** परिस्थितियों में थे और कई तरह की दुर्बलताओं का अनुभव करते थे।
- **प्रत्येक गांव का मुखिया एक अधिकारी होता था जिसे सर्व-पल्ली-पट्टी के नाम से जाना जाता था** और वन रक्षकों को वनपाल कहा जाता था।
- **बौद्ध अध्ययन का एक महत्वपूर्ण केंद्र,** नालंदा था।

- **670 शताब्दी में, एक अन्य चीनी यात्री इत्सिंग भी भारत आए और दस साल** नालंदा मठ में रहे।
  - उनका कहना है कि नालंदा के समर्थन में 200 गांवों ने योगदान दिया।
- **ह्वेनत्सांग के लेखों से महिलाओं की स्थिति और पारंपरिक वैवाहिक व्यवस्था के बारे में जान सकते हैं।**
  - स्त्रियाँ पर्दा करती थीं। हालाँकि, ह्वेन त्सांग ने टिप्पणी की कि उच्च वर्ग पर्दा शासन का पालन नहीं करता था।
  - **सती प्रथा मौजूद थी।** प्रभाकर के बाद वर्धन की मृत्यु हो गई, उनकी विधवा यसोमतीदेवी ने खुद को आग लगा ली।
- भारत के शहरों, कस्बों और गांवों का वर्णन ह्वेन त्सांग ने उनके लेआउट, सौंदर्य और सुरक्षा उपायों के संदर्भ में किया है।
  - उनके अनुसार, भारत चीन के समान अनगिनत गाँवों, कई कस्बों और विशाल शहरों का घर था।
  - इस बात पर जोर दिया कि अपनी लोकप्रियता खोने के बाद कन्नौज ने पाटलिपुत्र को कैसे बदल दिया।
- **ह्वेन त्सांग के अनुसार, अधिकांश नगरों की बाहरी दीवारें और भीतरी द्वार थे।** ऊंची, चौड़ी दीवारों के बावजूद गलियां छोटी थीं।
  - आवासीय घरों की छज्जे लकड़ी से बने होते थे और चूने के गारे से ढके होते थे।
  - स्वच्छता और पवित्रता के लिए फर्श को गाय के गोबर से लीपा जाता था।
- गंगा नदी के तट पर, हर्ष ने कई विहार, मठ और स्तूप बनवाए।
- हर्ष ने बीमारों और यात्रियों के रहने के लिए परोपकारी सुविधाओं का निर्माण किया।

धार्मिक नीति

- 631 सीई तक, हर्ष एक शिव उपासक था। लेकिन अपनी बहन राज्यश्री और बौद्ध भिक्षु ह्वेनत्सांग के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म अपना लिया। **वह महायान संप्रदाय के अनुयायी थे।**
- प्रयाग में (गंगा और यमुना के संगम पर), हर्ष ने **पंचवर्षीय महामोक्ष परिषद** सभाएँ करवाई।
- उन्होंने अपना भाग्य, वंचितों, वैदिक विद्वानों और बौद्धों को दे दिया।
- सभा के चार दिनों में से प्रत्येक पर, हर्ष ने बौद्ध भिक्षुओं को शानदार उपहार भेंट किए।

हर्ष के समय में कला और साहित्य का संरक्षण

- हर्ष ने कला और संस्कृति को संरक्षित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। इनके समय में इन उद्देश्यों के लिए राज्य की आय का एक चौथाई उपयोग करता था।
- **हर्षचरित और कादंबरी के लेखक, वाणभट्ट हर्ष के दरबारी कवि थे।**
- **सम्राट ने स्वयं जो नाटक लिखे, जैसे प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानंद,** नाटककार के रूप में उनकी प्रतिभा को प्रदर्शित करते हैं।
- **हर्ष ने उदारतापूर्वक उन्नत शिक्षा के लिए उपहार दिए।** मंदिरों और मठों ने शिक्षण संस्थानों के रूप में कार्य किया।

❖ ❖ ❖

15 पूर्व में साम्राज्य

चौथी से सातवीं शताब्दी तक की अवधि एक उन्नत ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रसार, राज्य प्रणालियों के गठन और पूर्वी मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पूर्वी बंगाल, दक्षिण पूर्व बंगाल और असम में सामाजिक वर्गों के उभार के लिए उल्लेखनीय है।

बंगाल

- **पांचवीं और छठी शताब्दी में, वर्तमान में गंगा और ब्रह्मपुत्र के बीच बांग्लादेश को शामिल करने वाला क्षेत्र एक उपजाऊ और अपेक्षाकृत संस्कृत-शिक्षित क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ।**
- गुप्त शासक, जो 550 ईस्वी के आसपास स्वायत्तता प्राप्त करते प्रतीत होते हैं, ने उत्तरी बंगाल पर आक्रमण किया; इसमें से कुछ को कामरूप के राजाओं ने भी अपने अधीन कर लिया था।
  - **सामंत महाराजा के रूप में जाने जाने वाले स्थानीय जागीरदारों** ने अपने स्वयं के प्रशासनिक तंत्र और सैन्य संरचना की स्थापना की थी।
- **समता ब्रह्मपुत्र द्वारा निर्मित बंगाल का डेल्टा भाग है।**
  - 525 ई. के आसपास, यह क्षेत्र यथोचित रूप से संगठित राजनीति बन गया जिसमें समता और वंगा का एक भाग शामिल था जो समता की पश्चिमी सीमा पर स्थित था।
- **साम हरदेव जैसे राजाओं द्वारा शासित समता या वंगा के राज्य ने** छठी शताब्दी के दूसरे भाग में बड़ी संख्या में सोने के सिक्कों को प्रचलित किया।
- **लगभग 637 ई. में राजा शशांक के निधन के बाद, बंगाल ने लगभग एक सदी तक राजनीतिक उथल-पुथल देखी।**
- कन्नौज के यशोवर्मन, कश्मीर के ललितादित्य और एक चीनी सेना द्वारा इस क्षेत्र पर आक्रमण किया गया था। बंगाल का अधिकांश भाग असम के शासक भास्करवर्मन के हाथों में आ गया, जबकि हर्ष ने बिहार और उड़ीसा के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।
- धर्मपाल के खलीमपुर ताम्रपत्र के अनुसार, पाल वंश के संस्थापक गोपाल को अंततः लोगों ने मत्स्य न्याय से मुक्त होने के बाद चुना था।

पाल साम्राज्य

- किंवदंती के अनुसार, गोपाल को एक "राक्षस" की हत्या करने की क्षमता के कारण चुना गया था, जिसने पहले उनके जैसे चुने हुए लोगों की हत्या की थी।
- **इस तथ्य के बावजूद कि गोपाल का कोई शाही पूर्वज नहीं था, वह एक राज्य स्थापित करने में सफल रहा।**
  - कई स्वतंत्र प्रमुखों/राजाओं/शासकों ने गोपाल की राजनीतिक शक्ति को तुरंत पहचान लिया।
- उनका प्रारंभिक राज्य वंगा में था, जो पूर्वी बंगाल में है।
- नौवीं और प्रारंभिक बारहवीं शताब्दी के बीच, पालों ने पूर्वी भारत को पाटलिपुत्र से नियंत्रित किया।

पाल शासक

- गोपाल प्रथम के बाद उनके पुत्र धर्मपाल (770-815 सीई) आए, जिन्होंने एक दुर्जेय बल के रूप में पाल साम्राज्य की स्थापना की।
- वह बंगाल और बिहार का प्रत्यक्ष शासक था।
- कन्नौज पर उसके प्रतिनिधि का शासन था।
- उसके आधिपत्य को पंजाब, राजपूताना, मालवा और बरार के शासकों ने मान्यता दी थी।
- **उन्होंने परमेश्वर,** परमभट्टारक और महाराजाधिराज जैसी उपाधियाँ धारण कीं।

धर्मपाल

- धर्मपाल बौद्ध धर्म के बड़े समर्थक थे।
- **उन्होंने बिहार के भागलपुर क्षेत्र में विक्रमशिला मठ की स्थापना की,** जो बौद्ध शिक्षा और संस्कृति के एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
- **आधुनिक पहाड़पुर में, उन्होंने सोमापुर** (वर्तमान बांग्लादेश) में एक बड़े विहार का निर्माण किया।
- **धर्मपाल ने** बिहार के ओदंतपुरी में एक मठ भी स्थापित किया।
  - उन्होंने बौद्ध लेखक हरिभद्र को प्रश्रय भी दिया।

देवपाल



- **देवपाल (810-850), धर्मपाल के उत्तराधिकारी,** ने साम्राज्य का विस्तार किया और हिमालय से विंध्य और पूर्वी से पश्चिमी महासागरों तक अपने साम्राज्य को विस्तृत किया।
- **उनके शिलालेखों से संकेत मिलता है कि उनके सैन्य अभियान उन्हें पश्चिम में कम्बोज** और दक्षिण में विंध्य तक ले गए, और उन्होंने उत्कलों का वध किया, प्राग्ज्योतिष पर विजय प्राप्त की, हूणों के आक्रमण को शांत किया, और द्रविड़ों और गुर्जरों के अहंकार को समाप्त कर दिया।
- **देवपाल भी बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।**
- पालों ने देवपाल के समय में कुछ समय के लिए असम (कामरूप या प्राग्ज्योतिष के रूप में जाना जाता था) पर शासन किया।
- **पाल वंश का अवसान उनके तीन उत्तराधिकारियों** – राज्यपाल, गोपाल तृतीय और विग्रामपाल द्वितीय के शासन के दौरान तेज हो गया था।
- **हालाँकि, राजवंश के शासन को विग्रामपाल द्वितीय के पुत्र महिपाल प्रथम द्वारा पुनर्जीवित किया गया था।**
- उनके काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना 1020 और 1025 सीई के बीच राजेंद्र चोल द्वारा उत्तर भारत पर आक्रमण था।
  - **हालाँकि, गंगा के पार चोलों के अभियान को महिपाल प्रथम द्वारा रोका गया था।**
- **महीपाल के 15 साल के शासनकाल के बाद चार महत्वहीन सम्राटों ने शासन किया।**
- रामपाल राजवंश के खोए हुए गौरव को बहाल करने का प्रयास करने वाले अंतिम शासक थे।
  - उन्होंने लगभग 53 वर्षों तक शासन किया, और उनकी मृत्यु के बाद, पाल वंश केवल मगध (बिहार) के एक क्षेत्र तक ही सीमित था और केवल कुछ ही समय तक चला।
- **सेन वंश के विजयसेन, जो तब तक उत्तरी बंगाल में सत्ता में आ चुके थे, ने बंगाल के अंतिम सम्राट,** मदनपाल (1130-1150 सीई) को बेदखल कर दिया और अपनी वंशवादी सत्ता स्थापित की।

धर्म के प्रति नीति

- **पाल महायान बौद्ध धर्म के कट्टर समर्थक थे। पाल वंश के संस्थापक धर्मपाल को बौद्ध शिक्षक हरिभद्र से आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।**
- बंगाल उन कुछ स्थानों में से एक था जहाँ अभी भी बौद्ध मठ पाए जा सकते थे।
- धीमान और उनके पुत्र वितापाल उस समय के दो कलाकार थे। वे असाधारण चित्रकार, मूर्तिकार और कांस्य प्रतिमा निर्माता थे।
- गुप्त कला ने पाल मूर्तिकला को प्रभावित किया। **महिपाल प्रथम ने सारनाथ, नालंदा और बोधगया में पवित्र जगहों का निर्माण और पुनर्निर्माण किया।**
- **गोपाल ने प्रसिद्ध ओदंतपुरा मठ (बिहार) की स्थापना की।**
- **धर्मपाल ने विक्रमशिला** और सोमपुरा महाविहार (बांग्लादेश) की स्थापना की।



Vikaramashila University

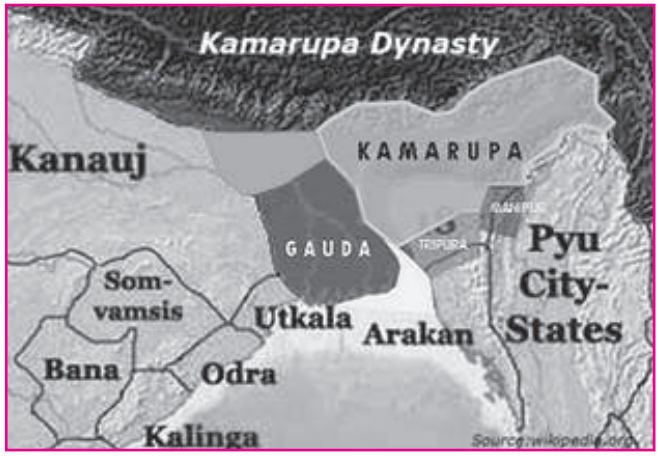
- **लोकगीतों का एक संग्रह "महिपालगीत" (महिपाल पर गीत) अभी भी ग्रामीण बंगाल में लोकप्रिय है।**
  - संध्याकर नंदी का महाकाव्य रामचरितम, जो बाद के पाल सम्राट रामपाल का इतिहास है, बताता है कि वन प्रमुखों को उनके गठबंधन में शामिल होने के लिए कितने महंगे उपहारों का इस्तेमाल किया गया था।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास में पाल काल अति महत्वपूर्ण चरण है। विश्लेषण कीजिए (2020)

असम

- **कामरूप सातवीं शताब्दी में प्रमुखता से उभरे, जिनका साम्राज्य ब्रह्मपुत्र बेसिन के साथ-साथ** पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था।



- हालाँकि, उत्खनन से गुवाहाटी के पास अंबारी में समुदायों का पता चला है, जो ईसाई युग की चौथी शताब्दी के हैं।
- समुद्रगुप्त को उसी सदी में दावका और कामरूप से कर प्राप्त हुई।
- **दावका के साम्राज्य** में नौगोंग क्षेत्र का एक हिस्सा शामिल हो सकता है, जबकि कामरूप के साम्राज्य में ब्रह्मपुत्र बेसिन शामिल था।
- **कामरूप राजाओं ने वर्मन की उपाधि धारण की,** जो न केवल उत्तरी, मध्य और पश्चिमी भारत में, बल्कि बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में भी लोकप्रिय थे।
  - वर्मन का अर्थ है कवच जो क्षत्रियों को एक योद्धा के रूप में प्रदर्शित करता है।
- **क्षत्रियों ने ब्राह्मणों को भूमि देकर अपनी शक्ति में वृद्धि की।**
- **भास्करवर्मन एक ऐसे राज्य के शासक के रूप में उभरे** जिसने सातवीं शताब्दी में ब्रह्मपुत्र बेसिन के एक बड़े हिस्से और उससे आगे के कुछ क्षेत्रों को अपने अधीन किया।
- बौद्ध धर्म ने भी इस दौरान एक मुकाम हासिल किया, और चीनी यात्री ह्वेन त्सांग (ह्वेन त्सांग) ने इस क्षेत्र की यात्रा की।
- **लगभग 800 ईस्वी में, कामरूप के एक स्थानीय शासक, जिसका नाम हरजरवर्मन था, ने पाल को शासन से बाहर कर दिया** और अपनी स्वतंत्र सत्ता का दावा किया।
- **सलम्बा राजवंश के रूप में जाना जाने वाला इस राजवंश ने, 800 और 1000 के बीच शासन किया।**
  - उनकी राजधानी हरुप्पेश्वर थी, जो लौहित्य, यानी ब्रह्मपुत्र के तट पर थी।
  - परंपरा के अनुसार, करतोया नदी कामरूप की पश्चिमी सीमा थी।

ओडिशा

- **यद्यपि पहली शताब्दी ईसा पूर्व में इस क्षेत्र में एक मजबूत राज्य स्थापित किया गया था, कलिंग, या महानदी के दक्षिण में तटीय उड़ीसा,** अशोक के अधीन प्रमुखता से उभरा।
  - **इसका शासक खारवेल मगध तक आगे बढ़ा था।**
- पहली और दूसरी शताब्दी में उड़ीसा के बंदरगाहों में मोती, हाथी दांत और मलमल का एक सक्रिय व्यापार देखा गया।
- **भुवनेश्वर से 60 किलोमीटर दूर, खारवेल की राजधानी, कलिंगनगरी के स्थल, शिशुपालगढ़ में खुदाई से** रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संपर्कों का संकेत देने वाले विभिन्न रोमन कलाकृतियों का पता चला।
  - हालाँकि, उड़ीसा के अधिकांश, विशेष रूप से उत्तर उड़ीसा में, न तो राज्य का निर्माण हुआ और न ही महत्वपूर्ण व्यावसायिक विकास हुआ।
- **चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध** और छठी शताब्दी के दौरान उड़ीसा में कई राज्यों का उदय हुआ, जिनमें से कम से कम पाँच स्पष्ट रूप से पहचाने जाने योग्य थे।
- **इनमें से सबसे प्रमुख मथारों का राज्य था, जिन्हें पितृभक्त** के नाम से भी जाना जाता है, जो महानदी और कृष्ण के बीच के क्षेत्र पर अपने शीर्ष के दौरान हावी थे।
  - **वसिष्ठ, नल और मानस उनके समकालीन और पड़ोसी थे।**
  - दक्षिण कलिंग में वसिष्ठों का शासन था, महाकांतारा के वन क्षेत्र में नालों का और महानदी के पार उत्तरी तटीय क्षेत्र में मानस का शासन था।
  - प्रत्येक राज्य ने अपना कराधान, प्रशासन और सैन्य संगठन स्थापित किया।
  - **नालों और शायद मानस ने भी एक सिक्का प्रणाली विकसित की।**

❖ ❖ ❖

16 दक्षिण भारतीय साम्राज्य

तमिल क्षेत्र में कालभ्र वंश संगम युग की समाप्ति के लगभग 250 वर्षों के बाद अस्तित्व में रहा। इसके बाद, पल्लवों ने कांचीपुरम को अपनी राजधानी के रूप में तोंडाईमंडलम में अपना राज्य बनाया।

उनका अधिकार तब तक बना रहा जब तक कि शाही चोलों ने दसवीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में तोंडाईमंडलम पर आक्रमण कर कब्जा कर लिया।

पल्लव

- पल्लव का अर्थ है 'लता', जो कि टोंडी शब्द का संस्कृत रूप है, और यह तमिल में लुटेरे के समकक्ष हैं।
- इसलिए, संभावना के अनुसार पल्लव एक देहाती स्वदेशी जनजाति थी, जिन्होंने टोंडिमंडलम (उत्तरी पेननेर और उत्तरी वेल्लार नदियों के बीच का क्षेत्र) में अपना शासन स्थापित किया, जिसमें कांची में अपनी राजधानी के साथ दक्षिणी आंध्र प्रदेश और उत्तरी तमिलनाडु का अधिकांश हिस्सा शामिल था।

पल्लवों की उत्पत्ति

- पल्लवों की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न सिद्धांत हैं।
  - उनकी तुलना पार्थियनों से की गई, जिन्होंने पश्चिमी भारत पर विदेशियों के रूप में शासन किया।
  - एक अन्य सिद्धांत में कहा गया है कि पल्लव दक्कन के वाकाटकों के ब्राह्मण शाही परिवार की एक शाखा थे।
  - तीसरा दृष्टिकोण पल्लवों को एक चोल राजकुमार और एक नाग राजकुमारी के वंशजों से जोड़ता है जिसका मूल द्वीप मणिपल्लवम था।
- हालांकि, पल्लवों की उत्पत्ति के बारे में ये दावे पर्याप्त सबूतों द्वारा समर्थित नहीं थे।
- वे भी अशोक के शिलालेखों में उल्लिखित पुलिंदों के समान ही हैं।
- जब सातवाहनों ने तोंडाइमंडलम पर कब्जा कर लिया, तो पल्लव उनके सामंत बन गए।
  - तीसरी शताब्दी ईस्वी में सातवाहनों की पराजय के बाद उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त की
- उनके सातवाहन लिंक के कारण, पल्लवों ने प्राकृत और संस्कृत में अपने शुरुआती शिलालेखों का निर्माण किया, और उन्होंने ब्राह्मणवाद का भी समर्थन किया।

राजनीतिक इतिहास

- 250 ईस्वी से 350 ईस्वी तक, प्रारंभिक पल्लव सम्राटों ने प्राकृत में चार्टर्स का निर्माण किया। इनमें शिवस्कंदवर्मन और विजयस्कंदवर्मन उल्लेखनीय हैं।
- 350 और 550 ईस्वी के बीच शासन करने वाले पल्लव सम्राटों के दूसरे राजवंश के चार्टर संस्कृत में लिखे गए थे।
- विष्णुगोप इस परिवार के सबसे प्रमुख शासक थे, और उन्हें अपने दक्षिण भारतीय अभियान के दौरान समुद्रगुप्त ने पराजित किया था।
- तीसरी पंक्ति के सम्राट, जिन्होंने 575 ईस्वी से नौवीं शताब्दी में अपने अंतिम पतन तक शासन किया, ने संस्कृत और तमिल दोनों में चार्टर जारी किए।
- सिंहविष्णु वंश के पहले शासक थे। उन्होंने कलभ्रों को कुचल दिया और टोंडिमंडलम में पल्लव नियंत्रण को मजबूत किया।
  - उसने चोलों पर भी विजय प्राप्त की और कावेरी नदी तक पल्लव क्षेत्र का विस्तार किया।

महेन्द्रवर्मन प्रथम (600 - 630 ई.)

- उसके शासनकाल में लंबे समय तक चलने वाला पल्लव-चालुक्य संघर्ष शुरू हुआ।
- पुलकेशिन द्वितीय ने पल्लवों के खिलाफ अभियान किया और उनके उत्तरी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- हालांकि एक पल्लव शिलालेख में पुल्ललूर में महेंद्रवर्मन प्रथम की जीत का उल्लेख है, लेकिन वह खोई हुई भूमि को पुनः प्राप्त करने में असमर्थ था।
- महेन्द्रवर्मन अपने राजत्व के प्रारंभिक दौर में एक जैन धर्म के अनुयायी थे।
  - थिरुनावुक्करासर उर्फ अप्पर, एक शैव संत, ने उन्हें शैव धर्म में परिवर्तित होने के लिए प्रभावित किया।



- उन्होंने तिरुवाड़ी में एक शिव मंदिर का निर्माण किया।
  - उन्हें गुनाभर, सत्यसंध, चेट्टाकारी (मंदिर निर्माता), चित्रकारपुली, विचित्रचित्त और मतविलासा के नाम से जाना जाता था।
- गुफा मंदिर निर्माण में निपुण थे।
  - मांडगपट्टु शिलालेख उन्हें विचित्रचित्त के रूप में सम्मानित करता है, जिन्होंने ईंटों, लकड़ी, धातु या सीमेंट का उपयोग किए बिना ब्रह्मा, विष्णु और शिव के लिए एक मंदिर का निर्माण किया।
  - उनके रॉक-कट मंदिर वल्लम, महेंद्रवाड़ी, दलावनूर, पल्लवरम, मांडगपट्टु और तिरुचिरापल्ली में देखे जा सकते हैं।
- इसके अलावा, उन्होंने संस्कृत कृति मतविलास प्रहसन लिखी। उनका नाम, चित्रकारपुली, उनकी कलात्मक क्षमताओं को इंगित करता है।
- उन्हें संगीत का विशेषज्ञ भी माना जाता है। उन्हें कुदुमियानमलाई में संगीत शिलालेख का श्रेय दिया जाता है।

नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ई.)

- ममल्ल, जिसका अर्थ है 'महान पहलवान', नरसिंहवर्मन प्रथम का दूसरा नाम था।
  - वह चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय के हाथों अपने पिता की हार का बदला लेना चाहता था।

- कांची के निकट मणिमंगलम के युद्ध में पुलकेशिन **द्वितीय पर कुरम ताम्रपत्रों में उसकी विजय दर्ज है।**

- **नरसिंहवर्मन ने उपनाम 'वातापिकोंडा' को अपनाया।** उन्होंने खोई हुई भूमि को पुनः प्राप्त किया। श्रीलंका में नरसिंहवर्मन प्रथम का नौसैनिक अभियान एक और उल्लेखनीय उपलब्धि थी।
- **अपने शासनकाल के दौरान, ह्वेन त्सांग ने पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम का दौरा किया।**
  - उनके विवरण के अनुसार, कांची के लोग महान शिक्षा को महत्व देते थे, और कांची में घाटिका ने शिक्षा के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य किया।
- **मामल्लपुरम की स्थापना नरसिंहवर्मन प्रथम ने की थी, और** उसके शासन के दौरान बड़े पैमाने पर रथ बनाए गए थे।

नरसिंहवर्मन द्वितीय या राजसिम्हा (695-722 ई.)

- पल्लव-चालुक्य युद्ध महेंद्रवर्मन द्वितीय और परमेश्वरवर्मन प्रथम के शासनकाल के दौरान जारी रहा, जो नरसिंहवर्मन प्रथम के उत्तराधिकारी थे।
- इसके बाद नरसिंहवर्मन द्वितीय पल्लव साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- उनका दूसरा नाम राजसिम्हा था।
- उसका प्रशासन युद्धों से विरत था, और वह कला और वास्तुकला के विकास में अधिक रुचि रखता था।
  - इस दौरान मामल्लपुरम में तटीय मंदिर और कांचीपुरम में कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण किया गया।
  - वे कला और साहित्य के भी प्रबल समर्थक थे।
- **माना जाता है कि संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान दण्डी ने उनके दरबार को अलंकृत किया था।** अपने शासनकाल के दौरान, उन्होंने चीन में दूत भेजे और समुद्री व्यापार समृद्ध हुआ।
- राजसिम्हा ने शंकरभक्त, वैद्यविद्याधर और आगमप्रिया जैसे पदवी धारण किया।
- परमेश्वरवर्मन द्वितीय और नंदीवर्मन द्वितीय उसके उत्तराधिकारी बने।

पल्लव राजवंश ने नौवीं शताब्दी ईस्वी के अंत तक शासन किया, चोल सम्राट, आदित्य प्रथम, ने अंतिम पल्लव शासक अपराजिता से लड़ाई की और कांची क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. भारत के इतिहास में निम्नलिखित घटनाओं पर विचार करें:

1. राजा भोज के अधीन प्रतिहारों का उदय
2. महेन्द्रवर्मन-प्रथम के अधीन पल्लव सत्ता की स्थापना
3. परांतक-I द्वारा चोल शक्ति की स्थापना
4. पाल वंश की स्थापना गोपाल ने की थी

उपरोक्त घटनाओं का सबसे प्रारंभिक समय से सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?

(a) 2-1-4-3 (b) 3-1-4-2
(c) 2-4-1-3 (d) 3-4-1-2

पल्लवों का प्रशासन

- पल्लवों के पास एक कुशल प्रशासनिक ढांचा था। पल्लव कोट्टम में विभाजित थे। राजा द्वारा चुने गए अधिकारी कोट्टम को प्रशासित करते थे।
  - राजा प्रशासन का प्रभारी था, और उसे सक्षम मंत्रियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
- **वह सभी न्याय का स्रोत था।**
- **उसके पास एक सुप्रशिक्षित सेना थी।**
- पल्लव शिलालेख **ग्राम सभाओं के बारे में बहुत सारी जानकारी देते हैं जिन्हें सभा और संबद्ध समितियों के रूप में जाना जाता है।**
- **बैल, शिव का पर्वत, पल्लवों का प्रतीक था।**

अर्थव्यवस्था

- **उन्होंने देवधन के नाम से जाने जाने वाले मंदिरों के साथ-साथ ब्रह्मदेय के नाम से जाने जाने वाले ब्राह्मणों को संपत्ति प्रदान की।**
- **पल्लव शासकों ने कई सिंचाई तालाब खोदे।**
  - महेंद्रवर्मन प्रथम के शासनकाल में महेंद्रवाड़ी और ममंदूर में सिंचाई तालाब खोदे गए। पल्लव शिलालेखों में कराधान की जानकारी भी मिल सकती है।
- **सरकारी धन का मुख्य स्रोत भूमि कर था।**
  - ब्रह्मदेय और देवधन के क्षेत्र कराधान से मुक्त थे।
- बढ़ई, सुनार, धोबी, तेल निकालने वाले और बुनकर उन व्यापारियों और कारीगरों में से थे जो सरकार को कर देते थे।
- वे सभी गाँव की संपत्तियों का रिकॉर्ड रखते थे, स्थानीय मामलों को संभालते थे और मंदिरों का प्रबंधन करते थे।
- पल्लव दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ समुद्री व्यापार में लगे थे, जहां तीन मुख्य राज्य उभरे थे: कंबुजा (कंबोडिया), चंपा (अन्नम), और श्रीविजय (दक्षिणी मलाया प्रायद्वीप और सुमात्रा)।

पल्लवों के अधीन समाज

- **जाति व्यवस्था कठोर हो गई।**
  - ब्राह्मणों का समाज में प्रमुख स्थान था। राजाओं और रईसों ने उन्हें भूमि रियायतें दीं।
  - उन्हें मंदिरों की देखभाल का काम भी दिया गया था।

- **पल्लव वंश के दौरान, शैववाद और वैष्णववाद प्रमुखता से उभरे,** जबकि बौद्ध धर्म और जैन धर्म में गिरावट आई।
- शैव नयनमारों और वैष्णव अलवारों ने शैववाद और वैष्णववाद को फैलाने में मदद की।

शिक्षा और साहित्य

- **कांची, उनकी राजधानी, शिक्षा का एक पुराना केंद्र था। कांची की घटिका प्रसिद्ध थी, जो पूरे भारत और विदेशों के छात्रों को आकर्षित करती थी।**
  - **कदंब वंश के पूर्वज मयूरसरमन** ने कांची में वेदों का अध्ययन किया था। एक बौद्ध लेखक दिङ्नाग अध्ययन करने के लिए कांची आया था।
  - **कांची धर्मपाल का शिक्षा का स्थान था, जो अंततः नालंदा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बने।**
  - **महान संस्कृत विद्वान भारवी सिंहविष्णु के शासनकाल के दौरान रहते थे।**
  - **एक अन्य संस्कृत लेखक,** दंडिन ने नरसिंहवर्मन द्वितीय के दरबार की शोभा बढ़ाई।
- **संस्कृत नाटक मत्तविलासप्रहसन महेंद्रवरमन प्रथम द्वारा लिखा गया था।**
- **तमिल साहित्य का भी विकास हुआ था। तमिल में धार्मिक भजन नयनारों और अलवारों द्वारा लिखे गए थे।**
  - पल्लव काल के धार्मिक साहित्य का प्रतिनिधित्व नयनारों के देवाराम और अलवारों के नलयरादिव्यप्रबंधम द्वारा किया जाता है।
- **नंदिवर्मन द्वितीय ने पेरुंडेवानर को महाभारत का तमिल में भरतवेनब के रूप में अनुवाद करने के लिए नियुक्त किया।**
  - नंदिक्कलमबगम एक अन्य प्रसिद्ध कृति थी, हालांकि लेखक का नाम अज्ञात है।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित जोड़ियों पर विचार करें:

	शब्द	विवरण
1.	एरीपट्टी	भूमि, जिसके राजस्व को गाँव के तालाब के रखरखाव के लिए अलग रखा गया था
2.	तनियुर	गाँवों जो एक अकेले ब्राह्मण या ब्राह्मणों के समूह को दान दिया गया था
3.	घाटिका	महाविद्यालय जो आमतौर पर मंदिरों से जुड़े होते थें

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(*a*) 1 और 2 (*b*) केवल 3
(*c*) 2 और 3 **(*d*) 1 और 3**

कला और वास्तुकला

- **यह मंदिर निर्माण का स्वर्ण युग था।**
- पल्लवों ने चट्टानों से मंदिरों को खोदने की तकनीक का आविष्कार किया। वास्तव में, पल्लवों ने मंदिर की वास्तुकला **की द्रविड़ शैली की स्थापना की।**


Rock-cut temple of Mahendravarma Pallava

- **यह गुफा मंदिरों से अखंड रथों तक एक सतत प्रगति थी, जिसकी परिणति मंदिरों की संरचना में हुई।**
  - मंदिर की वास्तुकला पर पल्लवों के प्रभाव को चार चरणों में देखा जा सकता है।
- **महेंद्रवर्मन प्रथम ने चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों का वर्णन किया है।** इस प्रकार के पल्लव मंदिर मंडागपट्टू और महेंद्रवाड़ी जैसे क्षेत्रों में पाए जा सकते हैं।
- **मामल्लपुरम में खोजे गए अखंड रथ और मंडप पल्लव वास्तुकला** के दूसरे चरण को दर्शाते हैं।



- नरसिंहवर्मन प्रथम ने इन शानदार वास्तुशिल्प संरचनाओं का श्रेय लिया।
  - पांच रथ, जिन्हें पंचपांडव रथ के रूप में भी जाना जाता है, पांच अलग-अलग प्रकार के मंदिर निर्माण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

- मंडपों की दीवारों पर सुंदर मूर्तियां सुशोभित हैं।

- **सबसे प्रसिद्ध महिषासुरमर्दिनी मंडप, तिरुमूर्ति मंडपम और वराह मंडपम हैं।**
- **राजसिम्हा ने तीसरे चरण में संरचनात्मक मंदिरों को प्रस्तुत किया।**
- **इन मंदिरों के निर्माण के लिए नरम रेत की चट्टानों का उपयोग किया गया था।**
  - **कांची में कैलाशनाथ मंदिर और मामल्लपुरम में तटीय मंदिर** पल्लव संरचनात्मक संरचनाओं का सबसे अच्छा उदाहरण हैं।
- **पल्लव कला का अंतिम विकास भी बाद के पल्लवों द्वारा निर्मित संरचनात्मक मंदिरों द्वारा दर्शाया गया है।**
  - वास्तुकला के इस चरण में कांचीपुरम का वैकुंडपेरुमल मंदिर, मुक्तेश्वर मंदिर और मतंगेश्वर मंदिर शामिल हैं।



विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. अजंता और महाबलीपुरम नामक दो ऐतिहासिक स्थानों में क्या समान है/हैं?

1. दोनों का निर्माण एक ही काल में हुआ था।
2. दोनों एक ही धार्मिक संप्रदाय के हैं।
3. दोनों में रॉक-कट स्मारक हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) **केवल 1 और 2**
(b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3
(d) ऊपर दिए गए बयानों में से कोई भी सही नहीं है

2. कला और संस्कृति के भारतीय इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	मूर्तिकला का प्रसिद्ध काम	स्थल
1.	बुद्ध के महापरिनिर्वाण की एक भव्य छवि जिसमें ऊपर कई आकाशीय संगीतकार और नीचे उनके अनुयायियों के दुखद आंकड़े हैं	अजंता
2.	विष्णु के वराह अवतार (वराह अवतार) की एक विशाल छवि, क्योंकि वह देवी पृथ्वी को गहरे और अराजक जल से बचाते हैं, जो चट्टान पर गढ़ी गई है	माउंट आबू
3	"अर्जुन की तपस्या"/"गंगा का अवतरण" विशाल शिलाखंडों की सतह पर उकेरा गया	मांमल्ल-पुरम

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

मूर्तियों

- पल्लवों ने भी मूर्तिकला की उन्नति में सहायता की थी। मंदिरों में मिली मूर्तियों के अलावा, मामल्लपुरम में 'ओपन आर्ट गैलरी' उस समय के मूर्तिकला वैभव को प्रदर्शित करने वाला एक महत्वपूर्ण स्मारक है।
- पत्थर में एक फ्रेस्को पेंटिंग द डिसेंट ऑफ द गंगा या **अर्जुन की तपस्या है।**



ललित कला

- पल्लवों के संरक्षण में संगीत, नृत्य और चित्रकला का भी विकास हुआ था।
- **मामंदुर शिलालेख में मुखर संगीत संकेतन पर एक टिप्पणी शामिल है।**

- **कुदुमियनमलाई शिलालेख** में संगीत के स्वर और वाद्ययंत्रों का उल्लेख किया गया है।

चालुक्य

- **बादामी (वातापी) चालुक्य और कल्याणी चालुक्य।**

बादामी के चालुक्य

- **उन्हें मुख्य रूप से पश्चिमी चालुक्य कहा जाता है।**
- चालुक्य वंश अपने संस्थापक, पुलिकेशिन। (543-566 ई.) के बाद प्रमुखता से बढ़ा, बादामी के पास एक पहाड़ की चोटी पर किलेबंदी की।
- **उसने अपने आप को कदम्बों से स्वतंत्र घोषित कर दिया।**
- माना जाता है कि उन्होंने यज्ञ और अश्वमेध यज्ञ किए थे। कीर्तिवर्मन ने बादामी को राजधानी (566-597) के रूप में स्थापित किया।



पुलकेशिन द्वितीय (सी. 610-642 ई.)

- **उसके शासन का विवरण उसके द्वारा जारी किए गए ऐहोल अभिलेख में मिलता है।**
- उन्होंने आधिपत्य हासिल करने के लिए बनवासी के कदंबों और मैसूर के गंगों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- गंग शासक दुर्विनीता ने उनके अधिपत्य को स्वीकार किया और यहां तक कि पुलकेशिन द्वितीय की बेटी से शादी भी कर ली।
- **पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा** नदी के तट पर हर्षवर्धन को हराया, एक और महत्वपूर्ण सफलता थी।
- **उसने दक्षिण पर हावी होने की हर्ष की महत्वाकांक्षा पर रोक लगा दी।**
- पुलकेशिन II पल्लवों के खिलाफ अपने पहले अभियान में विजयी रहा था।
- हालाँकि, उन्हें कांची में नरसिंहवर्मन प्रथम के हाथों अपमानित किया गया था।
- **तब पल्लवों ने वातापी की चालुक्य राजधानी को जब्त कर लिया और नष्ट कर दिया।**

विक्रमादित्य प्रथम (655–680 ई.)

- विक्रमादित्य पुलकेशिन द्वितीय के उत्तराधिकारी थे।
- उसने एक बार फिर चालुक्य साम्राज्य को मजबूत किया और पल्लवों की राजधानी कांची को लूटा।
- **परिणामस्वरूप,** वह पल्लवों के हाथों अपने पिता की हार और मृत्यु का बदला लेने में सक्षम हो गया।
- **कीर्तिवर्मन द्वितीय चालुक्यों के शासकों में अंतिम था।**
- उन्हें राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक दंतिदुर्ग ने पराजित किया था।

प्रशासन

- प्रशासन का नेतृत्व राजा करता था।
- राजवंशीय उत्तराधिकार में ज्येष्ठाधिकार का सख्ती से पालन नहीं किया गया था।
- जब राजा सत्ता में था, तो बड़े को युवराज के रूप में नामांकित किया जाना था।
  - उत्तराधिकारी को स्पष्ट रूप से साहित्य, कानून, दर्शन, मार्शल आर्ट और अन्य विषयों में शिक्षा प्राप्त हुई।
- चालुक्य राजाओं ने धर्म-शास्त्र और नीति-शास्त्र के अनुसार शासन करने का दावा किया।
  - पुलकेशिन शास्त्र, पुराण और इतिहास के बारे में बहुत कुछ जानता था।
  - प्रारंभ में, चालुक्य शासकों को महाराजन, सत्यश्रयन और श्री-पृथ्वी-वल्लभन जैसी उपाधियाँ दी गई।
  - **पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन पर विजय प्राप्त करने के बाद परमेश्वरन की उपाधि धारण की।**

प्रांतीय प्रशासन

- **ज्यादातर मामलों में, राजा ने अपने बेटों को प्रांत के राज्यपालों के रूप में नामित किया।**
  - **राजा, मरक्का-राजन, और राजदित्यराज- परमेश्वरन राज्यपालों की उपाधियाँ थीं।**
- **कुछ राज्यपालों ने महा-सामंत की उपाधि धारण** की और सेनाओं की कमान संभाली।
  - **विषयपति विषय के प्रमुख थे। विषय को तब पुष्टि में उपविभाजित किया गया था।**
  - **पोगपति एक पुष्टि का प्रमुख था।**

वास्तुकला

- सांस्कृतिक रूप से, चालुक्य काल को दक्कन में कला और वास्तुकला के विकास के लिए याद किया जाता है।
  - **उनकी स्थापत्य शैली को 'चालुक्य वास्तुकला' के रूप में जाना जाता है।**



- **उन्होंने मंदिर निर्माण की डेक्कन या वेसर शैली की स्थापना की,** जिसकी परिणति राष्ट्रकूटों और होयसल वंश (13वीं शताब्दी) में हुई।

- उत्तरी कर्नाटक में वर्तमान बागलकोट जिले में एक नदी घाटी **मालाप्रभा में रॉक-कट (गुफा) और संरचनात्मक दोनों तरह के लगभग सौ स्मारक बनाए।**
- **अपने स्मारकों में, वे आम तौर पर स्थानीय रूप से उपलब्ध लाल-सुनहरे बलुआ पत्थर का इस्तेमाल करते थे।**
- अधिकांश चालुक्य मंदिर निर्माण गतिविधि आधुनिक कर्नाटक राज्य में ऐहोल, बादामी, पट्टदकल और महाकूट के एक बहुत ही संकीर्ण क्षेत्र में केंद्रित थी।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. नागर, द्रविड़ और वेसर हैं?

(*a*) भारतीय उपमहाद्वीप के तीन मुख्य नस्लीय समूह

(*b*) तीन मुख्य भाषाई विभाजन जिनमें भारतीय भाषाओं को वर्गीकृत किया जा सकता है

(*c*) भारतीय मंदिर वास्तुकला की तीन मुख्य शैलियाँ

(*d*) भारत में प्रचलित तीन मुख्य संगीत घराने

धार्मिक दृष्टिकोण

- **बादामी चालुक्य ब्राह्मणवादी हिंदू थे जो अन्य धर्मों का सम्मान करते थे।**
- वैदिक रीति-रिवाजों और कर्मकांडों को महत्व दिया जाता था।
- राजवंश के संस्थापक पुलकेशिन प्रथम ने अश्वमेध यज्ञ किया।
  - इस समय अवधि के दौरान विष्णु, शिव और अन्य देवताओं को समर्पित कई मंदिरों का भी निर्माण किया गया था।
- **पश्चिमी दक्कन में बौद्ध धर्म के पतन को ह्वेन त्सांग ने दर्ज किया था।**
- हालाँकि, जैन धर्म इस क्षेत्र में लगातार प्रगति कर रहा था।
  - पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी कवि रविकीर्ति, जिन्होंने ऐहोल शिलालेख लिखा था, एक जैन थे।
- **जंगली सूअर चालुक्यों का शाही प्रतीक चिन्ह था।** यह दावा किया गया था कि यह विष्णु के वराह अवतार का प्रतिनिधित्व करता है।

साहित्य और शिक्षा

- ऐहोल और महाकुदम जैसे स्तंभ शिलालेखों में, चालुक्यों ने संस्कृत का प्रयोग किया था।
- **बादामी में सातवीं शताब्दी के एक चालुक्य राजा के शिलालेख में कन्नड़ को स्थानीय प्राकृत, या लोगों की भाषा,** और संस्कृत को सभ्यता की भाषा के रूप में वर्णित किया गया है।
- **सप्तवतारम, पुलकेशिन III के एक सरदार द्वारा संस्कृत में लिखा गया एक व्याकरणिक पाठ है।**

वेंगी के पूर्वी चालुक्य

- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पूर्वी चालुक्यों ने आंध्र प्रदेश के वेंगी में खुद को स्थापित किया।
- जैसा कि पहले कहा गया था, पुलकेशिन II (610-642 ई.) ने पूर्वी डेक्कन के वेंगी क्षेत्र पर विजय प्राप्त की और अपने भाई विष्णुवर्धन को 624 ई. में इस नए प्राप्त क्षेत्र के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया।
- **विष्णुवर्धन ने पुलकेशिन द्वितीय** की मृत्यु के बाद स्वतंत्रता की घोषणा की, और वेंगी के पूर्वी चालुक्य प्रमुखता से उठे।
- **पूर्वी चालुक्यों की राजधानी मूल रूप से वेंगी** (समकालीन एलुरु के पास) में स्थित थी, लेकिन बाद में इसे राजामहेंद्रवरम (आधुनिक राजमुंदरी) में स्थानांतरित कर दिया गया।

बनवासी के कदंब

- कदंबों ने चौथी शताब्दी सीई के बाद से उत्तरी कर्नाटक और कोंकण पर शासन किया।
- **उनकी राजधानी कर्नाटक के उत्तरी कनारा जिले में वैजयंती या बनवासी थी।**
- वे पल्लवों के पास रहते थे और ब्राह्मण होने का दावा करते थे।
- उन्होंने ब्राह्मणों को उपहार भी दिए। मयूरशर्मन ने वन जनजातियों की सहायता से पल्लवों को पराजित करने के बाद कदंब वंश की स्थापना की।



मैसूर के पश्चिमी गंग

- वे एक और महत्वपूर्ण पल्लव समकालीन थे, जो पहले **पल्लवों के सामंत थे जिन्होंने** उत्तरोत्तर दक्षिणी कर्नाटक में प्रभुत्व स्थापित किया था।
- **उनका राज्य पूर्व में पल्लवों और पश्चिम में कदंबों के बीच स्थित था।**
- **उनकी पहली राजधानी कोलार में थी, जिसने राज्य को ढेर सारे सोने से सुसज्जित किया था।**
  - उन्होंने जैनों को अधिकांश भूमि प्रदान की।
- **पश्चिमी गंगों ने ज्यादातर जैनों को भूमि अनुदान दिया; कदम्बों ने भी जैनों को अनुदान दिया, हालाँकि उन्होंने ब्राह्मणों को अधिक पसंद किया।**

❖ ❖ ❖

17 प्राचीन इतिहास की विरासत: मध्यकाल की ओर संक्रमण

तीसरी सहस्राब्दी ई.पू. की शुरुआत में प्राचीन भारत में सिंधु घाटी सभ्यता का उदय हुआ, जो वर्तमान में पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत है। यह मेसोपोटामिया और प्राचीन मिस्र सहित प्राचीन विश्व की अन्य प्रारंभिक सभ्यताओं के समकालीन थी और दुनिया की सबसे प्रारंभिक सभ्यताओं में से एक है। यह अपने विशाल एवं सुनियोजित शहरों के लिए प्रसिद्ध है।

प्राचीन भारत चार महान वैश्विक धर्मों - हिंदू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म का जन्मस्थान था।

समाज में परिवर्तन

- तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में सिंधु घाटी सभ्यता प्राचीन भारत में उत्पन्न हुई, जो अब पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत है।
- यह मेसोपोटामिया और प्राचीन मिस्र सहित प्राचीन दुनिया की अन्य प्रारंभिक सभ्यताओं के साथ समकालीन थी और दुनिया की सबसे प्रारंभिक सभ्यताओं में से एक है।
- यह अपने विशाल एवं सुनियोजित शहरों के लिए प्रसिद्ध है।

वनवासी और चारण चरण

- हम ऋग्वेद के समय से समाज के इतिहास का पता लगाने के लिए लिखित ग्रंथों का उपयोग कर सकते हैं।
  - उनका दावा है कि अपनी कृषि क्षमता के बावजूद ऋग्वैदिक समाज काफी हद तक ग्रामीण था। लोग अर्ध-खानाबदोश थे, उनकी प्राथमिक वस्तुएं पशुधन एवं घोड़े थे।
- इस समाज में लोग मात्र अपने निर्वाह के अलावा मुश्किल से कुछ और पैदा कर सकते थे। आदिवासी अपने प्रमुखों को कभी-कभी ही उपहार दे सकते थे।

कृषि और उच्च वर्गों की उत्पत्ति

- वैदिक लोग जब अफगानिस्तान और पंजाब से पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ओर गए तो वे मुख्य रूप से किसान बन गए।
  - पुरातात्विक खोजों से पता चलता है कि उत्तर वैदिक काल में दो या तीन शताब्दियों तक लगातार बसावट जारी थी।
  - इसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय सरदारों का उदय हुआ। मुखिया यज्ञ कर सकते थे और किसानों व अन्य लोगों से श्रद्धांजलि स्वरुप प्राप्त संग्रहण को अपने पुजारियों को अर्पित कर सकते थे।

उत्पादन की वर्ण व्यवस्था एवं सरकार

- **उत्तर-वैदिक काल में तीन प्रक्रियाएँ प्रतिच्छेदित हुई। आर्यीकरण, लोहाकरण और शहरीकरण उनमें से तीन थे।**
- आर्यीकरण ने संस्कृत, प्राकृत और पालि जैसी इंडो-आर्यन भाषाओं के प्रसार को संदर्भित किया। इसका अर्थ उच्च वर्गों का वर्चस्व और महिलाओं की दासता भी था।
  - उत्तर वैदिक लेखों में शूद्रों और दासों को छोड़कर पहले तीन वर्णों के लिए आर्य शब्द का प्रयोग किया गया।
  - यहां तक कि बौद्ध वर्ग में भी आर्य को कुलीन माना जाता था।
  - उत्तर वैदिक काल में आर्यीकरण को गैर-आर्य आदिवासियों द्वारा ब्राह्मणवादी सभ्यता को अपनाने के लिए संदर्भित किया गया था।
- **लोहाकरण के परिणामस्वरूप निम्न कार्बन स्टील के औजार और हथियार का प्रसार हुआ। इसने कृषि और शिल्प को रूपांतरित कर दिया और बस्तियों में वृद्धि की।**
- **शहरीकरण, या समुदायों के विस्तार** ने व्यापारियों और कारीगरों को सहायता की, इसने राज्य के राजस्व खजाने में भी वृद्धि की।
  - किसानों, कारीगरों, भाड़े के मजदूरों और कृषि दासों ने नए कौशल का उपयोग करके जीवित रहने के लिए आवश्यक से कहीं अधिक उत्पादन किया।
- राजकुमारों और पुरोहितों ने इस उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा उनसे इकट्ठा किया।
  - नियमित कर संग्रह के लिए प्रशासनिक और धार्मिक तकनीकों का निर्माण किया गया।
- कर संग्राहकों को सम्राट द्वारा करों का आकलन और संग्रह करने के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन लोगों को राजा की आज्ञा मानने, उसके करों का भुगतान करने और पुजारियों को उपहार देने के महत्व के बारे में समझाना भी आवश्यक था।

- **वर्ण व्यवस्था इसी कारण से बनाई गई थी।**
- **क्योंकि पुजारी और योद्धा दोनों किसानों और कारीगरों द्वारा प्रदान किए गए करों, श्रद्धा दान, दशमांश और श्रम पर निर्भर थे, उनके संबंध कभी-कभी सामाजिक बचत के वितरण के कारण होने वाले झगड़ों से प्रभावित होते थे।**

सामाजिक संकट और जमींदार वर्गों का उदय

- **पुरानी व्यवस्था तीसरी शताब्दी के आसपास अपने शीर्ष पर पहुंच गई और इसकी प्रगतिशील भूमिका इसके कार्यप्रणाली को चलाती हुई प्रतीत होती है।**
  - पिछली सामाजिक संरचना तीसरी शताब्दी ईस्वी के आसपास गंभीर संकट में थी।
- **पिछड़े क्षेत्रों में ब्राह्मणों और अन्य लोगों को दी गई भूमि ने कृषि सूची का विस्तार किया,** आयुर्वेदिक औषधीय ज्ञान का प्रसार किया और इस तरह समग्र फसल उत्पादन में वृद्धि में योगदान दिया।
  - लाभार्थियों ने लेखन कौशल के साथ-साथ प्राकृत और संस्कृत के उपयोग का भी प्रसार किया।
- व्यापारियों, जैनों और बौद्धों द्वारा इस दिशा में पहले के प्रयासों के बावजूद **भूमि हस्तांतरण के माध्यम से सभ्यता गहरे दक्षिण और सुदूर पूर्व में फैल गई।**
- **इन अनुदानों ने बड़ी संख्या में आदिम किसानों को ब्राह्मणवादी व्यवस्था में आकर्षित किया,** जिन्हें शूद्र के रूप में जाना जाने लगा।
  - **परिणामस्वरूप, प्रारंभिक मध्यकालीन पांडुलिपियों में शूद्रों को किसानों और कृषकों के रूप में संदर्भित किया गया था।**
- **भूमि अनुदान का सबसे उल्लेखनीय प्रभाव जमींदारों के एक वर्ग का उदय था,** जो किसानों की उपज पर निर्भर रहते थे।
- प्राचीन भारतीय समाज को स्थिर नहीं कहा जा सकता। पाँचवीं और छठी शताब्दी तक, इसने एक नए प्रकार की सामाजिक व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त कर दिया था जिसे सामंतवाद के रूप में जाना जाता है।
- **सामंती व्यवस्था के तहत जमींदार एवं लड़ाकू वर्गों की महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई।**

दर्शन

- एक बार जब राज्य और वर्ण-विभाजन पर आधारित सामाजिक व्यवस्था मजबूती से स्थापित हो गई, तो प्राचीन विचारकों ने आग्रह किया कि एक व्यक्ति चार लक्ष्यों के लिए प्रयास करता है।
- ये सामाजिक व्यवस्था विनियमन (धर्म), आर्थिक संसाधन (अर्थ), शारीरिक सुख (काम) और मुक्ति (मोक्ष) थे।

ईसाई युग की शुरुआत तक दर्शन के छह विचार उभरे थे। इनमें से कुछ सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत थे।

दर्शन के विचार	शिक्षाएँ
सांख्य	• सांख्य, जिसका अर्थ है **"गणना", ऐसा माना जाता है कि यह पहले आया है।** • प्रारंभिक सांख्य दर्शन के अनुसार, दुनिया के निर्माण के लिए अलौकिक हस्तक्षेप की उपस्थिति की आवश्यकता नहीं है। • संसार की उत्पत्ति और विकास के लिए ईश्वर से अधिक प्रकृति जिम्मेदार है। • यह एक तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण था। • **पुरुष या आत्मा (प्राण) को सांख्य सिद्धांत में एक तत्व के रूप में** चौथी शताब्दी ईस्वी के आसपास प्रकृति के साथ पेश किया गया था, और दुनिया के निर्माण का श्रेय दोनों को दिया गया था। • इस प्रकार, प्रारंभ में सांख्य दर्शन भौतिकवादी था, लेकिन बाद में यह आध्यात्मिक हो गया। • धारणा (प्रत्यक्ष), निष्कर्ष (अनुमान) और श्रवण(शब्द) इस ज्ञान को प्राप्त करने के सभी तरीके हैं। • इस तरह की रणनीति एक वैज्ञानिक जांच प्रणाली की खासियत है।
योग	• **योग दर्शन के अनुसार ध्यान और शारीरिक प्रयोग से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।** • इस प्रणाली के लिए खुशी, धारणाओं और शारीरिक अंगों का नियंत्रण महत्वपूर्ण है।
न्याय	• न्याय या विश्लेषण का दर्शन एक तर्क प्रणाली के रूप में निर्मित किया गया था। • यह मानता है कि ज्ञान की खोज के माध्यम से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। • तर्क पर जोर ने भारतीय बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया जिन्होंने विधिवत चिन्तन और तर्क का अभ्यास किया।

वैशेषिक	• वैशेषिक दर्शन मूर्त तत्वों या द्रव्य की चर्चा को महत्व देता है। वे विशिष्टताओं और समुच्चय के बीच अंतर करते हैं। • **जब पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश मिलते हैं, तो वे नई वस्तुओं का निर्माण करते हैं।** • **वैशेषिक दर्शन ने परमाणु परिकल्पना को बढ़ावा दिया,** जिसमें यह माना गया कि सभी भौतिक वस्तुएँ परमाणुओं से बनी हैं। ○ परिणामस्वरूप, वैशेषिक ने भारत में भौतिकी की शुरुआत का प्रतिनिधित्व किया।
मीमांसा	• **मीमांसा का अनुवाद "तर्क और व्याख्या की कला" के रूप में किया जाता है।** ○ हालाँकि, कई वैदिक अनुष्ठानों के कारणों को बताने के लिए तर्क का उपयोग किया गया था और उनकी पूर्णता को मोक्ष के लिए एक आवश्यकता माना गया था। • **मीमांसा दर्शन के अनुसार वेदों में शाश्वत सत्य है।** • मीमांसा दर्शन ने दृढ़ता से वैदिक यज्ञों (बलिदानों) को बढ़ावा दिया, जिसके लिए पुजारियों की सेवाओं की आवश्यकता थी और विभिन्न वर्णों के बीच सामाजिक विभाजन को वैध बनाया। • मीमांसा विचारधारा का प्रसार करके ब्राह्मणों ने अपने **अनुष्ठानिक अधिकार और ब्राह्मणवाद पर आधारित सामाजिक पदानुक्रम को बनाए रखने का प्रयास किया गया।**
वेदान्त	• वेदांत का शाब्दिक अर्थ है "वेदों का अंत।" • मूल कृति बादरायण का ब्रह्मसूत्र था, जिसे दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित किया गया था। • बाद में, इस पर दो उल्लेखनीय टीकाएँ लिखी गईं, एक नौवीं शताब्दी में शंकर द्वारा और दूसरी बारहवीं शताब्दियों में रामानुज द्वारा।

भौतिकवादी दर्शन

- **चार्वाक, जो लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में रहते थे, भौतिकवादी दर्शन के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे।**
  - **लोकायत वह दर्शन है जिसे उन्होंने विकसित किया।**
- उन्होंने तर्क दिया कि मनुष्य द्वारा अपने संवेदी अंगों के माध्यम से जो कुछ भी नहीं जाना जाता है, उसका अस्तित्व नहीं है, जिसका अर्थ है कि देवताओं का अस्तित्व नहीं है।
- हालाँकि, जब व्यापार, हस्तशिल्प और शहरीकरण में गिरावट आई, तो आदर्शवादी दार्शनिक प्रणाली प्रमुखता से बढ़ी।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म भारतीय दर्शनशास्त्र की छह प्रणालियों का हिस्सा नहीं है?
   (a) मीमांसा और वेदांत
   (b) न्याय और वैशेषिक
   (c) लोकायत और कापालिक
   (d) सांख्य और योग

पड़ोसी देशों की संस्कृति पर प्रभाव

- **भारतीय संस्कृति का विस्तार दक्षिण पूर्व एशिया में भी हुआ, लेकिन बौद्ध धर्म के माध्यम से नहीं।** बर्मा को छोड़कर, यह मुख्य रूप से ब्राह्मणवादी पंथों के माध्यम से प्रसारित हुआ था।
- **सुवर्णभूमि को बर्मा के शहरों पेगू और मौलमीन प्रदान किया गया था** और भड़ौच, बनारस व भागलपुर के व्यापारी बर्मा से व्यापार करते थे।
- **बर्मा में गुप्त काल के महत्वपूर्ण बौद्ध अवशेष खोजे गए हैं।**
- **पहली शताब्दी ईस्वी के बाद से भारत ने इंडोनेशिया में जावा के साथ व्यापक आर्थिक संबंध बनाए रखा,** जिसे प्राचीन भारतीय सुवर्णद्वीप या सोने के द्वीप के रूप में संदर्भित करते थे।
  - **56 ईस्वी में, जावा पर पहली भारतीय बस्ती का गठन किया गया था।**
  - ईसाई युग की दूसरी शताब्दी में कई छोटे भारतीय साम्राज्य स्थापित किए गए थे।
  - **पाँचवीं शताब्दी में जब चीनी तीर्थयात्री फाहियान ने जावा का दौरा किया तो उसने वहाँ ब्राह्मणवादी धर्म को प्रचलित पाया।**
- **कम्बोज के महान राज्य का निर्माण छठी शताब्दी में हुआ था, जो आधुनिक कंबोडिया के साथ सहसंबद्ध था।**
  - इसके शासक शिव उपासक थे जिन्होंने अनगिनत शिलालेखों का निर्माण करते हुए कम्बोज को संस्कृत विद्वता के केंद्र में बदल दिया।
  - चंपा के राजा भी एक शैव थे और संस्कृत चंपा की आधिकारिक भाषा थी।

- **मूर्तिकला के संदर्भ में, थाई बुद्ध का सिर, कम्बोज का सिर और जावा की शानदार कांस्य प्रतिमाओं को दक्षिण पूर्व एशियाई कला** परंपराओं के साथ भारतीय कला के संलयन का सबसे अच्छा उदाहरण माना जाता है।
- **बौद्ध धर्म के प्रसार ने श्रीलंका , म्यांमार, चीन और मध्य एशिया के साथ भारत के संबंधों को सुगम बनाया।**
  - तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में अशोक के शासनकाल के दौरान, बौद्ध मिशनरियों को श्रीलंका भेजा गया था।
  - श्रीलंका में, दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के ब्राह्मी लिपि में लघु शिलालेख खोजे गए हैं।
  - बौद्ध धर्म समय के साथ श्रीलंका में स्थिरता से पैर जमाने में सक्षम था।
  - ईसाई काल की प्रारंभिक शताब्दियों में बौद्ध धर्म का विस्तार भारत से बर्मा (आधुनिक म्यांमार) तक हुआ।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. भारत ने बंगाल की खाड़ी के पार दक्षिण पूर्व एशिया के साथ अपने प्रारंभिक सांस्कृतिक संपर्क और व्यापारिक संबंध बनाए रखा। बंगाल की खाड़ी के प्रारंभिक समुद्री इतिहास की इस पूर्व-प्रतिष्ठा के लिए, निम्नलिखित में से कौन-सा/से सबसे विश्वसनीय स्पष्टीकरण हो सकता है/हैं?
   (a) अन्य देशों की तुलना में, प्राचीन और मध्यकाल में भारत के पास बेहतर जहाज निर्माण तकनीक थी
   (b) दक्षिण भारत के शासकों ने हमेशा इस संदर्भ में व्यापारियों, ब्राह्मण पुजारियों और बौद्ध भिक्षुओं का संरक्षण किया
   (c) बंगाल की खाड़ी में मानसूनी हवाओं ने समुद्री यात्राओं की सुविधा प्रदान की
   (d) (a) और (b) दोनों इस संदर्भ में ठोस स्पष्टीकरण हैं

विज्ञान और सभ्यता में विरासत

- **कांस्य युग की संस्कृति के दौरान, पक्की ईंटों की अधिकतम संख्या का उत्पादन हुआ और शहर-योजना सबसे अच्छे स्वरूप में था।**
- **प्राचीन काल में भारतीय उद्योग कई क्षेत्रों में कुशल थे।**
  - भारतीय कारीगरों ने रंगाई और विविध रंगों को बनाने में अपने कौशल का प्रदर्शन किया।
- **भारत में खगोल विज्ञान बहुत उन्नत हुआ क्योंकि ग्रहों को देवताओं के रूप में पूजा जाता था और उनकी गतिविधियों पर सावधानीपूर्वक निगरानी रखी जाती थी।**
  - कृषि गतिविधि के लिए महत्वपूर्ण मौसमी और मौसम संबंधी विविधताओं के संबंध के कारण उनका शोध महत्वपूर्ण हो गया।
  - **व्याकरण और भाषा विज्ञान प्राचीन ब्राह्मणों के इस आग्रह के परिणामस्वरूप उभरा कि प्रत्येक वैदिक प्रार्थना और मंत्र को श्रमसाध्य सटीकता के साथ उच्चारित किया जाना चाहिए।**
  - वास्तव में, संस्कृत व्याकरण का विकास भारत-यूरोपीय वैज्ञानिक विश्वदृष्टि का प्रारंभिक परिणाम था।
- **पाणिनि** ने संस्कृत को विनियमित करने वाले नियमों को व्यवस्थित करने के बाद पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में अष्टाध्यायी (व्याकरण पुस्तक) लिखी थी।
- **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा स्वतंत्र रूप से विकसित होने लगी थी।**
  - प्राचीन भारतीयों ने गणित में तीन महत्वपूर्ण योगदान दिए: अंकन प्रणाली, दशमलव प्रणाली और शून्य का उपयोग।
  - दशमलव प्रणाली को अपनाने के लिए पहला अभिलेखीय साक्ष्य पाँचवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व का है।
  - **अरबों ने भारतीय संकेतन प्रणाली को अपनाया और इसे पूरे पश्चिमी दुनिया में फैलाया।**
  - अंग्रेजी में, भारतीय अंकों को अरबी कहा जाता है लेकिन अरबों ने अपने अंकों को हिंद नाम दिया और वे पश्चिम में अपनाए जाने से पहले सदियों से भारत में उपयोग किए जा रहे थे।
- **आर्यभट्ट और वराहमिहिर सबसे प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे।** वराहमिहिर छठी शताब्दी में थे, जबकि आर्यभट्ट पाँचवीं शताब्दी में रहते थे।

भूगोल

- प्राचीन भारतीयों ने भी भूगोल के अध्ययन में योगदान दिया।
- उन्हें भारत के बाहर भूगोल के बारे में बहुत कम जानकारी थी, फिर भी नदियाँ, पर्वत श्रृंखलाएँ, तीर्थ स्थल और देश के अलग-अलग हिस्सों का वर्णन महाकाव्यों व पुराणों में मिलता है।

प्राचीनकाल से मध्यकाल

- प्राचीन भारतीय संस्कृति को मध्ययुगीन समाज में बदलने के लिए भूमि अनुदान की प्रथा महत्वपूर्ण थी।
  - हालाँकि, पुरानी सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले विनाशकारी संकट के परिणामस्वरूप यह प्रथा उत्पन्न हुई।

- **वर्ण विभाजन पर हमला किया गया क्योंकि उत्पादक जनता भारी करों और अधिरोपण द्वारा उत्पीड़ित थी,** और राजाओं ने उनकी रक्षा करने से इनकार कर दिया।
  - तीसरी और चौथी शताब्दी के पुराण ग्रंथों में इस स्थिति को कलियुग कहा गया है।
- इस स्थिति से निपटने के लिए कई कदम उठाए गए।
  - वस्तुत: मनु की समकालीन कानून-पुस्तक चेतावनी देती है कि वैश्यों और शूद्रों को अपने दायित्वों से विचलित होने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप कठोर कार्रवाई हो सकती है।
  - **हालांकि, स्थिति से निपटने के लिए वेतन और पारिश्रमिक के स्थान पर पुजारियों और अधिकारियों को भूमि देना एक अधिक महत्वपूर्ण कदम था।**
  - इस पद्धति का लाभ यह था कि करों को इकट्ठा करने और दान किए गए क्षेत्रों में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के कर्तव्य को दाताओं पर स्थानांतरित कर दिया जाता था, जो मौके पर ही हठी किसानों से निपट सकते थे।

जमींदारों का उदय

- पाँचवीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में भूमि उपहार अधिक प्रचलित हो गए।
- इसके अनुसार, ब्राह्मणों को गाँवों पर राजा द्वारा लगाए गए करों से मुक्त गाँव दिए गए थे।
- **इसके अलावा, लाभार्थियों को दान किए गए गांवों में रहने वाले लोगों पर शासन करने का अधिकार दिया गया था।**
  - संपन्न गाँव सरकारी अधिकारियों या शाही अनुचरों के लिए सुलभ नहीं होते थे।
  - पाँचवीं शताब्दी तक शासक के पास चोरों को दंडित करने का अधिकार था, लेकिन बाद में लाभार्थियों को सभी आपराधिक अपराधियों को दंडित करने का अधिकार दिया गया।
  - **परिणामस्वरूप, ब्राह्मणों ने न केवल किसानों और कारीगरों से कर वसूल किया, बल्कि** उन्होंने गांवों में कानून और व्यवस्था भी बनाए रखी।
  - इस प्रकार गुप्तकाल की समाप्ति के बाद से राजा का प्रभाव अत्यधिक कम हो गया था।
- **भूमि अनुदान द्वारा सरकारी अधिकारियों के भुगतान के माध्यम से शाही नियंत्रण को और कम कर दिया गया।**
- परिणामस्वरूप सातवीं शताब्दी तक जमींदारवाद का स्पष्ट विकास हुआ और केंद्र सरकार के अधिकार का हस्तांतरण हुआ।

क्षेत्रीय पहचान का उदय

- छठी और सातवीं शताब्दी के आसपास, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु आदि के रूप में जानी जाने वाली सांस्कृतिक इकाइयों का निर्माण शुरू हुआ।
  - अंतर्राष्ट्रीय और भारतीय दोनों स्रोत विविध सांस्कृतिक समूहों की पहचान को स्वीकार करते हैं।
  - एक चीनी घुमक्कड़ ह्वेन त्सांग ने विभिन्न राष्ट्रों की सूची बनाई है।
  - आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के जैन लेखन में अठारह महत्वपूर्ण लोगों या जातियों की उपस्थिति का उल्लेख है और उनमें से सोलह की शारीरिक विशेषताओं की व्याख्या की गयी हैं।
- अपभ्रंश के गठन के साथ सातवीं शताब्दी के बाद से भारत के भाषाई इतिहास में एक उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है जो मध्य इंडो-आर्यन का अंतिम चरण है।
  - यह भाषा प्राकृत, जो इससे पहले विकसित हुई थी और वर्तमान इंडो-आर्यन भाषाएँ, जो इसका अनुसरण करती हैं, के लगभग बीच की है। यह मोटे तौर पर 600 से 1000 ईस्वी सन् तक फैला हुआ है।
- **सातवीं शताब्दी ईस्वी के बाद क्षेत्रीय लिपियाँ अधिक लोकप्रिय हुईं।**
  - हालाँकि मौर्य और गुप्त काल के दौरान लिपि में थोड़ा बदलाव आया, लेकिन भारत के अधिकांश लोग सामान लिपि का उपयोग करते रहे।

कुल मिलाकर, छठी और सातवीं शताब्दी में नीति, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, भाषा, साहित्य, लिपि और धर्म में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रमुख पहलुओं ने इस युग के दौरान मध्ययुगीन अस्तित्व को रास्ता प्रदान किया। सम्मिलित रूप से, ये परिवर्तन भूस्वामियों के वर्चस्व वाले एक नए प्रकार के समाज और अर्थव्यवस्था की शुरुआत का पूर्वाभास देते हैं, जो अब राज्य और किसानों के बीच खड़ा था।

❖ ❖ ❖

18 प्राचीन काल में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली

वैदिक काल

पद	विवरण
अध्वर्यु	यजुर्वेद के पुजारी
अघन्या	मारने योग्य नहीं- 'गाय'
अग्निहोत्र	एक साधारण घरेलू यज्ञ (बलिदान)
अक्षवाप	लेखपाल या मुनीम
आरण्यक	ये वन में साधुओं द्वारा रचित वैदिक ग्रंथ हैं
अश्वमेध	राजनीतिक सर्वोच्चता से जुड़ा एक यज्ञ
अतिथिनिर	अतिथि के योग्य गाय
अवत	कुएं
अयस	ताँबा या काँसा
बलि	लोगों द्वारा मुखिया को स्वैच्छिक प्रसाद/दान
बलिसाधक	बलि वसूलने वाले अधिकारी
भागदुघ	कर संग्राहक
भीषज	चिकित्सक
दास	प्रारंभिक आर्य
दसुहत्या	दस्यु का वध
दस्यु	भारतीय उपमहाद्वीप के मूल निवासी
धान्य	अनाज
दीक्षित	जिसने वैदिक यज्ञ के लिए अनुष्ठान किया हो
दुहिता	कन्या : दुधारू गाय
द्विज	वर्ण व्यवस्था के अनुसार दो बार जन्म
गविष्टि	गायों की तलाश करना
गव्युति	दूरी मापने की इकाई
गोधूलि	समय की माप की इकाई
गोहन्ता	उत्तर वैदिक युग के दौरान के अतिथि जो मवेशियों पर आश्रित थे
गोमत	पशु धन वाला धनवान व्यक्ति
गोपति	सम्राट/राजा जिनका मुख्य कर्तव्य गायों की रक्षा करना था
ग्रामणी	ग्राम प्रधान जो कबीलों के नेताओं के रूप में कार्य करते थे।
हिरण्यक	सुनार
जीवग्रिभा और उग्र	पुलिस अधिकारी
करीष	उपजाऊ (खाद) भूमि
क्षता	राजा के घर का रखवाला
कुल्य	नहर
कुसिदवृति	रकम उधार देना
मध्यमशी	पंच निर्णय द्वारा न्याय
महिषी	प्रमुख रानी
निष्क, कृष्णल और शतमान	इस अवधि के दौरान इस्तेमाल किए गए सोने के सिक्कों के नाम
नियोग	नि:संतान विधवा को पुत्र के जन्म तक अपने देवर के साथ सहवास की अनुमति देने की प्रथा
पालागल	राजा के मित्र
पंचजना	प्राचीन भारत में 5 जनों-कबीलों का समूह
पणि	धनी व्यक्ति / व्यापारी
फाल, लॉगल, सिरा	हल
प्रेक्षा	दर्पण
पुरंदर	किला भंजक (इंद्र)
पूषण	जमाखोरी, चरवाहों, आवारा मवेशियों के संरक्षक
पुष्कर	तालाब
राजन (गोपतिजनस्य या जनस्यगोपा)	राजा
राजसूय	राजा के राज्याभिषेक हेतु अनुष्ठान
राका	परोपकारी सुंदर देवी
रत्नीन	अधिकारी
सभा	वरिष्ठों की परिषद
सभावती	सभा में शामिल महिलाएं
संहिता	वैदिक मंत्रों का संग्रह

समिति	वैदिक काल में लोगों की सभा
संग्रहित्री	कोषाध्यक्ष
सप्त सैंधव	7 नदियों का क्षेत्र
सावित्री	जिस देवी को गायत्री मंत्र समर्पित है।
सेनानी	सेना का प्रमुख
श्रौत	महायज्ञ
श्रेष्ठिन	वरिष्ठ व्यक्ति
सिनिवाली	संतान प्रदान करने वाली देवी
सिरनी / दात्रा	कुदाल
सीता	हल रेखा वाली भूमि
स्पश	जासूस
स्थापती	प्रमुख कमांडर
सुता	सारथी
सुवीरा	वीर पुत्र
उद्गात्री	सामवेद का पुजारी
उपनयन	एक शिक्षक के अधीन पढ़ने के लिए एक लड़के को तैयार करना।
उर्वरा	खेती की भूमि
वाजपेय	रथ दौड़
वर्ण	व्यवसाय के आधार पर हिंदू समाज का चौ-स्तरीय विभाजन।
विद्	ज्ञान
विदथ	धर्मनिरपेक्ष, धार्मिक और सैन्य उद्देश्य के लिए एक सभा। यहां महिलाओं को भाग लेने की अनुमति थी
व्राजपति	चारागाह भूमि का प्रभारी अधिकारी
व्रीहि	धान
यव	जौ की फसल।

वैदिक युग में विवाह के प्रकार

विवाह का प्रकार	विवरण
राक्षस	अपहरण करके विवाह
प्रजापत्य	पिता बिना दहेज और वधू-मूल्य की मांग किए कन्या को देता है
पैशाच	प्रलोभन विवाह
गंधर्व	प्रेम विवाह
दैव	शुल्क के रूप में एक यज्ञ पुजारी को दी गई एक कन्या।
ब्रह्म	विधिवत दहेज वाली कन्या का उसी जाति के व्यक्ति से विवाह
असुर	पिता से खरीदी गयी कन्या
आर्ष	दहेज के बदले गाय का सांकेतिक वधू-मूल्य प्रदान करना

वैदिक ग्रंथों में नदियाँ

प्राचीन नदियाँ	वर्तमान नाम
अस्किनी	चिनाब
दमनगंगा	तापी
गंडक	सदानीरा
घग्गर	दृषद्वती
गोमल	गोमती
काबुल	कुभा
कुर्रम	क्रुमु
नदितमा	सरस्वती
परुष्णि	रावी
शुतुद्रि	सतलज
सिंधु	सिंधु (इंडस)
विपास	ब्यास
वितस्ता	झेलम

जैन धर्म और बौद्ध धर्म

पद	विवरण
अनेकांतवाद	ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत
अणुव्रत	गृहस्थों के लिये 5 सिद्धांतों की व्यवस्था
अरिहंत	सौभाग्यपूर्ण
अवधी ज्ञान	दिव्यदृष्टि अनुभूति
जैन	जिसने अपनी इंद्रियों को जीत लिया हो
कैवल्य	केवला ज्ञान, अर्थात जैन धर्म में सर्वज्ञता
केवलिन	पूरी तरह से शिक्षित
महावीर	साहसी
महाव्रत	भिक्षुओं के लिये 5 सिद्धांत
मति ज्ञान	संवेदी अंगों की गतिविधि के माध्यम से अनुभूति
निग्रन्थ	सभी बंधनों से मुक्त
श्रुत ज्ञान	शास्त्रों से प्राप्त ज्ञान
आस्रव	कर्म का जीव की ओर प्रवाह
सिद्ध लोक	मुक्त आत्मा का अंतिम निवास।
गुणस्थान	शुद्धि के चौदह चरण
संवर	कर्म के प्रवाह को रोकना
निर्जरा	संचित कर्मों को भोगना

मोहनीय कर्म	कर्म से जुड़े विकार या भ्रम
श्रावक प्रतिमा	वे कदम जिनके द्वारा त्याग प्राप्त किया जा सकता है
अनिच्चा/अनिच्छा (Aniccha)	अनस्थिरता
श्रमण	बौद्ध धर्म के भिक्षु जिन्होंने धम्म के मशाल वाहक के रूप में कार्य किया।
महाभिनिष्क्रमण	बुद्ध का गृहत्याग
महापरिनिर्वाण	बुद्ध की मृत्यु
निर्वाण	जीवन मरण के चक्र से मुक्त होना /ज्ञान की प्राप्ति
प्रतीत्यसमुत्पाद	आश्रित मूल का नियम
योगाचार	जो ध्यान और योग को सर्वोच्च महत्व देता है
मंजूश्री	एक बोधिसत्त्व, जो महायान बौद्ध सम्प्रदाय में प्रज्ञा से सम्बन्धित हैं
चिंतामणि	मनोकामना देने के रूप में चमत्कार करने में सक्षम एक गहना
शून्यता	माध्यमिक संप्रदाय से जुड़े बौद्ध सिद्धांत जिसका अर्थ है किसी चीज का आकार भ्रामक है
परमिता	पूर्णता के चरण
बोधियात्व	ज्ञान रखने के लिए बुद्धि
अर्हत	वह जो सत्य को जानता हो
सिप्प	समाज में एक व्यक्ति की स्थिति
उपोसथ	अमावस्या या पूर्णिमा का समारोह
तथागत	विमुक्त, वह जो मृत्यु और जन्म के चक्र से मुक्त हो
पत्तिमोखा	भिक्षुओं द्वारा पालन किए जाने वाले नियम।
उपसंपदा	एक साधारण समारोह जिसमें नया व्यक्ति एक पूर्ण भिक्षु बनता है।
उपासक	बौद्ध धर्म के उपासक।
प्रवज्या	ज्ञान या ज्ञान की खोज के लिए गृहत्याग करने वाले व्यक्ति के लिए समारोह
प्रवारणा	एक बौद्ध भिक्षु द्वारा गलत कर्मों का कबूलनामा
विशुद्धिमग्ग	बुद्धघोष द्वारा रचित पालि ग्रंथ है जो विशुद्ध बनने का मार्ग दर्शाता है।
धर्म-चक्र-प्रवर्तन	बुद्ध द्वारा सारनाथ में प्रथम धर्मोपदेश
स्तूप	बुद्ध संरचना जिसमें बुद्ध के अवशेष हैं
निग्रंथ	वह जो सभी बंधनों से मुक्त हो

बोधिसत्व (दुनिया के कल्याण के लिए काम करके निर्वाण प्राप्त करने वाला व्यक्ति)

रूप	बोधिसत्त्व
स्वर्ग के बुद्ध	अमिताभ
हाथ में कमल लिए बोधिसत्व	अवलोकितेश्वर / पद्मपाणि
यातना के संरक्षक	क्षितिग्रह
भावी बुद्ध	मैत्रेय
10 पारमिताओं का वर्णन करने वाली पुस्तकों को धारण करने वाले बोधिसत्व	मंजूश्री
वज्र धारण किये बोधिसत्व	वज्रपाणि

मगध साम्राज्य

पद	विवरण
अमात्य	प्रशासनिक अधिकारी और न्यायिक अधिकारी।
अध्यक्ष	विभिन्न विभागों की देखभाल के लिए नियुक्त अधिकारी
अक्षपटलाध्यक्ष	महालेखाकार जो शाही खजाने और खाते का निरीक्षण करते थे
आकराध्यक्ष	खनन की देखरेख करने वाले अधिकारी
आयुक्त	मौर्य काल में अक्सर इस्तेमाल होने वाले एक अधिकारी का शीर्षक
भाग	अशोक के काल में एक प्रकार का कर। यह उत्पाद का 1/8 था।
धम्ममहामात्र	धार्मिकता के अधिकारी
गोपा	10 गावों का मुखिया
ग्रामिक	गाँव के बुजुर्गों में से चुना गया गाँव का मुखिया
प्रमुख	व्यापारी संघ या श्रेणी के अध्यक्ष
रज्जुक	अशोक काल के दौरान अधिकारी लोगों को पुरस्कृत और दंडित करने के लिए जिम्मेदार
रथकार	रथ निर्माता
समता	दक्षिण पूर्व बंगाल का क्षेत्र
समाहर्ता	राजस्व संग्रह अधिकारी
सन्निधाता	भंडार रक्षक और कोषाध्यक्ष

शतमान	चांदी का एक प्रकार का सिक्का जिसका वजन लगभग 180 ग्रेन होता है।
स्कंधावार	सैन्य शिविर
युक्त	अधीनस्थ अधिकारी
शून्यवंश (शून्यनिवश)	खाली पड़ी जमीन पर बंदोबस्त करना
अंतमहामात्र	सीमांत क्षेत्र के प्रभारी महामात्य
प्रतिवेदक / पुलिसनी	विषय की राय के बारे में राजा को सूचित करने के लिए जिम्मेदार अधिकारी
क्षेत्रिका	खेत का मालिक
पण्याध्यक्ष	व्यापार संबंधी पहलुओं के लिए जिम्मेदार अधिकारी
संस्थाध्यक्ष	बाजार प्रमुख
रूपदर्शक	सिक्का और मुद्रा के निरीक्षक
पालिशा / परिषद	परिषद
सुंदरोई	मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में परिषद के एक रूप का उल्लेख किया है।
आन्तर्वशिक	यह शाही महल की रखवाली के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के प्रमुख था
वर्ण शंकर	वर्ण का आपस में मिश्रण
विजिगीषु	आगे का क्षेत्र जिस पर विजय प्राप्त की जानी है या जिसे अभी जीतना बाकी है
सूत्राध्यक्ष	कपड़ा कार्यशाला के प्रभारी अधिकारी।
लक्षणाध्यक्ष	टकसाल से संबंधित अधिकारी
लवणाध्यक्ष	नमक और नमक उत्पादन के प्रभारी अधिकारी
प्रादेशिक	अपराध की जांच के लिए जिम्मेदार पुलिस अधिकारी
हस्त्याध्यक्ष	हाथी सेना का सेनापति
भृतक	वे साम्राज्य द्वारा किराए पर लिए गए सैनिक होते थे
अताविवाला	वनवासियों द्वारा आपूर्ति की जाने वाली युद्ध टुकड़ी
मौला	वंशानुगत सेना
गूढ़ पुरुष	जासूसी विभाग।
कंटकशोधन	आपराधिक मामलों से निपटने के लिए जिम्मेदार न्यायालय
धर्मस्थीय	सिविल मामलों से निपटने के लिए जिम्मेदार न्यायालय।

कुषाण साम्राज्य और सातवाहन

पद	विवरण
आहार	जिले या प्रांत
चट्टू	व्यापारियों का कारवां
देवपुत्र	शुंग शासक द्वारा अपनाई गई उपाधि जो उनके दैवीय मूल को दर्शाती है
देवकुल	मृत सम्राट का मंदिर
दीनार	ये सोने के रूप में जारी रोमन सिक्के हैं
गंधिक	इत्र बेचने वाले और इससे सम्बंधित हो सकते हैं
गाथा सप्तशती	एक सातवाहन शासक द्वारा प्राकृत में लिखित ग्रामीण प्रेम की एक अनुग्रह मिलाप
गौल्मिक	ग्राम प्रशासक
कर्षापण	तांबे का सिक्का
खटिया - दपा - मन - माडा	गौतमीपुत्र सातकर्णी द्वारा अपनाया गया शीर्षक का अर्थ है जिसने सभी क्षत्रियों को नष्ट कर दिया
महाभोज	अमात्य के अधीन सातवाहनों के सामंत
निर्यामक	एक व्यापारी जहाज का पायलट
पामचानेकम	पांच गिल्ड द्वारा जारी किया गया सिक्का
परिहार	किसी भी प्रतिरक्षा से छूट दी गई है
पुराण	कुषाण काल का एक चाँदी का सिक्का
रत्नद्वीप	श्रीलंका
शास्क	व्यापारी जहाज का कप्तान
श्रेणिबाला	योद्धा संघ
स्त्रीधन	महिलाओं की संपत्ति
सुवर्णद्वीप	दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र
उपरक्षिता	भिक्षुओं के लिए गुफाओं का निर्माण करने वाले व्यक्ति या समूह
वालैक्कारस	शाही सेवा के लिए सेना
व्रातक्षत्रिय	क्षत्रिय जो बाहर से आए और भारतीय समाज में आत्मसात हो गए
वृशाली	शूद्र जाति से सम्बंधित स्त्रियाँ, सुख के लिए
यौधेय	पूर्वी पंजाब के आसपास एक गणराज्य

संगम युग

पद	विवरण
अहूम	प्रेम कविता
अरसर	राजा
ब्रह्मदेय	ब्राह्मणों को भूमि दान
गौड़ा	ग्राम प्रधान
हेगड़े	राजस्व अधिकारी
इरई	सामंतों द्वारा दिया गया दान और युद्ध में एकत्रित लूट का माल
इराकु	जबरन उपहार
कलंजू	चोलों का सोने का सिक्का
कलातिका	मोतियों का अधीक्षक
कनाटिकन	लिपिक प्रमुख
करई	भूमि कर
करण किल्मई	कृषकों का अधीनस्थ अधिकार
को	राजा
को, कोनमई कोंडन	राजाओं के राजा
कुडी निक्की	एक ऐसी स्थिति जिसमें गाँव में पहले से बसे लोगों को हटा दिया गया था
कुडी निंगा	इसका मतलब है कि पहले से बसने वाले को परेशान नहीं किया जाना चाहिए
कुंजी	पर्वतीय क्षेत्र
कुटी	संगम समाज का गोत्र आधारित वंश समूह।
मरुतम	वेटलैंड
मियाताची	भेंट पानेवाला का उच्च अधिकार
मुलई	ग्रामीण पथ
तमिलनाडु	कई बस्तियों से मिलकर बना इलाका
नागरक्कानी	शहरी राजस्व इकाई
नट्टार	नटू की शासी सभा
नटुकुल	युद्ध में बहादुर सेनानी की मौत का स्मारक
नीताल	तटीय/तटीय
पलाई	ग्रामीण पथ
पुरम	युद्ध को परिभाषित करती कविता
सभा	ब्रह्मदेय ग्राम में ब्राह्मण की सभा
तनियूर	एक नाडु के अधीन एक ब्रह्मदेय लेकिन उसके न्याय अधिकार क्षेत्र से मुक्त
उलगु	सीमा शुल्क
वैश्यार	व्यापारी
वरियाम	कर देने वाले क्षेत्र की एक इकाई
वरियार	कर संग्राहक
वत्तकिरुतुअल	एक पराजित राजा की अनुष्ठानिक आत्महत्या
वेलिएर	एक प्रमुख
वेल्लार	धनी किसान
वेंडर	ताज ग्रहण किया हुआ राजा

संगम युग में सिंचाई से संबंधित शब्द

अरघट्ट	फारसी पहिया
एरविर्या	सिंचाई के लिए विकसित तालाबों के रख-रखाव के लिए गठित समिति

गुप्त काल

पद	विवरण
अपराहत भूमि	वन भूमि
अष्टकुला अधिकार	शहरी प्रशासन के लिए जिम्मेदार 8 लोगों की समिति
बलि	अतिरिक्त और दमनकारी कर
भाग	उपज में किसानों द्वारा चुकाया जाने वाला राजा का हिस्सा
भोग	राजा को फल, जलाऊ लकड़ी आदि की आवधिक आपूर्ति
भुक्ति	गुप्त काल में एक राज्य (प्रांत) की प्रशासनिक इकाई
चरगाह भूमि	चारागाह भूमि
दंडपाशिक	पुलिस विभाग के मुख्य अधिकारी
गोपासरामिन	समुद्रगुप्त की अवधि के दौरान, इस अधिकारी ने शाही देय राशि की वसूली के लिए खातों के मामलों की जांच की
हन्या	कृषि उपज में राजा का हिस्सा।
खाद्यप्पिका	शाही रसोई के रखरखाव के लिए जिम्मेदार अधिकारी
खिल	बंजर भूमि
क्लिप्ट-उपक्लिप्ट	वकाटक साम्राज्य के दौरान नकद लेनदेन पर लगाया जाने वाला कर।
कुलपुत्र	वकाटक साम्राज्य के दौरान अधीनस्थ अधिकारी
कुमारामात्य	गुप्तों के अधीन केंद्रीय और प्रांतीय प्रशासन के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करने वाला

लिच्छवी दुहित्रा	लिच्छवी का पोता
लोकपाल	एक प्रांत का राज्यपाल
महाबलाधिकृत	महल रक्षकों के प्रमुख।
महादंडनायक	न्याय – मंत्री
महाप्रजापति	हाथी दल के मुख्य अधिकारी
महाश्वपति	अश्वारोही सेनापति
नागरक	संभ्रांत शहरी पुरुष
नगरश्रेष्ठिन	शहर का मुखिया
पौर	नगर प्रशासन के लिए जिम्मेदार परिषद
परम	गुप्त राजाओं द्वारा अपनाई गई उपाधि
प्रथम कुलिक	समुदाय में प्रतिनिधि शिल्पकार
प्रथमकायस्थ	सरकारी अधिकारियों के प्रतिनिधि
पुष्पपाल	गुप्त काल में लिखित विवरण रखने वाला। इसे करणिका भी कहा जाता है
राज्याधिकृत	वाकाटक साम्राज्य के तहत प्रांत के राज्यपाल
रणभंडागरिका	हथियारों और गोला-बारूद के रखरखाव के लिए जिम्मेदार अधिकारी
संधिविग्रहिका	विदेश मंत्री, युद्ध और शांति के लिए जिम्मेदार मंत्री
सार्थवाह	व्यापारिक समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाला
सर्वध्यक्ष	वाकाटक साम्राज्य के दौरान अधिकारी
सेनाभक्त	आम लोगों द्वारा अपने सैन्यदल के दौरान सेना को दिए जाने वाले कर का रूप।
शौल्किक	कर या शुल्क वसूलने के लिए जिम्मेदार अधिकारी
शुल्क	शहरी पथकर
उद्रंग	पुलिस कर
उपरिक	राजा द्वारा सीधे नियुक्त किए प्रांतीय गवर्नर
वास्तु भूमि	रहने योग्य भूमि
वात भूत	भरण-पोषण की रस्मों के लिए राज्य द्वारा लगाया गया उपकर
विनयपुर	वह जो राजा के दरबार में अतिथियों का प्रतिनिधित्व करता था
विषयपति	जिला प्रभारी
विषय	जिला
विष्टि	जबरन श्रम के माध्यम से भुगतान किए गए कर का एक रूप
रूपक, सतमन, पन्ना	चांदी के सिक्के
कषर्पन, काकिनी	तांबे के सिक्के
निष्क, पाल	सोने के सिक्के

गुप्तोत्तर काल और अन्य पद

पद	विवरण
अघारिकस	ये हर्ष के काल में दान में दी गई भूमि के रख-रखाव के लिए उत्तरदायी अधिकारी होते हैं
कटक	सेना द्वारा उपयोग किए जाने वाले शिविर
कडेसियर	समाज के सबसे निचले वर्ग से सम्बंधित कृषि में लगे लोग
गहपति	अमीर परिवारों द्वारा अपनी जमीन पर काम करने के लिए नियुक्त दास और मजदूर
डंडा भुक्ति	बंगाल और उड़ीसा की सीमा के बीच स्थित प्रशासनिक क्षेत्र
शतक	मथुरा क्षेत्र में पाया जाने वाला एक प्रकार का कपड़ा
स्कंधावार	सैन्य शिविर
परियार	कृषि कर्म में लगे मजदूर

❖ ❖ ❖

19 समयरेखा: प्राचीन भारत का इतिहास

समयावधि	महत्वपूर्ण विकास
30,00,000 – 10,000 ईसा पूर्व	• **पूर्व-ऐतिहासिक काल:** ○ इसमें 5 काल शामिल हैं- **पैलियोलिथिक, मेसोलिथिक, नियोलिथिक, चालकोलिथिक और लौह युग।** ○ रॉबर्ट ब्रूस फूट **ने भारत में खोजे गए संभवत: पहले पुरापाषाण उपकरण- "पल्लवरम हस्तकुठार" की खोज की**। आर बी फूट को **"पूर्व-ऐतिहासिक पुरातत्व के पिता" के रूप में जाना जाता है।** ○ सर मोर्टिमर व्हीलर: **भारत की पूर्व-ऐतिहासिक संस्कृतियों और उनके अनुक्रम के बारे में हमारे ज्ञान में योगदान दिया।** • **पुरापाषाण युग:** ○ **पाषाण युग की प्रारंभिक अवधि, जो प्लेइस्टोसिन काल या हिम युग में विकसित हुई थी।**
9000-4000 ईसा पूर्व	• **मेसोलिथिक या मध्य पाषाण युग:** • पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच **संक्रमणकालीन चरण**। • भारत में मध्यपाषाणकालीन पुरातात्विक सामग्री की खोज का श्रेय **जॉन इवान को जाता है**। • **गंगा के मैदानों का पहला मानव उपनिवेश।** • **स्थल:** भीमबेटका, महदहा, सराय नाहर राय, आदमगढ़ (म.प्र.), लंघनाज (गुजरात), आदि। • भीमबेटका (यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल) में प्राचीनतम गुफा चित्र
7000-1000 ईसा पूर्व	**निओलिथिक युग या नव पाषाण युग:** • भारत में नवपाषाणकालीन पुरातात्विक सामग्री की खोज का श्रेय डॉ. **प्रिमरोज को जाता है**। • **पशुओं को पालतू बनाना:** मवेशी, भेड़ और बकरियां • **स्थल:** ○ **मेहरगढ़ (पाकिस्तान):** प्रारंभिक नवपाषाण स्थल जिसे बलूचिस्तान की रोटी की टोकरी के रूप में जाना जाता है। ○ कश्मीर घाटी, चिरांद (बिहार), देओजली हदिंग, बेलन घाटी (उ.प्र.), और मस्की आदि। ○ चोपानी-मांडो, बेलन घाटी: मिट्टी के बर्तनों के उपयोग का सबसे पुराना प्रमाण ○ **बुर्जहोम:** अद्वितीय आयताकार कुल्हाड़ी (चॉपर), घरेलू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ दफनाया गया। ○ **कोल्डिहवा और महागरा:** दुनिया में चावल की खेती का सबसे पुराना सबूत ○ **दक्षिण भारत:** कर्नाटक में मस्की, ब्रह्मगिरी, हलूर व कोडेकल तथा तमिलनाडु में पैयमपल्ली और आंध्र प्रदेश में उत्लूर। ○ **कोल्डिहवा (बेलन घाटी):** त्रिस्तरीय नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग की बस्तियों की उपस्थिति।

3500-1000 ईसा पूर्व	• **चालकोलिथिक (धातु) युग:** • भारत का **प्रथम धातु युग** चालकोलिथिक युग कहलाता है। • **पाषाण-ताम्र युग** भी कहा जाता था। • **हड़प्पा संस्कृति** को चालकोलिथिक संस्कृति का हिस्सा माना जाता है। • **स्थल:** ○ दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के पश्चिमी भाग एवं दक्षिण और पूर्वी भारत में। ○ तमिलनाडु के पय्यमपल्ली में कई कांस्य और तांबे की वस्तुएं, टेराकोटा की मूर्तियाँ और मिट्टी के बर्तन पाए गए। ○ नवदाटोली, जोरवे, दैमाबाद, अहर, बनास, मालवा, इनामगांव, सोनगांव, नासिक, महगम, कौशांबी, आलमगीरपुर, रोपड़ आदि।
1000- 500 ईसा पूर्व	**लौह युग:** • वेदों में बार-बार उल्लेख किया गया है। • **महत्वपूर्ण महापाषाण स्थल:** कर्नाटक में हलूर और मस्की, आंध्र प्रदेश में नागार्जुनकोंडा और तमिलनाडु में आदिच्चनल्लूर।
2500-1750 ईसा पूर्व	**हड़प्पा सभ्यता (सिंधु घाटी सभ्यता):** • **दक्षिण एशिया में पहली शहरी सभ्यता**, मेसोपोटामिया और मिस्र की सभ्यताओं के समकालीन। • **उत्खनन किया गया पहला स्थल:** 1921 में दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा स्थल • **जॉन मार्शल:** "सिंधु सभ्यता" शब्द का प्रयोग करने वाले पहले विद्वान। • **सर्वाधिक स्वीकृत समयरेखा:** 2500BC-1750 बीसी (कार्बन-14 डेटिंग) • **सिंधु सभ्यता की हृदयभूमि:** हड़प्पा-घग्गर-मोहनजोदड़ो अक्ष • **स्थल:** हड़प्पा (खोजा जाने वाला पहला पुरातात्विक स्थल), मोहनजो-दाड़ो, चन्हुदड़ो, लोथल, धोलावीरा, सुरकोटदा, कालीबंगन (काली चूड़ियाँ), रोपड़, बनावली, रंगपुर, राखीगढ़ी, आलमगीरपुर, दैमाबाद, कोटिदीजी, आमरी, सुत्कांगेडोर • **हड़प्पा लिपि:** भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी लिपि • **सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल:** ○ **मोहनजोदाड़ो:** सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल ○ **राखीगढ़ी:** सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा भारतीय स्थल • **भारतीय पुरातत्व के पिता:** अलेक्जेंडर कनिंघम, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के पहले महानिदेशक। • **3300-2600 ईसा पूर्व:** प्रारंभिक हड़प्पा चरण • **2600-1900 ईसा पूर्व:** परिपक्व हड़प्पा चरण • **1900-1300 ईसा पूर्व:** उत्तर हड़प्पा चरण-गेरुए रंग की मिट्टी के बर्तनों की संस्कृति (ताम्रपाषाण संस्कृति) • 2000 ईसा पूर्व के बाद: • सिंधु घाटी सभ्यता **में गिरावट आई और धीरे-धीरे फीका पड़ गया।** • इस सभ्यता के पतन के कारणों को मजबूती से स्थापित नहीं किया जा सका है। • सबसे स्वीकार्य कारण **पारिस्थितिक असंतुलन** है।
1500-600 ईसा पूर्व	**वैदिक संस्कृति (1500-600 ईसा पूर्व):** • **आर्यों** के आगमन के साथ वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व-600 ईसा पूर्व) का इतिहास शुरू होता है • **बोगजकाई शिलालेख:** चार वैदिक देवताओं - इंद्र, वरुण, मित्र, नासत्य- का उल्लेख उनकी मातृभूमि के रूप में मध्य एशियाई होने के सिद्धांत को सिद्ध करता है। • आर्यों के नाम **हित्ती शिलालेख (अनातोलिया), कासाइट्स शिलालेख (इराक) और मितानी शिलालेख (सीरिया) में दिखाई देते हैं।** • **भाषा:** इंडो-आर्यन भाषा, संस्कृत बोली जाती है।

	1500-1000 ईसा पूर्व: ऋग वैदिक/प्रारंभिक वैदिक काल: • इस युग के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत **ऋग्वेद** (10 मंडल और 1028 सूक्त) हैं। • प्रारंभिक वैदिक लोग या आर्य सात नदियों की भूमि में बसे थे, **जिन्हें "सप्त सिंधु" कहा जाता था** • ऋग्वैदिक राजनीति सामान्य रूप से **राजतंत्रीय थी** और उत्तराधिकार **वंशानुगत था** • ऋग्वैदिक समाज **पशुपालक था** और गौण व्यवसाय **कृषि था** • **सभा** (कुछ प्रमुख) और **समिति** (बड़ा निकाय)की उपस्थिति
	• **1000-600 ईसा पूर्व : उत्तर वैदिक काल:** • **सूचना के स्रोत:** सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद • उत्तर वैदिक ग्रंथों में भारत के तीन प्रभागों का उल्लेख है: **आर्यावर्त** (उत्तरी भारत), **मध्यदेश** (मध्य भारत) और दक्षिणापथ **(दक्षिणी भारत)**। • **4-स्तरीय वर्ण** व्यवस्था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र • प्रकृति पूजा और यज्ञ • **1000 ईसा पूर्व:** भारतीय उपमहाद्वीप में लोहे का उपयोग; महापाषाण संस्कृति की शुरुआत। • **950 ईसा पूर्व:** महाभारत युद्ध (कुरुक्षेत्र युद्ध) • **हस्तिनापुर** के सिंहासन के लिए चचेरे भाइयों, **कौरवों और पांडवों** के दो समूहों के बीच एक वंशवादी उत्तराधिकार विवाद से संघर्ष उत्पन्न हुआ। • यह वह घटना भी है जिसने **हिंदू पवित्र ग्रन्थ भगवद गीता की नींव रखी**। • **600 ईसा पूर्व:** पंचाल और विदेह में संकलित उपनिषद
600 - 300 ईसा पूर्व	**श्रौतसूत्र** और **गृह्यसूत्र** का विकास
563-483 ईसा पूर्व	गौतम बुद्ध (563 ईसा पूर्व-483 ईसा पूर्व) • **सिद्धार्थ, शाक्यमुनि और तथागत** के नाम से भी जाना जाता है • शाक्य **वंश से संबंधित** • **प्रतीक:** कमल और बैल • **पिता:** शुद्धोदन • **माता:** महामाया (कोशल वंश की राजकुमारी); उनकी मौसी प्रजापति गौतमी ने उनका लालन-पालन किया। उन्होंने उसको 'गौतम' नाम दिया। • **पत्नी:** यशोधरा और एक बेटा राहुल। • **जन्म स्थान:** लुम्बिनी, कपिलवस्तु (वर्तमान नेपाल में) शाक्य गणराज्य की राजधानी • **ज्ञान की प्राप्ति:** 33 वर्ष की आयु में निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर उरुवेला (बोधगया) में पीपल के वृक्ष के नीचे। • **महापरिनिर्वाण:** 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में साल वृक्ष के नीचे। • **बुद्ध के समकालीन:** महावीर जैन, राजा प्रसेनजित, बिम्बिसार और अजातशत्रु।
544 - 492 ईसा पूर्व	**हर्यक राजवंश (544-492 ईसा पूर्व):** • **बिम्बिसार** ने मगध पर शासन किया; मगध का पहला महत्वपूर्ण शासक बिंबिसार **बौद्ध धर्म का संरक्षक था**। • **राजधानी:** राजगृह या गिरिव्रज • **अथर्ववेद में पहली बार "मगध"** शब्द का उल्लेख हुआ है।
539-467 ईसा पूर्व	**वर्धमान महावीर:** • **जन्म:** वैशाली के निकट कुण्डग्राम। ज्ञात्रिक कुल से संबंध। बुद्ध और महावीर समकालीन थे। • **माता-पिता:** सिद्धार्थ (ज्ञात्रिक वंश के प्रमुख) और त्रिशला (लिच्छवि प्रमुख चेटक की बहन)। • **प्रतीक:** महावीर का प्रतीक सिंह था; ऋषभनाथ का बैल था; पार्श्वनाथ का फनवाला नाग था। • **मृत्यु:** 72 वर्ष की आयु में पटना के पास पावापुरी में 527 ईसा पूर्व।

516 ईसा पूर्व	• ईरानी शासक डेरियस ने **पंजाब और सिंध को अधिग्रहीत कर लिया।** • इस विकास के कारण आरमेइक **लिपि और खरोष्ठी लिपि** का उदय हुआ।
छठी शताब्दी ईसा पूर्व (600-500 ईसा पूर्व)	• **चार्वाक का लोकायत** या भौतिकवादी दर्शन • सांख्य प्रणाली के संस्थापक कपिल का जन्म • छठी शताब्दी ईसा पूर्व को भारतीय उपमहाद्वीप में **'दूसरे शहरीकरण'** के युग के रूप में जाना जाता है
5वीं शताब्दी ईसा पूर्व (500-400 ईसा पूर्व)	• **पाणिनी** का व्याकरण (**अष्टाध्यायी**)। • मध्य गंगा बेसिन **में पहला नगर, पहली बार सिक्के।** • भारतीय समाज में चांडाल का उदय
500 - 200 ईसा पूर्व	• धर्मसूत्रों का उदय हुआ।
492 - 460 ईसा पूर्व	• मगध में अजातशत्रु का शासन। • अजातशत्रु **बुद्ध के समकालीन थे।** उसके शासनकाल में बुद्ध की मृत्यु हो गई। • हर्यक वंश का सबसे **शक्तिशाली और आक्रामक शासक।** • दो अभिनव सैन्य हथियारों का इस्तेमाल: **युद्ध इंजन** (महाशिलाकंटक); **गदा वाला रथ** (रथमुसला) • **राजगृह की किलेबंदी** शुरू की।
484-425 ईसा पूर्व	• **हेरोडोटस** का जीवन काल, जिसे **"इतिहास का पिता"** कहा जाता है
483 ईसा पूर्व	• **प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ** • **स्थान:** राजगृह में सप्तपर्णी गुफा • **अध्यक्ष:** महाकश्यप • **संरक्षक:** अजातशत्रु (हर्यक) • **परिणाम:** ○ **बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तुरंत बाद** आयोजित किया गया था। ○ **बुद्ध की शिक्षाओं (सुत्त) और शिष्यों के लिए नियमों को संरक्षित करने के उद्देश्य से** आयोजित की गई थी। ○ इस संगीति के दौरान बुद्ध की शिक्षाओं को **तीन पिटकों** में विभाजित किया गया था। ○ उपाली द्वारा **सुत्तपिटक और विनयपिटक** का संकलन।
460-444 ईसा पूर्व	• **उदयिन (उदयभद्र) ने मगध में** शासन किया • हर्यक वंश का **अंतिम शासक।** • इनके बाद **शिशुनाग राजवंश का प्रारंभ हुआ था।** • गंगा और सोन नदियों के संगम पर **स्थित पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) में नई राजधानी** की स्थापना की।
412-344 ईसा पूर्व	शिशुनाग वंश (412BC-344 बी सी) • राजधानी को अस्थायी रूप **से वैशाली स्थानांतरित किया गया।** • शिशुनाग पहले वाराणसी (बनारस) में **वाइसराय/अमात्य (उच्च पदस्थ अधिकारी) थे।**
383 ईसा पूर्व	• द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ • **स्थान:** वैशाली • **अध्यक्ष:** सब्बाकामी • **संरक्षक:** कालाशोक (शिशुनाग) • **परिणाम:** स्थाविरवादिनों और महासांघिकों में विभाजन

344-323 ईसा पूर्व	**नंद वंश (प्रथम गैर-क्षत्रिय वंश):** • **महापद्म नंद:** जो एक 'शूद्र' (गैर-क्षत्रिय) वंश से थे, ने मगध में नंद वंश की नींव रखी। • पाली ग्रंथों में इसे **उग्रसेन** भी कहा गया है। उन्हें **"भारत का पहला ऐतिहासिक सम्राट"** कहा जाता है। **घनानंद:** • नंद वंश का **अंतिम महत्वपूर्ण राजा।** • ग्रीक ग्रंथों में **उन्हें एग्रैम्स या एक्सांद्रामेस** के रूप में जाना जाता है। • **नंदोपक्रमणी** (एक विशेष मापक मानक) के आविष्कार का श्रेय। • वह **मैसेडोन के सिकंदर का समकालीन था।** • अंत में, उन्हें चाणक्य के साथ **चंद्रगुप्त मौर्य ने उखाड़ फेंका, जिसके कारण मगध में मौर्य साम्राज्य की नींव पड़ी।**
327 - 325 ई.पू	• **सिकंदर** ने हिंदुकुश को पार किया और उत्तर-पश्चिमी भारत में प्रवेश किया जो 327 ईसा पूर्व में एकेमेनिड प्रांत था। • हाइडेस्पीज की लड़ाई (झेलम) • सिकंदर ने घनानंद के शासनकाल के दौरान उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया।
322-298 ईसा पूर्व	**चंद्रगुप्त मौर्य का राज्यारोहण:** • चाणक्य (कौटिल्य) की सहायता से **322 ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य** की नींव रखी। • उत्तर भारत के **प्रथम एकीकरण का** श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य को दिया जाता है। • वह **मौर्य साम्राज्य का मुख्य वास्तुकार था और उसने** एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया, जिसमें बिहार, नेपाल, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भारत और दक्कन शामिल थे। • **मेगस्थनीज (इंडिका की रचना)**, चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस द्वारा भेजा गया एक यूनानी राजदूत था।
तीसरी शताब्दी (300 ईसा पूर्व) ईसा पूर्व	• **प्रथम जैन संगीति तीसरी** शताब्दी ईसा पूर्व में आयोजित की गयी थी • **अध्यक्ष:** स्थूलबाहु, संरक्षक : चंद्रगुप्त मौर्य • **स्थान:** पाटलिपुत्र में। • **परिणाम:** 14 पूर्वा के स्थान पर 12 अंगो का संकलन
298-273 ईसा पूर्व	• **चंद्रगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र बिन्दुसार था**, जिन्हें यूनानियों द्वारा **"अमित्रोचेट्स" के रूप में जाना जाता है**, जबकि महाभाष्य उन्हें **अमित्रघात** (दुश्मनों का नाश करने वाला) के रूप में संदर्भित करता है। • तिब्बती बौद्ध भिक्षु तारानाथ ने बिन्दुसार को **"दो समुद्रों के बीच की भूमि यानी प्रायद्वीपीय भारत का विजेता"** के रूप में वर्णित किया है।
273-237 ईसा पूर्व	**अशोक महान के सम्राट का शासनकाल:** • **सर्वकालिक महानतम राजाओं में से एक के** रूप में माना जाता है, और शायद अपने शिलालेखों के माध्यम से **अपने लोगों के साथ सीधा संपर्क बनाए रखने वाला पहला शासक था।** • बिन्दुसार के शासनकाल में उन्हें तक्षशिला **और उज्जैन का सूबेदार** नियुक्त किया गया था। • उनकी राजधानी **पाटलिपुत्र (पटना) में थी और तक्षशिला और उज्जैन** में प्रांतीय राजधानियाँ थीं। • अशोक के अधीन, मौर्य साम्राज्य अपने **चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।** • **भेरीघोष का स्थान धम्मघोष ने ले लिया।** • वह **मोगलीपुत्त तिस्स** के मार्गदर्शन में **बौद्ध बन गया।** • अशोक ने **पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया।**

	• उसने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री **संघमित्रा** को **सीलोन (श्रीलंका) भेजा।** • **जेम्स प्रिंसिप**, एक ब्रिटिश पुरातत्वविद और औपनिवेशिक प्रशासक, अशोक के फरमानों को समझने वाले पहले व्यक्ति थे। • **'धम्म'** के प्रचार के लिए **'धम्म महामात्र'** नामक एक नए अधिकारी की नियुक्ति की गई। • भारत का **राष्ट्रीय चिन्ह** अशोक के सारनाथ स्तंभ से लिया गया है।
261 - 260 ईसा पूर्व	• कलिंग युद्ध द्वारा अशोक।
250 ईसा पूर्व	• **तृतीय बौद्ध संगीति** का आयोजन किया गया। • **स्थान:** पाटलिपुत्र • **अध्यक्ष:** मोगलीपुत्त तिस्स • **संरक्षक:** अशोक (मौर्य) • **परिणाम:** ○ अभिधम्म पिटक का संकलन ○ विश्व के विभिन्न भागों में मिशनरी भेजने का निर्णय
220 ईसा पूर्व	• चीन की महान दीवार का निर्माण
200 ईसा पूर्व के आस-पास	• **यूनानियों का भारत पर आक्रमण।** • भारत में इंडो-ग्रीक शासन की 3 शाखाएँ थीं, अर्थात्, बैक्ट्रिया यानी उत्तरी अफगानिस्तान, तक्षशिला (तक्षशिला) और साकल या सियालकोट जो अब पाकिस्तान में है। • मध्य एशिया के साथ घनिष्ठ और व्यापक संपर्क प्रारंभ हुआ। • **भागवतवाद या कृष्ण पंथ** का उदय • **पश्चिमोत्तर दक्कन में चैत्यों और मठों का निर्माण शुरू हुआ। अमरावती स्तूप** का निर्माण शुरू हुआ।
187 ईसा पूर्व	• **पुष्यमित्र शुंग** ने अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या कर दी और 187 ईसा पूर्व में शुंग वंश की स्थापना की। • इस प्रकार मौर्य शासन समाप्त हो गया और मगध के शासकों के रूप में **शुंग वंश की स्थापना हुई**
187-78 ईसा पूर्व	**शुंग वंश:** • **संस्थापक:** पुष्यमित्र शुंग, जो मौर्यों के अधीन सेनापति थे • **पाटलिपुत्र** में राजधानी और **विदिशा** में दूसरी राजधानी (पुत्र अग्निमित्र के वायसराय के अधीन)। • पुष्यमित्र शुंग ने **भरहुत स्तूप बनवाया।** • पुष्यमित्र ने **ब्राह्मणवाद का पालन किया।** • शुंग वंश का अंतिम शासक **देवभूति था।** • शुंगों ने **सोने और चांदी के सिक्के जारी किए।** • **मथुरा कला शैली ने** विशेष रूप से यथार्थवादी मानवीय चित्रण में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं।
165 - 145 ईसा पूर्व	• मेनेंडर या मिलिंद का समय। • नागसेन द्वारा **"मिलिंदपन्हो"** के लिए जाना जाता है।
58 ईसा पूर्व	• विक्रम संवत् या **विक्रम युग।**
27बीसी - 14 ई	• प्रथम रोमन सम्राट **ऑगस्टस** का शासनकाल। • केरल के मुजिरिस में, ऑगस्टस के मंदिर का निर्माण भी शायद रोमन व्यापारियों द्वारा किया गया था। • **रोमन सम्राट ऑगस्टस** के दरबार में भारतीय मिशन भी भेजे गए।

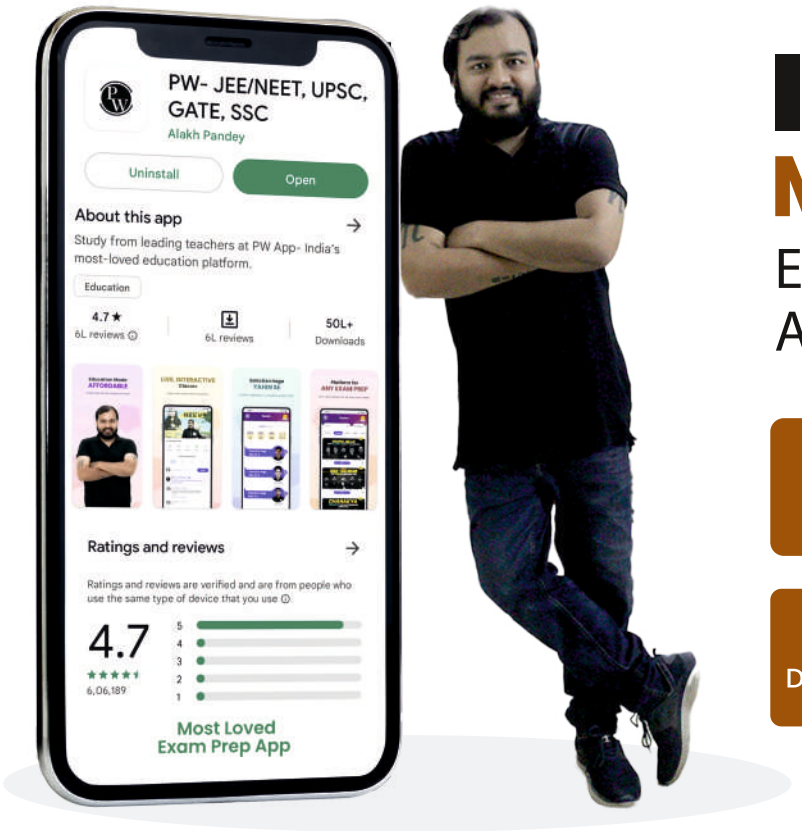
प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व	• कलिंग में, खारवेल द्वारा एक मजबूत राज्य की स्थापना की गई थी जो मगध तक विकसित हुआ था। **संगम काल:** • दक्षिणी भारत में **पहली शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी के अंत तक की** अवधि। • प्राचीन तमिलनाडु में **तीन संगम (तमिल कवियों की अकादमी) को लोकप्रिय रूप से "मुच्छंगम" कहा जाता है। ये संगम पांड्यों के शाही संरक्षण में फले-फूले।** • संगम साहित्य **प्राचीन दक्षिण भारत के इतिहास अर्थात तमिलकम का मुख्य स्रोत है।** • **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ई के दौरान** संकलित किया गया था **और प्रेम और युद्ध** के विषय के आसपास **काव्यात्मक प्रारूप** में रचा गया था। • संगम शाही संरक्षण के तहत आयोजित **तमिल कवियों का एक कॉलेज या सभा थी।**
78 ई.	• **"शक युग"** या "शक संवत" **की स्थापना कनिष्क ने की थी।** • कनिष्क का शासन एक परंपरा के अनुसार 78 ए.डी. में प्रारंभ हुआ। • कनिष्क ने चौथा बौद्ध संगीति श्रीनगर में बुलाई।
80-115 ई	• पेरिप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी
98 ई	• **चतुर्थ बौद्ध संगीति** का आयोजन हुआ। • **स्थान:** कश्मीर • **अध्यक्ष:** वसुमित्र और उपाध्यक्ष: अश्वघोष • **संरक्षक:** कनिष्क (कुषाण) • **परिणाम:** • **महाविभाषा शास्त्र** का संकलन। • सभी विचार-विमर्श **संस्कृत में आयोजित किए गए थे।** • हीनयान (छोटा वाहन/चक्र) और महायान (बड़ा वाहन) में **बौद्ध धर्म का विभाजन।** • **अभिधम्म ग्रंथों** का प्राकृत से संस्कृत में अनुवाद किया गया।
प्रथम शताब्दी ई. (1-100 ई.)	• मानसून की खोज। • ईसाई धर्म का आगमन।
पहली शताब्दी ई. से पांचवीं शताब्दी ई. तक	• **अजंता चित्रों** की अवधि (फ्रेस्को पेंटिंग का उपयोग करके किया गया) • वाकाटक राजाओं का संरक्षण- हरिषेण प्रमुख हैं। • पेंटिंग आमतौर पर बौद्ध धर्म - बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं के इर्द-गिर्द। • कुल 29 गुफाएँ **हैं (सभी बौद्ध)** • अजंता की गुफाओं का संदर्भ चीनी बौद्ध यात्रियों फाह्यान (चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान) और ह्वेन सांग (सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान) के यात्रा वृतांत में पाया जा सकता है। • चित्रों में नीले रंग की अनुपस्थिति अत्यधिक आकर्षक विशेषताएं हैं। • इन गुफाओं को **1983 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल नामित किया गया था।**
दूसरी शताब्दी (100-200 ई.)	• चरक और चरक संहिता। • कुषाण साम्राज्य शिखर पर पहुँच गया।
106-130 ई.	• गौतमीपुत्र सातकर्णी की अवधि।
130-150 ई.	• शक शासक रुद्रदामन प्रथम का शासनकाल। • उन्होंने जूनागढ़ शिलालेख में काव्य शैली में सबसे पुराना संस्कृत शिलालेख जारी किया।
150 ई.	• टॉलेमी का भूगोल।
165-194 ई.	• सातवाहन वंश के अंतिम महान राजा यज्ञ श्री सतकर्णी की तिथि।

220 ई.	• सातवाहन साम्राज्य का अंत।
230 ई.	• उत्तर-पश्चिमी भारत में कुषाण शासन का अंत।
250 ई.	• अफगानिस्तान और सिंधु के पश्चिम में कुषाण साम्राज्य ईरान की ससानी शक्ति द्वारा दबा दिया गया।
319 ई.	• **गुप्त काल** की शुरुआत • **प्राचीन भारत का "शास्त्रीय युग" या "स्वर्ण युग":** कला, वास्तुकला, संस्कृत साहित्य, पत्थर की मूर्ति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, धातु विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में चौतरफा प्रगति।
319-334 ई.	**चंद्रगुप्त-I:** • प्रथम महत्वपूर्ण शासक, जिसे इस **वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।** • सबसे पहले **"महाराजाधिराज"** (राजाओं का महान राजा) कहा जाने वाला • लगभग 319-20 ईस्वी में उनका राज्यारोहण **गुप्त संवत (युग) की शुरुआत का प्रतीक है।** • **गुप्तों में सर्वप्रथम जिन्होंने सोने के सिक्के (दिनार) जारी किए** - कुमारदेवी और चंद्रगुप्त की आकृतियों वाले। • **महरौली लौह स्तंभ अभिलेख** में उसके व्यापक विजय अभियानों का उल्लेख है।
335-380 ई.	**समुद्रगुप्त:** • चंद्रगुप्त प्रथम का पुत्र और उत्तराधिकारी। • **इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख** में उल्लेख है कि समुद्रगुप्त ने अपने दक्षिण भारतीय अभियान (दक्षिणापथ) में बारह शासकों को हराया था। • उसने **सोने और चांदी के सिक्के**- अश्वमेध सिक्के- **'अश्वमेध के पुनर्स्थापक'** के आदर्श वाक्य के साथ जारी किए। • इतिहासकार विन्सेन्ट स्मिथ ने उन्हें **'भारत का नेपोलियन'** कहा है। • इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेखों ने उन्हें **"धर्म प्रचार बंधु"** कहा।
380-414 ई.	**चंद्रगुप्त द्वितीय:** • **चंद्रगुप्त विक्रमादित्य** के नाम से भी जाने जाते हैं • गुप्त वंश का **वॉटरमार्क काल।** • **"परमभागवत"** उपाधि धारण किया। • **चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न:** कालिदास, अमरसिंह, धन्वंतरि, वराहमिहिर, वररुचि, **घटकर्पर**, क्षपणक, वेतालभट्ट, शंकु। • चीनी बौद्ध भिक्षु फाह्यान ने उनके दरबार का दौरा किया। • यह **कालिदास का युग था।**
400 ई. के आसपास	• महाभारत, रामायण और प्रमुख पुराणों का अंतत: संकलन हुआ।
415-455 ई.	**कुमारगुप्त प्रथम:** • उन्होंने **नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की।** • इलाहाबाद जिले से 448 ई. का एक गुप्त शिलालेख दशमलव प्रणाली के ज्ञान को दर्शाता है।
455-467 ई.	**स्कंदगुप्त:** • सुदर्शन **झील की मरम्मत कराई** (जूनागढ़ शिलालेख)। • 467 ईस्वी में स्कंदगुप्त की मृत्यु के बाद **गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया।** • **विष्णुगुप्त** (540 CE - 550 CE) अंतिम मान्यता प्राप्त गुप्त शासक थे।
485 ई.	• हूणों ने पूर्वी मालवा और मध्य भारत के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया।

400-500 ई. (5वीं शताब्दी ई.)	• **नारद स्मृति** की तिथि। • आर्यभट्ट की **आर्यभट्टीय।** • **शून्य और दशमलव प्रणाली** के बारे में जागरूकता। • फाह्यान कहता है कि चांडाल गाँव के बाहर रहते थे।
512 ई.	• द्वितीय जैन संगीति का आयोजन हुआ • **स्थान:** वल्लभी • **अध्यक्ष:** देवर्षि क्षमाश्रमण • **परिणाम:** 12 अंग और 12 उपांग का अंतिम संकलन
532 ई.	• मालवा के राजकुमार यशोधर्मन ने गुप्तों को चुनौती दी और उत्तरी भारत पर अपनी विजय का दावा करते हुए एक विजय स्तंभ स्थापित किया।
500-600 ई. (6वीं शताब्दी ई.)	• वराहमिहिर और उनकी प्रसिद्ध रचना "बृहत्संहिता"।
600 ई. के आसपास	• बांग्लादेश द्वारा कवर किया गया क्षेत्र **गौड़** के रूप में जाना जाने लगा, और **शशांक** द्वारा शासित एक स्वतंत्र राज्य बन गया।
606-647 ई.	**हर्षवर्धन का शासनकाल:** • हर्ष के शासनकाल **ने भारत में सामंतवाद की शुरुआत को चिह्नित किया।** • वह अपनी **राजधानी कन्नौज ले गया।** • उन्होंने **"उत्तरपथनाथ या उत्तरपथपति"** (उत्तर के भगवान) की उपाधि धारण की। • **ह्वेनसांग** ने अपनी पुस्तक में हर्षवर्धन के न्याय और उदारता (उदारता) की सराहना की है। • हर्षवर्धन **पुष्यभूति राजवंश से संबंधित थे जिसे वर्धन राजवंश भी कहा जाता है।** • **बाणभट्ट** और ह्वेनसांग द्वारा लिखित "हर्षचरित"। • उनकी **मृत्यु पुष्यभूति वंश के अंत** और उत्तर भारत पर मुस्लिम शासन की शुरुआत का प्रतीक है। • **इलाहाबाद सम्मेलन:** ह्वेनसांग इलाहाबाद में आयोजित सम्मेलन के बारे में उल्लेख करता है, जिसे प्रयाग के नाम से जाना जाता है।
609-642 ई.	• चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय का शासनकाल।
618 ई.	• नर्मदा नदी के तट पर हर्ष पर पुलकेशिन द्वितीय की विजय।
630-668 ई.	• पल्लव राजा नरसिंहवर्मन का शासनकाल।
670 ई.	• चीनी यात्री इत्सिंग ने नालंदा का दौरा किया।
680 ई.	• पट्टदकल का पापनाथ मंदिर।
600-700 ई. (7वीं शताब्दी ई.)	• पूर्व से पश्चिम तक ब्रह्मपुत्र बेसिन से लगा कामरूप प्रमुखता से उभरा। भास्करवर्मन ब्रह्मपुत्र बेसिन को नियंत्रित करने वाले राज्य के प्रमुख के रूप में उभरे। • चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भास्करवर्मन के राज्य का दौरा किया।
740 ई.	• पट्टदकल का विरुपाक्ष मंदिर।
753 ई.	• बादामी चालुक्यों को हराकर दंतिदुर्ग ने राष्ट्रकूट साम्राज्य की स्थापना की।

❖ ❖ ❖





INDIA'S MOST LOVED

Educational Channel And Platform

4.8★ Rating	**20M+** Subscribers
8M+ Downloads	**8000**hrs Video Content/Week

If you have any queries or need assistance with admission in PW Classes **here is what you can do**

PW APP
Reach out to us: 07948221232

PW OnlyIAS
Reach out to us: 9920613613

www.pw.live

ISBN 978-81-19130-56-6